THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_176441
UNIVERSAL
LIBRARY

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकरका ८५ वाँ ग्रन्थ

काला फूल

फ्रांसके विख्यात लेखक अलेक्जेण्डर ड्यूमाके
अतिशय सुन्दर और कलापूर्ण उपन्यास
'ला त्युलिप नुरार' का
अनुवाद

अनुवादकर्त्ता—
पं० सिद्धगोपाल, काव्यतीर्थ

प्रकाशक—
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई

श्रावण, १९९२ वि०

अगस्त, १९३५ ई०

मूल्य १॥।)

प्रकाशक,
नाथूराम प्रेमी,
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई

मुद्रक—
रघुनाथ दिपाजी देसाई,
न्यू भारत प्रिन्टींग प्रेस,
६, केळेवाडी, गिरगाँव, बम्बई

परिचय

उन्नीसवीं शताब्दीमें कितने ही असाधारण व्यक्ति हो गये हैं। वह युग ही विलक्षणताका था। एकसे एक राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक, तत्त्ववेत्ता, कवि और उपन्यासकार हुए हैं। अलेक्ज़ेंडर ड्यूमाकी गणना भी ऐसे ही असाधारण व्यक्तियोंमें की जानी चाहिए। उसका पिता जनरल ड्यूमा भी साधारण व्यक्ति न था। उसने भी कई वीरता-पूर्ण काम किये थे। किन्तु उसके स्वभावमें बड़ी उच्छृङ्खलता थी। किसीका नियन्त्रण अथवा शासन उसे सह्य न था। परिणाम यह हुआ कि नेपोलियन बोनापार्ट उससे अप्रसन्न हो गया। वह अपने पदसे हटा दिया गया। तबसे वह मृत्युपर्यन्त फ्रांसके एक कोनेमें चुपचाप पड़ा रहा।

अलेक्ज़ेंडर उसीका पुत्र था। उसका जन्म १८०२ में हुआ था। जब वह चार वर्षका था तभी उसके पिताकी मृत्यु हो गई। उसकी स्नेहमयी माताने उसका लालन-पालन किया। अपनी माताके प्रति ड्यूमाको बड़ी श्रद्धा थी। उसने अपनी यह श्रद्धा, यह भक्ति अपने आत्म-चरितमें प्रकट की है। कदाचित् माताके इसी स्नेहातिरेकके कारण ड्यूमा बड़ा उपद्रवी लड़का निकला। आलस्य भी उसमें इतना आ गया था कि वह कोई काम-धन्धा कर ही नहीं सकता था। पर घरकी स्थिति अच्छी थी नहीं। कुछ ही दिनोंमें भूखों मरनेकी नौबत आ गई। तब वह पेरिस आया और अपने पिताके एक मित्रकी मददसे एक जगह क्लर्क हो गया। उसे लगभग ६० रुपये महीना मिलने लगा। परन्तु इसीको उसने बहुत समझा।

जीवन-निर्वाहका एक उपाय निकल आनेपर वह अब साहित्यकी ओर आकृष्ट होने लगा। अपने एक मित्रके साथ मिलकर उसने एक छोटा-सा प्रहसन लिखा। फिर उसने एक नाटक भी तैयार किया। उन्हीं दिनों फ्रांसमें इंग्लैंडके कुछ प्रसिद्ध नट आकर शेक्सपियरके नाटक खेलने लगे। उन्हें देखकर उसे भी वैसे ही नाटक लिखनेकी सूझी। उमंगमें आकर उसने एक नाटक लिख भी डाला। उसमें एक ऐतिहासिक प्रेम-कथा थी। उसे एक थियेटरने पसंद भी कर लिया,

पर वह खेला नहीं गया। उसकी जगह एक दूसरा ही नाटक, जिसका वही विषय था, स्वीकृत हो गया। परन्तु ड्यूमा हताश न हुआ। उसने एक दूसरा ऐतिहासिक नाटक लिखा। उसका नाम था 'हेनरी तृतीय।' यह नाटक खूब सफलता-पूर्वक खेला गया। ड्यूमाको लगभग ३०,००० रुपये मिले।

इसी समय फ्रान्समें राज्य-क्रान्ति हुई। नाटकका काम बन्द हो गया और ड्यूमा भी क्रान्तिकारियोंके साथ मिलकर काम करने लगा। वह नाटक-कारसे योद्धा बन गया। वह कई युद्धोंमें सम्मिलित हुआ। उसका कहना है कि एक बार तो उसने अकेले ही एक मैगज़ीन, एक जनरल और कई अफ़सरोंको गिरफ़तार कर लिया। उसकी इस बातपर लोगोंने उसकी बड़ी दिल्लगी उड़ाई और किसीने उसकी बातपर विश्वास न किया, पर इसमें सन्देह नहीं कि उसके कथनमें सत्यांश था। अभाग्यवश ड्यूमा जिस राजनैतिक दलका समर्थक था, उसकी कभी प्रभुता न हुई। फ्रांसके अधिपति लुईने ड्यूमाको सदैव अवज्ञा और तिरस्कारकी ही दृष्टिसे देखा। तब ड्यूमाने फिर साहित्य-जगतकी ओर दृष्टि डाली। उसने 'एन्टनी' नामका एक नाटक लिखा। इस नाटकमें सदाचारकी बिलकुल उपेक्षा की गई है। तबसे फ्रांसमें दुराचार और असंयमके समर्थक नाटकोंकी वृद्धि होने लगी। लोग यह समझने लगे कि वह नाटक भी किस कामका जिसकी नायिकाने पातिव्रतका उल्लंघन न किया! परन्तु ड्यूमाने देखा कि नाटकोंसे अर्थ-लाभ होनेमें बड़ा विलम्ब होता है। इस लिए उसने सर वाल्टर स्काटका अनुकरण कर ऐतिहासिक उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया। उसने अन्य लेखकोंके विचारोंको लेनेमें भी संकोच न किया। अपने नाटकोंमें भी शिलर तथा अन्य कई लेखकोंके समूचे दृश्य उसने ज्योंके त्यों रख दिये हैं। पर उसका ढंग उसीका ढंग है, उसमें उसकी यथेष्ट मौलिकता है। वह स्वयं कहा करता था कि ये बातें तो सार्वजनिक सम्पत्ति हैं, इनकी चोरी कैसी? जो प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं वे चोरी नहीं करते, उन्हें जीत लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्ववर्ती लेखकोंकी कृतियोंको अपनालेता है और फिर उन्हें नये ढंगसे नया रूप देकर प्रकट करता है। मौलिकताकी चाहे जैसी व्याख्या की जाय, इसमें

सन्देह नहीं कि डयूमाके उपन्यासोंने हलचल मचा दी। उसके मांटे-क्रिस्टो और थ्री मस्केटियर्स अत्यन्त लोकप्रिय हो गये। इसके बाद उसने कितने ही उपन्यास लिखे। लोकप्रियताके साथ उसे यथेष्ट अर्थ-लाभ भी होने लगा। उसकी रचनाओंके लिए कितनी ही पत्र-पत्रिकायें व्यग्र हो गईं। तब उसने चुन चुनकर कुछ लेखक रक्खे। उन्हें वह कथा–भाग बतला देता था और वे लोग उसे लिख डालते थे। फिर वह उन्हें अपने नामसे प्रकाशित करा देता था। इस प्रकार कोई १२०० किताबें डयूमाके नामसे प्रकाशित हुई हैं!

परन्तु डयूमाका अन्तिम काल सुखमय न रहा। उसने अपने नाटकोंके लिए एक बड़ी नाट्यशाला बनवाई। परन्तु उसमें उसे जरा भी सफलता न हुई। कई पत्रोंने कहानी लिखनेकी प्रतिज्ञा न पूरी करनेके कारण उसपर मुकदमे चलाये। इसमें भी उसे आर्थिक हानि उठानी पड़ी। फिर तो उसने अर्थ-प्राप्तिके लिए कितने ही उपाय किये। इसी समय वृद्धावस्थामें वह एक स्त्रीके प्रेम-पाशमें फँस गया। लोगोंमें उसके प्रति और भी अश्रद्धा बढ़ गई। अन्ततक वह अर्थ-प्राप्तिके लिए तरह तरहकी योजनायें बनाता रहा और अन्त तक वह विलासमें लिप्त रहा। १८७० में उसकी मृत्यु हो गई। डयूमाकी यही संक्षिप्त जीवन-कथा है।

'काला फूल' डयूमाके एक उपन्यास (La Tulipe Noire) का अनुवाद है। यह उपन्यास १८५० में प्रकाशित हुआ था। कहा जाता है कि इसका सारा कथा-भाग विलियम तृतीयने डयूमाको सुनाया था। कुछ भी हो, इसमें सन्देह नहीं कि इसका कथा-भाग अत्यन्त रोचक है। रोज़ाका चरित्र बड़ा ही सुन्दर है। उन दिनों गुले लाला हालैंडमें अत्यन्त लोकप्रिय हो रहा था। डयूमाने जिस 'काले गुले लाला' की कल्पना की है वह अब हालैंडमें सुलभ है। एक शिलिंग देकर कोई भी उसकी जड़ खरीद सकता है। उसी काले गुले लालाको लेकर, पाठक स्वयं देखेंगे, डयूमाने कैसी अपूर्व प्रेम-कथाकी सृष्टि की है।

बम्बई, २५–७–३५] —पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

भूमिका

हिन्दी भारतकी राष्ट्र-भाषा है। उसका साहित्य सर्वाङ्गसम्पन्न होना चाहिए। उसमें मौलिक पुस्तकोंके अलावा संसारभरके उत्तमोत्तम ग्रन्थोंका अनुवाद भी होना चाहिए, जिससे कि सिर्फ़ हिन्दीहीको सीखकर लोग संसारकी किसी भी भाषाके साहित्यका आस्वादन कर सकें। आजकल यह विशेषता अँगरेज़ी साहित्यको प्राप्त है। हर्षकी बात है कि हिन्दी भी इस विषयमें अग्रसर हो रही है।

फ्रान्स और रूसने कहानी-कलामें जो उन्नति की है, वह आधुनिक साहित्यमें और किसी देशने नहीं की। वहाँके कुछ लेखकोंके अनुवाद अभी अभी हिन्दीमें प्रकाशित हुए हैं, किन्तु वे सब अँगरेज़ीसे किये गये हैं। अनुवादके अनुवादमें मूलका स्वारस्य बहुत कुछ नष्ट हो जाता है, इसी लिए मैंने कुछ लेखकोंकी चुनी हुई पुस्तकोंका सीधे फ्रेंच भाषासे अनुवाद करनेका निश्चय किया है।

फ्रांसमें ह्यूगो और द्यूमासका बड़ा नाम है। उनमेंसे द्यूमासकी * एक पुस्तक 'ला त्यूलिप नुवार' (La Tulipe Noire) का अनुवाद आज मैं पाठकोंके सम्मुख उपस्थित कर रहा हूँ।

द्यूमासका पूरा नाम अलेग्जांद्र द्यूमास (Alexandre Dumas) था। वह सन् १८०२ में पैदा हुआ और सन् १८७० ई० में उसकी मृत्यु हुई। प्रस्तुत पुस्तक पहले पहल सन् १८५० ई० में प्रकाशित हुई थी। उसके उपन्यास रोचकताके लिए अपनी जोड़ नहीं रखते। यूरोपमें वह अँगरेज़ीके विख्यात उपन्यास-लेखक स्काटका समकक्ष गिना जाता है।

यह उपन्यास अर्धैतिहासिक है, या यों कहिए कि एक प्रेम-कहानीको ऐतिहासिक घटनाके ढाँचेमें ढाल दिया गया है।

---

*अँगरेजी उच्चारण ड्यूमास। अनुवादमें कहीं कहीं नामोंका अँगरेज़ी उच्चारण दिया गया है, क्योंकि हिन्दी पाठक फ्रेंच उच्चारणसे बहुत कम परिचित हैं।

ड्यूमास इतिहासका एक निराले ढंगसे अध्ययन करता था। वह उसे अपने रंगमें रंगकर पढ़ता और फिर लिख देता था। वह ऐतिहासिक घटनाओंको एक नया ही रूप देकर पाठकोंके सामने उपस्थित करता था, किन्तु उनमें वह जो कुछ कल्पनासे मिलाता था वह भी वास्तविक होता था।

इस कहानीमें हालैंड देशके सत्रहवीं शताब्दीके इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्ति दोनों द'विट-भाई और राजकुमार विलियम मुख्य पात्र हैं। इनके कारण कहानीमें गंभीरता और महत्त्व आ गया है। कथाका उपसंहार राजकुमार विलियम (कम बोलनेवाला) ने इस तरह किया है कि पढ़कर तबीयत खुश हो जाती है।

कहानीके प्रारंभमें हालैंडवालोंके क्रोधजनित ताण्डवका चित्र (यद्यपि वह क्रोध ग़लत रास्तेपर गई हुई देशभक्तिके कारण हुआ था) ऐसी खूबी और सजीवताके साथ खींचा गया है कि ऐसा मालूम होता है मानों वह हमारी आँखोंके सामने है और हम उसी ज़मानेमें हैं।

प्रेमिका रोज़ामें लेखकने जो खूबी दिखलाई है वह बिरले ही उपन्यासकार दिखा पाते हैं। श्रेष्ठ प्रेमिका वह नहीं है जो सिर्फ प्रेम करती है। उसमें प्रेम करनेकी योग्यता भी होनी चाहिए। उसके प्रेममें कुछ खूबी भी चाहिए। रोज़ाको ईर्ष्या करनेकी माकूल वजह है, क्योंकि यद्यपि वान बार्ले उससे प्रेम करता है और अपने प्रेममें सच्चा है, तथापि वह अपने गुले लालासे—उस प्रसिद्ध काले फूलसे—शायद उससे भी ज्यादह प्रेम करता है। इस कारण रोज़ा पहले गुले लालासे ईर्ष्या करती है, किन्तु धीरे धीरे अपने प्रेमीके पुष्प-प्रेमको सहन करने लगती है। सिर्फ इतना ही नहीं, वह उस प्रेमकी स्वयं सेवा करने लगती है और माताकी तरह सावधानी और प्रेमसे उस फूलको बोती, उसकी देखभाल करती और इस काममें ख़तरोंतकका सामना करती है। जो वस्तु पहले उसकी ईर्ष्याका पात्र थी वही अब उसके प्रेमका विषय बन जाती है।

रोज़ा बहुत ही बुद्धिमती और गुणवती है। वह यह समझती है कि पुरुषमें दो प्रकारके प्रेम पाये जाते हैं, एक तो एक सुन्दरीके प्रति और दूसरा किसी प्रिय विषयके प्रति, जिसका उसे ख़ब्त-सा हो जाता है।

परन्तु ये दोनों प्रेम परस्पर-विरोधी नहीं हैं और प्रेमिकाकी खूबी इसीमें है कि वह अपने प्रेमको अपने प्रेमीके उस खब्तमें सहायक बना देवे। इसीमें रोज़ा अपनी बुद्धिमता दिखलाती है।

ईर्ष्यालु बोक्सतेलका चित्र भी ऐसी खूबीसे चित्रित किया गया है कि देखते ही बनता है। यह चित्र संसारमें देखी जानेवाली नित्य प्रतिकी घटनाओंके आधारसे खींचा गया है और इसलिए कल्पित नहीं किन्तु वास्तविक है। संसारमें इस प्रकारके पड़ोसीकी गौरव-वृद्धिसे जलनेवाले अनेक पुरुष पाये जाते हैं। ईर्ष्यासे प्रेरित होकर वह पहले तो छोटे छोटे अपराध करता है जैसा कि क़ायदा है, फिर बढ़ते बढ़ते बहुत आगे चला जाता है और अंतमें कुछ तो पारितोषिकके लालचसे और कुछ ख्याति-लाभकी आशासे नीचसे नीच कामोंपर उतर आता है और एक निपराध भोले भाले अनजान व्यक्तिको फाँसीपर चढ़वाने तकसे नहीं हिचकता।

इस प्रकार जो व्यक्ति बिल्कुल कवि-कल्पित हैं उन्हें भी कल्पना मात्र न समझना चाहिए, वे भी दुनियामें मौजूद हैं और उनको देखकर ही कवि उनका चरित्र-चित्रण करता है। फ़र्क केवल इतना ही है कि साधारण मनुष्यकी आँखें उनको और उनके चरित्रको देखती नहीं, जब कि कवि अपनी दूरदर्शिनी और सूक्ष्मदर्शिनी प्रतिभासे देखता है।

अन्तमें फ्रेंच साहित्यकी प्रसिद्ध समालोचिका एमिल फगे (Emile Faguet) के निम्नलिखित उद्धरणके साथ मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ—

"इतिहासके बग़ीचेके अनमोल फूल 'ला त्यूलिप नुवार' से बढ़कर लाभदायक, हानिहीन, मनोरंजक और सुहावना और कोई उपन्यास नहीं। इसके अध्ययनसे बढ़कर शिक्षा और कहीं नहीं मिल सकती।"

त्रिचनापल्ली
११-७-३२

—सिद्धगोपाल

काला फूल

१-कृतज्ञ जनता

Hague

२० अगस्त सन् १६७२ की बात है। हालैंडकी राजधानी 'हेग' इतनी सुन्दर और साफ़ थी और उसमें ऐसी चहल-पहल थी कि वहाँ चाहे जब जाओ यही मालूम होता था कि आज रविवार है अथवा और कोई त्योहारका दिन है। उसमें अनेक सुन्दर और छायादार पार्क थे। नहरोंके स्वच्छ पानीमें राजधानीके ऊँचे बुर्ज़ ऐसे प्रतिबिंबित होते थे, मानों कोई सुन्दरी दर्पणमें अपना मुख निहार रही हो।

'हेग'की गलियों और सड़कोंपर आज बड़ी भीड़ है। सारे नगर-निवासी शोर मचाते, गिरते-पड़ते, हाँफते, छुरी या कटार लिये कंधेपर बंदूक धरे, और कुछ नहीं तो लाठी ही लिये, बुटेनहोफ़ नामक जेलखानेकी ओर दौड़े चले जा रहे हैं। इस जेलमें कॉर्नेलियस द'विट कैद है। वह हालैंडके महामंत्री (ग्रांड पेंशनरी) जान द'विटका भाई है और टिकलेयर नामक एक आदमीके कहनेसे क़त्ल करनेके यत्न करनेका अपराध लगाकर गिरफ्तार किया गया है।

कहानी आरंभ करनेसे पहले यह ज़रूरी है कि हम अपने पाठकोंको हालैंडका उस समयका इतिहास, विशेषतः उस वर्षका इतिहास, जिसमें कि यह कहानी शुरू होती है, संक्षेपमें बतला दें। क्योंकि जिन दोनों भाइयोंका नाम हम ले चुके हैं, उनका उस समयके इतिहाससे घनिष्ठ संबंध है।

कॉर्नेलियस द'विट ४९ वर्षका होगा। वह पहले अपनी जन्मभूमि डोर्ट नगरका मेयर और हालैंडकी धारा-सभा (एसेंबली) का सदस्य रह चुका था। वह और उसका भाई महामंत्री जान द'विट प्रजातंत्रके पक्षपाती थे। जान द'विटने वहाँ नवाब (Stathouderat) के पदको हमेशाके लिए रद करके प्रजातन्त्रकी नीव मज़बूत की थी। इस समय वहाँके लोग प्रजातन्त्रसे ऊब गये थे, क्योंकि प्रजातन्त्र उनके देशको फ्रान्सके चंगुलसे न छुड़ा सका था और वे नवाबके पदकी पुनः स्थापना करना चाहते थे।

प्रायः जनता सिद्धान्तों और उनके समर्थक व्यक्तियोंको एक ही समझने लगती है। इस लिए लोग प्रजातंत्र कहनेसे दोनों द'विट-भाइयोंको ही समझते थे और ये दोनों भाई प्रजातंत्रका मतलब स्वेच्छाचाररहित स्वतंत्रता और अपव्ययरहित समृद्धि समझते थे। नवाबसे लोग ऑरेंजका नवयुवक राजकुमार समझते थे, क्योंकि यह पद उसीको मिलनेवाला था और वही उस दलका नेता था।

फ्रान्सके राजा चौदहवें लुईके नैतिक बलको सारा योरप अनुभव करता था। उसने तीन महीनेके युद्धमें हालैंडको पछाड़कर अपना सैनिक बल भी हालैंडको दिखा दिया था। इस लिए द'विट-भाई लुईको खुश रखते हुए ही अपना काम निकालना चाहते थे। परन्तु हालैंडवाले उसे जी-भरकर कोसते थे, यद्यपि उनका यह कोसना भागे हुए फरासीसियोंके ही सम्मुख होता था। लुई बहुत दिनोंसे उनका शत्रु था। जब कोई विजित जाति अपनी स्वतंत्रताके लिए लड़ते हुए थक जाती है, तब वह अपनी असफलताका दोष नेताओंपर मढ़ने लगती है और उनका साथ छोड़ देती है। वह आशा करती है कि कोई नया नेता आएगा और वह उन्हें अपमानसे बचाएगा। यही हालत उस समय हालैंडकी थी। इस कारण द'विट-भाइयोंके सामने दो कठिनाइयाँ थीं, देशवासियोंकी सहानुभूतिका अभाव और उनमें थकानका अनुभव।

राजनीतिक क्षेत्रमें आने और लुईका सामना करनेके लिए तैयार यह नया नेता ऑरेंजका राजकुमार विलियम था। यह विलियम द्वितीयका पुत्र और इंग्लैंडके चार्ल्स प्रथमका दौहित्र था। लोग उसीके द्वारा नवाबके पदकी पुनः-स्थापनाकी आशा करते थे।

सन् १६७२ में इस नवयुवककी उम्र २२ बरसकी थी। उसके अध्यापक जान द'विटने उसे एक अच्छा नागरिक बनानेकी दृष्टिसे शिक्षित किया था। उसे अपने शिष्यकी अपेक्षा अपना देश अधिक प्यारा था और इस लिए उसने एक फरमान निकालकर नवाबका पद हमेशाके लिए तोड़ दिया था जिससे कि विलियमके मनमें नवाब बननेकी अगर कोई आशा थी तो वह बिल्कुल कुचल गई थी। किन्तु मनुष्य सोचता कुछ है और परमात्मा करता कुछ और है। हालैंड-वालोंकी अस्थिरता, चंचलता और फ्रान्सके राजा लुईके भयने मिलकर यह फ़रमान रद करा दिया और ओरेंजके राजकुमारके लिए नवाबके पदकी पुनः-स्थापना करा दी। प्रकृति इस राजकुमारके लिए भविष्यके गर्भमें बड़े बड़े खेल रच रही थी।

महामंत्रीने जन-मतके दबावके सामने सिर झुका दिया। किन्तु उसका भाई कॉर्नेलियस द'विट अधिक दृढ़ था। यहाँ तक कि उसे ऑरेंज दलवालोंने मार डालने तककी धमकी दी और डोर्टमें उसके घरको चारों तरफ़से घेर लिया, फिर भी वह अविचलित रहा और उसने उस कानूनपर हस्ताक्षर करनेसे साफ इंकार कर दिया जिससे नवाबके पदकी पुनः स्थापना होती थी। उस समय उसकी स्त्रीने आँखोंमें आँसू भरकर प्रार्थना की, इस लिए उसका खयाल करके उसने हस्ताक्षर तो कर दिये; किन्तु नीचे उसने V. C. ये दो अक्षर लिख दिये जो लैटिन भाषाके Vi Coactus इस वाक्यके आदिके अक्षर हैं, जिसका मतलब यह है कि ये हस्ताक्षर मैंने दबावमें आकर किये हैं, स्वेच्छासे नहीं।

उस रोज़ उसका शत्रुओंके हाथसे बच जाना बड़े अचरजकी बात थी। यद्यपि जान द'विटने जनताकी इच्छाके आगे अपने भाईसे जल्दी सिर झुका दिया, फिर भी इससे उसको कुल लाभ न हुआ। कुछ ही दिनों बाद उसको मार डालनेकी कोशिश की गई, जिसमें सौभाग्यवश उसके प्राण तो बच गये, किन्तु घायल वह बहुत हो गया।

ऑरेंज-दलवालोंके लिए सिर्फ़ इतना ही काफ़ी न था। उनके मनसूबोंमें इन दोनों भाइयोंका जीवन भी बाधक था। अब उन्होंने अपना रास्ता बदल दिया। जिस कामको वे कटारके ज़ोरसे न कर सके थे, उसे झूठा आरोप लगाकर पूरा करनेका इरादा करने लगे।

जब किसी महान् शुभ कार्यको करनेकी ज़रूरत होती है; तब ठीक मौक़ेपर उसको पूरा करनेवाला आदमी बिरला ही मिलता है। यदि कभी कोई मिल जाता है, तो उसका नाम इतिहासमें स्वर्णाक्षरोंमें लिख जाता है—वह अमर हो जाता है। किन्तु जब शैतान अपना काम करता है और वह किसी कामको बिगाड़ना या किसी भले आदमीकी जान लेना चाहता है, तो उसे आदमियोंकी कमी नहीं रहती और उसके लिए किसीके कानमें थोड़ा इशारा कर देना भर काफ़ी होता है।

हमारी कहानीमें शैतानका हाथ टिकलेयर नामक एक जर्राह था। उसने कॉर्नेलियस द'विटके ख़िलाफ़ पुलिसको यह सूचना दी कि कॉर्नेलियस फ़रमानके रद किये जानेसे नाराज़ था और ऑरेंजके राजकुमार विलियमके ऊपर घृणा और गुस्सेसे भरकर उसने उसे वध करनेके लिए षड्यंत्र रचा था। इस वधके लिए तैयार किया हुआ आदमी स्वयं मैं था। मैंने पहले धनके लोभसे यह काम करना स्वीकार कर लिया, किन्तु फिर इस नीच कामसे मुझे घबराहट हुई और मैंने उसकी सूचना अधिकारियोंको दे दी।

ऑरेंज-दलवालोंमें इस आरोपको सुनकर जो क्षोभ पैदा हुआ, उसका अनुमान पाठक स्वयं कर सकते हैं। १६ अगस्त सन् १६७२ ई० को कॉर्नेलियस गिरफ़तार कर लिया गया। उससे कहा गया कि तुम अपना अपराध स्वीकार कर लो और विलियमकी जान लेनेके लिए तुमने जो षड्यन्त्र रचा था उसका सारा रहस्य प्रकट कर दो। इसके लिए उसे बड़ी बड़ी यातनाएँ दी गईं। उसके हाथ-पैर शिकंजेमें कसकर कुचल दिये गये, किन्तु उन सबको उस धीर वीरने बड़ी खुशीसे सह लिया।

कॉर्नेलियसका मन ही नहीं हृदय भी महान् था। वह अपने राजनीतिक विचारोंके लिए वैसे ही शहीदोंमेंसे था जैसे कि उसके पूर्वज अपने धर्मके लिए थे। वह उनके समान बड़ेसे बड़े कष्ट सह लेता था और अपने विचारोंके लिए कठिनसे कठिन यातनाएँ सहनेपर भी मुसकराता रहता था। जब उसके अंग शिकंजेमें कसे जा रहे थे, तब वह दृढ स्वरसे होरेसकी Justum ac tenacem (न्याय और दृढ़ता) नामक कविताका गान कर रहा था। उसने अपराध स्वीकार न करके जल्लादोंकी शक्तिको ही नहीं पागलपनको भी थका दिया।

जजोंने टिकलेयरको साफ़ छोड़ दिया और कॉर्नेलियसको हमेशाके लिए देश-निकालेकी सज़ा दे दी। इतना ही नहीं, उसकी सब उपाधियाँ तथा पद छीन लिये जाने तथा मुक़दमेका खर्च लिये जानेकी भी आज्ञा दी।

कॉर्नेलियस निरपराध तो था ही, एक महापुरुष भी था। उसने उन्हीं देश-वासियोंकी सेवा करनेके लिए अपने आपको निछावर कर दिया था जिनको खुश करनेके वास्ते उसे यह दंड दिया गया। इस फ़ैसलेका समाचार सुनकर ऑरेंज-दलवालोंको कुछ संतोष हुआ; किन्तु उनके लिए यह सजा ही पर्याप्त नहीं थी जैसा कि आगे चल कर हम देखेंगे।

इतिहासमें एथेन्स कृतघ्नताके लिए प्रसिद्ध है; किन्तु हालैंडने उसको भी मात कर दिया, क्योंकि एथेंसवाले अरिस्तीदको देश-निकाला देकर ही संतुष्ट हो गये थे।

जान द'विटने अपने भाईपर झूठा आरोप लगनेका समाचार सुनते ही फ़ौरन महामंत्रीके पदसे इस्तीफा दे दिया। उसको भी तन-मन-धनसे देश-सेवा करनेका अच्छा पुरस्कार मिला। वह सार्वजनिक जीवन त्यागकर अपने घरमें बैठ रहा। शत्रुओंकी घृणा और क़ातिलोंका जख्म ही उसका पुरस्कार था जैसा कि प्रायः उन ईमानदार आदमियोंको मिलता है जो अपने वैयक्तिक स्वार्थोंको भुलाकर अपना जीवन देश-सेवाके लिए अर्पण कर देते हैं।

इस समय ऑरेंजका विलियम इस बातकी प्रतीक्षामें था कि लोग कॉर्नेलियस और जॉन दोनों भाइयोंके मृत शरीरोंकी दो सीढ़ियाँ बना दें, जिनपर पैर रख-कर वह सिंहासनपर आसानीसे चढ़ सके। घटना-चक्रको उस ओर जल्दी ले जानेके लिए वह अपनी पूरी शक्ति लगा रहा था।

जैसा कि हम कह चुके हैं, २० अगस्त सन् १६७२ को सारा नगर बुटेन-होफ़की जेलकी ओर उमड़ा जा रहा था। आज कॉर्नेलियस देश निकालेके लिए इस जेलसे बाहर जानेवाला था। लोग उसे देखनेके लिए आये थे और वे इस महापुरुषके शरीरपर यातनासे बने हुए चिह्नोंको देखकर अपनी आँखोंको तृप्त करना चाहते थे।

यह भीड़ केवल कॉर्नेलियसके जानेका दृश्य देखनेके लिए ही जमा नहीं हुई थी, किन्तु उसमें बहुतसे ऐसे आदमी भी थे जो आजकी घटनाओंमें हिस्सा

लेना चाहते थे। जिस कामको वे समझते थे कि आधा ही किया गया उसे वे पूरा करने आये थे और यह काम था जल्लादोंका।

किन्तु कुछ ऐसे लोग भी थे जिनका उद्देश्य अधिक शान्तिपूर्ण था। जो सदा मस्तक ऊँचा करके चला हो उसे धूलमें लोटता देखकर जनताको बड़ा आनंद आता है और वे लोग सिर्फ यह दृश्य देखनेके लिए ही आये थे। वे कहते थे, "क्या इस न डरनेवाले कॉर्नेलियसके हाथ-पैर शिकंजेसे टूटे नहीं, क्या हम उसे लज्जासे सिर नीचा किये पीला और खूनसे लथपथ नहीं देखेंगे?" इस प्रकार इन हेगवालोंने, जिनमें बड़े बड़े सज्जन और प्रतिष्ठित व्यक्ति भी शामिल थे, ईर्ष्यामें मामूली नीच श्रेणीके लोगोंको भी मात कर दिया। भीड़में ऑरेंज-दलवाले यह कहकर लोगोंको उभारते फिरते थे,—

"इस कॉर्नेलियसने ऑरेंजके राजकुमारको नवाब-पद खुशीसे नहीं बल्कि बाधित होकर दिया और इसने उसकी जान लेनेके लिए षड्यंत्र रचनेमें कोई कसर उठा नहीं रक्खी। जब यह नगरसे बाहर जा रहा है, जेलसे लेकर नगरके बाहर जानेके दरवाज़े तक हमें क्या इतना मौका भी नहीं मिलेगा कि हम इस नीचके मुँहपर थूक दें, या धूल फेंकें, या उसके सिरपर पत्थर फेंकें।"

इस प्रकार ये लोग भीड़से तेज़ शस्त्रका काम लेना चाहते थे। साथ ही वे यह भी कहते फिरते थे कि "यदि काम बहादुरीसे हुआ, तो कॉर्नेलियस देश-निकालेके लिए ज़िंदा जाने ही न पाएगा, क्यों कि यदि यह बाहर चला गया, तो उस बड़े शैतान अपने भाईके साथ फ्रांसमें जाकर वहाँके परराष्ट्र-सचिव मार्किस द'लूवुवाके पैसेसे मौज करेगा और हमारे देशके विरुद्ध अपने षड्यंत्र फ्रांसके साहाय्यसे फिर आरंभ करेगा।

जब लोग इस तरह पागल हो जाते हैं, तब चलते नहीं दौड़ते हैं। यही कारण था कि आज सारी हेग नगरी बुटेनहोफ़की ओर दौड़ी जा रही थी। जो लोग सबसे तेज दौड़े जा रहे थे, उनमें ईमानदार टिकलेयर भी था। उसका हृदय द्वेष और कपटसे पूर्ण था और उसका कोई निश्चित कार्यक्रम नहीं था। ऑरेंज-दलवाले उसे इस तरह ले जा रहे थे, मानों वह कोई बड़ा नेता हो जिसने बड़े बड़े वीरताके काम किये हों। यह साहसी शैतान अपने मनसे गढ़कर और खूब नमक-मिर्च लगाकर विलियमके वधके षड्यंत्रका विस्तारसे वर्णन कर रहा था और बतला रहा था कि किस किस तरहसे कॉर्नेलियसने मुझे

लुभाया, धनका लालच दिया, मुझे धर्मभ्रष्ट करनेकी कोशिश की और किस प्रकार वधके बाद मेरे बचावके लिए पहलेसे ही रास्ता साफ़ कर दिया। अब वध करनेमें क्या क्या कठिनाइयाँ हुईं, वे सब भी बतला रहा था।

उसका हरेक वाक्य सुन-सुनकर लोग ज़ोर ज़ोरसे विलियमकी जय तथा द'विट-भाइयोंके लिए गालियों और धिक्कारकी बौछारसे आकाश गुँजा रहे थे।

जनता उन अविचारपूर्ण जजोंको भी गाली दे रही थी जिन्होंने इस बदमाश कॉर्नेलियस जैसे भयंकर अपराधीको सही-सलामत देशसे बाहर चले जानेकी आज्ञा दी थी।

कुछ लोग कह रहे थे, "बदमाश निकल जायगा, हमारे हाथसे चुपकेसे निकलकर भाग जायगा!" किसी दूसरेने कहा, "उसे ले जानेके लिए शेवे-निंगके बंदरगाहमें जहाज़ तैयार खड़ा है जी, फ्राँसका जहाज़ है। टिकलेयर उसे देख आया है।"

सब लोग एक स्वरसे चिल्लाये, "टिकलेयरकी जय! ईमानदार टिकलेयरकी जय!"

भीड़मेंसे एक आदमी पुकार उठा, "हमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि कॉर्नेलियसके साथ ही उसका भाई भी भाग जायगा। वह भी अपने भाईसे कम देशद्रोही नहीं है।"

"और दोनों बदमाश फ्रांस जाकर हमारे पैसेसे मौज करेंगे,—वह पैसा जो इन बदमाशोंने हमारे जहाज़ों, बंदरगाहों और शस्त्रास्त्र—गोला बारूद—के रूपमें फ्रांसके राजा चौदहवें लुईको बेच दिया है।"

भीड़मेंसे एक देशभक्त और सबसे आगे बढ़कर चिल्ला उठा, "हम उन्हें यहाँसे जाने ही नहीं देंगे।"

सब लोग एक साथ चिल्ला उठे, "जेलकी ओर, जेलकी ओर बढ़े चलो, बहादुरो!"

इस प्रकार गरजते हुए लोग अपनी चाल प्रतिक्षण बढ़ाते हुए जेल-ख़ानेकी ओर दौड़े चले जा रहे थे। कोई अपनी तोड़ेदार बंदूक भर रहा था, कोई कुल्हाड़ी या कटार घुमा रहा था और कोई लाल लाल आँखें निकाल रहा था।

अभी तक कुछ दंगा-फ़साद नहीं हुआ था। बुटेनहोफ़ जेलकी रक्षा करनेके

लिए घुड़सवार-फौजकी एक टुकड़ी चुपचाप शान्त खड़ी थी। घुड़सवार मूर्तियोंकी तरह अचल थे और उनकी दृष्टि अपने सरदारपर थी। सरदारने अपनी तलवार म्यानसे बाहर निकाल रक्खी थी, किन्तु वह उसे नीचेकी ओर लटकाये हुए था। यह निश्चल घुड़-सवार-सेना चिल्लाहट मचाती और उत्तेजित हुई भीड़की अपेक्षा अधिक दुर्भेद्य और दृढ़ थी।

यह घुड़-सवार-सेना ही जेलकी रक्षा कर रही थी और इसने अपनी दृढ़तासे केवल उत्तेजित जनताको ही नहीं दबा रक्खा था, किन्तु नगर-रक्षक सिपाहियोंके एक दस्तेको भी आगे बढ़नेसे रोक रक्खा था। यह सिपाहियोंका दस्ता जेलके सामने यद्यपि घुड़-सवारोंकी सहायताके लिए खड़ा था, किन्तु फिर भी दंगाइयोंके साथ चिल्लाकर उनका साथ दे रहा था और कह रहा था—

"ऑरेंजकी जय हो, देशद्रोहियोंका पतन हो।"

घुड़-सवारोंके सरदार कौंट तिली और घुड़-सवारोंको देखकर ये नागरिक सिपाही सहम गये थे, किन्तु थोड़ी देर बाद उन्होंने फिर चिल्लाना शुरू किया। उनकी समझमें ही यह नहीं आता था कि बिना चिल्लाये कोई अपना उत्साह कैसे दिखा सकता है। घुड़-सवारोंको शान्त देखकर उन्होंने समझा कि वे डरते हैं। वे जेलकी ओरको एक पग और आगे बढ़े और उनके साथ ही भीड़ भी बढ़ी।

तब कौंट तिलीने अकेले बढ़कर, तलवार ऊपर उठाकर और भौंहें चढ़ाकर कहा—महाशयो, आप क्या चाहते हैं और क्यों आगे बढ़ते हैं?

नागरिक सिपाहियोंने अपनी तोड़ेदार बंदूकें हिलाकर और चिल्ला कर कहा,—ऑरेंजकी जय! देशद्रोहियोंकी मृत्यु!

कौंट तिलीने कहा—ओरेंजवालोंकी जय हो! बहुत ठीक है! क्योंकि मैं रोनी सूरतोंकी अपेक्षा प्रसन्न चेहरोंको पसंद करता हूँ। किन्तु देशद्रोहियोंकी मृत्यु, आप जब तक गर्जना मात्रसे चाहते हैं तब तक जितनी चाहे उतनी चाह सकते हैं। जितनी आपकी मर्जी हो चिल्लाइए। किन्तु यदि आप अपनी धमकीको कार्यमें परिणत करना चाहेंगे, तो उसे रोकनेके लिए मैं यहाँ मौजूद हूँ और उसे हर्गिज न होने दूँगा।

फिर उसने अपने सिपाहियोंसे कहा—सिपाहियो, हथियार उठाकर तैयार रहो!

तिलीके सिपाहियोंने चुपचाप अपने अफसरकी आज्ञाका पालन किया। यह देखकर नागरिक सिपाही और जनता हड़बड़ाकर पीछे हट गई और कौंट तिली

मुसकुराया। वह बोला—महाशयो, आप शान्त रहें। मेरे सिपाही एक भी गोली नहीं चलाएँगे। किन्तु आप लोग भी जेलकी तरफ एक पग भी आगे न बढ़ाएँ।

तब नागरिक सिपाहियोंके अफ़सरने क्रोधसे गरजकर कहा—महाशय, क्या आपको मालूम है कि हमारे पास तोड़ेदार बंदूकें हैं?

कौंट तिलीने कहा—मुझे खूब मालूम है। आपने अच्छी तरह मेरी आँखोंके सामने उन्हें चमकाया और घुमाया है। किन्तु याद रखिए कि हमारे पास पिस्तौलें हैं और पिस्तौलकी गोली पचास फीट तक अच्छी तरहसे जाती है, जब कि आप लोग हमसे पचीस ही फीट हैं।

नागरिकोंके दस्तेने आपेसे बाहर होकर पुकारा—देशद्रोहियोंकी मृत्यु!

कौंट तिलीने गुर्राकर कहा—आप लोग बार बार वही चिल्लाते हैं। इससे तो मन ऊबा जाता है।

वह अपनी फौजके आगे अपनी जगहपर जा खड़ा हुआ। बुटेनहोफ़के आस-पास शोर-गुल बढ़ता ही जाता था।

जिस समय यह उत्तेजित जनता अपने एक शिकारके पीछे पड़ी थी, उसे यह पता नहीं था कि उसी समय दूसरा शिकार मानों अपने भाग्यमें बदेकी ओर जल्दी बढ़नेके लिए उस भीड़ और घुड़-सवारोंके पीछेसे होकर सौ गज़की दूरीपर बुटेनहोफकी तरफ जा रहा था।

जान द'विट अपनी गाड़ीसे उतरा, अपने नौकरके साथ जेलके दरवाजेपर गया और उसने अपना नाम लेकर जेलरसे कहा—ग्रीफस, प्रणाम। तुम जानते ही हो कि मेरे भाईको देश-निकालेकी सजा हुई है। मैं उसे नगरसे बाहर ले जानेके वास्ते आया हूँ।

जेलर ऐसा मालूम होता था मानों कोई भालू हो, जिसको जेलके दरवाजे खोलना और बंद करना सिखलाया गया हो। उसने जानको प्रणाम करके जेलके अंदर बुला लिया और फिर दरवाजा बंद कर लिया।

वहाँसे दस हाथपर जानको एक सत्रह अठारह बरसकी लड़की मिली। उसका वेश फ्रीजलैंडवालों जैसा था। उसने जानको बड़े आदरसे प्रणाम किया। जानने उसकी ठोड़ी छूकर कहा,—नमस्कार भली और सुंदरी रोज़ा, मेरा भाई कैसा है?

लड़कीने जवाब दिया—जो हानि उनको पहुँचाई गई है, उससे मैं नहीं डरती। वह तो अब बीत चुकी।

"तो तुम्हें किसका डर है?"

"महाशय जान, जो हानि लोग उनको पहुँचाना चाहते हैं, मुझे उसका डर है।"

"यह लोगोंकी भीड़ जो नीचे खड़ी है?"

"आप उसका शोर सुन रहे हैं न?"

जानने कहा—हाँ, ये लोग बड़े उत्तेजित दीख पड़ते हैं। किन्तु जब वे हमें देखेंगे, तो शान्त हो जाएँगे। क्यों कि हमने हमेशा उनका भला ही किया है, बुरा कभी नहीं किया।

इसी समय लड़कीके पिताने उसे पुकारा और वह धीरेसे इस प्रकार जवाब देकर चली गई—दुर्भाग्यसे यह कोई दलील नहीं है। बल्कि इसका उल्टा ही देखनेमें आता है।

जानने कहा—बेटी, तू बिल्कुल ठीक कहती है।

और यह कहकर वह चल दिया। वह अपने मनमें कहता जाता था कि यह छोटी लड़की शायद पढ़ना भी नहीं जानती, इस लिए इसने इतिहास पढ़ा भी नहीं होगा; फिर भी इसने सारे संसारके इतिहासका सार दो शब्दोंमें कह दिया।

यह सोचता हुआ पहले ही जैसा शान्त किन्तु पहलेसे अधिक उदास भूतपूर्व महामंत्री अपने भाईकी कोठरीकी तरफ चला।

२-दो भाई

जैसा कि रोज़ाने अनुमान किया था वैसा ही हुआ। जब जान द'विट ज़ीनेपर चढ़कर अपने भाई कॉर्नेलियस द'विटकी कोठरीकी ओर जा रहा था, उस समय नागरिक सिपाहियोंने तिलीकी घुड़-सवार फ़ौजको वहाँसे हटानेकी बहुत कोशिश की, क्योंकि वह उनका रास्ता रोके हुए थी।

यह देखकर और अपनी नागरिक सेनाके अभिप्रायको भले प्रकार समझकर लोगोंने ज़ोरसे पुकारा—नागरिक सेनाकी जय।

कौंट तिली जितना दृढ़ था उतना ही समझदार भी था। घुड़-सवारोंके गोली भरे हुए तैयार पिस्तौल उसकी रक्षा कर रहे थे। उसने यथाशक्ति नागरिकोंको समझाया कि मुझको सरकारकी ओरसे आज्ञा मिली है कि मैं तीन कंपनियाँ लेकर जेल और उसके आसपासके स्थानकी रक्षा करूँ।

ऑरेंज-दलवालोंने कहा—ऐसी आज्ञा किस वास्ते है? जेलकी रक्षाके वास्ते सेनाकी क्या ज़रूरत है?

तिलीने जवाब दिया, आप तो मुझसे ऐसी बात पूछते हैं जिसका जवाब मैं नहीं दे सकता। मुझे आज्ञा मिली है और मैं उसका पालन करता हूँ। आप लोग भी तो सिपाही हैं और यह जानते हैं कि आज्ञाके विषयमें विवाद करना सिपाहीका काम नहीं है।

"किन्तु तुम्हें यह आज्ञा क्या इस वास्ते मिली है कि देशद्रोही नगरसे निकल भागें?"

तिलीने जवाब दिया,—संभव है, क्योंकि देशद्रोहियोंको देश-निकालेका दण्ड मिला है।

"यह आज्ञा किसने दी है?"

"सरकारने।"

"सरकार तो विश्वासघात कर रही है!"

"मैं इस विषयमें कुछ नहीं जानता।"

"और तुम स्वयं विश्वासघाती हो।"

"मैं?"

"हाँ तुम।"

"अच्छा। हमें एक दूसरेको अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। मैं विश्वासघात करूँ और सरकारसे? मैं विश्वासघात नहीं कर सकता, क्योंकि मैं सरकारका नमक खाता हूँ और उसकी आज्ञाका पालन करता हूँ।"

कौंटका कहना ऐसा युक्तिपूर्ण था कि उसका जवाब देना और उसपर विवाद करना असंभव था। लोगोंकी गर्जना, धमकियाँ और चिल्लाहट बढ़ती जा रही थी। कौंटने यथासंभव सभ्यताके साथ उनका उत्तर दिया,—महाशय, दया करके आप अपनी बंदूकें नीची कर लीजिए। संभव है, उनमेंसे अचानक कोई छूट जाय, और अगर मेरा एक भी सिपाही ज़ख्मी हुआ, तो हम आप

सबको धरतीपर बिछा देंगे। हमें इसके लिए बड़ा दुःख होगा। किन्तु आप इससे भी अधिक दुःखी होंगे, क्योंकि न तो आप ही यह चाहते हैं और न हम ही।

नागरिक सिपाही चिल्लाए—अगर आप ऐसा करेंगे, तो हम भी आपपर गोलियोंकी वर्षा करेंगे।

"हाँ, आप हमें एक एक करके मार डालेंगे। तो क्या इससे हम जिनको मारेंगे, वे जी उठेंगे?"

"तो मैदान हमारे लिए छोड़ दो। ऐसा करनेसे आप एक भले नागरिकका कर्तव्य पूरा करेंगे।"

"मैं नागरिक नहीं हूँ, अफ़सर हूँ। अफ़सर और नागरिक होनेमें बड़ा अन्तर है। इसके सिवा मैं हालैंड नहीं बल्कि फ्रांसका हूँ, यह दूसरा अन्तर आपमें और मुझमें है। मुझे सरकारसे वेतन मिलता है और मैं सरकारके सिवा और किसीको नहीं जानता। सरकारकी ओरसे इस मैदानको छोड़ देनेके वास्ते मेरे नाम आज्ञा ले आइए और मैं तुरन्त यहाँसे चल दूँगा, क्यों कि मैं तो स्वयं यहाँ ऊब गया हूँ।"

कई सौ लोग चिल्ला उठे—हाँ, हाँ, चलो, भाई, टाउनहाल चलें। डिपुटियोंके पास चलें, चलो, चलें।

जो सबसे ज्यादह गरजते थे उनको हटते देखकर तिली धीरेसे अपने आप कहने लगा, जाओ टाउनहाल जाओ। कायरोंकी तरह भीख माँगने जाओ और तुम्हें वह मिल जायगी। जाओ दोस्तो, जाओ।

वह योग्य अफ़सर मजिस्ट्रेटोंके सम्मानका विश्वास करता था और मजिस्ट्रेट उस सिपाहीके सम्मानका विश्वास करते थे। उसने अपने निकटवर्ती लेफ्टिनेंटसे कहा—मैं तो समझता हूँ, इन क्रोधान्ध लोगोंकी इच्छाको पूरा करना तो दूर रहा डिपुटी लोग हमारी सहायताके लिए कुछ सिपाही और भेज देंगे और यह अच्छा ही है।

जब कि इधर यह हो रहा था, उधर जान द'विट, जेलर और उसकी लड़की रोज़ासे बातचीत करनेके बाद अपने भाईकी कोठरीके द्वारपर पहुँचा। वहाँ कॉर्नेलियस द'विट एक चटाईपर लेटा हुआ था। जल्लादकी सब यातना अब देश-निकालेका दंड मिल जानेके कारण विफल हो चुकी थी। उसकी

उँगलियाँ हथेलियाँ आदि सब टूटी हुई थीं और वह बिस्तरपर लेटा हुआ था। उसने यह सब कष्ट सहा, किन्तु अपराध स्वीकार नहीं किया, क्योंकि उसने कोई अपराध किया ही नहीं था। तीन दिन तक यातना सहनेके बाद जब उसने सुना कि जजोंने उसे मृत्युदण्ड नहीं दिया, केवल देश-निकालेकी आज्ञा दी है, तब जाकर कहीं उसे होश हुआ।

उसका शरीर मज़बूत और मन दृढ था, जिससे उसने अपने शत्रुओंको निराश कर दिया। बुटेनहोफ़की अँधेरी कोठरीमें भी उसके पीले चेहरेपर ऐसे शहीदकी मुसकान दिखाई देती थी जो स्वर्गीय प्रकाशका दर्शन करके पार्थिव कष्टोंको भूल गया हो।

चिकित्साके कारण नहीं किन्तु इच्छा-शक्तिके जोरसे उसमें बल आ गया था और अब वह यह हिसाब लगा रहा था कि कानूनको पूरा करनेके लिए उसे और कितनी देर तक जेलमें रहना पड़ेगा।

इस समय नागरिकोंकी स्वयंसेवक-सेना तथा जनता दोनों मिलकर दोनों भाइयोंके विरुद्ध खूब शोर मचा रही थी। और यह स्वाभाविक ही था। क्योंकि कप्तान तिली उनको आगे बढ़नेसे रोके हुए था। उसे वे धमकी दे रहे थे। यह कोलाहल जेलकी दीवारोंसे इस प्रकार व्यर्थ टकरा रहा था, मानों कोई समुद्रकी भारी लहर पर्वतसे टकराकर टूट रही है। धीरे धीरे यह क़ैदीके कानों तक भी पहुँचा।

यह कोलाहल बहुत ही डरावना था, फिर भी कॉर्नेलियसने इसकी जाँच न की। उसकी कोठरीमें एक खिड़की थी जिसमें लोहेकी मजबूत छड़ें लगी थीं। इसमेंसे बाहरकी रोशनी और आवाज़ आती थी। कॉर्नेलियसने यह कष्ट भी नहीं उठाया कि वह उठकर इस खिड़कीमेंसे देखे कि मामला क्या है। उसकी पीड़ा अब तक वैसी ही थी और वह उसीमें लीन हो रहा था। पीडा मानों उसकी आदतोंमें ही दाखिल हो गई थी। उसे ऐसा मालूम होता था कि उसकी आत्मा शीघ्र ही इन शारीरिक कष्टोंसे मुक्त होनेवाली है। यह सोचते हुए वह इतना आनन्दानुभव कर रहा था कि उसे यह प्रतीत होने लगा कि उसकी आत्मा भौतिक बंधनोंसे मुक्त होकर आकाशमें विचर रही है। जैसे आग तो बुझ जाय किन्तु उसकी लपट आकाशमें चढ़नेके लिए ऊपर चमक रही हो, वैसा ही उसको वह दृश्य प्रतीत होता था।

वह अपने भाईका ध्यान कर रहा था। निःसंदेह भाईका निकट होना ही उसे चुंबककी-सी किसी अदृश्य शक्तिसे अपने भाईकी ओर खींच रहा था। शारीरिक निकटवर्तिताके कारण वह उसके हृदयमें भी निकट था। जब जान कॉर्नेलियस उसके हृदयके इतना निकट था तब भी वह उसका नाम पुकार रहा था। इसी समय कोठरीका दरवाज़ा खुला और जानने अंदर प्रवेश किया। वह जल्दीसे क़दम बढ़ाकर भाईके बिस्तरके पास पहुँचा। कॉर्नेलियसने अपनी ज़ख्मी भुजाएँ और पट्टी बँधे हुए हाथ इस वीर भाईकी ओर बढ़ा दिये। कॉर्नेलियस अपने भाईसे देश-सेवामें ही नहीं किन्तु अपने देशवासियोंकी घृणापात्रतामें भी बढ़ गया था।

जानने बड़े प्रेमसे अपने भाईका मस्तक चूमा और कहा—मेरे भाई कॉर्नेलियस, तुमने बड़ा कष्ट सहा।

कॉर्नेलियसने जवाब दिया—भैया, तुम्हें देखते ही मेरा सब कष्ट दूर हो गया।

"आह मेरे प्यारे कॉर्नेलियस, तुम्हारी ऐसी हालत देखकर तुम्हारे बजाय मुझे कष्ट होता है। क्योंकि इसके लिए मैं ही तुम्हारे प्रति उत्तरदायी हूँ।"

"और जब जल्लाद मुझे यातनाएँ दे रहे थे तब मेरे मनमें सिवाय तुम्हारे और किसीका ध्यान न था। मुझे केवल एक दुःख था कि तुम मेरे पास नहीं थे। किन्तु अब तुम यहाँ हो, इस लिए वे सब बातें भूल जानी चाहिए। तुम मुझे लेने आये हो न?

"हाँ।"

"मैं जख्मी हूँ, उठनेमें मेरी सहायता करो। उठनेपर मैं अच्छी तरहसे चल सकता हूँ।"

"तुम्हें बहुत दूर तक पैदल नहीं चलना पड़ेगा। मेरी गाड़ी तिलीके सिपाहियोंके पीछे तालाबके पास खड़ी है।"

"तिलीके सिपाही? वे तालाबके पास क्यों हैं?"

महामंत्री (ग्रांड पैंशनरी) ने अपनी उस स्वाभाविक किन्तु भयपूर्ण मुस्कराहटके साथ कहा—मान लो कि हेगनिवासी तुमको यहाँसे जाते हुए देखना चाहें। उस हालतमें दंगा होनेका भय है।

कॉर्नेलियसने अपनी दृष्टि अपने घबराए हुए भाईके ऊपर गड़ाकर कहा—क्या कहा? दंगा होनेका भय है?

" हाँ कार्नेलियस।"

कॉर्नेलियसने मानों अपने आपहीको संबोधन करके कहा—ओह, अब तक मैं इसी शोर-गुलको सुन रहा था।

फिर वह अपने भाईसे बोला—बुटेनहोफ़के पास बड़ी भीड़ जमा है न?

" हाँ भैया।"

" फिर तुम यहाँ किस तरहसे आये?"

" अच्छी तरहसे।"

" इन लोगोंने तुमको यहाँ कैसे आने दिया?"

महामंत्रीने बड़ी उदासीके साथ कहा,—कॉर्नेलियस, तुम जानते ही हो कि आजकल हमें लोग बिल्कुल पसंद नहीं करते। मैं सुनसान छोटी गलियोंमेंसे होकर आया हूँ, जिससे किसीने मुझे देखा नहीं।

" जान, तुम चोरकी तरह लुक-छिपकर आये हो?"

" मैं देर किये बिना तुम्हारे पास आना चाहता था और मैंने वही किया, जो कि समुद्रमें तथा राजनीतिमें हवा अनुकूल न होनेपर करना चाहिए। मैं रास्ता बचाकर आया हूँ।"

इसी समय बड़े जोरका कोलाहल मैदानकी ओरसे सुनाई दिया। तिली नागरिक-सेनासे बातें कर रहा था।

कॉर्नेलियसने कहा—जान, तुम बड़े अच्छे नाविक हो। किन्तु मैं नहीं समझता कि तुम अपने भाईको बुटेनहोफ़ जेलसे इस क्रुद्ध जनतारूपी चट्टान और लहरों-मेंसे उसी तरह सुरक्षित निकालकर ले जा सकोगे, जिस तरह तुम हमारे जहाज़ी बेड़ेको आँवेर और एसकोकी लड़ाईमें सुरक्षित बचाकर निकाल ले गये थे।

जानने उत्तर दिया—कॉर्नेलियस, परमात्माकी दयासे हम इसकी कोशिश करेंगे। किन्तु मैं पहले तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ।

" कहो।"

इतनेमें शोर फिर बढ़ने लगा।

कॉर्नेलियसने कहा—ओह, ये लोग कैसे क्रोधमें भरे हैं। यह क्रोध तुम्हारे प्रति है या मेरे?

"कॉर्नेलियस, मैं समझता हूँ कि यह हम दोनोंके प्रति है। भाई, मैं तुमसे

कहना चाहता हूँ कि ऑरेंज-दलवाले हमें फ्रांससे पत्र-व्यवहार या बात-चीत करके षड्यंत्र करनेका झूठा अभियोग लगाकर बदनाम करते हैं।"

"बेवकूफ़ कहींके।"

"हाँ। किन्तु वे हमपर यह अभियोग लगाते हैं।"

"किन्तु यदि हमारी यह बात-चीत सफल हो जाती, तो रीज, ओर्जे, वेजेल, और हॉइनबर्गमें जो हमारी पराजय हुई, वह न होती, फ्रांस राइन नदी पार न कर सकता और हालैंड अपनी दलदलों और नहरोंके बीच अब भी अपने आपको अजेय समझता।"

"भाई साहब, यह सच है। किन्तु इससे भी अधिक सच है कि मार्किस द'लूबुवा (फ्रान्सके परराष्ट्र-सचिव) के साथ हमारा जो पत्रव्यवहार हुआ है, वह यदि इस समय किसीके हाथ लग जाय, तो मैं कितना ही होशियार नाविक क्यों न होऊँ, मैं उस छोटेसे जहाज़को बचा नहीं सकता जो हम दोनों भाइयों और हमारी संपत्तिको हालैंडसे बाहर ले जायगा। इसी पत्र-व्यवहारको दिखाकर मैं सच्चे आदमियोंके सामने प्रमाणित कर सकता हूँ कि मुझे अपने देशसे कितना प्रेम है और उसकी स्वतन्त्रता तथा गौरवके लिए मैंने कितना त्याग किया है। किन्तु वही पत्र-व्यवहार अब यदि हमारे विरोधी और विजेता ऑरेंज-दलवालोंके हाथ लग जाय, तो वे उसीके ज़रिये हमारा सर्वनाश कर सकते हैं। प्यारे कार्नेलियस, मैं समझता हूँ कि डोर्टसे आते समय तुमने वे सब चिट्ठियाँ जला दी होंगीं।"

"भैया, मार्किस द'लूबुवाके साथ तुम्हारा पत्र-व्यवहार यह सिद्ध कर सकता है कि तुम अन्तिम समय तक देशभरमें सर्वोच्च, सबसे उदार, ईमानदार और योग्य व्यक्ति रहे। मुझे अपने देशकी प्रतिष्ठा प्यारी है और सबसे अधिक मुझे तुम्हारी प्रतिष्ठा प्यारी है। और भैया, मैंने इसी लिए उन चिट्ठियोंको न जलाकर होशियारीसे रक्खा है।"

यह सुनकर भूतपूर्व महामंत्री खिड़कीके पास जाकर शान्तिके साथ बोला—तो हम इस लोकमें तो नष्ट हो चुके।

"ऐसा नहीं है। हम सुरक्षित रहेंगे और हमें अपनी खोई हुई लोकप्रियता भी फिर प्राप्त होगी।"

"तो तुमने उन चिट्ठियोंका क्या किया है ?"

"मैंने वे अपने धर्मपुत्र वान-बार्लेको सौंप दी हैं। तुम उसे जानते ही हो वह डोर्टमें रहता है।"

"आह, कैसा सीधा-साधा भोला-भाला लड़का है! वह इतना पढ़ा लिखा और विद्वान् होकर भी केवल परमात्माके पैदा किये हुए फूलों और उनके पैदा करनेवाले परमात्माके विषयमें ही सोचता रहता है। तुमने ऐसी ख़तरनाक चीज़ उसे सौंप दी है, तो भैया, यह अबोध वान-बार्ले तो मारा गया समझो !"

"मारा गया ?"

"हाँ, क्योंकि वह या तो कमज़ोर होगा या मज़बूत। हमपर यहाँ जो कुछ बीत रही है, किसी न किसी दिन उसे मालूम होगी ही। और तब यदि वह मज़बूत होगा, तो उसे हमसे संबंध रखनेका गर्व होगा और यदि वह कमज़ोर होगा तो उसे हमसे घनिष्ठता दिखलाते डर लगेगा। यदि वह मज़बूत होगा, तो सब रहस्य स्वयं खोल देगा और यदि कमज़ोर होगा, तो उसे छिपा नहीं सकेगा, शत्रुओंको मालूम कर लेने देगा। हरएक हालतमें वह तो मारा ही जायगा। हम भी मारे जायँगे। तो भैया, चलो, समय रहते भाग चलें।"

कॉर्नेलियस अपने भाईका हाथ पकड़कर बिस्तरसे उठा। हाथपर बँधी हुई पट्टियोंके स्पर्शसे भाईका हाथ काँप उठा।

कॉर्नेलियस बोला—क्या मैं अपने धर्मपुत्रको पहचानता नहीं ? क्या वान-बार्लेके मस्तिष्कके हरएक विचार और मनके हरएक भावको पढ़ना मैं नहीं सीखा ? तुम मुझसे पूछते हो कि वह कमज़ोर है या मज़बूत। वह न कमज़ोर है और न मज़बूत; किन्तु वह कुछ भी हो, इससे क्या ? बात यह है कि वह जानता होता, तो रहस्यकी रक्षा करता, किन्तु वह तो रहस्यको जानता भी नहीं।

जानने आश्चर्यान्वित होकर सिर हिलाया।

कॉर्नेलियसने मुस्कराते हुए कहा—भाई, मैं ऐसा मूर्ख नहीं हूँ। मैं तुमसे फिर कहता हूँ कि वान-बार्लेको जो धरोहर मैंने सौंपी है, उसमें क्या है और उसकी क्या क़ीमत है, यह तो वह जानता ही नहीं।

जान बोला, तो अब समय है, फौरन उन कागज़ोंको जला डालनेके लिए हम वान-बार्लेके पास आज्ञा भेज दें।

"लेकिन यह आज्ञा ले कौन जायगा ?"

" मेरा विश्वास-पात्र नौकर क्रेक ले जायगा। वह घोड़ेपर हमारे साथ चलनेके लिए मेरे साथ आया है। और तुम्हें सीढ़ियोंपरसे नीचे उतरनेमें मदद देनेके लिए मैं उसे यहाँ जेलके अंदर ले आया हूँ। "

" जान, उन कीमती कागज़-पत्रोंको जलानेसे पहले एक बार भली भाँति सोच लो। "

" मेरे वीर भाई कॉर्नेलियस, मैंने अच्छी तरह विचार लिया है कि द'विट-भाइयोंकी प्रतिष्ठाकी रक्षाके लिए सबसे अधिक आवश्यक यह है कि उनकी जान सुरक्षित रहे। कॉर्नेलियस, हम ही मारे जायँगे, तो हमारे पक्षका समर्थन कौन करेगा? हमारी बातोंको अच्छी तरह जानता कौन है?"

" तो क्या तुम समझते हो कि अगर वे कागज़ उन लोगोंके हाथ लग जायँगे, तो वे हमें मार डालेंगे? "

जानने उत्तर न देकर अपना हाथ बाहरकी ओर बढ़ाया जहाँसे कि उसी समय बड़े ज़ोरसे लोगोंके गरजनेकी आवाज़ आई।

कॉर्नेलियसने कहा—हाँ, हाँ, मुझे यह कोलाहल सुनाई पड़ रहा है। किन्तु ये लोग कह क्या रहे हैं?

जानने खिड़की खोल दी। वहाँसे लोगोंकी गर्ज सुनाई दी—" देशद्रोहियोंकी मृत्यु! "

" कॉर्नेलियस, सुनते हो?"

" और देशद्रोही हैं कौन? हम? "

कॉर्नेलियसने ये शब्द आकाशकी ओर देखते हुए और कंधे ऊँचे करके कहे।

जानने जवाब दिया, हाँ हम हैं।

" क्रेक कहाँ है?

" मैं समझता हूँ कि तुम्हारे कमरेके दरवाज़ेपर। "

" तो उसे अंदर बुला लो। "

जानने दरवाज़ा खोल दिया। नौकर देहलीपर ही खड़ा था। जानने उसे पुकारकर कहा—क्रेक, अंदर आ जाओ और जो कुछ मेरा भाई कहे, उसे ध्यानसे सुनकर याद रक्खो।

" नहीं जान, मेरा कहना काफ़ी नहीं है, मुझे चिट्ठी लिखनी पड़ेगी। "

" क्यों, चिट्ठीकी क्या जरूरत है ? "

" क्योंकि जब तक उसे स्पष्ट लिखित आज्ञा न मिलेगी, वान बार्ले धरोहर न तो किसीको देगा और न जलायेगा । "

जानने पूछा—किन्तु भैया, क्या तुम लिख सकते हो ? तुम्हारे हाथ तो बिल्कुल जले हुए और कुचले हुए हैं ।

" अगर कलम और कागज मिल जाय, तो फिर देखना मैं कैसे लिखता हूँ । "

" पेन्सिल तो मेरे पास है । "

" तुम्हारे पास कुछ काग़ज़ भी हैं ? मेरे पास तो इन लोगोंने कुछ छोड़ा ही नहीं । "

" यह बाइबिल है । इसका आरम्भका कोरा पृष्ठ फाड़ डालो । "

" अच्छा । "

" किन्तु तुम्हारा लिखा, पढ़ा नहीं जा सकेगा । "

" तुम तो देखते रहो । ये उँगलियाँ, जिन्होंने जल्लादके शिकंजेका सामना किया है, और मेरी इच्छा-शक्ति, जिसने पीड़ाको हरा दिया है, दोनों मिलकर काम करेंगी । तुम शान्तिसे देखते रहो । जरा भी काँपे बिना चिट्ठी घसीट दूँगा ।"

सचमुच ही कॉर्नेलियस पेंसिल पकड़कर लिखने लगा । पेंसिलका दबाव उँगलियोंपर पड़नेसे खून निकल आया और उससे हाथोंपर बँधी हुई पट्टी भीग गई । महामंत्रीके माथेसे पसीना टपकने लगा । कॉर्नेलियसने निम्न-लिखित पत्र लिखा,—

" प्यारे धर्मपुत्र, जो कागज़ोंका बंडल मैंने सौंपा था, उसे जला दो । उसे बिना देखे बिना खोले ही फ़ौरन जला दो, जिससे कि तुम्हें मालूम न होने पावे कि उसमें क्या है । इस प्रकारके गुप्त पत्र जिसके पास पाये जायँगे, उसके लिए वे प्राणघातक हैं । उसे जला दो और कॉर्नेलियस तथा जान द'विटको बचा लो ।

" अब बिदा लेता हूँ । मुझे प्यार करना ।

२० अगस्त, सन् १६७२ ई०

—कॉर्नेलियस द'विट "

जानने आँखोंमें आँसू भरकर काग़ज़पर गिरी हुई खूनकी एक बूँदको पोंछ दिया। सब बातें ठीक तरहसे समझाकर वह चिट्ठी उसने क्रेकको सौंप दी और वह कॉर्नेलियसके पास लौट आया। कॉर्नेलियस इतने-से श्रमसे बिलकुल थक गया था और उसे मूर्च्छा सी आ रही थी।

जान बोला, जब क्रेक इस भीड़से परे निकलकर तालाबके उस पार सुरक्षित स्थानमें पहुँच जायगा, तब वह अपनी बड़ी सीटी ज़ोरसे बजायगा। उसे सुनकर हम यहाँसे चल पड़ेंगे।

पाँच मिनट बाद सीटीकी जोरकी आवाज़ ऊँचे ऊँचे पेड़ोंके शिखरोंको चीरती हुई आई और वहाँ गूँज गई। बाहरका शोर उसके सामने मंद पड़ गया।

जानने परमात्माको धन्यवाद देनेके लिए अपने हाथ आकाशकी ओरको उठा दिये।

कोर्नेलियस बोला—तो भैया, अब चलें।

३-जान द'विटका शिष्य

इधर बुटेनहोफ़ जेलपर जमा हुई लोगोंकी भीड़ अपने कोलाहलसे आकाश-पाताल एक कर रही थी, जो दोनों भाइयोंके लिए बड़े भयकी सूचक थी, यह देखकर जान द'विट अपने भाई कॉर्नेलियसको जल्दीसे ले जानेका विचार कर रहा था, उधर जैसा कि हम पहले ही कह आये हैं, नागरिक लोगोंका एक डेपुटेशन तिलीके घुड़सवारोंको वहाँसे हटानेका आज्ञा-पत्र लेनेके लिए टाउन-हाल गया हुआ था।

टाउनहाल बुटेनहोफ़से अधिक दूर नहीं था। इसी समय एक अपरिचित आदमी दिखलाई पड़ा। वह आरंभसे ही हरएक घटनाको बड़े ध्यानसे देख रहा था। वह भी, टाउनहालमें क्या होता है यह तुरंत जान लेनेके लिए औरोंके साथ साथ टाउनहालकी ओर चला।

यह आदमी बिलकुल नई उम्रका था। उसकी आयु मुश्किलसे २२ या २३ बरसकी होगी। वह बहुत कमज़ोर और दुबला-पतला दीख पड़ता था।

वह अपने पीले और लंबे चेहरेको माथे परसे बार बार पसीना पोंछते हुए रूमालसे ढककर छिपाये हुए था, क्यों कि निःसंदेह उस भीड़में वह पहिचाना जाना नहीं चाहता था। उसकी आँख शिकारी पक्षियोंकी आँखकी तरह तेज थी, नाक नुकीली और लंबी, मुख सरल और सुन्दर।

प्राचीन लोगोंने कहा है कि विजेता और डाकूकी आकृतिमें वही अन्तर है, जो चील और गिद्धकी आकृतिमें। पहला गंभीर, सचिन्त तथा होशियार रहता है।

उसके पीले चेहरे, दुबले-पतले शरीर और इस तरह होशियारीसे छिपकर चलनेके तरीकेको देखकर जान पड़ता था, वह या तो कोई बड़ा संदेहशील मालिक है या कोई बड़ा होशियार चोर। इस समय वह जिस तरह अपने आपको छिपाकर चल रहा था, उसे देखकर कोई पुलिसवाला तो उसे चोर ही समझता।

इसके सिवा वह बहुत मामूली कपड़े पहने था और ज़ाहिरा निशस्त्र था। उसकी भुजाएँ पतलीं किन्तु अनुभवशील थीं। उसका हाथ सूखा, श्वेत और कुलीनों जैसा था और वह एक अफ़सरके कंधेपर अपने हाथका सहारा देकर चल रहा था। यह अफ़सर हाथमें एक तलवार लिये हुए था और बुटेनहोफ़की सब घटनाओंको बड़े ध्यानसे देख रहा था।

टाउनहालके मैदानमें पहुँचकर पीले चेहरेवाले व्यक्तिने दूसरे आदमीको एक खुली हुई खिड़कीके किवाड़की आड़में खड़ा कर दिया और वह टाउनहालकी खिड़कीकी तरफ़ नज़र गड़ाकर देखने लगा।

लोगोंके गर्जनको सुनकर टाउनहालकी खिड़की खुली और उसमें एक आदमी भीड़से बातचीत करनेके लिए आता दिखाई दिया। वह आदमी बड़ा घबराया हुआ सा मालूम होता था और खिड़कीमें आगेको नहीं झुककर जंगलेसे पीछेहीको खड़ा था। युवकने सिर्फ़ आँखके इशारेसे अफ़सरसे पूछा कि यह कौन है? अफ़सरने जवाब दिया—यह डिपुटी बावेल्ट है।

"डिपुटी बावेल्ट कैसा आदमी है, क्या तुम जानते हो?"

"हुजूर, ईमानदार आदमी है। कमसे कम मैं तो ऐसा ही समझता हूँ।"

बावेल्टके स्वभावके इस वर्णनको सुनकर नवयुवकके चेहरेपर ऐसी विचित्र निराशा दिखाई दी और ऐसी उदासी स्पष्ट झलकने लगी कि उसे देखकर अफ़सर फ़ौरन बोल उठा—श्रीमान्, कमसे कम लोग तो ऐसा ही कहते हैं। मैं

नहीं कह सकता कि यह कहाँतक ठीक है । क्यों कि मैं बावेल्टको स्वयं व्यक्तिगत रूपसे नहीं जानता ।

युवकने कहा, ईमानदार आदमी ? तुम क्या कहना चाहते थे ईमानदार या बहादुर ?

" श्रीमान् मुआफ़ करें । मैं श्रीमान्से फिर भी कहता हूँ कि मैं जिस आदमीका चेहरा ही पहचानता हूँ, उसके स्वभावके विषयमें इतनी सूक्ष्म बातें बतलानेका साहस नहीं कर सकता । "

नवयुवकने धीरेसे कहा, अच्छा ठहरो, हम अभी देख लेंगे कि वह कैसा आदमी है ।

अफसरने सम्मति सूचित करते हुए सिर हिलाया और वह चुप हो गया ।

युवक बोला, यदि बावेल्ट ईमानदार आदमी है, तो वह इन पागलोंकी माँगको सुनेगा भी नहीं ।

उसने अपने मनकी घबराहटको बहुत छिपाना चाहा; किन्तु अफसरके कंधेपर रक्खी हुई उसकी उँगलियोंकी कँपकँपी और उसके फीके चेहरेको देखकर अफसरसे उसके मनोभाव छिप नहीं सके ।

तब नागरिकोंके डेपुटेशनके मुखियाने डिपुटी बावेल्टसे पूछा कि तुम्हारे साथी दूसरे डिपुटी कहाँ हैं ?

बावेल्टने दुबारा कहा—महाशयो, मैं आपसे पहले ही कह चुका हूँ कि इस समय मैं और महाशय आस्पराँ अकेले हैं और मैं अकेला किसी बातका निर्णय नहीं कर सकता ।

कई हजार आवाजें चिल्लाने लगीं—आज्ञा-पत्र, आज्ञा-पत्र ।

बावेल्टने बोलना चाहा, किन्तु इस कोलाहलमें उसकी आवाज सुनाई न दी और वह निराशाके साथ केवल हाथ हिलाता हुआ दिखलाई दिया । वह यह देखकर कि उसकी कोई नहीं सुनता खिड़कीसे लौट गया और आस्पराँको पुकारने लगा । जब महाशय आस्पराँ खिड़कीमें आये, तब लोगोंने जिस तरह दस मिनट पहले बावेल्टको प्रणाम किया था उसी तरह उससे भी दूने उत्साहसे आस्पराँका स्वागत किया ।

आस्पराँने भी वही बात कहनी चाही, किन्तु लोग उसका भाषण न सुनकर द्वार-रक्षकोंको जबरदस्तीसे हटाकर अंदर घुस गये ।

लोग टाउनहालके सदर दरवाजेसे अंदर धँसे चले जा रहे थे। नवयुवकने अफसरसे कहा—चलो, अन्दर चलें। मालूम होता है कर्नल, वाद-विवाद अंदर ही होगा। हम चलकर सुनें।

"श्रीमान्, श्रीमान्, होशियार रहिए।"

"किससे ?"

"इन डिपुटियोंमें बहुतसे आपके साथ रहे हैं और उनमेंसे कोई न कोई आपको पहचान लेगा।"

"हाँ, क्योंकि लोग मुझपर इस सब काण्डके लिए जनताको उभारनेका आरोप लगाते हैं। तुम्हारा कहना ठीक है।"

यह कहते कहते अपनी मनोकामनाको इतनी जल्दी प्रकट कर देनेके खेदसे नवयुवकके कपोल लाल हो गये। वह बोला, हम यहीं ठहरेंगे और यहींसे उन लोगोंको लौटता हुआ देखेंगे कि वे आज्ञापत्र लेकर आते हैं या खाली हाथ। और इसीसे हम इस बातका निर्णय कर लेंगे कि बावेल्ट ईमानदार आदमी है या बहादुर। मैं यही जानना चाहता हूँ।

अफ़सरने बड़े आश्चर्यसे नवयुवककी ओर देखते हुए कहा, किन्तु मैं समझता हूँ कि श्रीमान् एक क्षणके लिए भी इस बातकी कल्पना नहीं करते होंगे कि डिपुटी लोग तिलीके घुड़सवारोंको हटानेकी आज्ञा दे देंगे।

नवयुवकने सर्दमहरीसे पूछा, क्यों ?

"क्योंकि यदि वे ऐसी आज्ञा दे दें, तो वह कॉर्नेलियस और जान द'विटके मृत्युदण्डकी आज्ञा लिख देनेके बराबर है।"

राजकुमारने सर्दमहरीसे जवाब दिया, हम देखेंगे। मनुष्योंके हृदयोंमें जो कुछ है, उसे केवल परमात्मा ही जान सकता है।

अफ़सर अपने साथीके किसी प्रकारके भावसे रहित मुखकी ओर तिरछी दृष्टिसे देखकर पीला पड़ गया। इस अफ़सरमें ईमानदारी और बहादुरी दोनों बातें थीं।

टाउनहालके ज़ीनेसे लोगोंके पैरोंकी तथा कोलाहलकी आवाज़ आ रही थी। तदनंतर जिस कमरेमें बावेल्ट और आस्पराँ दिखाई पड़े थे, उस कमरेकी खिड़कीसे यह कोलाहल बाहर निकलकर सारे मैदानमें फैलता हुआ सुनाई पड़ने लगा। लोगोंके धक्केसे खिड़कीमेंसे बाहर गिर जानेके डरसे बावेल्ट और

आस्पराँ पहले ही अंदरकी ओर चले गये थे। तब लोग खिड़कियोंमेंसे इधर उधर दौड़ते हुए और शोर मचाते हुए दिखाई पड़ने लगे। सारा कौंसिल-हाल लोगोंसे भर गया। थोड़ी देरके लिए कोलाहल बन्द हो गया। फिर अचानक पहलेसे भी दूने ज़ोरसे कोलाहल उठा और उससे वह पुरानी इमारत नीचेसे ऊपर तक काँप उठी।

तब यह भीड़ बाजुओं और ज़ीनेसे होकर दरवाज़ेसे बाहर निकलने लगी। उसे देखकर ऐसा मालूम होता था, मानों पानीसे लबालब भरे हुए किसी हौज़के परनालेसे पानी ज़ोरसे निकल रहा हो।

इन लोगोंके आगे एक आदमी जा रहा था जिसका चेहरा मारे प्रसन्नताके बिगड़कर बिलकुल भद्दा हो गया था। यह आदमी दौड़ता हुआ नहीं, उड़ता हुआ जान पड़ता था। यह जर्राह टिकलेयर था। उसने सिरके ऊपर एक कागज़ हिलाते हुए कहा, "हमें मिल गया, मिल गया।"

अफ़सरने स्तब्ध होकर कहा—उन्हें आज्ञापत्र मिल गया।

नवयुवकने कहा, यह देखो, मैंने जान लिया। प्यारे कर्नल, तुम्हें मालूम नहीं था कि बावेल्ट ईमानदार है या बहादुर। वह न तो ईनामदार ही है और न बहादुर।

फिर वह निर्निमेष दृष्टिसे इस दौड़ती हुई भीड़को देखते हुए बोला, कर्नल, चलो, बुटेनहोफ़की ओर चलें। मैं समझता हूँ कि वहाँ एक अजीब दृश्य देखनेमें आयेगा।

अफ़सर बिना कुछ जवाब दिये अपने मालिकके पीछे पीछे चल पड़ा।

मैदानमें तथा जेलके आसपास अनन्त जन-समूह समुद्रकी तरह उमड़ रहा था, किन्तु तिलीके घुड़-सवार उसी तरह दृढताके साथ सफलतासे उसे रोके हुए थे।

तब कौंटके पास आती हुई इस भीड़की आवाज़ तेजीसे बढ़ती हुई सुनाई दी और उसने देखा कि उसका अगला सिरा इस तरह तेज़ीसे बढ़ा चला आ रहा है जैसे किसी लबालब भरे हुए तालाबका पानी बाँध एकदम टूट जानेपर उमड़ पड़ा हो।

उसी समय लोगोंके काँपते हुए हाथोंके ऊपर हवामें उड़ता हुआ एक कागज़ दिखाई दिया। तिलीने रकाबोंपर खड़ा होकर अपने लफ्टिनेंटको तलवारके सिरेसे छूते हुए कहा, मैं समझता हूँ कि इन कमबख्तोंको आज्ञा-पत्र मिल गया।

सचमुच ही वह आज्ञा-पत्र था। नागरिकोंकी भीड़ने बड़े आनन्द-कोलाहलसे, इसका स्वागत किया।

भीड़ हिली और भुजाएँ नीचे किये हुए और खूब चिल्लाते हुए तिलीके घुड़सवारोंकी ओर दौड़ी। किन्तु कौंट ऐसा आदमी नहीं था जो भीड़को अपने बिलकुल निकट आने देता। उसने जोरसे कहा,—रुक जाओ! रुक जाओ! यदि किसीने ज़रा भी मेरे घोड़ोंको छुआ, तो मैं अपने सवारोंको फ़ौरन हुक्म दूँगा कि आगे बढ़ो!

सौ आवाज़ोंने धृष्टतासे कहा, यह आज्ञा-पत्र है।

उसने आश्चर्यके साथ उसे लिया, उसपर एक दृष्टि डाली और उच्च स्वरके साथ कहा, जिन्होंने इस आज्ञा-पत्रपर हस्ताक्षर किया है वे वास्तवमें कॉर्नेलियस द'विटका वध करनेवाले जल्लाद हैं। मैं तो अपने हाथोंसे इस काले आज्ञापत्रका एक अक्षर भी न लिखता, भले ही मेरे हाथ काट डाले जाते।

एक आदमी उससे वह आज्ञापत्र लेना चाहता था, किन्तु तिलीने उसे तलवारके सिरेसे हटा दिया और कहा, ज़रा ठहरो। ऐसे कागज़ बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। सावधानीसे रखना चाहिए।

यह कहकर उसने उस कागज़को लपेटकर होशियारीसे अपने नीचेके कपड़ेकी जेबमें रख लिया, फिर अपने सवारोंकी ओर मुँह करके कहा, दाईं ओरको घूमो!

फिर धीरेसे वह इस तरह बोला कि कुछ ही लोगोंने उसकी आवाज़ सुन पाई—कसाइयो, अब अपना काम करो।

उसके जाते ही सब लोग घृणा और उन्मत्त आनंदके साथ चिल्लाने लगे।

घुड़-सवार धीरे धीरे जाने लगे।

कौंट सबसे पीछे जा रहा था। वह अन्त तक पागल भीड़की ओर देखता रहा। ज्यों ज्यों घुड़-सवार मैदान खाली करते जाते थे, त्यों त्यों भीड़ उसपर कब्जा करती जाती थी। पाठक समझते ही होंगे कि जब जान द'विट अपने भाईको उठनेमें मदद देकर उससे चलनेके लिए जल्दी कर रहा था, तो वह खतरेको कुछ बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बतला रहा था।

कॉर्नेलियस तब अपने भाई भूतपूर्व महामंत्रीके कंधेपर हाथ रखकर उठा और आँगनको जानेवाले ज़ीनेसे उतरने लगा।

ज़ीनेके नीचे उसे सुन्दरी रोज़ा थरथर काँपती हुई मिली। वह बोली, महाशय जान, कैसा दुर्भाग्य है !

जानने पूछा, बेटी क्या बात है ?

"कहते हैं कि ये लोग तिलीके घुड़सवारोंको यहाँसे हटानेके लिए आज्ञा-पत्र लेनेके वास्ते टाउनहाल गये थे।"

जानने कहा—अरे, अरे ! बेटी, अगर सवार यहाँसे चले जायँ, तो परिस्थिति हमारे लिए बहुत बुरी है।

लड़कीने काँपते हुए कहा, मैं आपको कुछ परामर्श दे सकती हूँ, अगर आप मेरा कहना मानें तो।

" बेटी कह, क्या जाने स्वयं परमात्मा ही तेरे मुँहसे बोल रहा हो।"

" मेरी सम्मतिमें तो आपका सदर सड़कसे जाना उचित नहीं है।"

" क्यों ? तिलीके सवार तो वहाँ अपनी ड्यूटीपर हैं ही।"

" हाँ, किन्तु उनको तो केवल जेलके सामने रहनेकी आज्ञा दी गई है और संभव है कि वे वहाँसे भी वापस बुला लिये जायँ।"

" निःसंदेह।"

" और क्या उनको शहरसे बाहर तक आपके साथ जानेकी आज्ञा दी गई है ?"

" नहीं।"

" तो आप ज्यों ही घुड़-सवारोंसे आगे निकलेंगे, इन उन्मत्त लोगोंके हाथोंमें जा पड़ेंगे।"

" किन्तु नागरिकोंकी सेना तो है ?"

" नागरिक लोगोंकी सेना ? वह तो सबसे अधिक भड़की हुई है।"

" तो फिर क्या करना चाहिए ?"

युवतीने डरते हुए कहा, महाशय जान, यदि आपकी जगह मैं होऊँ, तो मैं सदर दरवाज़ेसे न निकलकर पिछले दरवाज़ेसे निकलूँ। यह दरवाज़ा एक सुनसान गलीकी ओर खुलता है और सब लोग सदर सड़कमें सदर दरवाज़ेके सामने प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसलिए मैं छोटे दरवाज़ेसे निकलकर शहरके जिस दरवाज़ेसे शहरके बाहर जाना है, उसपर पहुँच जाऊँ।

जान बोला, किन्तु मेरा भाई चल नहीं सकता ।

कॉर्नेलियसने पूर्ण दृढ़ताके साथ कहा, मैं कोशिश करूँगा।

युवतीने पूछा, किन्तु क्या आप अपनी गाड़ी नहीं लाये ?

" गाड़ी तो सदर दरवाज़ेके सामने खड़ी है । "

युवतीने कहा, नहीं । मैंने समझ लिया था कि आपका कोचवान विश्वास-पात्र आदमी है और मैंने उससे पीछेके दरवाज़ेपर आपका इंतज़ार करनेको कह दिया है ।

दोनों भाई बड़े प्रेमके साथ एक दूसरेकी ओर देखने लगे । उनकी दृष्टिसे उस युवतीके प्रति कृतज्ञता प्रकट होती थी ।

महामंत्रीने कहा, अब हमें यह देखना है कि क्या ग्रीफ़स हमारे लिए यह दरवाज़ा खोलना पसंद करेगा ।

" नहीं, वे कभी नहीं खोलेंगे । "

" तो फिर ? "

मैंने पहले ही यह सोच लिया था कि वे नहीं खोलेंगे और जब पिता जेलकी खिड़कीसे एक सिपाहीसे बातचीत कर रहे थे मैंने चाबियोंके गुच्छेसे वह चाबी निकाल ली है । "

" तो वह चाबी तुम्हारे पास है ? "

" हाँ, यह है । "

कॉर्नेलियसने कहा, मेरी बेटी, तुमने मेरा जो उपकार किया है उसके बदलेमें तुम्हें देनेके लिए मेरे पास कोई चीज़ नहीं है । केवल एक बाइबिल है, जो मेरी कोठरीमेंसे तुम ले सकती हो । एक सच्चे ईमानदार आदमीकी यह अन्तिम भेंट है । मुझे आशा है कि वह तुम्हें मंगलदायिनी होगी । "

युवतीने जवाब दिया, महाशय कॉर्नेलियस, धन्यवाद । मैं हमेशा उसे अपने साथ रक्खूँगी, कभी अलग न होने दूँगी । फिर आह भरते हुए वह अपने आप बोली, यह कितने दुर्भाग्यकी बात है कि मैं पढ़ना नहीं जानती ।

जान बोला—बेटी, कोलाहल बढ़ता ही जाता है । मैं समझता हूँ कि हमें एक क्षण भी नहीं खोना चाहिए ।

" तो आइए । "

यह कहकर वह फ्रीजलैंडनिवासिनी सुन्दरी अंदरके रास्तेसे दोनों भाइयोंको जेलकी दूसरी ओर ले गई।

रोज़ा उनको रास्ता बतलाती जाती थी। वे दस बारह सीढ़ियोंके एक ज़ीनेसे उतरे और एक छोटा आँगन पार कर चोर दरवाजेपर पहुँचे और उसे खोलकर जेलके दूसरी ओर सुनसान सड़कमें पहुँच गये। वहाँपर उनकी गाड़ी तैयार खड़ी थी और उसका दरवाजा खुला हुआ था।

घबराया हुआ कोचवान बोला, मेरे मालिक, जल्दी कीजिए, क्या आप वह शोर सुन रहे हैं?

तब महामंत्रीने पहले कॉर्नेलियसको गाड़ीमें बिठाया और फिर रोज़ासे कहा—बेटी, हम बिदा लेते हैं। हम तुम्हारे प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दोंसे किसी तरह प्रकट नहीं कर सकते। हम दो मनुष्योंकी प्राण-रक्षा करनेके कारण ईश्वरसे तुम्हारी मंगल-कामना करेंगे। यह कहकर महामंत्रीने अपना हाथ बढ़ाया। रोज़ाने बड़े सम्मानके साथ उसको चूम लिया।

उसने कहा—जाइए, जाइए। मालूम होता है कि भीड़ दरवाज़ा तोड़कर जेलके अंदर घुसा चाहती है।

जान द'विट जल्दीसे गाड़ीपर चढ़कर अपने भाईके पास बैठ गया और गाड़ीका दरवाज़ा बंद करके कोचवानसे बोला—तेलहोक चलो।

तेलहोक शहरके एक दरवाज़ेका नाम था, जहाँसे श्वेनिंजन बंदरको रास्ता जाता था। इस बंदरगाहमें एक छोटासा जहाज़ दोनों भाइयोंकी प्रतीक्षा कर रहा था।

गाड़ीमें दो मजबूत बढ़ियाँ घोड़े जुते थे। वह इन दोनों भागनेवालोंको लेकर सरपट चली।

जब तक गाड़ी दीखती रही और सड़कके मोड़में ओझल नहीं हो गई, रोज़ा उसकी ओर टक लगाये देखती रही। फिर उसने जेलके अंदर आकर दरवाज़ा बंद कर लिया और चाबी कुएँमें फेंक दी।

लोग जेलके सामनेके मैदानको घुड़-सवारोंसे खाली कर चुके थे। अब वे ज़बरदस्ती जेलके दरवाज़ेको खुलवाकर अंदर घुसना चाहते थे। उनके इसी कोलाहलको सुनकर रोज़ाने पहलेसे ही इस अनिष्टकी आशंका की थी।

जेलर ग्रीफसने दृढताके साथ दरवाज़ा खोलनेसे साफ इनकार कर दिया। दरवाज़ा बहुत ही मजबूत था, फिर भी वह इस क्रुद्ध जनताके धक्कोंका सामना कब तक कर सकता ? ऐसा मालूम होने लगा कि वह जल्दी ही टूट जायगा। यह देखकर जेलर पीला पड़ गया और अपने मनमें सोचने लगा कि दरवाज़ा टूटने देनेसे क्या यह अच्छा नहीं है कि मैं स्वयं उसे खोल दूँ। उसी समय किसीने पीछेसे आकर धीरेसे उसका कपड़ा खींचा।

उसने मुँह फेरकर देखा, तो रोज़ा खड़ी है। वह बोला, तू इस क्षुब्ध जनताकी गर्ज सुन रही है न ?

" पिताजी, खूब अच्छी तरह सुन रही हूँ। अगर मैं आपकी जगह होती तो......"

" दरवाज़ा खोल देती। यही न ? "

" नहीं। मैं उन्हें दरवाज़ा तोड़ने देती। "

" लेकिन ये लोग मुझे मार डालेंगे। "

" हाँ, अगर वे आपको देख पावें। "

" जब अंदर आयँगे, तो मुझे देखेंगे कैसे नहीं ? "

" छिप जाइए। "

" कहाँ ? "

" गुप्त तहखानेमें। "

" किन्तु बेटी, तू ? "

" पिताजी, मैं भी आपके साथ छिप जाऊँगी। हम उसका दरवाज़ा बंद कर लेंगे और जब ये लोग जेलसे चले जायँगे, तब अपने छिपनेकी जगहसे बाहर निकल आयँगे। "

ग्रीफस बोला, हाँ, तू ठीक कहती है। यह आश्चर्यकी बात है कि तेरे इस छोटेसे सिरसे ऐसी अनोखी सूझकी बातें निकलती है।

लोगोंके हर्ष-चीत्कारके साथ साथ वह दरवाज़ा हिल उठा। रोज़ाने एक चोर दरवाज़ा खोलकर कहा—पिताजी, जल्दी कीजिए, जल्दी।

ग्रीफ़स बोला, हमारे क़ैदियोंका क्या होगा ?

" पिताजी, उनकी देख-भाल ईश्वर करेगा। आपकी देख-भाल मुझे करने दीजिए। "

ग्रीफ़स लड़कीके पीछे पीछे चला और जब कि दरवाज़ा लोगोंके धक्कोंसे धमसे टूटा, ठीक उसी समय इन लोगोंने भी अपने सिरपरका चोर-दरवाज़ा बन्द कर लिया।

यह तहख़ाना जेलके अधिकारियोंको ही मालूम था, और क्रान्ति आदि बड़े विप्लवोंके समय बड़े बड़े कैदी इसमें बंद कर दिये जाते थे, जिससे कोई उन्हें भगाकर न ले जाय। इसी गुप्त तहख़ानेमें रोज़ा अपने पिताके साथ सुरक्षित बन्द हो गई।

लोग जेलमें घुसकर ज़ोर-ज़ोरसे चिल्लाने लगे—

"देशद्रोहियोंकी मृत्यु! कॉर्नेलियसको सूली! मृत्यु! मृत्यु!"

४-क़ातिल जनता

नव युवक अफ़सरके कन्धेका सहारा कभी नहीं छोड़ता था, अपनी बड़ी टोपीसे अपने चेहरेको लगातार छिपाये रहता था, और लगातार रूमालसे अपना माथा और होंठ पोंछता था। वह बुटेनहोफ़के एक कोनेमें एक बंद दूकानकी आड़में अँधेरेमें छिपा हुआ इस पागल भीड़का तमाशा देख रहा था। ऐसा मालूम होता था कि अब इस तमाशेका अन्तिम पर्दा उठा ही चाहता है।

वह अफ़सरसे बोला—वान डेकेन, तुम ठीक ही कहते थे। डिपुटियोंने जिस आज्ञा-पत्रपर हस्ताक्षर किया है, वह वास्तवमें कॉर्नेलियसके लिए मृत्यु-दण्डका आज्ञा-पत्र है। इन लोगोंका चीत्कार तुम सुनते हो?

अफ़सर बोला—हाँ, मैंने ऐसा गर्जन कभी नहीं सुना। मालूम होता है कि कॉर्नेलियसकी कोठरी इन्हें मिल गई है। यह खिड़की उसी कोठरीकी है न, जिसमें कॉर्नेलियस बंद है?

वस्तुतः एक आदमी उस कोठरीकी खिड़कीकी लोहेकी छड़ोंको पकड़कर ज़ोरसे हिला रहा था, जिसमें कॉर्नेलियस रहते थे और जिसको छोड़े उन्हें दस मिनटसे अधिक नहीं बीते थे।

वह आदमी चिल्लाया—हुर्रा, हुर्रा, वह तो यहाँ है ही नहीं।

जो लोग पीछेसे आये थे और जेलके भर जानेके कारण अंदर नहीं जा सके थे, उन्होंने बाहरसे पूछा—कैसे ! वह यहाँ नहीं है ?

क्रोधान्ध मनुष्यने जवाब दिया, नहीं ! नहीं ! वह यहाँ नहीं है। वह तो बच निकला।

राजकुमारका चेहरा पीला पड़ गया। उसने पूछा, यह आदमी क्या कहता है ?

अफ़सरने कहा, श्रीमान्, जो कुछ यह कह रहा है वह यदि सच हो, तो बड़े सौभाग्यकी बात होगी।

" हाँ, निःसंदेह, यदि यह सच है तो बड़े भारी सौभाग्यकी बात होगी। परन्तु दुर्भाग्यसे यह सच नहीं हो सकती।"

अफ़सर बोला, अच्छा हम देखेंगे।

अब और भी बहुतसे भयानक चेहरे क्रोधसे दाँत पीसते हुए ऊपर चढ़कर खिड़कीसे चिल्ला रहे थे—बच निकला, भाग निकला, इन लोगोंने उसे भगा दिया।

बाहरसे सड़कमें खड़े हुए लोगोंने ज़ोर ज़ोरसे चिल्लाना शुरू किया—बच निकले, भाग निकले, चलो हम दौड़कर उन लोगोंका पीछा करें।

अफ़सर बोला, श्रीमान्, मालूम होता है कि महाशय कॉर्नेलियस द'विट वस्तुतः बच निकले।

राजकुमारने उत्तर दिया, हाँ शायद जेलसे, किन्तु शहरसे नहीं। तुम देखोगे कि बेचारेको शहरका दरवाज़ा बंद मिलेगा, जिसे कि वह खुला हुआ समझता होगा।

" तो क्या श्रीमान्, शहरके दरवाजोंको बंद करनेका हुक्म दिया गया है?"

" नहीं, मुझे मालूम नहीं। ऐसा हुक्म किसने दिया होगा ? "

" तो फिर ऐसा विचार आपके मनमें कैसे आया ? "

राजकुमारने असावधानीसे उत्तर दिया—दुर्घटनाएँ हुआ ही करती हैं और कभी कभी बड़े बड़े आदमी इन दुर्घटनाओंके शिकार हो जाते हैं।

ये शब्द सुनकर अफ़सरको अपने शरीरमें कँपकँपी सी दौड़ती हुई मालूम हुई, क्योंकि उसने समझ लिया कि क़ैदी अब बचेगा नहीं।

इस समय लोगोंके चीत्कारसे सारा आकाश गूँज उठा। उन्हें मालूम हो गया कि कॉर्नेलियस द'विट अब जेलखानेमें नहीं है।

अब कॉर्नेलियस और जानने तालाबसे परे निकलकर तेलहोककी सदर सड़क पकड़ ली थी। उन्होंने कोचवानसे कहा कि घोड़ोंकी चाल कुछ धीमी कर दो, जिससे किसीको संदेह न होने पावे।

किन्तु जब कोचवान बहुत दूर निकल गया, जब शहरका दरवाज़ा दूरसे उसे दीखने लगा, तब उसने सोचा कि जेल और मृत्यु तो बहुत दूर पीछे छूट गई और अब सामने स्वतंत्रता और जीवन है, इस लिए उसने किसी बातका विचार न करके घोड़ोंको फिर सरपट छोड़ दिया।

वह अचानक रुक गया।

जानने खिड़कीसे बाहर सिर निकालकर पूछा—बात क्या है?

कोचवान बोला—मेरे मालिक वह देखिए...

मारे डरके उसके मुँहसे इसके आगे बोली न निकली।

महामंत्रीने कहा—बात क्या है? अपना वाक्य पूरा करो।

"वह देखिए, दरवाजा बंद है।"

"कैसे? दरवाज़ा बंद है! दिनमें तो दरवाज़ा बंद नहीं रहा करता।"

"आप देखिए।"

जान द'विटने खिड़कीसे बाहर सिर निकालकर झाँककर देखा, तो सचमुच ही दरवाज़ा बंद था।

जान बोला—तू चला चल, मेरे पास भाईके देश-निकालेका आज्ञा-पत्र है। उसे देखकर द्वारपाल दरवाज़ा खोल देगा।

गाड़ी फिर चली; किन्तु ऐसा मालूम होता था कि कोचवान फिर उसी विश्वासके साथ घोड़ोंको नहीं हाँकता है।

जब जानने गाड़ीसे बाहर सिर निकाला, तो एक शराब बेचनेवालेने उसे देखकर पहचान लिया। यह आदमी बुटेनहोफ़ जाकर उस भीड़में शामिल होनेके लिए जल्दीसे अपनी दूकान बंद कर रहा था। उसे कुछ काम लग गया था, अतः वह अब तक नहीं जा सका था।

उसके मुखसे आश्चर्य-ध्वनि निकल गई। वह दो और आदमियोंके पीछे दौड़ा जो कि उसके आगे दौड़े जा रहे थे। सौ क़दम दौड़कर वह उनसे जा मिला। वे तीनों ठहर गये। उन्होंने गाड़ीको भागे जाते देखा, किन्तु

अभी तक उनको पूरा निश्चय नहीं था कि उसमें कौन है। इस बीचमें गाड़ी तेलहोक पहुँच गई।

कोचवानने पुकारा—दरवाज़ा खोलो।

द्वारपाल अपने घरके दरवाज़ेपर आकर बोला, खोलूँ? किस चीज़से खोलूँ?

कोचवान बोला—चाबीसे और किस चीज़से।

"हाँ, चाबीसे किन्तु वह मेरे पास हो तब न?"

"कैसे? क्या तुम्हारे पास दरवाज़ेकी चाबी नहीं है?"

"नहीं।"

"तुमने उसका क्या किया?"

"वह मुझसे ले ली गई है।"

"किसने ले ली?"

"किसने, जो संभवतः यह चाहता था कि शहरसे कोई बाहर न जाने पावे।"

महामंत्रीने खिड़कीसे बाहर सिर निकालकर और सब कुछ पानेके लिए सब कुछ ख़तरेमें डालते हुए कहा—मेरे मित्र, मुझ जान द'विट तथा मेरे भाई कॉर्नेलियसके लिए, जिसे मैं देश-निकालेके वास्ते बाहर ले जा रहा हूँ, दरवाज़ा खोल दो।

द्वारपालने जल्दीसे गाड़ीके पास आकर कहा—आह, महाशय द'विट, मैं निराश हूँ, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि चाबी मुझसे ले ली है।

"कब?"

"आज सुबह।"

"किसने?"

"बाईस बरसके एक दुबले पतले नव युवकने।"

"और तुमने चाबी उसे क्यों दे दी?"

"क्योंकि उसके पास हस्ताक्षर किया हुआ और मुहर लगाया हुआ एक आज्ञा-पत्र था।"

"किसका?"

"टाउनहाल-वालोंका।"

कॉर्नेलियसने शान्तिके साथ कहा—चलें, मालूम होता है कि हमपर आपत्ति ज़रूर आयगी।

जानने पूछा, क्या तुम्हें मालूम है कि दूसरे दरवाज़े भी बंद हैं?

"नहीं।"

जानने कोचवानसे कहा, चलो, ईश्वर मनुष्यको आज्ञा देता है कि जान बचानेके लिए जो कुछ भी किया जा सके, करो। किसी दूसरे दरवाजेपर ले चलो।

तब कोचवानने गाड़ीका मुँह फेरा।

जानने द्वारपालसे कहा, मेरे मित्र, तुम्हारी शुभ कामनाके लिए धन्यवाद। इरादा भी काम करनेके ही बराबर है। तुम हमारी जान बचाना चाहते थे और ईश्वरकी दृष्टिमें तुम्हें उस काममें सफलता मिली।

द्वारपाल बोला, ओह, क्या आप उधर देखते हैं?

जानने कोचवानसे कहा, सरपट दौड़ाकर इस भीड़को पार कर जाओ और बाईं तरफकी सड़कसे चलो। वही हमारी एक मात्र आशा है।

जिस भीड़के विषयमें जानने कहा, उसके बीचमें वे ही पूर्वोक्त तीन आदमी थे जिन्होंने गाड़ीको पहले देखा था और जब कि जान द्वारपालसे बातें कर रहा था, सात आठ आदमी और उनके साथ आ मिले थे।

इन नये आदमियोंका इरादा गाड़ीके विषयमें अच्छा नहीं था।

घोड़ोंको सरपट अपनी ओर आते देखकर वे राह रोककर खड़े हो गये और ज़ोर ज़ोरसे लाठियाँ घुमाते हुए बोले—ठहरो! ठहरो!

इधर कोचवान उनपर झुककर जोर जोरसे कोड़े फटकारता हुआ उनके बीचमें घुसकर गाड़ी निकाल ले गया। अन्तमें गाड़ी और वे लोग टकरा गये।

दोनों द'विट-भाई गाड़ीके अंदर बंद थे, इसलिए वे कुछ देख नहीं सकते थे। किन्तु उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि घोड़े पिछली टाँगोंके सहारे उछलकर चल रहे हैं और फिर बड़े जोरसे धक्का लगा। लुढ़कती हुई सारी गाड़ी हिल गई, फिर ऐसा मालूम हुआ कि वह किसी गोल और लचकीली चीज़पर, जो कि किसी गिरे हुए मनुष्यका शरीर-सा था, होकर जा रही है। फिर गाली-गलौजके बीचमें होती हुई आगे बढ़ी।

कॉर्नेलियस बोला, मुझे बड़ा डर लगता है कि कहीं हमारी गाड़ीके नीचे कोई कुचला तो नहीं गया।

जान बोला, सरपट! सरपट!

किन्तु उसके यह हुक्म देनेपर भी गाड़ी अकस्मात् रुक गई।

जानने पूछा, क्या बात है ?

कोचवानने जवाब दिया, आप उधर देखते हैं ?

जानने देखा कि गाड़ीको जिधर जाना था उस ओर सड़कके दूसरे सिरेपर बुटेनहोफ़की सारी भीड़ आ गई है, जो चिल्लाती और शोर मचाती हुइ बवंडरकी तरह बढ़ी चली आती थी।

जानने कोचवानसे कहा, ठहर जा। अब आगे चलना बेफ़ायदा है। अपनी जान बचा। हमारी मृत्यु तो आ ही चुकी।

पाँच सौ आवाज़ें एक साथ चिल्लाने लगीं, वे यहाँ हैं! वे यहाँ हैं!

एक आदमीके घायल शरीरको उठाये हुए कुछ लोग गाड़ीके पीछे आ रहे थे। उन्होंने सामनेसे आनेवाली भीड़को जवाब दिया, हाँ, वे हैं, देश-द्रोही! क़ातिल! जल्लाद!

यह घायल आदमी वही था जो घोड़ोंकी लगाम पकड़ लेना चाहता था और तब उसको घोड़ोंने उलट दिया था, तथा गाड़ी उसके ऊपर उतर गई थी। उस समय दोनों भाइयोंने गाड़ी किसीके शरीरके ऊपरको उतरती हुई अनुभव की थी और उन्हें झटका लगा था।

कोचवान ठहर गया। उसके मालिकने उससे बहुत प्रार्थना की, किन्तु उसने अपनी जान बचानेकी कुछ कोशिश न की। क्षण-भरमें गाड़ी आगे और पीछेसे आनेवालोंके बीचमें आ गई। उस भीड़में गाड़ी ऐसी दीखने लगी जैसे किसी समुद्रमें कोई द्वीप तैर रहा हो।

अचानक तैरता हुआ द्वीप ठहर गया।

एक आदमी लोहारका घन उठा लाया और उसने उससे मारकर घोड़ोंको गिरा दिया।

इसी समय एक मकानकी खिड़की खुली और उसमेंसे उस दुबले पतले नवयुवककी अँधेरी आँखें और पीला चेहरा दिखाई दिया। वह इस सब दृश्यको देख रहा था।

उसके पीछे अफ़सरका चेहरा दिखलाई पड़ा। वह भी ऐसा ही पीला था जैसा कि नवयुवकका।

अफ़सरने धीरेसे कहा, आह परमात्मन्! परमात्मन्! श्रीमान्, सामने वह क्या हो रहा है ?

उसे जवाब मिला, जरूर कोई बड़ा क्रूरतापूर्ण काम हो रहा है।

" आह, महाराज, आप देखते हैं, वे लोग महामंत्रीको गाड़ीसे खींचते हैं, उन्हें मारते हैं, काटते हैं। "

" सच है। मालूम होता है, ये लोग भयंकर क्रोधसे बिल्कुल पागल हो गये हैं। "

यह कहते हुए नवयुवकका स्वर बिल्कुल वैसे ही भावुकताशून्य रहा, जैसे कि अब तक रहा था।

" और सामने कॉर्नेलियस है। अब वे लोग गाड़ीसे उसे घसीट रहे हैं। उसके हाथ पैर तो पहले ही बिल्कुल जख्मी हो चुके थे और जल्लादोंकी यातनासे वह घायल हो गया था। और उधर देखो, उधर देखो, उधर देखो। "

" हाँ, वह कॉर्नेलियस ही तो है। "

अफसरने एक धीमी-सी चीख मारकर अपना मुँह फेर लिया।

कॉर्नेलियस गाड़ीकी सीढ़ीपर ही था, जमीनपर नहीं उतरने पाया था कि लोहेकी एक मोटी छड़ उसके सिरमें लगी। सिर फट गया।

वह उठा, किन्तु फिर गिर पड़ा।

तब कुछ लोग पैर पकड़कर उसे घसीटकर भीड़में ले गये। जहाँ जहाँसे वह घसीटा गया वह जगह खूनसे तर हो गई और उसके पीछे पीछे लोगोंका हर्ष-चीत्कार बढ़ता गया।

नवयुवकका चेहरा और पीला पड़ गया। ऐसा होना पहले असंभव मालूम होता था। उसकी आँखें बंद हो गईं।

अफ़सरने अपने कठोर-हृदय साथीके चेहरेपर करुणाके इस चिह्नको पहली बार देखा और उसके हृदयके इस प्रकार कोमल हो जानेसे लाभ उठानेकी इच्छासे वह बोला, महाराज, आइए, आइए, वे लोग यहाँ महामंत्रीको भी मार डालना चाहते हैं।

किन्तु नवयुवक पहले ही आँख खोल चुका था। वह बोला, ये लोग किसीकी सुनते थोड़े ही हैं। इनकी इच्छाके विरुद्ध कुछ बोलने या करनेमें बड़ा ख़तरा है।

अफ़सर बोला, श्रीमान्, क्या किसी तरह बेचारे जानको नहीं बचा सकते? ये तो आपके गुरु थे। यदि कोई उपाय हो, तो मैं अपनी जानतक देनेको तैयार हूँ।

ओरेंजके राजकुमार विलियमने (वही यह नवयुवक था) अपनी भौंहें सिकोड़कर क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहा—कर्नल वान डेकेन, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम फ़ौरन मेरी फ़ौजसे जाकर कहो कि वह शस्त्र लेकर तैयार रहे।

" किन्तु क्या मैं श्रीमान्को इन कातिलोंके सामने अकेला ही छोड़ जाऊँ ?"

राजकुमारने रूखेपनसे कहा, तुम मेरी कुछ चिन्ता मत करो। मैं अपनी रक्षा अपने आप कर लूँगा। तुम जाओ।

अफ़सर शीघ्रतासे वहाँसे चल दिया। इस शीघ्रताका कारण आज्ञा-पालनमें फुर्तीका उतना नहीं था जितना कि वह खुशी थी जो कि उसको दूसरे भाईके वधमें शामिल न होने और उस दृश्यके सामनेसे हट जानेसे अनुभव हुई।

वह कमरेका दरवाज़ा अभी बंद नहीं कर पाया था कि जिस घरमें जानका शिष्य छिपा था, उसके ठीक सामनेके घरके द्वारके आगेकी सीढ़ीपर जान अपनी पूरी शक्ति लगाकर किसी न किसी तरह चढ़ता दिखाई दिया। वह पुकार रहा था, " मेरा भाई, भैया कहाँ है।" चारों तरफ़से बीस आदमियोंने ज़ोरसे उसके घूँसे मारे जिससे वह गिर पड़ा। एकने मुक्का मारकर उसकी टोपी गिरा दी।

एक आदमीने कॉर्नेलियसकी आँतें निकाल ली थीं और उसके हाथ खूनसे सने हुए थे। उसने अपने वे खूनसे सने हुए हाथ जानको दिखलाये। वह आदमी दौड़ा चला आता था जिससे कि वह महामंत्री जानकी भी वही गति करनेके सुअवसरको न खो बैठे। एक और आदमी मरे-हुएकी लाशको फिर फाँसीपर चढ़ानेके लिए घसीटे ले जा रहा था।

जानके मुँहसे अत्यन्त करुणासूचक आह निकली और उसने अपनी आँखोंको हाथोंसे ढक लिया।

नागरिक स्वयंसेवक-सेनाका एक सिपाही बोला, तू अपनी आँखें बंद करता है, उन्हें मैं निकालता हूँ, मैं!

यह कहकर उसने जोरसे उसके चेहरेपर एक भाला भोंक दिया।

कॉर्नेलियसकी जो दशा हुई थी उसे देखनेका यत्न करते हुए जानने पुकारा, मेरे भाई, मेरे भैया, किन्तु रुधिरके प्रवाहसे वह अंधा हो गया और कुछ न देख सका।

एक और क़ातिलने उसकी ओर बंदूक उठाकर उसका घोड़ा दबाते हुए कहा, जा, तू भी उसीके पास जहन्नुममें चला जा। किन्तु बंदूक न चली।

तब उसने दोनों हाथोंसे उसकी नाल पकड़कर ज़ोरसे जान द'विटके सिरमें दे मारी।

जान लड़खड़ाकर गिर पड़ा।

किन्तु उसने अपनी पूरी शक्ति लगाकर उठते हुए बड़े ही करुणासूचक स्वरमें पुकारा, भैया!

यह देखकर नवयुवक उधर न देख सका और उसने अपनी खिड़की बंद कर ली।

इसके आगे और थोड़ा ही देखना बाक़ी था। एक तीसरे क़ातिलने अपना पिस्तौल उसकी तरफ़ ताना। इस बार पिस्तौल चल गया और उसने उसकी खोपड़ी उड़ा दी।

जॉन द'विट गिर पड़ा और फिर न उठा।

उसके गिरते ही सब लोगोंमें साहस आ गया। सब लोग उसके मृत शरीर-पर अपने अपने शस्त्र चलाकर अपनी वीरता दिखलाने लगे। किसीने हथौड़ा मारा, किसीने गदा मारी, किसीने तलवार या कटारके हाथ दिखाये, कोई रुधिरकी बूँदें निकालकर ही संतुष्ट हो गया, किसीने उसका कपड़ा फाड़ा।

जब उन दोनोंका शरीर अच्छी तरह घायल किया और फाड़ा जा चुका और उनकी खाल उधेड़ी जा चुकी, हाथ पैर तोड़े जा चुके, तो लोग उनके नंगे और खूनसे लथ-पथ मृत शरीरोंको घसीटकर ले गये। एक सूली बनाई गई और कुछ लोगोंने जल्लाद बनकर उनको टाँगोंके बल फाँसीपर लटका दिया।

तब सबसे कमीने और नीच लोगोंकी बारी आई। इन लोगोंने जीवित शरीरको छूनेका तो साहस नहीं किया था, अब ये मुर्दा मांसको काट-काटकर शहरमें ले जाकर 'जॉन और कॉर्नेलियसका मांस' पुकारकर एक एक टुकड़ा चार चार आनेको बेचते फिरे!

हम नहीं कह सकते कि बंद खिड़कीकी दरारोंमेंसे नवयुवकने इस भयानक नाटकका अन्तिम दृश्य देखा या नहीं, किन्तु जब वे लोग इन दोनों शहीदोंको फाँसीपर लटका रहे थे, उसी समय उसपर अपनी चिन्ता सवार हुई और वह अपने किये कार्यपर खुशी मनानेमें तल्लीन उस भीड़को पार करके तेलहोक दरवाज़ेपर पहुँचा। दरवाज़ा अभी तक बंद था।

द्वारपाल बोला, महाशय, क्या आप मुझे चाबी देंगे?

नवयुवकने उत्तर दिया, हाँ भैया, लो, यह है।

द्वारपालने आह भरते हुए कहा, कितने दुर्भाग्यकी बात है कि आप यह चाबी सिर्फ़ आध घंटा पहले नहीं लाये।

नवयुवकने पूछा, क्यों ?

"क्यों कि यदि चाबी पहले मिलती, तो मैं द'विट-भाइयोंके लिए दरवाज़ा खोल देता। उन्हें दरवाज़ा बंद देख करके लौट जाना पड़ा और वे उन लोगोंके हाथोंमें पड़ गये जो उनका पीछा कर रहे थे।

एक आदमीने जोरसे पुकरा, दरवाज़ा! दरवाज़ा! उसके स्वरसे मालूम होता था, जैसे उसे बड़ी भारी जल्दी हो।

राजकुमारने मुँह फेरकर देखा, तो वह आदमी कर्नल वान डेकेन था।

राजकुमारने कहा, अच्छा कर्नल! तुम हो? तुम अभी तक हेग नगरसे गये नहीं? तुमने मेरी आज्ञा-पालन करनेमें बड़ी देर लगाई।

कर्नलने जवाब दिया, श्रीमान्, अब मैं इस तीसरे दरवाज़ेपर आया हूँ। बाकी दोको मैंने बंद पाया।

"अच्छा, यह भला मानस अब हमारे वास्ते दरवाज़ा खोले देता है।" फिर द्वारपालसे राजकुमारने कहा, मेरे दोस्त, खोल दो।

कर्नल वान डेकेन उस दुबले पीले नवयुवकको श्रीमान् कहकर संबोधन कर रहा था, यह देखकर द्वारपाल भौंचक्का रह गया। उसे अब मालूम हुआ कि वह राजकुमार विलियम है। उसने तो युवकसे मामूली आदमीकी तरह बड़ी घनिष्ठतासे बातचीत की थी।

अपनी ग़लतीका प्रायश्चित्त करनेके लिए वह जल्दीसे दरवाज़ा खोलनेके लिए दौड़ा। दरवाज़ा अपने चूलोंपर चर्र-चूँ करता हुआ खुल गया।

कर्नलने विलियमसे पूछा, श्रीमान्, आपको क्या मेरा घोड़ा चाहिए?

"कर्नल, धन्यबाद। मेरे लिए एक घोड़ा पास ही खड़ा है।"

उसने अपनी जेबमेंसे सोनेकी एक सीटी निकाली और ज़ोरसे बजाई। उस ज़मानेमें ऐसी सीटी नौकरोंको बुलानेके काममें आती थी। उस सीटीके बजाते ही एक साईस घोड़ेपर सवार हाज़िर हुआ। इस साईसके हाथमें एक और घोड़ेकी लगाम थी।

विलियम बिना ही रकाबपर पैर रक्खे एकदम उछलकर घोड़ेपर सवार हो गया और एड़ लगाकर उसने लीड नगरकी राह ली।

उस राहपर पहुँचकर उसने पीछेकी ओर मुँह फेरकर देखा। कर्नल पास ही उसके पीछे पीछे आ रहा था। राजकुमारने अपने पार्श्वमें चलनेके लिए उसे इशारा किया।

बिना ही रुके उसने कहा, क्या तुम्हें मालूम है कि उन बदमाशोंने कॉर्नेलियसकी तरह जॉन द'विटको भी मार डाला?

कर्नल डरते डरते बोला, श्रीमान् आपके नवाब बननेके रास्तेमें ये दोनों कठिनाइयाँ मौजूद रहतीं, तो मैं उन्हें अधिक पसन्द करता।

नवयुवकने कहा, जरूर, ऐसा पसंद किया जा सकता है। जो कुछ हुआ वह न होता, तो अच्छा था। किन्तु अब क्या किया जा सकता है? किन्तु इसमें हमारा कुछ भी हाथ नहीं है। कर्नल, एड़ लगाये चलो। सरकार जो संदेश मेरे पास भेजेगी, उसको पहुँचनेसे पहले ही हमें आल्पेन पहुँचना है।

उससे बातचीत करके कर्नल फिर अपनी जगहपर चला गया और उसके सम्मानार्थ उसके पीछे चलता रहा।

ऑरेंजका विलियम भौंहें तानकर होंठ काटते हुए और घोड़ेको जोरसे एड़ लगाते हुए इस तरह गुनगुनाता जाता था कि फ्रांसका राजा लुई (सूर्य) जब अपने मित्र द'विट-भाइयोंकी जो गति हुई उसका समाचार सुनेगा, तब उसकी शकल देखने ही लायक़ होगी। उस समय उसका चेहरा मुझे देखनेको मिले, तो क्या ही अच्छा हो। अरे सूर्य, मेरा भी नाम विलियम 'कम बोलनेवाला' (Gillaumeb Saciturme) है, तू अपनी किरणोंको अपने ही पास रख।

वह अपने घोड़ेको तेज़ीसे दौड़ाने लगा। यह युवक राजकुमार फ्रांसके महाराजका भारी प्रतिद्वंद्वी था। उसे अभी अभी नयी शक्ति प्राप्त हुई थी, किन्तु फिर भी उसमें गंभीरता नहीं थी। इसीके निर्विघ्न सिंहासनपर चढ़नेके लिए हेगके निवासियोंने उन दोनों भाइयोंकी जान ली और कॉर्नेलियसके मृत शरीरोंकी सीढ़ी बनाई। ये दोनों भाई मनुष्यों और परमात्मा दोनोंकी दृष्टिमें बड़े ही भले मानस थे।

५-फूलोंका प्रेमी और उसका पड़ोसी

जब कि हेगवासी जान और कॉर्नेलियसके मृत शरीरोंके टुकड़े टुकड़े कर रहे थे, ऑरेंजका विलियम अपने विरोधियोंकी मृत्युसे निश्चिन्त होकर लीडकी राहपर दौड़ा चला जा रहा था और उसके पीछे पीछे कर्नल वान डेकेन आ रहा था। अब विलियम कर्नलका उतना अधिक विश्वास नहीं करता, क्योंकि उसने उसको आवश्यकतासे अधिक करुणापूर्ण पाया। इसके पहले वह उसका बहुत आदर करता था। उसी समय द'विट-भाइयोंका विश्वास-पात्र नौकर क्रेक एक अच्छे घोड़ेपर सवार नहरके किनारे किनारे सघन वृक्षोंकी छायामें दौड़ा चला जा रहा था।

शहरसे दूर निकल जाने और कुछ गाँव पारकर जानेपर जब उसे विश्वास हो गया कि अब मुझपर कोई संदेह नहीं करेगा, तो उसने घोड़ेको एक अस्तबलमें छोड़ दिया और एक डाककी नावमें बैठकर वह डोर्ट नगरको चल दिया। इन नावोंको घोड़े खींचते थे जो थोड़ी थोड़ी दूरपर बदले जाते थे। हालैंड देशमें झीलें और नहरें बहुत हैं। लोग वहाँ उनमें नावोंद्वारा एक जगहसे दूसरी जगह जाते आते हैं। नहरें जगह जगह मुड़ती थीं, वहाँ घोड़े बड़ी होशियारीसे नावको खींचकर ले जाते थे। नहरोंका जाल-सा फैला था। उनके बीचमें सुंदर सुंदर टापू थे, जिनमें बेत तथा अन्य लताएँ फूलोंसे लदी हुई बड़ी भली लगती थीं और उनमें पशुओंके झुंड बड़े आनंदसे चर रहे थे। उनके गलेमें घंटियाँ चमक रही थीं और वे दूरसे धूपमें चमकते हुए बड़े सुहावने प्रतीत होते थे।

क्रेकने दूरसेसे ही डोर्ट नगरकी पवनचक्कियाँ देखीं। उनको देखकर उसने दूरसे ही उस मुसकराते हुए नगरको पहचान लिया। उसको डोर्ट नगरके सुंदर लाल घर दिखाई दिये। इन घरोंकी ईंटोंकी बनी हुई नीवें नहरके पानीमें स्नान कर रहीं थीं। उनकी खिड़कियोंमें भारत और चीनके बने हुए सुंदर रेशमी परदे लटक रहे थे, जिनमें बीच बीचमें सुनहरे फूल थे। उनके पास ही मछली पकड़नेके लिए काँटे लगे थे। खिड़कियोंमेंसे लोग तरकारी आदि नहरमें

फेंकते हैं। उसे खानेके लिए ये मछलियाँ वहाँपर आ जाती हैं और इन काँटोंमें फँसकर पकड़ी जाती हैं।

क्रेकने नावपरसे उन पवन-चक्कियोंके पार वह सफ़ेद और गुलाबी घर देखा, जहाँ उसे जाना था। उस घरका ऊपरी भाग और बुर्जें ऊँचे ऊँचे वृक्षोंकी आड़में छिपी हुई थीं।

नगरके कोलाहलके बीच पहुँचकर नावसे उतरकर क्रेक इस घरकी ओर चला।

यह घर बिल्कुल साफ़ सुथरा, सफ़ेद और चमकदार था। सब जगह अच्छी तरह धुला हुआ था। कोनें आदि भी जहाँपर कि दृष्टि आसानीसे नहीं पड़ती, सामने दीखनेवाले स्थानोंसे भी अधिक अच्छी तरह पालिश किये हुए और स्वच्छ थे। इस घरमें एक बड़ा सुखी मनुष्य रहता था।

ऐसे मनुष्य बिरले ही देखनेमें आते हैं। यह मनुष्य कॉर्नेलियस द'विटका धर्म-पुत्र था। उसका नाम डाक्टर वान बार्ले था। वह बचपनसे ही उस घरमें रहता था जिसका अभी हमने वर्णन किया है। यह उसका वंशागत घर था। उसके बाप और दादा डोर्ट नगरके पुराने व्यापारी थे। वे अपनी भलमनसाहतके लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने भारतमें व्यापार करके तीन चार लाख रुपया कमाया था। जब सन् १६६८ में वान बार्लेके पूज्य और प्रिय माता-पिताकी मृत्यु हुई और वान बार्लेने थैलियाँ खोलीं, तो उसने उन रुपयोंको बिल्कुल नया, किसीसे न छुआ हुआ, पाया। उनमेंसे कुछपर सन् १६४० लिखा था और कुछपर सन १६१०। इससे मालूम होता था कि वे क्रमशः उसके पिता और पितामहके थे।

ये चार लाख रुपए इस कथाके नायक वान बार्लेके वास्ते केवल जेब-खर्चके लिए थे। क्योंकि उसका पिता इन रुपयोंके अतिरिक्त एक भारी जायदाद भी छोड़ मरा था, जिसकी वार्षिक आमदनी लगभग दस हज़ार रुपयोंकी थी।

वान बार्लेकी माताकी मृत्युके तीन महीने बाद उसका योग्य पिता भी चल बसा। मालूम होता है, माताने अपने पतिके लिए जिस प्रकार जीवनका मार्ग सुगम किया था, उसी प्रकार उसके लिए मृत्युका मार्ग भी सुगम बनानेके लिए वह उससे आगे ही चली गई। पिताने मृत्युसे पहले अन्तिम बार अपने पुत्रको आलिंगन करके कहा—

" यदि तू वास्तवमें जीना चाहता है, तो खा पी और मौज कर। क्योंकि यह कोई जीना नहीं है कि रात दिन दूकानमें या गोदाममें लकड़ीकी कुरसी या चमड़ेकी गद्दीपर बैठे बैठे काममें पिसता रहे। कभी तेरी भी मरनेकी बारी आयगी और यदि तुझे पुत्र प्राप्त करनेका सौभाग्य न मिला, तो तेरे बाद हमारा नाम लुप्त हो जायगा, और आश्चर्य नहीं कि मेरे ये रुपए किसी अजनबीके हाथमें पड़ें। इन रुपयोंने टकसालवाले, मेरे पिता और मेरे सिवा किसी दूसरेका हस्त-स्पर्श अनुभव नहीं किया। ये बिल्कुल नये चमकीले हैं। अपने धर्म-पिता कॉर्नेलियस द'विटका अनुकरण कभी न करना। उसने राजनीतिमें पग रक्खा है, जो सबसे अधिक कृतघ्नतापूर्ण पेशा है। जनता तुम्हारी की हुई लोक-सेवाका कुछ भी खयाल नहीं करती और इसका अन्त बुरा ही होता है। "

उस योग्य पिताकी मृत्युके बाद वान बार्ले बिल्कुल अनाथ हो गया। वह उन रुपयोंकी अपेक्षा अपने पिताको बहुत अधिक प्यार करता था।

तब इस बड़े घरमें अकेला वान बार्ले ही था।

उसके धर्म-पिता कॉर्नेलियसने बहुत प्रयत्न किया कि वह किसी अच्छे पदपर काम करने लगे, उसे सार्वजनिक कार्यसे प्राप्त होनेवाली प्रतिष्ठाका भी लालच दिखाया, किन्तु उसने उसे स्वीकार नहीं किया। एक बार वह अपने धर्म-पिताकी आज्ञासे उसके साथ 'सात प्रांत' नामक जहाजपर गया था। उस समय कॉर्नेलियस द'विट १३८ जहाज़ोंका सेनापति था और उनकी मददसे उसने फ्रांस और इंग्लैंड दोनोंकी सम्मिलित शक्तिको नीचा दिखा दिया था। जब वह अंग्रेजोंके 'राजकुमार' नामक जहाज़के पास पहुँचा, तो उसने देखा कि उस-पर इंग्लैंडके राजाका भाई यार्कका ड्यूक है। इस जहाजपर कॉर्नेलियसने ऐसी फुर्ती और होशियारीसे धावा किया कि यार्कका ड्यूक अपने जहाजको लिया हुआ समझकर फ़ौरन 'सेंट मिशेल' जहाजपर चढ़ गया। वान बार्लेने देखा कि हालैंडवालोंके गोलोंसे 'सेंट मिशेल' क्षत-विक्षत होकर भाग गया, 'कौंत द सॅंविक' जहाजके ४०० मल्लाह गोलियोंकी बाढ़ या लहरोंके थपेड़ोंसे समाप्त हो गये, इनके सिवाय और भी बीस जहाज़ युद्धका ग्रास बन गये, तीन हज़ार आदमी मारे जा चुके, पाँच हज़ार घायल हुए, फिर भी युद्धका कुछ भी परिणाम नहीं निकला, किसीके भी पक्ष या विपक्षमें कुछ भी फ़ैसला नहीं हुआ, और हरएक पक्ष अपने आपको ही विजयी बताता रहा, लड़ाई तुरन्त दुबारा शुरू

होनेके लिए ही बंद हुई और युद्धोंकी सूचीमें सौथवुडबे (Southwood bay) की एक लड़ाईका नाम और बढ़ गया; तब वान बार्लेने अपने धर्म-पितासे और साथ ही प्रतिष्ठासे भी बिदा ले ली, बड़े आदरके साथ महामंत्री जान द'विटके चरण छुए और डोर्ट नगरके अपने घरमें पुनः प्रवेश किया। यहाँ उसके पास पूर्ण शांति, २६ वर्षकी आयु, पूर्ण स्वास्थ्य, लोहे जैसा सुदृढ शरीर, तीक्ष्ण दृष्टि-शक्ति और चार लाख रुपए नकद तथा दस हज़ार रुपए सालानाकी आमदनीसे भी बढ़कर था यह विश्वास कि परमात्मा ज़रूरत भरको मनुष्यके लिए अवश्य देता है।

इसके बाद आनन्दसे समय बितानेके लिए उसने वनस्पतियों और कीट-पतंगोंका अध्ययन आरंभ किया, द्वीप-द्वीपान्तरोंके सब फूलों-पौधोंका संग्रह किया, और प्रांतभरके सब कीट-पतंगोंको इकट्ठा किया। इन सबके रंगीन चित्र बनाये, जो असली जैसे मालूम पड़ते थे। यह पुस्तक हस्त-लिखित रूपमें ही रही। यह सब करनेके बाद भी जब वह अपने सब समय और सबसे ऊपर अपने धनको ख़र्च न कर सका और उसका धन भयानक रूपसे बढ़ता गया, तो उसने एक ऐसा काम चुना जो उस देश और उस समयका सबसे अधिक नाजुक, सुंदर और ख़र्चीला था।

उसे गुले लालाका शौक लगा।

उन दिनों हालैंड और पुर्तगालवाले इस फूलकी नई नई सुन्दर किस्में पैदा करनेमें एक दूसरेसे होड़ कर रहे थे। उन्हें इस फूलकी खेतीका इतना शौक़ लगा कि वे इसे देवताकी तरह आदर करने लगे। यह फूल पूर्वसे आया था। उन्होंने ऐसे सुन्दर सुन्दर फूल पैदा किये कि उनको देखकर ब्रह्माको भी ईर्ष्या होती थी।

थोड़े ही दिनोंमें वान बार्लका नाम बहुत प्रसिद्ध हो गया। डोर्टसे मों नगर तक जहाँ देखो वहाँ उसके गुले लालाके फूलोंकी चर्चा थी। उसके फूलोंकी क्यारियों, गमलों और नये पौधे रखनेके सूखे कमरोंको देखनेके लिए दूर दूरके देशोंसे लोग वैसे ही आने लगे जैसे कि पुराने जमानेमें प्रतिष्ठित रोमन लोग अनेक कष्ट झेलकर और समुद्र-यात्रा करके सिकंदरियाका प्रसिद्ध पुस्तकालय देखने जाते थे।

वान बार्लेने अपने फूलोंके संग्रहके लिए पहले अपनी जायदादकी वार्षिक

आमदनी ख़र्च की और फिर संग्रहको पूर्ण बनानेके लिए अपने नये रुपयोंकी अछूती थैलियाँ खोलीं। उसके परिश्रमका परिणाम भी बहुत अच्छा निकला। उसने पाँच नई किस्मके फूल पैदा किये, उनमेंसे एकका नाम उसने अपनी माताके नामपर ज़ेआन, एकका पिताके नामपर बार्ले और एकका धर्मपिताके नामपर कॉर्नेलियस रक्खा। बाकीके नाम हमें याद नहीं, किन्तु पुष्प-प्रेमी लोगोंको उस समयकी फूलोंकी सूचियोंमें ढूँढ़नेसे उनके नाम भी मिल सकते हैं।

सन् १६७२ में कॉर्नेलियस डोर्ट नगरमें आया और वहाँ अपने पुराने पुश्तैनी घरमें तीन महीने रहा। कॉर्नेलियस स्वयं तो डोर्टमें पैदा हुआ ही था, उसके पूर्वज भी वहाँहीके रहनेवाले थे और वहीं उनका घर था।

उन्हीं दिनोंसे कॉर्नेलियस जनतामें बहुत अप्रिय हो चला था। हाँ, डोर्टवासियोंमें वह इतना अप्रिय नहीं था और वे उसे फाँसी देनेलायक पाजी नहीं समझते थे। यद्यपि वे उसके विशुद्ध जन-तंत्र-वादको पसंद नहीं करते थे; किन्तु फिर भी उन्हें उसकी व्यक्तिगत वीरतापर बड़ा गर्व था। जब वह वहाँ आया, तो उन्होंने बड़े आदर और समारोहके साथ उसका स्वागत किया।

स्वागतके लिए नगरवासियोंको धन्यवाद देकर कॉर्नेलियस अपने पैतृक घरको देखने गया, और अपनी पत्नी और बच्चोंके आनेके पहले उसने वहाँ कुछ मरम्मत करनेकी आज्ञा दी।

यह सब करके वह अपने धर्म-पुत्रके घरकी ओर गया। सारे नगरमें शायद वही अकेला आदमी था जिसे अभी तक कॉर्नेलियस द'विटके डोर्टमें आनेका पता नहीं था।

कॉर्नेलियस द'विट राजनीतिमें भाग लेकर जितना अधिक जनताकी घृणाका पात्र बना था, वान बार्ले राजनीतिसे बिलकुल विमुख होकर और फूलोंमें लगा रहकर उतना ही अधिक प्रीति-पात्र बना था।

वान बार्लेसे उसके नौकर-चाकर भी बड़ा प्रेम करते थे। इन बातोंको देखकर वह इस बातकी कल्पना भी नहीं कर सकता था कि दुनियामें ऐसा भी कोई आदमी हो सकता है जो किसी दूसरेका बुरा चाहता हो!

मनुष्य-जातिके लिए यह बड़े शर्मकी बात है कि ऐसे भले मानस वान बार्लेका भी एक बड़ा भारी शत्रु था और वान बार्ले इस बातको जानता भी न था।

जबसे वान बार्ल गुले लालाका उपासक बना, तबसे उसने अपनी जायदादकी आमदनी और पिताके रुपये सब उसीकी भेंट कर दिये।

डोर्टमें ईज़ाक बोक्सतेल नामक एक आदमी था जिसका घर कॉर्नेलियसके घरसे बिल्कुल सटा हुआ था। उसने जबसे होश सँभाला तबसे ही उसे गुले लालाका शौक था। और वह इतना अधिक था कि उसका नाम सुनते ही उसका हृदय उछलने लगता और शरीर रोमाञ्चित हो उठता।

बोक्सतेलको वान बार्लकी तरह धनी होनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं था। इसलिए उसने बड़ा कष्ट उठाकर बड़ी होशियारी और धैर्यसे अपने घरमें एक छोटासा बगीचा तैयार किया, बाग़बानोंके क़ीमती नुसख़े डालकर उसकी मिट्टी तैयार की और उसमें वह ठीक उतनी ही गरमी और हवा पहुँचने देता, जितनी कि बाग़वानोंके शास्त्रमें लिखी हैं, उससे रत्ती भर भी कम या अधिक नहीं।

जिन काचके संदूकोंमें ईज़ाक अपने पौधोंको रखता था, उनकी गरमीको वह एक दरजेके बीसवें हिस्सेतक जानता था। वह इस बातका भी ख़याल रखता था कि हवा किधरकी चल रही है और उसको अपनी इच्छानुसार ऐसे कर देता था जिससे उसका दबाव फूलोंकी पँखड़ियोंपर अनुकूल पड़े और वह उनके खिलनेमें सहायक हो। उसकी इस सब मेहनतका फल भी हुआ। उसने कुछ अच्छे अच्छे फूल पैदा किये जो सुन्दर थे। बहुतसे पुष्प-प्रेमी लोग बोक्सतेलके फूल देखने आते थे। अन्तमें एक फूल बोक्सतेलके नामसे गुले लालाके प्रेमियोंकी दुनियामें मशहूर हो गया। यह फूल फ्रांस और स्पेन देशको पार करके पुर्तगाल तक पहुँचा। पुर्तगालका पदच्युत राजा छठा अल्फ़ोंसो तेसीर द्वीपमें अपने निर्वासनके दिन काटता था। वहाँ वह भी गुले लालाके पौधे लगाकर अपना समय बिताता था। उसने भी उपर्युक्त बोक्सतेलके फूलको देखकर कहा था—बुरा नहीं है।

अकस्मात् वान बार्लका ध्यान अपने अध्ययनकी ओरसे हटकर इस फूलकी ओर गया। उसने अपनी सारी शक्ति उसीकी ओर लगा दी, उसके लिए डोर्टके अपने घरमें कुछ परिवर्तन किये, उसको एक मंज़िल और ऊँचा बनवाया। ऊँचा बनानेसे बोक्सतेलके घरमें उसकी छाया पड़ने लगी और इस तरह उसने उसके घरसे आधा दर्जा गरमी ले ली और आधा दरजा ठंडक दे दी, साथ ही हवा भी रोक दी। इस प्रकार गरमी और हवाके विषयमें बोक्सतेलके सब हिसाब और प्रबन्ध गड़बड़ हो गये।

४७ फूलोंका प्रेमी और उसका पड़ोसी

पहले पहल उसके पड़ोसी बोक्सतेलकी आँखोंमें केवल इतना ही दुर्भाग्य था। उसने सोचा, वान बार्ले केवल एक चित्रकार ही तो है। यह तो एक बेवक़ूफ़ है, जो कि प्रकृतिकी सुंदर रचनाओंको चित्र-पटपर खींचकर उनकी शकल बिगाड़ा करता है। चित्रकारने अधिक धूप पानेके लिए अपने कारखानेको एक मंज़िल और ऊँचा कर दिया है, इसका उसे हक़ है। जैसे वान बार्ले चित्रकार है, वैसे ही मैं गुले लाला पैदा करनेवाला हूँ। वह अपने चित्र-पटोंके लिए धूप चाहता है और इसीलिए उसने मेरे गुले लालासे आधा दरजा गरमी ले ली है।

कानून वान बार्लेके पक्षमें था।

इसके सिवाय बोक्सतेलने यह भी देखा कि बहुत अधिक धूप गुले लालाको नुक़सान पहुँचाती है और प्रातःकाल तथा सायंकालकी मृदु धूपमें यह फूल दोपहरकी जलानेवाली धूपकी अपेक्षा कहीं अधिक अच्छी तरह बढ़ता है। वान बार्लेने यह मंज़िल बनाकर मेरे फूलोंके लिए मुफ्तमें एक छतरी तैयार कर दी है।

बोक्सतेलने यह सोचकर किसी तरह संतोष कर लिया।

शायद बोक्सतेल जो कुछ सोचता था वह ठीक नहीं था और उसके अन्तरतमके सब विचार इस प्रकारके नहीं थे, किन्तु उदाराशय लोग बड़ी आपत्तियोंके समय इसी प्रकार सोच कर लिया करते हैं।

किन्तु हाय! जब अभागे बोक्सतेलने देखा कि उस नई मंज़िलकी खिड़कियोंमें गुले लालाके सुंदर फूलोंके गमले हैं, तो उसके दु:खका ठिकाना न रहा।

वहाँपर हरएक फूलपर उसके नामके टिकट लगे थे। कोमल पौधोंके लिए सुन्दर सुन्दर बाक्स थे जिनमें हवा जानेका ऐसा इंतजाम था कि उसमें हवा तो जा सकती थी और काचके दरवाज़ोमेंसे धूप भी, लेकिन चूहे घूँस आदि नुकसान पहुँचानेवाले जीव न जा सकते थे। ये बाक्स हज़ारों रुपयोंकी क़ीमतके थे और गुले लालाके पौधे रखनेके काम आते थे।

बोक्सतेल यह सब तैयारी देखकर भौंचक्का-सा रह गया; किन्तु उसके दुर्भाग्यकी सीमा यहीं तक नहीं थी। वान बार्ले आँखोंको लुभानेवाली प्रत्येक वस्तुसे प्यार करता था। उसके चित्र-पट ऐसे सर्वांगपूर्ण थे जैसे बोक्सतेलके मालिक जेरार दौके तथा उसके मित्र मियेरीके थे। इन्हीं चित्रपटोंके वास्ते वान बार्ले प्रकृतिकी हरएक सुन्दर वस्तुका अध्ययन करता था। तो क्या यह संभव नहीं

था कि गुलेलालाके घरके अन्दरके भागको चित्रित करनेके लिए उसने यह सब सामग्री इकट्ठी की हो !

बोक्सतेलने यह सोचकर अपने मनको संतोष दे लिया; किन्तु फिर भी वह अपने कौतूहलको संवरण न कर सका। एक दिन सायंकालको उसने दोनों घरोंके बीचकी दीवारपर सीढ़ी लगाकर चढ़कर देखा, तो क्या देखता है कि बार्लेके घरमें सुन्दर सुन्दर क्यारियाँ बनी हुई हैं। उनमें नाना प्रकारके गुले लाला-के पौधे लगे हुए हैं। बढ़ियाँ चिकनी मिट्टी, बालू तथा नदीकी कीचड़ आदि ठीक परिमाणमें मिलाकर बनाई हुई है। इस किस्मकी मिट्टी इस पौधेके लिए बहुत अच्छी होती है। क्यारियोंकी डौलें इस तरह बनी हुई हैं कि अंदरकी मिट्टी बिल्कुल बाहर न गिर सके। दोपहरकी तेज धूप पौधोंको नुकसान पहुँचाने न पावे और सुबह-शाम धूप पौधोंपर अच्छी तरह पड़ सके, इसका ठीक प्रबन्ध है। पानी पर्याप्त परिमाणमें पास ही मौजूद है। हरएक बात पूर्णताको पहुँचा दी गई है। न केवल सफलता होनी निश्चित है, बल्कि उन्नतिके लिए भी पर्याप्त अवकाश है। अब तो वान बार्ले पक्का गुलेलाला-प्रेमी बाग़बान बन गया था।

बोक्सतेलने अपने मनमें वान बार्लेकी कल्पना की, जिसके पास चार लाख रुपये नक़द और दस हजार रुपये सालानाकी आय थी और जो अपनी सारी विद्या, बुद्धि और धन-शक्ति गुले लाला पैदा करनेमें लगा रहा था। उसको शीघ्र ही वान बार्लेको प्राप्त होनेवाली भारी सफलता दिखाई दी। उससे उसके हृदयमें ऐसा शूल उठा कि उसके हाथ पैर ढीले पड़ गये, उनसे सीढ़ी छूट गई, पैर लड़खड़ाने लगे और वह सीढ़ियोंसे नीचे लुढ़क पड़ा।

उसे अब मालूम हुआ कि वान बार्लेने चित्रके फूलोंके लिए नहीं किन्तु असली फूलोंके लिए उसके घरकी आधा दरजा गरमी हर ली थी। इस प्रकार वान बार्लेने धूपको अपनी इच्छानुसार पौधोंपर डालनेका अच्छेसे अच्छा प्रबंध किया था। उसकी गुले लालाकी जड़की गाँठें* (प्याज) रखनेकी कोठरी

---

* इस पौधेकी जड़ प्याज़की जातिकी बिल्कुल उस ही जैसी गाँठ या कंदके रूपमें होती है। उसे फ्रेंचमें प्याज़ और अंग्रेजीमें बल्ब कहते हैं। साधारणतः उस गाँठ (प्याज़)को जमीनमें गाड़नेसे ही यह पौधा उगता है; किन्तु बीजसे भी बोया जा सकता है।

इतनी प्रकाशयुक्त और हवादार थी कि बेचारे बोक्सतेलको स्वप्नमें भी नसीब न हो सकती थी। बोक्सतेलको तो इस कामके लिए अपनी सोनेकी कोठरी खाली करनी पड़ी थी और स्वयं अन्नादि रखनेके भंडारकी कोठरीमें सोना पड़ता था।

इस प्रकार उसके घरकी ड्योढ़ीपर ही दीवारसे लगा हुआ एक प्रतिद्वंद्वी था और शायद वह केवल प्रतिद्वंद्वी ही नहीं, विजयी प्रतिद्वंद्वी था। और वह भी कोई मामूली बाग़बान नहीं किन्तु कॉर्नेलियस ' द'विटका धर्म-पुत्र एक बड़ा प्रसिद्ध आदमी था।

जब पोरसपर सिकंदरने विजय पाई, तो पोरसने यह सोचकर मनको सान्त्वना दे ली कि मुझको ऐसे बड़े आदमीने जीता। किन्तु बोक्सतेलका मन इतना मज़बूत नहीं था।

वह सोचने लगा कि वान बार्ले एक नया फूल पैदा करके उसका नाम 'जान द'विट ' रख लेगा और एकका नाम 'कॉर्नेलियस' रख देगा। यह सब सोचते सोचते क्रोधसे वह थरथर काँपने लगा।

इस प्रकार इस ईर्ष्यालु बोक्सतेलने अपना भावी दुर्भाग्य देखा और इस बात-को जान लेनेपर उसकी रात बड़े कष्टसे बीती।

६-गुले लाला-प्रेमीकी ईर्ष्या

इस समयसे बोक्सतेलके मनमें एक तरहका भय-सा छा गया। किसी प्यारी बातको सोचनेसे हमारे मन और शरीरको जो शक्ति और उच्चता प्राप्त होती है वह, पड़ोसीकी पहुँचाई हुई हानिका विचार करनेके कारण बोक्स-तेलको प्राप्त न हो सकी।

वान बार्लेने अबसे अपना सब ईश्वरप्रदत्त बुद्धि-बल इस फूलमें लगा दिया और उसे दो तीन बड़े सुंदर फूल पैदा करनेमें सफलता हुई।

हारलेम तथा लीड नगरोंकी मिट्टी तथा जल-वायु इस फूलके लिए विशेषतः अच्छी है; किन्तु वान बार्लेने वहाँ वालोंको भी मात कर दिया। उसने इस

फूलमें बड़े सुन्दर सुन्दर रंग, सुन्दर सुन्दर आकृतियाँ और कई जातियाँ पैदा कीं।

फूलोंके इन्हीं प्रेमियोंने सातवीं शताब्दीसे यह कहावत चलाई थी कि—

"फूलोंकी अवहेला करना स्वयं परमात्माका अनादर करना है।"

सन् १६५३ ई० में गुले लाला-प्रेमियोंने इसे निम्नलिखित रूप देकर अपना गुरु-मंत्र बना लिया था—

"फूलोंकी अवहेलना करना परमात्माका अनादर करना है।"

"फूल जितना ही अधिक सुन्दर हो, उसकी अवहेलासे परमात्माका उतना ही अधिक अनादर है।"

"गुले लाला सबसे सुन्दर फूल है।"

"इस लिए जो गुले लालाकी अवहेला करता है, उससे अधिक परमात्माका अनादर करनेवाला और कौन है?"

इसी तर्कके सहारे हालैंड, फ्रान्स और पुर्तगालके चालीस पचास लाख गुले लालाके शौकीनोंने सारी दुनियाको कानून-बाह्य कर दिया था और जिन करोड़ों आदमियोंको इस फूलका शौक नहीं, उन्हें विधर्मी, क़ाफिर और मृत्यु-दंडके योग्य क़रार दिया था।

वान बार्लेको बड़ी सफलता प्राप्त हुई और उसका इतना नाम हुआ कि बोक्सतेलका नाम हालैंडके प्रसिद्ध गुले लाला-प्रेमियोंमेंसे उठ गया और उसकी जगहपर गुले लालाकी दुनियामें डोर्ट नगरका प्रतिनिधि यह भोला भाला विद्वान् वान बार्ले ही रह गया।

वान बार्ले हमेशा बोने, पौधोंकी देख-रेख करने, तथा गाँठें इकट्ठा करने आदिमें ही मग्न रहता था। सारी गुले लालाकी दुनियाँ उससे प्यार करती थी। उसे इस बातका स्वप्नमें भी ख़याल नहीं था कि उसके पड़ोसमें ही एक आदमी रहता है जिसका सिंहासन उसने छीन लिया है। उसने अपने प्रयोग जारी रक्खे और दो वर्षमें उसका बग़ीचा ऐसी सुन्दर चीज़ोंसे भर गया कि ब्रह्माके बाद कालिदास और शेक्सपीअरके सिवा और किसीने ऐसी सुन्दर सृष्टि न रची होगी।

यदि किसीको दुर्भाग्यका सच्चा रूप देखना हो, तो इस समय बोक्सतेलको

देखना चाहिए। जब कि वान बार्ले अपनी क्यारियोंको नहलाता, सींचता और खाद देता था, जब कि वह घुटने टेककर बैठा हुआ फूलकी हरएक पँखड़ी-की हरएक रेखाको ग़ौरसे देखता था और सोचता था कि उसमें किस तरहसे सुधार किये जा सकते हैं, किन किन रंगोंका मेल करनेसे फूल सुन्दर होगा, तब बोक्सतेल दीवारके पास उगे हुए एक गूलरके पेड़पर चढ़कर छिपा बैठा हुआ भौंहें चढ़ाये हुए और होंठ काटता हुआ अपने पड़ोसीकी हरएक चालको, उसके चेहरेपरके हरएक भावको, ग़ौरसे देखता रहता था, और जब कभी उसे वान बार्लेके चेहरेपर प्रसन्नताकी झलक दिखाई पड़ती, होठोंपर मुस्काराहट दृष्टिगोचर होती, आँखोंमें ज्योति दिखाई देती, तो वह उन सबको इतना कोसता, इतनी गालियाँ देता कि हम यह नहीं कह सकते कि ईर्ष्या और क्रोधसे भरे हुए उसके गरम गरम श्वास फूलोंकी डण्डियों और पँखड़ियोंमें पहुँचकर उन्हें मुरझाते और सुखाते थे कि नहीं।

बुराई जब मनुष्यके दिलमें घर कर जाती है, तो वह बहुत जल्दी फैल जाती है। अब बोक्सतेल वान बार्लेको देखकर ही संतुष्ट न होता था। उसका हृदय कला-मर्मज्ञ था और वह अपने प्रतिपक्षीकी कृतिको अच्छी तरहसे देखना चाहता था।

उसने एक दूरबीन ख़रीदी जिससे वह फूलको अपने घरसे ही खूब देख सकता था। कब गाँठसे अंकुर निकला, कब अंकुरमेंसे दो पत्तियाँ निकलीं, फिर किस किस तरह पौधा बढ़ा और अन्तमें बढ़कर उसमेंसे फूल निकले और वह रंग-बिरंगके पुष्प-पत्रोंसे सुसज्जित सुन्दर पौधा बना, आदि उसकी हरएक दशाको वह उसी तरह ध्यानसे देखता रहता था जिस तरह कि उस पौधेका मालिक।

यह अभागा ईर्ष्यालु अपने गूलरके पेड़के पत्तोंमें छिपकर बैठा हुआ वान बार्लेके बग़ीचेके फूलोंको देखता रहता था। उनकी शोभा उसको अंधा किये देती थी और उनकी सर्वांगपरिपूर्णता उसका दम घोंटे डालती थी।

वह कुछ देरतक फूलको सराहे बिना नहीं रह सकता था। इसके बाद उसे ईर्ष्याका बुखार चढ़ आता था, जो एक ऐसी घुलानेवाली बीमारी है जो हृदयको मथ डालती है और असह्य पीडा देती है। ऐसा मालूम होता है, मानों सैकड़ों बिच्छू हृदयमें डंक मार रहे हों।

इस पीडाको अनुभव करते हुए कितनी ही बार बोक्सतेलके मनमें आया कि रातको बार्लेके बाग़में कूदकर पौधोंको तोड़-फोड़ डालूँ, फूलोंको चबा जाऊँ और यदि उनका मालिक रक्षा करनेके लिए आये, तो उसे भी अपने क्रोधका शिकार बना डालूँ।

किन्तु गुले लालाको मारना एक सच्चे गुले लाला-प्रेमीकी दृष्टिमें अक्षम्य अपराध है। मनुष्यका वध करना भी उसके सामने कुछ नहीं।

इधर वान बार्ले रात-दिन फूलोंकी विद्यामें उन्नति करता जाता था। ऐसा मालूम होता था कि वह उसे माँके पेटसे लेकर ही पैदा हुआ है। उधर बोक्सतेलके क्रोधका पारा ऊँचा चढ़ता जाता था। उसने आवेशमें अपने पड़ोसीके बग़ीचेमें पत्थर और लकड़ी फेंककर फूलोंको नष्ट भ्रष्ट करनेकी सोची। किन्तु फिर उसके मनमें विचार आया कि अगले दिन जब इस शरारतका पता वान बार्लेको लगेगा, तो लोग सोचेंगे कि गली तो इस जगहसे बड़ी दूर है और इस सत्रहवीं शताब्दीमें पत्थर और डंडे आकाशसे तो बरस नहीं सकते जैसे कि पुराने जमानेमें बरसा करते थे तब, चाहे मैं रातको कितना ही छिपकर क्यों न काम करूँ, पकड़ लिया जाऊँगा और मुझे न केवल राज्यकी ओरसे क़ानून दण्ड देगा बल्कि मैं योरपभरके गुलेलाला-प्रेमियोंमें बदनाम हो जाऊँगा। तब बोक्सतेलने अपनी घृणा और ईर्ष्याको मक्कारीकी सानपर रखकर तेज़ किया और एक ऐसा उपाय सोचा जिससे उसको किसी तरहका ख़तरा न हो।

उसने बहुत दिनोंतक तलाश किया और अन्तमें उसे एक रास्ता मिल ही गया।

एक दिन सायंकालको उसने दो बिल्लियाँ पकड़कर उनकी पिछली टाँगोंमें एक दस हाथ लंबी रस्सी बाँध दी। फिर दीवारपर चढ़कर उनको ज़ोरसे उस शाही बग़ीचेमें—उस दिव्य उपवनमें—फेंक दिया, जिसमें केवल कॉर्नेलियस द'विट ही नहीं विराज रहा था किन्तु दूधके समान सफेद और लाल ब्रबांसोन, सनके रंगका मेर्ब्रे, हारलेमसे लाया हुआ मेर्वेइ (आश्चर्य), चमकीले रंगका कोलंबै और धुँधले रंगका कोलंबै ये सब फूल भी शानके साथ खड़े थे।

बिल्लियाँ जब धमसे नीचे गिरीं तो डर गईं। वे इधर उधर दौड़ने लगीं और एक दूसरेसे दूर भागनेकी कोशिश करने लगीं; किन्तु उनकी टाँगें तो एक दूसरेसे बँधी हुई थीं। अन्तमें उनको बाँधनेवाली रस्सी पूरी तन गई, दोनोंमें खूब खींचा-तानी होती रही और वे म्याऊँ म्याऊँ करती हुई इधर उधर दौड़ती

रहीं। रस्सीसे उलझकर कितने ही पौधे टूट-फूट गये, गमले गिर पड़े। अन्तमें आध घंटे तक खींचा-खींचीके बाद रस्सी टूट गई और बिल्लियाँ वहाँसे भाग गईं।

बोक्सतेल अपने गूलरके पेड़पर चढ़ा हुआ था। यद्यपि वह अँधेरेके कारण कुछ देख नहीं सकता था; किन्तु बिल्लियोंके गुर्रानेका शब्द उसे सुनाई दे रहा था और उसे सुनकर सब अनुमान करके वह फूला न समाता था।

बिल्लियोंने पौधोंकी जो दुर्दशा कर दी थी, उसको देखकर अपनी आँखोंको तृप्त करनेकी लालसा बोक्सतेलको इतनी प्रबल थी कि वह सुबह होने तक उस पेड़पर ही रहा।

प्रातःकालके समय वह वहाँ ठण्डके मारे जकड़ गया, किन्तु उसको ठण्ड मालूम नहीं हुई, बदलेकी आशा उसको गरमी पहुँचा रही थी। प्रतिद्वंद्वीको जो पीड़ा पहुँचेगी उसका विचार करके उसके सब कष्ट शान्त हो जाते थे।

प्राची दिशामें सुनहली साड़ी पहने उषाने दर्शन दिये। दूधके समान सफ़ेद घरका दरवाजा खुला और उसमेंसे वान बार्ले बाहर आया। उसके चेहरेपर मुस्कराहट खेल रही थी। मालूम होता है कि वह रातको सुस्वप्न देखता रहा था। वह अपने बग़ीचेकी ओर गया।

अकस्मात् उसकी दृष्टि क्यारियोंपर गई। उनकी मिट्टी शामको बिल्कुल इकसार दर्पणके समान कर दी गई थी, किन्तु अब उसमें लकीरें-सी खिंची हुई थीं और मिट्टी तमाम ऊबड़ खाबड़ हो गई थी। फिर उसने देखा कि जो पौधे बहुत ही सुन्दर क्रमसे लगे हुए थे वे इधर उधर पड़े हैं। उनकी हालत वैसी ही थी जैसी किसी सुसंगठित फ़ौजकी बीचमें बमका गोला आ गिरनेसे हो जाती है।

वान बार्लेका चेहरा पीला पड़ गया, वह जल्दीसे बग़ीचेके पास दौड़कर आया।

यह देखकर बोक्सतेल खुशीके मारे रोमाञ्चित हो गया। दस पंद्रह पौधे टूटे फूटे धराशायी हो रहे थे, कुछ मुड़ गये थे, कुछ बिल्कुल कट फट गये थे और मुरझा गये थे। उनके जख्मोंसे रस बह रहा था। यह रस उन पौधोंका वह कीमती खून था कि यदि संभव होता तो वान बार्ले उसकी जगह अपना खून देकर भी उसे लौटा लेता।

किन्तु आश्चर्य तो देखो, उससे बोक्सतेलको कितना आनन्द हुआ ! और वानबार्लके मनको कितनी चोट लगी ! जिन चार विशिष्ट गुले लालाके पौधोंको नष्ट करनेके लिए बोक्सतेलने यह सब काण्ड रचा था उनका बाल भी बाँका नहीं हुआ। वे अपने साथियोंकी लाशोंके बीच गौरवसे अपना मस्तक ऊँचा किये खड़े थे। वान बार्लको सान्त्वना देनेके लिए इतना पर्याप्त था और क़ातिलका दिल तोड़ देनेके लिए भी इतना ही पर्याप्त था। बोक्सतेलने जब देखा कि उसने अपराध भी किया और उसका कुछ फल भी न हुआ, तो उसने अपने सिरके बाल नोच डाले।

वान बार्लको यह सब देखकर दुःख तो हुआ किन्तु फिर भी उसने कहा— गनीमत है कि मेरे विशेष पौधे बिल्कुल अक्षत हैं, इस लिए मेरी जितनी हानि हो सकती थी नहीं हुई। उसके लिए उसने परमात्माको अनेक धन्यवाद दिये। वह इस दुर्घटनाका कुछ कारण न जान सका। उसको पूछ-ताछ करनेपर मालूम हुआ कि रात भर दो बिल्लियाँ उस ओर गुर्राती रहीं। ध्यानसे देखनेपर उनके पंजोंके चिह्न भी उस रणक्षेत्रमें पाये गये और उनके शरीरपरसे गिरे हुए कुछ बाल भी वहाँ मिले। भविष्यमें ऐसी दुर्घटना न होने पावे, इस लिए बगीचेमें पौधोंके बीच ही एक लड़केके सोनेका प्रबन्ध किया गया, जो पहरा देता रहे और उसके सोनेके लिए एक छोटीसी लकड़ीकी कोठरी बना दी गई।

बोक्सतेलने वान बार्लको आज्ञा देते सुना और देखा कि उसी दिनसे वह कोठरी बननी शुरू हो गई। उसे इस बातकी बड़ी खुशी हुई कि उसपर किसीने संदेह नहीं किया। इससे उसका उत्साह और बढ़ा और वह किसी और अच्छे मौक़ेकी ताकमें रहने लगा।

इसी समय हारलेम नगरकी गुलेलाला-प्रेमियोंकी सभाने यह घोषणा की कि जो कोई ऐसा गुले लाला पैदा करेगा जिसमें बिल्कुल भी दाग-धब्बे न हों और फूल बिलकुल काला हो, उसे एक लाख रुपएका इनाम दिया जायगा। उस समय ऐसा फूल पैदा करना असम्भव समझा जाता था, क्यों कि काला तो दूरकी बात है, गुलेलालाका धुँधला फूल भी कहीं देखनेमें न आया था।

यह सोचकर लोग कहते कि इनामके रखनेवाले एक लाखके बजाय बीस

लाखका इनाम भी रख सकते थे, क्योंकि ऐसा फूल तो दुनियामें कोई पैदा कर ही नहीं सकता।

इस घोषणासे गुले लाला-प्रेमी-संसारमें खलबली मच गई। कुछ गुले लाला-प्रेमियोंने ऐसा फूल पैदा करनेका विचार किया। यद्यपि वे लोग काले गुले-लालाको गदहेके सींग और काले हंसके समान असंभव ही समझते थे, तथापि फूल पैदा करनेवालोंकी कल्पना-शक्ति बड़ी प्रबल होती है।

वान बार्ले भी इन्हीं लोगोंमेंसे एक था। बोक्सतेल तो इसे केवल जुआ समझता था। ज्यों ही वान बार्लेके मनमें इस विचारने घर किया उसने अपनी तैयारी शुरू कर दी और लाल फूलोंको बादामी और बादामीको धुँधला बनानेके लिए विशेष प्रकारकी गाँठें बोनेकी विधियाँ तथा अन्य प्रयोग करने शुरू कर दिये।

अगले वर्ष वान बार्लेके फूल गहरे बादामी हो गये, जब कि बोक्सतेल बड़ी कठिनतासे बहुत हलके बादामी फूल ही पैदा कर पाया। बोक्सतेल वान बार्लेके बग़ीचेमें उन फूलोंको देख-देखकर जला करता।

बोक्सतेल अपने शत्रुके अपनेसे बहुत बढ़ जानेके कारण फूल पैदा करनेके कामसे खिन्न हो गया और अब आधा पागल होकर केवल वान बार्लेके फूलोंको देखनेमें ही अपना समय बिताने लगा।

उसके प्रतिस्पर्धीका घर बिल्कुल खुला था। बगीचेमें खूब धूप आती थी। कोठरियोंमें काचकी दीवारें थीं, जिससे दूरसे उनके अंदरकी चीजें दीखती थीं। प्रत्येक बाक्स, शेल्फ़ और हरएक अन्य वस्तुपर लेबिल लगे थे, जो दूरबीनसे साफ़ दिखते थे। बोक्सतेलकी पौध थाँवलोंमें सड़ गई, पौधे बिना पानीके सूख गये और अबसे उसे सिवाय वान बार्लेके फूलोंको दूरबीनसे देखते रहनेके और कुछ काम न रह गया। किन्तु वान बार्लेकी प्रक्रियाका सबसे विचित्र भाग बगीचेमें नहीं किया जाता था।

एक बजे, आधी रातके एक बजे, वान बार्ले अपनी प्रयोग-शालामें जाता। इस प्रकाशसे चमचमाती हुई कोठरीको बोक्सतेल अपनी दूरबीनसे ध्यानसे देखा करता। वह देखता कि वान बार्ले बीजोंको छान रहा है और छानकर चुने हुए बीजोंको विशेष रासायनिक पदार्थोंमें भिगो रहा है, जिससे उनके रंगोंमें कुछ परिवर्तन आ जाय। वह कुछ बीजोंको गर्म कर रहा है, कुछको गीला कर रहा है। फिर उन्हें कुछ दूसरे बीजोंसे एक किस्मकी पैबंदसे संयुक्त कर रहा

है। ये प्रक्रियाएँ बहुत ही सूक्ष्म और आश्चर्यजनक थीं। जो बीज काले रंगके वास्ते थे उन्हें वह अंधकारमें रखता था, जो लालके वास्ते थे उन्हें सूर्य या लैंपके प्रकाशमें रखता था और जो श्वेत रंगके वास्ते थे उन्हें बहुत-से पानी और दर्पणोंके बीचमें रखता था।

उसका यह जादू अश्रान्त परिश्रम और बुद्धिके संयोगका फल था। बोक्सतेल अपने आपको उसके अयोग्य पाता था और वह ईर्ष्याकी अग्निमें जला करता था। उसने अपने सारे जीवन, सारे विचारों और सारी आशाओंको दूरबीन-द्वारा निरीक्षणमें केंद्रित कर दिया।

बड़े आश्चर्य और खेदकी बात है कि पुष्प-विद्याका इतना प्रगाढ़ प्रेम भी बोक्सतेलमें भयानक ईर्ष्या और बदला लेनेकी इच्छाको शान्त नहीं कर सका। कई बार वान बार्लेको अपनी दूरबीनका लक्ष्य बनाते हुए वह दूरबीनमें बंदूककी कल्पना करने लगता था और तब बंदूकको चलाकर अपने शत्रुको मारनेके लिए उसकी उँगलियाँ दूरबीनमें बंदूकके घोड़ेको ढूँढ़ने लगती थीं।

इन्हीं दिनों जब कि एक ओर वान बार्ले अपने परीक्षणोंमें और उसका पड़ोसी उसपर जासूसीके काममें लगा हुआ था, कॉर्नेलियस अपने बाप-दादोंके घरको देखने डोर्ट नगरमें आया।

७-सुखी मनुष्यका दुर्भाग्यसे परिचय

कॉर्नेलियस अपने घरका सारा प्रबंध करके जनवरी सन् १६७२ को अपने धर्म-पुत्र वान बार्लेको देखनेके लिए उसके घर आया।

सायंकालका समय था।

कॉर्नेलियस पुष्प-विद्या बिल्कुल न जानता था, कलामें उसकी बिल्कुल रुचि न थी, फिर भी उसने वान बार्लेका सारा घर घूमकर देखा। उसने चित्रशालामें जाकर चित्रोंको भी ध्यानसे देखा और बगीचेमें गुले लालाके फूलोंको भी। उसने 'सात प्रांत' नामक जहाज़पर साथ देनेके लिए तथा उसका नाम एक भव्य फूलको देनेके लिए वान बार्लेको बहुत धन्यवाद दिया। जब कि वह

इस प्रकार वान बार्लेकी कला-शालाको देख रहा था, नगरकी जनता बड़े आदर और बड़े औत्सुक्यके साथ सुखी वाम बार्लेके दरवाज़ेपर खड़ी थी।

इस भीड़-भाड़ने बोक्सतेलका ध्यान आकृष्ट किया। वह इस समय भोजनकर रहा था। क्या मामला है, यह मालूम करके वह अपनी वेधशाला (गूलरके पेड़) पर चढ़ गया और ठंड-कोहरेकी कुछ परवा न करके उसने अपनी दूरबीन आँखोंपर लगाई।

सन् १६७१ के जाड़ोंके मौसमसे यह दूरबीन बहुत कम काम आई थीं। गुले लाला पूर्व देशसे आये हुए नाजुक राजकुमारोंकी तरह सर्दीको नहीं सह सकते और इसी लिए जाड़ोंके मौसममें वे खुले नहीं रक्खे जा सकते। शरदृतु-में उन्हें घरके अंदर गरम शेल्फोंके बिस्तर और अंगीठीकी गरमीकी आवश्य-कता होती है। वान बार्लेने जाड़ोंका सारा मौसम अपने पुस्तकालयमें पुस्तकों और चित्रपटोंके नीचे बिता दिया। वह कभी कभी काच-लगे हुए रोशनदान खोलकर सूर्यकी किरणोंको ज़बरदस्ती खींचकर गुले लालाओंपर डालनेके लिए उनकी कोठरियोंमें जाया करता था।

जिस सायंकालकी हम बात कर रहे हैं, कॉर्नेलियस और वान बार्ले नौकरोंके साथ घूम रहे थे। कॉर्नेलियसने वान बार्लेसे कहा, " बेटा थोड़ी देरके लिए इन नौकरोंको अलग भेज दो। मैं तुमसे एकान्तमें कुछ कहना चाहता हूँ। " वान बार्लेने स्वीकृति-सूचक इशारा करके कहा, महाशय, क्या आप कृपा करके मेरी प्रयोगशालामें चलेंगे ?

यह प्रयोगशाला मंदिरके सबसे अंदरके पवित्रतम भागके समान थी जहाँ सब लोगोंको जानेकी अनुमति नहीं थी। किसी नौकरने कभी उस कमरेमें पैर रखनेका साहस नहीं किया था। वान बार्लेकी धाय, जिसने उसको दूध पिलाकर पाला पोसा था, वहाँ झाड़ू लगा आती थी। वान बार्ले उसे बहुत प्यार करता था। और किसी नौकरको वह प्रयोगशालामें न जाने देता था। प्रयोग-शालाका नाम सुनते ही सब नौकर वहाँसे हट गये। वान बार्लेने लालटैन अपने हाथमें ले ली और वह कॉर्नेलियसको उस कमरेमें ले गया। इसकी अगली दीवार काचकी बनी हुई थी और बोक्सतेल उसी कोठरीको अपनी दूरबीनका लक्ष्य बना रहा था।

ईर्ष्यालु जासूस सदासे भी अधिक ध्यानसे अपने निरीक्षणमें लगा था।

सबसे पहले उसने देखा कि दीवारें और खिड़कियाँ प्रकाशसे चमकने लगीं। फिर दो छायाएँ दिखलाई दीं। इनमेंसे एक विशाल शानदार और दृढ थी। वह मेज़के पास आकर बैठ गई। इस मेज़पर वान बार्लेने लालटेन रख दी। बोक्सतेलने इस पीली मूर्तिको पहिचान लिया कि वह वान बार्लेकी थी।

कॉर्नेलियसने कुछ शब्द कहकर अपनी भीतरकी जेबसे कागज़ोंका एक सफ़ेद बंडल निकाला। यह बंडल मुहरोंसे अच्छी तरह बंद किया हुआ था। वान बार्लेने वह बंडल सावधानीसे लेकर उस आलमारीमें बंद कर दिया जिसमें उसकी बड़ी बड़ी क़ीमती हज़ारों रुपयोंको ख़रीदी हुई गुले लालाकी गाँठें बंद रहती थीं।

बोक्सतेल कॉर्नेलियसकी होठोंकी फड़कनको देखकर तो कुछ न समझ सका कि उसने क्या कहा, किन्तु जिस ढंगसे वान बार्लेने उस बंडलको लिया और बड़ी सावधानीसे उठाकर रक्खा, उससे उसने समझ लिया कि उसमें कोई बड़े महत्त्वपूर्ण कागज़ हैं।

पहले तो उसने सोचा कि उस बंडलमें सुन्दर बंगाल या सिंहल द्वीपसे आई हुई कुछ कीमती गुलेलालाकी गाँठें होंगी। फिर उसने विचार किया कि कॉर्नेलियसको फूलोंमें कुछ रुचि नहीं है, उसको तो राजनीतिमें रुचि है और राजनीति फूलोंकी तरह शान्तिमय नहीं है। इससे उसने अनुमान कर लिया कि उस बंडलमें केवल कागज ही हैं और वे भी किसी महत्त्वपूर्ण राजनीतिक विषयसे संबंध रखनेवाले।

कॉर्नेलियसने कोई राजनीतिसंबंधी कागज़ वान बार्लेको क्यों सौंपे? वान बार्ले तो राजनीतिसे बिल्कुल अनजान था और इस बातका उसे बड़ा गर्व था। वह कहा करता था कि राजनीति तो ऐसी ही दुर्ज्ञेय है जैसी कि लोहेसे सोना बनानेकी विद्या।

कॉर्नेलियस अपने देशवासियोंमें बहुत अप्रिय होता जा रहा था और इसीसे उसने ये कागज़ अपने धर्म-पुत्र वान बार्लेके घरपर रख दिये। उसे पूरा निश्चय था कि वान बार्लेके घर कोई तलाशी नहीं लेगा, क्योंकि वह राजनीतिक विषयोंसे बिल्कुल परे था, वह तो अपने फूलोंमें ही मग्न रहता था और उसपर कभी किसीको कुछ संदेह नहीं हो सकता था।

इसके अतिरिक्त बोक्सतेलने सोचा कि इस बंडलमें यदि लालाकी गाँठे

(मूल) होतीं, तो वान बार्ले जैसा गुले-लाला-प्रेमी बंडलको फ़ौरन खोलकर अपनी आँखोंको बीजोंके दर्शनसे तृप्त करता।

किन्तु वान बार्लेने ऐसा न करके उस बंडलको अपने धर्म-पिताके हाथोंसे बड़े आदरके साथ लिया और उतने ही आदरके साथ फ़ौरन आलमारीमें रख दिया और पीछेको सरका दिया, जिससे कि गाँठोंके लिए सुरक्षित की हुई उस जगहका बहुत-सा भाग वह न घेर ले।

बंडलके आलमारीमें रक्खे जाते ही कॉर्नेलियस उठ खड़ा हुआ और दरवाज़ेकी ओर चला। वान बार्लेने लालटैन उठाकर उसको रास्ता दिखाया और कॉर्नेलियस नीचे आकर अपनी गाड़ीमें बैठकर चल दिया।

बॉक्सतेलने जो कुछ अनुमान किया था वह गलत नहीं था। कॉर्नेलियसने वान बार्लेको जो धरोहर दी थी उसमें 'जान' द'विटके फ्रॉसके परराष्ट्र-सचिव लूवुबाके साथके पत्रव्यवहारके काग़ज़ात थे।

जैसा कि कॉर्नेलियसने अपने भाई जानसे कहा था उसने वान बार्लेको यह कुछ नहीं बतलाया कि ये काग़ज़ात कितने महत्त्वपूर्ण राजनीतिक विषयोंके हैं। सिर्फ़ इतना ही कहा कि मेरे सिवाय और किसीको यह बंडल मत देना और वान बार्लेने उसे सबसे बहुमूल्य गाँठोंकी आलमारीमें बंद कर दिया।

कॉर्नेलियसके चले जाने, सब कोलाहलके शान्त हो जाने और प्रकाशके बुझ जानेपर वान बार्लेको उस बंडलका कुछ ध्यान नहीं रहा और वह उसकी बात बिल्कुल भूल गया। किन्तु बोक्सतेल उसकी ही सोच रहा था। उसने एक सुचतुर मल्लाहके समान इस बंडलमें एक दूरवर्ती और अदृश्य बादल देखा, जो कि बढ़ते बढ़ते आगे चलकर एक भारी तूफ़ानका रूप धारण करेगा।

हमारी कहानीका आधार डोर्टसे लेकर हेग तक इन्हीं घटनाओंपर है। अगले परिच्छेदोंमें भी यही पाया जायगा और हम भी यह सिद्ध करनेका वादा करते हैं कि हालैंडमें भी कॉर्नेलियस और जानका इतना बड़ा शत्रु कोई नहीं था जितना बड़ा शत्रु कि वान बार्लेका उसके पड़ोसमें ही छिपा हुआ था।

इधर वान बार्लेको इसका कुछ भी पता न था और यह आनन्दसे अपने लक्ष्यकी ओर बढ़ता चला जा रहा था, अर्थात् हारलेमके गुलेलाला-प्रेमी संघके घोषणा किये हुए फूलको पैदा करनेमें उसे सफलता होती जा रही थी। उसने अब गहरे धुँधले रंगका फूल पैदा कर लिया था।

जिस दिन हेग नगरमें वे घटनाएँ घटित हो रही थीं जिनका वर्णन हम कर चुके हैं, उसी दिन दोपहरके एक बजे वान बार्ले गहरे धुँधले रंगके फूलोंके पौधेको उखाड़कर उसकी जड़की गाँठ लेकर आया। वह अपनी प्रयोग-शालामें बैठा उसे देख रहा था। इस जड़में तीन गाँठें थीं, उसने उन्हें अलग अलग कर लिया। अगले वर्ष (सन् १६७३) की वसन्त ऋतुमें इन गाँठोंसे हारलेमके गुलेलाला-प्रेमी संघके चाहे हुए बिल्कुल काले गुले लालाका पैदा होना निश्चित था।

२० अगस्त सन् १६७२ को दो-पहरके डेढ़ बजे वान बार्ले अपनी प्रयोग-शालामें हाथपर ठोड़ी धरे, पैरोंको मेज़के नीचेकी छड़पर रक्खे हुए उक्त गाँठोंको बड़े ध्यानसे देख रहा था। ये गाँठें बिल्कुल पूर्ण, अछूती, साफ़, और बे-दाग़ थीं। वे विज्ञान और प्रकृतिकी आश्चर्यमयी कृति थीं और इनकी सफलतासे वान बार्लेका नाम हमेशाके लिए अमर हो जानेवाला था।

वान बार्लेने अर्धोच्चारित स्वरसे कहा, मैं काले गुले लालाका आविष्कार करूँगा, मुझे एक लाख रुपयेका इनाम मिलेगा, जिसे मैं डोर्टके ग़रीबोंमें बाँट दूँगा। आज कल देशमें गृह-युद्धके कारण जो अशान्ति है और धनियोंके प्रति लोगोंके मनमें जो घृणा और ईर्ष्याके भाव फैले हैं, वे सब ग़रीबोंमें धन बाँट देनेसे दब जायँगे और मैं प्रजातंत्र-दल और ओरेंज-दल दोनों दलोंसे बिना डरे अपने बग़ीचेको समृद्ध अवस्थामें रख सकूँगा। इस बातका भय बिल्कुल नहीं होगा कि उपद्रवके समय भूखे लोग लूट-मार करने लगेंगे और मेरी गुले लालाकी गाँठोंको प्याज़की जगह खानेके लिए खोद ले जायँगे। मैं शान्तिसे अपने घरमें रहता हुआ अपने फूलोंकी तरफ़ ध्यान दे सकूँगा। ऐसा निश्चय करके मैं पारितोषिकका एक लाख रुपया सबका सब ग़रीबोंमें बाँट दूँगा। यद्यपि...

इतना कहकर वान बार्ले ठहर गया और उसके मुँहसे एक ठंडी साँस निकल पड़ी। वह बोला, यद्यपि अच्छा तो यह होता कि ये एक लाख रुपये मेरे बग़ीचेको बढ़ानेके काम आते या मैं इनसे पूर्व देशोंकी, जो सुंदर फूलोंके घर हैं, यात्रा करता। किन्तु खेद, अब उन बातोंको सोचनेका समय नहीं है। आज-कल तो जहाँ देखो वहाँ बंदूक, झंडे, रणभेरी और युद्ध-घोष दिखाई पड़ता है।

वान बार्लेने आकाशकी ओर देखकर एक ठंडी आह भरी। अपनी दृष्टि उन गाँठोंपर जमाई। उसकी दृष्टिमें ये गाँठें उन बंदूकों, रणभेरियों, झंडों और

जय-जयकारोंसे बढ़कर थीं, क्योंकि वह सोचता था कि बंदूक आदि चीज़ें तो ईमानदार आदमियोंके मनको केवल विक्षुब्ध ही करती हैं।

वह बोला, ये गाँठें कितनी सुन्दर हैं, कितनी चिकनी हैं, और कितनी सुडौल हैं, इनमें वह उदासीका रंग (काला रंग) है जिससे इनसे आबनूसकेसे काले फूल पैदा होना निश्चित है। इस काले रंगके कारण इनकी नसें नंगी आँखसे दिखाई भी नहीं देतीं। निःसंदेह मेरे फूलोंकी मातमी पोशाकको एक धब्बा भी नहीं बिगाड़ेगा।

मैंने रात-रात-भर जागकर खून पसीना एक करके इतनी मेहनतसे जिसे पैदा किया है, उस मेरे पुत्रका नाम क्या होगा? काला 'बार्लिया गुले लाला'।

हाँ बार्लिया गुलेलाला। कितना अच्छा नाम है! जब यह समाचार दुनियाके चारों कोनोंमें फैल जायगा, तब योरप भरके सब गुलेलाला-प्रेमी लोगोंमें अर्थात् सारे बुद्धिमान् योरपमें बिजलीसी दौड़ जायगी।

महान् काले गुले लालाका आविष्कार हो गया है! गुणज्ञ लोग पूछेंगे, उसका नाम?—काला बार्लिया गुलेलाला। क्यों जी बार्लिया क्यों?—लोग जवाब देंगे, क्योंकि उसके आविष्कारकका नाम वान बार्ले है। यह वान बार्ले कौन है भाई?—वही जिसने ज़ेआन, जान द'विट, कॉर्नेलियस आदि नामके पाँच बढ़िया फूल और भी निकाले हैं। यही तो मेरी महत्वाकांक्षा है। और इसमें राजनीति और युद्धकी तरह किसीके आँसू नहीं गिरेंगे, और लोग सदा काले बार्लिया गुले लालाका नाम याद रक्खेंगे, जब कि बड़े भारी राजनीतिज्ञ मेरे धर्म-पिताका नाम लोग उस फूलके नामसे याद किया करेंगे जिसका नाम मैंने उनके नामपर रक्खा है।—आह मेरे प्यारे गुले लाला...

वान बार्ले बोला, जब मेरे गुलेलालापर फूल लगेंगे उस समय यदि देशमें शान्ति स्थापित हो गई, तो मैं ग़रीबोंको केवल पचास हज़ार ही बाँटूँगा। पचास हज़ार भी काफ़ी बड़ी रक़म है और मैं इन लोगोंका किसी बातके लिए ऋणी नहीं हूँ। इन पचास हज़ारसे मैं गुलेलालामें सुगंध पैदा करूँगा। क्या ही अच्छा हो, यदि मैं गुलेलालामें गुलाब, चम्पा या चमेलीकी सुगन्ध पैदाकर दूँ। यदि मैं फूलोंके इस राजाको वह स्वाभाविक सुगन्ध दे सकूँ जो इसने अपने पूर्वीय सिंहासनसे योरपीय सिंहासनपर आते समय खो दी है। इसके आदिम निवास-

स्थान पूर्वी देशोंमें, भारत, चीन, गोआ और बंगालमें और सबसे बढ़कर उस द्वीपमें जो कि भूतलका स्वर्ग है और जिसे सिंहल कहते हैं, इस फूलकी सुगंध कितनी मनोमोहक होगी। मैं चाहता हूँ और कहता हूँ कि मुझे विश्वविजयी सिकंदर सीज़र बननेकी अपेक्षा वान वार्ले होना ही अधिक पसंद है।

वान बार्ले इन मोहक विचारोंमें मग्न था और इन्हीं मीठे मीठे स्वप्नोंमें डूबा हुआ था। अकस्मात् उसके कमरेकी घंटी बड़े ज़ोरसे बजी। इतने ज़ोरसे कभी कोई घंटी न बजाता था। हाथसे दबाकर पूछा, कौन है ?

नौकरने जवाब दिया, हुजूर हेगसे एक आदमी आया है।

" हेगसे आदमी...वह क्या चाहता है ? "

" हजूर, वह क्रेक है। "

" क्रेक ! श्रीयुत जान द'विटका विश्वास-पात्र नौकर ? अच्छा उससे कहो, ज़रा ठहरे। "

जीनेमेंसे एक आदमीकी आवाज आई, मैं ठहर नहीं सकता।

और उसी समय हुक्मकी परवाह न करके क्रेक प्रयोगशालामें घुस आया।

उसका इस तरहसे प्रयोगशालामें अचानक आ जाना वान बार्लेके घरके कायदोंका ऐसा भारी उल्लंघन था कि वह क्रेकको इस तरह प्रयोगशालामें घुस आते देखकर काँप गया और जिन बीजोंको वह हाथमें पकड़े हुए था वे गिर गये। उनमेंसे दो लुढ़क गये। एक तो एक छोटी मेजके नीचे लुढ़ककर चला गया और एक लुढ़ककर एक अँगीठीमें जा गिरा।

वान बार्लेने गाँठें उठानेके लिए झुकते हुए घबराकर चिल्लाकर कहा, माजरा क्या है ?

क्रेकने मेजपर चिट्ठीका कागज रखते हुए कहा, महाशय, आप इस चिट्ठीको फ़ौरन एक सेकंडकी भी देर किये बिना पढ़ लें।

यह कहकर वह वहाँसे फ़ौरन दौड़ा चला गया। उसने मुँह फेरकर पीछे देखा तक नहीं, क्यों कि उसे डोर्टमें भी हेगहीके समान अशान्तिके लक्षण दिखाई दिये थे।

वान बार्लेने गाँठोंको ढूँढ़नेके लिए मेजके नीचे हाथ फैलाते हुए कहा, अच्छा अच्छा भाई क्रेक, मैं तुम्हारी चिट्ठी अवश्य पढ़ लूँगा।

फिर मेजके नीचेसे गाँठको ढूँढ़कर उसे हथेलीपर रखकर ध्यानसे देखने लगा।

वह बोला, इसे तो कुछ चोट नहीं लगी। वह शैतानका बच्चा क्रेक ! प्रयोगशालामें इस तरह घुसा चला आता है ! अब दूसरी गाँठ देखें किधर है।

गाँठको हाथमें पकड़े हुए ही वह दूसरी गाँठको ढूँढ़नेके लिए अँगीठीकी तरफ़ बढ़ा और घुँटनोंके बल बैठकर अँगीठीको उँगलियोंसे कुरेदने लगा। सौभाग्यसे उस समय अँगीठीमें आग नहीं थी, केवल राख थी और राखपर गिरनेके कारण ही गाँठको कोई चोट नहीं आई। अन्ततः उस राखमेंसे वान बार्लेने गाँठको ढूँढ़ ही निकाला। उसे देखकर वह बोला, "इसे भी कुछ नुकसान नहीं पहुँचा।"

वान बार्ले अभी घुटनोंके बल बैठा गाँठको देख ही रहा था कि प्रयोगशालाके दरवाजेको किसीने इतनी जोरसे खटखटाया और वह इतनी जोरसे खुला कि वान बार्लेके कपोलों और कानोंपर उस दैत्यका उदय हुआ जिसे क्रोध कहते हैं और जिससे वान बार्लेको अभीतक परिचय नहीं था। वह गर्जकर बोला, अब क्या बात है ? क्या यहाँवाले सब पागल हो गये हैं ?

एक नौकर अंदर दौड़ता हुआ आया। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और मुखाकृति क्रेकसे भी अधिक भयभीत थी। उसके मुखसे 'श्रीमान् श्रीमान्' इन शब्दोंसे अधिक कुछ नहीं निकला।

वान बार्लेने अपने नियमोंके इस दो बार उल्लंघनसे किसी अनिष्टकी आशंका करते हुए पूछा, बात क्या है ?

नौकर बोला, मालिक, भागिए, जल्दी भागिए।

"भाग जाऊँ ? क्यों ?"

"हुजूर, घरभरमें सरकारी सिपाही भरे हुए हैं ?"

"वे क्या चाहते हैं ?"

"वे आपको चाहते हैं।"

"किस वास्ते ?"

"आपको गिरफ़्तार करनेके लिए।"

"मुझे गिरफ़्तार करनेके लिए ?"

"हाँ हुजूर। और उनके साथ एक मजिस्ट्रेट है।"

" यह सब माजरा क्या है ? कहकर कर वान बार्लने दोनों बीजोंको अपने हाथमें दबा लिया और वह भयपूर्ण दृष्टिसे जीनेकी ओर देखा ।"

नौकर बोला, वे ऊपर आ रहे हैं, ऊपर आ रहे हैं ।

इसी समय वान बार्लकी धायने ऊपर आकर रोते हुए कहा, ओ मेरे बच्चे, मेरे नेक मालिक, अपना सोना चाँदी लेकर भाग जाओ, भाग जाओ ।

वान बार्लने पूछा, धायमैं भागूँ किस राहसे ?

" खिड़कीमेंसे कूद जाओ । "

" २५ फीटकी ऊँचाईसे ? "

" नीचे ६ फीट तक पोली मिट्टी है । उसपर कूदो । "

" वहाँ तो मैं अपने गुले लालाके पौधोंपर गिरूँगा । "

" कोई हर्ज नहीं । कूद जाओ । "

वान बार्लने तीसरी गाँठ उठाई, खिड़कीके पास गया, उसे खोला, और नीचे निगाह डाली । पौधोंपर कूदनेसे उनकी जो दुर्गति होगी उसका तथा ऊँचाईका खयाल करके वह बोला, " कभी नहीं । " और पीछे हट गया ।

इसी समय ज़ीनेके परे सिपाहियोंके भाले दिखाई दिये ।

धायने आकाशकी ओर हाथ उठाये ।

वान बार्लको तो इस समय अपनी अमूल्य गाँठोंकी ही चिन्ता थी ।

वह उन्हें लपेटनेके लिए एक कागज ढूँढ़ने लगा । उसकी दृष्टि बाइबिलके उस आदिम पृष्ठपर पड़ी जो क्रेक चिट्ठीके रूपमें लाया था और जो मेजपर रक्खा हुआ था । घबराहटमें उसे इस बातकी भी याद नहीं रही कि वह कागज़ कहाँसे आया था और उसने उसमें गाँठोंको लपेटकर अपनी अंदरकी जेबमें छातीके पास रख लिया और प्रतीक्षा करने लगा ।

मजिस्ट्रेटके साथ सिपाहियोंने उसी समय अंदर प्रवेश किया ।

मजिस्ट्रेट वान बार्लको अच्छी तरह पहचानता था; किन्तु फिर भी उसने कायदेकी पाबंदीके लिए पूछा, क्या आपहीका नाम डॉक्टर वान बार्ल है ? ऐसा करनेसे उसके प्रश्नमें एक शान-सी आ गई ।

वान बार्लने मजिस्ट्रेटको नम्रतासे नमस्कार करके कहा, हाँ मास्टर वान स्पेनेन, आप तो मुझे जानते ही हैं ।

" तो हमें वे षड्यंत्र संबंधी कागज़ात दे दीजिए, जो आपने अपने घरमें छिपा रक्खे हैं । "

ये शब्द सुनकर वान बार्लेको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, षड्यंत्र-सम्बन्धी कागज़ ?

" आश्चर्यका नाट्य न कीजिए। "

वान बार्लेने जवाब दिया, मास्टर वान स्पेनेन, मैं सौगंधसे कहता हूँ कि मेरी समझमें ही नहीं आता कि आप क्या चाहते हैं।

मजिस्ट्रेटने कहा, डॉक्टर, मैं सब बात साफ़ करके आपसे कहता हूँ। हमें वे कागज़ दे दीजिए जो देशद्रोही कॉर्नेलियस द'विटने जनवरीके महीनेमें आपको रखनेको दिये थे।

अब वान बार्लेके मनमें प्रकाशका कुछ उदय हुआ।

वान स्पेनेनने कहा, अब आपको याद आया न ?

" हाँ, किन्तु आप तो षड्यंत्रसम्बन्धी कागज़ात माँगते हैं। मेरे पास इस प्रकारके कोई कागज़ात नहीं हैं। "

" तो आप इनकार करते हैं ? "

" हाँ, निश्चयसे। "

मजिस्ट्रेटने एक तेज दृष्टि सारे कमरेपर डालकर पूछा, क्या इसी कमरेको आप प्रयोग-शाला कहते हैं ?

" हाँ मास्टर वान स्पेनेन, हम सब प्रयोग-शालामें ही खड़े हैं। "

मजिस्ट्रेटने अपने कागज़ोंके ऊपर रक्खे हुए एक छोटे पुरजेको देखा, फिर कहा—हाँ ठीक।

फिर उसने वान बार्लेसे कहा, तो क्या आप मुझे वे कागज़ात देंगे ?

" मास्टर वान स्पेनेन, वे कागज़ात मैं कैसे दे सकता हूँ ? वे तो मेरे नहीं हैं। मेरे पास धरोहरके तौरपर रक्खे हुए हैं। धरोहर तो बड़ी पवित्र चीज़ है।"

मजिस्ट्रेटने कहा, डाक्टर वान बार्ले, मैं प्रजातंत्रकी ओरसे आपको यह आलमारी खोलने और उसमें जो कुछ कागज़ात रक्खे हैं उन्हें दे देनेकी आज्ञा देता हूँ।

मजिस्ट्रेटने उँगलीसे अँगीठीके पास रक्खी हुई ठीक उसी तीसरी आल-मारीको निर्देश किया।

कॉर्नेलियस द'विटने अपने धर्म-पुत्रको जो कागज़ात सौंपे थे, वे ठीक इसी

तीसरी आलमारीमें रक्खे थे, इससे मालूम होता था कि पुलिसको बिल्कुल ठीक ख़बर मिल गई थी।

वान स्पेनेनने वान बार्लेको अचंभेसे निश्चल देखकर कहा, आप खोलना नहीं चाहते ? तो मैं अपने हाथसे खोलूँगा।

आलमारीकी दराज़को पीछे तक खींचकर मजिस्ट्रेटने बीस या तीस गाँठोंके पैकेट निकाल डाले। ये पैकेट बड़ी होशियारीसे रक्खे हुए थे और प्रत्येकपर उसका नाम लिखा हुआ था। फिर काग़ज़ोंका वह बंडल निकला जो अभागे कॉर्नेलियस द'विटने अपने धर्म-पुत्रको सौंपा था और जैसी स्थितिमें यह तब रक्खा गया था वैसे ही अबतक रक्खा था, उसे किसीने छुआ तक न था।

मजिस्ट्रेटने उसकी मोहरें तोड़कर लिफ़ाफ़ेको खोल डाला और काग़ज़ोंपर सरसरी दृष्टि डालकर कहा—हमें जो ख़बर मिली थी, वह झूठ नहीं थी।

"कैसे, क्या बात है ?"

मजिस्ट्रेटने उत्तर दिया, महाशय वान बार्ले, अनजान न बनिए और मेरे साथ चले आइए।

डाक्टरने पूछा, क्या मैं आपके साथ आऊँ ?

"हाँ, क्योंकि प्रजातंत्रके नामसे आपको मैं गिरफ़तार करता हूँ।"

अभी तक गिरफ़तारियाँ ओरेंजके राजकुमार विलियमके नामसे नहीं होती थीं, क्योंकि उसे नवाबी मिले अभी थोड़े ही दिन हुए थे।

वान बार्लेने कहा, मुझे गिरफ़तार करते हैं ! मैंने अपराध क्या किया है ?

"डाक्टर, यह मेरा काम नहीं है। आप अपने जजोंके सामने अपनी सफ़ाई आदि दे सकते हैं।"

"कहाँ ?"

"हेगमें।"

वान बार्ले भौंचक्का-सा रह गया। उसने अपनी बूढ़ी धायको आलिंगन करके उससे बिदा ली, धाय बेहोश होकर गिर पड़ी, और फिर रोते हुए अपने नौकरोंसे हाथ मिलाकर वह मजिस्ट्रेटके साथ चल दिया। मजिस्ट्रेटने उसे राजकीय बंदीके रूपमें गाड़ीमें बंद करके हेग भेजनेके लिए घोड़ोंको सरपट दौड़ानेकी आज्ञा दी।

८-एक धावा

पाठकोंने अनुमान कर ही लिया होगा कि यह सब उस शैतान ईज़ाक बोक्सतेलकी करतूत थी और याद होगा ही कि उसने अपनी दूरबीनकी सहायतासे कॉर्नेलियस द'विट और वान बार्लेकी भेंटकी कोई भी बात जाननेसे नहीं छोड़ी थी। यह भी याद होगा कि वह सुन तो कुछ नहीं सकता था किन्तु उसने देख सब लिया था। यह भी याद होगा कि उसने, यह देखकर कि बंडल बड़ी सावधानीसे बंद किया गया था और वान बार्लेने उसे उस दराज़में रक्खा था जिसमें वह अपनी सबसे कीमती गाँठोंको रखता था, यह अनुमान कर लिया था कि उसमें कोई बड़े ज़रूरी कागज़-पत्र होंगे।

वान बार्लेकी अपेक्षा ईज़ाक राजनीतिक घटनाओंपर बहुत अधिक ध्यान देता था और जब उसने कॉर्नेलियस द'विटके भारी राजद्रोहके अपराधमें गिरफ़तार होनेका समाचार सुना, तो सोचा कि पिताके साथ उसके धर्म-पुत्रके भी गिरफ़तार होनेके लिए मेरा केवल एक शब्द कहना ही काफ़ी होगा।

इस बिचारसे ईज़ाक बड़ा खुश हुआ। किन्तु फिर यह सोचकर उसका हृदय काँप गया कि मेरे इस एक शब्दका परिणाम यह होगा कि वह आदमी फाँसीपर लटका दिया जायगा। किन्तु बुरे विचारोंकी यह विशेषता है कि बुरे हृदय धीरे धीरे उनसे परच जाते हैं और ईज़ाकने निम्नलिखित तर्कसे अपने मनको समझा लिया—

कॉर्नेलियस द'विट एक बुरा आदमी है, क्योंकि उसपर राजद्रोहका अभियोग लगाकर उसे गिरफतार किया गया है। मैं अच्छा आदमी हूँ, क्योंकि मुझपर कोई अभियोग नहीं है और मैं स्वतंत्र हूँ। और यदि कॉर्नेलियस द'विट बुरा आदमी है, जैसा कि उसपर अभियोग लगाकर उसकी गिरफ़तारीसे निश्चित है, तो उसका साथी वान बार्ले भी कम बुरा नहीं है क्योंकि उसने उसके कागज़पत्र अपने यहाँ रख छोड़े हैं। और क्योंकि मैं अच्छा आदमी हूँ, और हरएक अच्छे आदमीका यह कर्तव्य है कि वह बुरे आदमियोंके विरुद्ध

राज्यको सूचित करें, इसलिए मुझ ईज़ाकका वान बार्लेके अपराधोंसे पुलिसको सूचित करते रहना कर्तव्य है।

यह तर्कशैली, देखनेमें चाहे कितनी ही सुन्दर क्यों न मालूम हो, ईज़ाक बोक्सतेलके मनपर अधिकार न जमाती और न बोक्सतेलके हृदयको घुनकी तरह खानेवाली, बदलेकी इच्छाका ही गुलाम बनता, यदि ईर्ष्या-राक्षसीकी मदद लोभासुर न करता।

बोक्सतेलको अच्छी तरह मालूम था कि काले फूलका आविष्कार करनेमें वान बार्ले कहाँ तक पहुँच गया है।

डाक्टर वान बार्ले यद्यपि बहुत संयत था, फिर भी उसने अन्तरंग मित्रोंसे यह कह दिया था कि सन् १६७२ की वसन्त ऋतुमें हारलेमके पुष्पप्रेमी संघद्वारा घोषित एक लाखका परितोषिक उसे मिलना निश्चित है। वान बार्लेके इस निश्चयके कारण बोक्सतेलको बुखार-सा चढ़ा रहता था।

वह सोच रहा था कि यदि वान बार्ले गिरफ़्तार हो जाय, तो उससे उसके घरमें ज़रूर ही बड़ी गड़बड़ होगी। गिरफ़्तारीके दिनकी रातको उसके बगीचेमें कोई पहरा नहीं देगा और इस रातको दीवार फोड़कर मैं बग़ीचेमेंसे काले फूलकी गाँठ चुरा लाऊँगा। मुझे मालूम है ही कि वह गाँठ किस पौधेके नीचे है। तब काला गुले लाला-वान बार्लेके नहीं, मेरे घरमें फूलेगा और एक लाखका पारितोषिक वान बार्लेके स्थानमें मुझे मिलेगा। वह भारी सम्मान तो घातेमें ही होगा जो फूलको काला 'बोक्सतेलिया गुले लाला' नामसे पुकारनेसे प्राप्त होगा। इस परिणामसे, सिर्फ़ उसकी प्रतिशोधेच्छा ही पूर्ण नहीं होगी बल्कि, लोभ-दानव भी तृप्त होगा।

वह जागतेमें काले फूलकी बात सोचता था और सोतेमें भी उसे स्वप्नमें वही दिखाई देता था।

अन्तमें १९ अगस्तकी दोपहरको दो बजे यह प्रलोभन इतना प्रबल हो गया कि बोक्सतेल उसे संवरण न कर सका। उसने एक गुमनाम चिट्ठी पुलिसके नाम लिखी और उसे डाकमें छोड़ दिया। उस चिट्ठीकी सत्यता इस बातसे प्रमाणित होती थी कि उसमें पत्रोंके रखनेका ठीक ठीक स्थान बतलाया गया था।

काले विषधर सर्पके काटनेका फल भी इतना भयंकर और जल्दी नहीं होता, जितना इस चिट्ठीका हुआ।

उसी सायंकालको बड़े मजिस्ट्रेटको वह चिट्ठी मिल गई और उसने फ़ौरन अपने सलाहकारोंको अगले दिन सुबह इकट्ठे होनेके लिए कहा। अगले दिन सुबह उन सबने एकत्र होकर सलाह करके वान बार्लको गिरफ़तार करनेका निश्चय किया और उसके लिए आज्ञा-पत्र लिखकर वान स्पेनेनको यह काम सौंपा। वान स्पेनेनने यह काम एक ईमानदार हालैंडवासीकी तरह पूरा किया और जैसा कि पाठक देख चुके हैं वान बार्लको ठीक उसी समय गिरफ़तार किया जब कि हेगकी उन्मत्त जनता कॉर्नेलियस द'विट और जान द'विटके शरीरोंके टुकड़ोंको भून रही थी।

किन्तु, लज्जाके कारणसे हो या अपनी पापजन्य निर्बलताके कारण हो, बोक्सतेल आज बगीचे या प्रयोग-शालापर अपनी दूरबीन जमा कर न बैठ सका।

वान बार्लके घर जो कुछ हो रहा था वह उसे अच्छी तरह मालूम था, इस लिए उसे उस ओर देखनेकी आवश्यकता भी नहीं थी। वह बिस्तरेपरसे उठा तक नहीं। इसी समय उसके नौकरने उसके सोनेके कमरेमें प्रवेश किया। नौकर भी वान बार्लके नौकरोंकी हालत देखकर उसी तरह जलता था जिस तरह कि बोक्सतेल वान बार्लको देखकर। बोक्सतेल उससे बोला—मेरी तबीयत अच्छी नहीं। मैं आज उठूँगा नहीं।

नौ बजे रातके लगभग उसने गलीमें बड़ा शोर सुना और इस शोरको सुनकर वह काँप गया। इस समय वह सच्चे बीमारसे अधिक पीला पड़ गया था और सच्चे बुखार-चढ़े आदमीसे भी अधिक काँप रहा था।

उसका नौकर अंदर आया। बोक्सतेल रज़ाईमें छिप गया।

नौकरने कहा, मालिक, तुम्हें मालूम है कि इस समय क्या हो रहा है?

बोक्सतेलने कहा, क्या?

"महाशय बोक्सतेल, इस समय तुम्हारा पड़ौसी वान बार्ल भयंकर राजद्रोहके अपराधमें गिरफ़तार कर लिया गया है।"

नौकरने यह खबर इस तरह सुनाई जैसे कोई शुभ समाचार हो।

बोक्सतेलने लड़खड़ाती आवाज़से कहा—क्या वाहियात बकता है? यह कैसे हो सकता है?

" हुजूर, मैं कसम खाकर कहता हूँ, लोग तो ऐसा ही कहते हैं। और मजिस्ट्रेटको सिपाहियोंके साथ वान बार्लेके घरमें जाते तो मैंने अपनी आँखोंसे देखा है।"

बोक्सतेल बोला, यदि तूने खुद देखा है तो दूसरी बात है।

नौकर बोला, कुछ भी हो, मैं स्वयं जाकर सब हाल मालूम करके बतलाऊँगा। आप शान्त रहिए।

बोक्सतेल अपने नौकरके इस विषयके उत्साहको इशारे-मात्रसे बढ़ाकर संतुष्ट रह गया।

नौकर बाहर चला गया और पाव घंटा पीछे लौटकर बोला, हुजूर, मैंने जो कुछ भी कहा था, वह सब सच है।

" कहो तो सही, क्या क्या हुआ?"

" वान बार्लेको गिरफ़्तार करके गाड़ीमें बैठाकर हेग भेज दिया।"

" हेगको?"

" हाँ, लोग जो कुछ कहते हैं यदि वह सब सच हो, तो वान बार्लेके लिए लक्षण अच्छे नहीं हैं।"

" लोग क्या कहते हैं?"

" कसम, हुजूर, लोग कहते हैं, लेकिन कोई पक्की ख़बर नहीं है, कि शहरके लोग इस समय कॉर्नेलियस द'विट और जान द'विटका वध कर रहे होंगे।"

बोक्सतेलकी आँखोंके सामने जो भयानक दृश्य आ गया, मानों उसको न देखनेके लिए आँखें बंद करते हुए उसने घरघराई हुई आवाज़से कहा—ओह!

नौकरने कमेरेसे बाहर जाते हुए अपने मनमें कहा, मालूम होता है मालिक बहुत बीमार हैं जो कि वे ऐसी अच्छी ख़बर सुनकर भी बिस्तरसे नहीं उठे।

बोक्सतेल वस्तुतः बहुत बीमार था। उसकी हालत वैसी ही थी जैसी कि उस आदमीकी होती है जिसने किसीका वध कर दिया हो।

किन्तु उसने इस आदमीका दो उद्देश्योंसे वध किया था। पहला उद्देश्य तो पूरा हो गया, दूसरा अभी पूरा नहीं हुआ था।

रात हो गई। बोक्सतेल इसी रातकी प्रतीक्षामें था।

रात होते ही वह उठा और अपने गूलरके पेड़पर चढ़ा। उसका अनुमान

ठीक था। बग़ीचेमें पहरा देनेका किसीने ख़याल नहीं किया। घरभरके लोग घबराये हुए थे। उसने क्रमसे दस, ग्यारह और बारह बजते हुए सुने।

ठीक आधी रातको वह पेड़से उतरा। उसका हृदय धड़क रहा था, हाथ-पैर काँप रहे थे, चेहरा पीला पड़ गया था। उसने एक सीढ़ी उठाई, उसे दीवारसे लगाया और उसके एक छोरपर अन्तिम डंडेतक चढ़ गया। फिर वह कान लगाकर सुनने लगा।

सब कुछ सुनसान था। अर्ध रात्रिकी शान्तिको जरासी भी आहट भंग नहीं करती थी।

सारे घरमें केवल एक जगह रोशनी थी, अर्थात् धायके कमरेमें।

इस सुनसान और अंधकारने बोक्सतेलके दिलमें साहस पैदा किया। वह दीवारपर चढ़ा, वहाँ जरा देर ठहरा, और अच्छी तरह देख भाल लिया कि वहाँ किसी चीजका डर नहीं है। उसने सीढ़ीको अपनी तरफ़से खींचकर वान बार्लके बग़ीचेमें लगा दिया और नीचे उतर गया।

उसे बग़ीचेका एक एक इंच मालूम था। वह अच्छी तरह जानता था कि काला फूल पैदा करनेवाली गाँठका पौधा कहाँ था। उसीकी तरफ वह दौड़ा किन्तु, नरम भूमिपर लगे हुए पैरोंके चिह्नोंसे, पकड़े जानेके डरसे वह कंकड़ बिछाई हुई पगडंडियोंके रास्ते धीरे धीरे गया। ठीक स्थानपर पहुँचकर उसने भूखे बाघकी तरह उस पौधेपर हमला किया, किन्तु वहाँ कुछ नहीं था।

उसने भूमिमें अच्छी तरह कुरेदकर देखा, किन्तु उसे कुछ नहीं मिला।

उसने समझा कि मैं स्थान भूल गया। उसने आसपास तलाश किया किन्तु कहीं भी उसे गाँठें न मिलीं। उसने चप्पा-चप्पाभर जमीनको छान डाला किन्तु उसे अपनी चीज कहींपर न मिली।

वह क्रोध और निराशासे पागल-सा होकर सीढ़ीपर लौट आया, दीवारपर चढ़ा, बग़ीचेमेंसे सीढ़ी उठाकर और उस अपने घरमें लगाकर नीचे उतर गया।

अकस्मात् उसके मनमें पुनः आशाका संचार हुआ। उसने सोचा कि वान बार्लने पकी हुई गाँठोंको खोदकर प्रयोग-शालामें रख दिया होगा। पाठक जानते हैं कि वस्तुतः हुआ भी ऐसा ही था।

अब जिस तरह वह बग़ीचेमें घुस गया था उसी तरह प्रयोगशालामें घुसने भरसे उसका काम बनता था और यह कोई बड़ा मुश्किल काम नहीं था।

प्रयोग-शालाकी खिड़कियाँ खुली हुई थीं। अगर कोई पर्याप्त लंबी सीढ़ी मिल जाय, तो काम बना बनाया था। अब ३५ फ़ीट लंबी सीढ़ीकी जरूरत थी, पहलेकी तरह, दस फ़ीटकी नहीं।

बोक्सतेल जिस गलीमें रहता था उसमें एक मकानकी मरम्मत हो रही थी, जिसके लिए वहाँपर एक खूब लंबी सीढ़ी रक्खी थी। इस सीढ़ीकी लंबाई बोक्सतेलके कामके लिए काफ़ी थी—यदि मज़दूर उसे ले न गये हों और रातको वहीं छोड़ गये हों।

वह दौड़कर उस घरको गया। सीढ़ी वहीं रक्खी थी। बोक्सतेल अपनी पूरी शक्ति लगाकर सीढ़ीको उठाकर अपने बग़ीचेमें ले आया। फिर खूब ज़ोर लगाकर उसे वान बार्लके घरकी दीवारसे लगाकर खड़ा किया। सीढ़ी ठीक खिड़की तक पहुँच गई।

बोक्ससेलने अपनी जेबमें एक चोर-लालटैन जलाकर डाल ली। वह सीढ़ीपर चढ़ा और खिड़कीकी राह प्रयोगशालाके अन्दर पहुँच गया।

इस अगम्य पवित्र मंदिरके अन्दर वह मेज़के सहारे खड़ा हो गया। उसकी टाँगे लड़खड़ाने लगीं, दिल धड़कने लगा और दम-सा घुटने लगा।

यहाँ उसकी हालत बग़ीचेसे भी खराब थी। कहते हैं कि साहससे औचित्यमें सम्मानका भाव भी आ जाता है। जो आदमी खेतकी बाड़ या दीवारको फाँद चुकता है वह किसी कमरेकी खिड़की या दरवाज़ेपर ही जाकर ठहरता है।

बाग़में तो बोक्सतेलकी अनधिकार चेष्टा मात्र थी, किन्तु प्रयोगशालामें तो वह चोर था। फिर भी उसने साहस धारण किया। वह ख़ाली हाथ लौट जानेके लिए इतनी दूरतक नहीं आया था।

उसने बहुत ढूँढ़ा। सब आलमारियाँ और दराज़ें खोलीं और बंद कीं, वह ख़ास दराज भी खोली जिसमें कॉर्नेलियसके काग़ज़ोंका वह पुलंदा धरा था जो वान बार्लके लिए ऐसा घातक निकला था। उसे नाम लिखे हुए सब तरहकी गाँठोंके पैकेट मिले। ज़ेआन मिला, द'विट मिला, गहरे धुँधले रंगका गुले लाला मिला। नहीं मिली तो वही गाँठ नहीं मिली, जिससे काला गुले लाला पैदा होनेवाला था और जिसके लिए यह सब बवंडर खड़ा किया गया था। उसे उस गाँठका नामोनिशानतक न मिला।

वान बार्ले अपनी गाँठोंको बाक़ायदा रजिस्टरमें लिखता था। इस रजिस्टरमें दो कालम थे, एक आयके लिए और दूसरा व्ययके लिए। उसका रजिस्टर उसी

तरह बाक़ायदा और पूर्ण था जैसे किसी बैंककी बहियाँ । कोई भी गाँठ इसमें बिना लिखी नहीं रह सकती थी । बोक्सतेलने यह रजिस्टर खोलकर पढ़ा । उसमें उसे निम्न-लिखित लाइनें लिखीं मिलीं—

" आज २० जून सन् १६७२ को मैंने महान् काले गुले लालाकी मूल खोदकर उसके तीन भाग करके तीन गाँठें लेकर रक्खीं । "

बस, यही गाँठें ! यही गाँठें ! बोक्सतेलने इस प्रकार चिल्लाकर सारी प्रयोग-शालाकी खाक छान डाली और सब कुछ गड़बड़ कर डाला । फिर कहा— उसने उन्हें कहाँ छिपा दिया ?

फिर माथा पीटकर बोला, मैं कैसा कमबख्त हूँ ! क्या कोई ऐसी बहुमूल्य गाँठोंको अपनेसे अलग कर सकता है ? क्या कोई उन्हें डोर्टमें छोड़कर हेग जा सकता है ? क्या कोई उन गाँठोंके बिना जी सकता है जब कि वे गाँठें महान् काले गुले लालाकी हैं ? उस बदमाशको उन्हें ले लेनेका समय मिल गया था । ऐसा मालूम होता है, वे उसीके पास हैं और वह उन्हें हेग ले गया है । पाजी कहींका !

इस निष्फल पाप—इस गुनाह बेलज्ज़त—रूपी गुफ़ामें उसे यह प्रकाश दिखलाई दिया ।

बोक्सतेल बेसुध होकर उसी मेज़पर उसी जगह गिर पड़ा जहाँ कुछ ही घंटे पहले अभागे वान बार्लेने अपनी गाँठोंको इतनी देर तक इतनी रुचिके साथ सराहा था ।

उस ईर्ष्यालुने अपना पीला चेहरा ऊपर उठाकर कहा—और यदि वे उसके पास हैं, तो वह उन्हें तभी तक रख सकता है जब तक कि जीता है और..

उसके घृणापूर्ण विचारका शेष भाग एक डरावनी मुस्कुराहटमें छिप गया ।

वह बोला, गाँठें हेगमें हैं । अब मैं भी डोर्टमें नहीं रह सकता । गाँठोंके वास्ते हेग चलूँगा ! हेग !

और बोक्सतेल वहाँ अपने पास रक्खी हुई उन सब कीमती चीजों और रत्नोंका कुछ भी खयाल न करके—क्योंकि वह तो अपनी अमूल्य वस्तुके विचारमें ही डूबा हुआ था—खिड़कीकी राह निकला, सीढ़ीसे उतरा और उसे वहीं पहुँचा आया जहाँसे चुराकर लाया था, और हिंस्र जन्तुकी तरह गुर्राता हुआ अपने घर लौट आया ।

९-परिवारकी कोठरी

बेचारा वान बार्ले आधी रातके लगभग बुटेनहोफ़की जेलमें बंद किया गया। जो कुछ रोज़ाने सोचा था वही हुआ। कॉर्नेलियसकी कोठरी खाली देखकर लोगोंका क्रोध भड़क उठा और यदि इस समय ग्रीफ़स इन उन्मत्त लोगोंके हाथ पड़ जाता, तो उसे कैदीकी जगह अपनी जान देनी पड़ती।

किन्तु यह क्रोध तो अब उन दोनों भाइयोंपर निकल चुका था, क्यों कि उन दोनोंको इन वधकोंने, पहलेसे ही नगरके दरवाजे बंद करवा देनेकी विलियमकी होशियारीके कारण, पकड़ लिया था। ऑरेंजका राजकुमार विलियम बड़ा ही होशियार आदमी था और वह हरएक बातको पहलेसे सोचकर उसके लिए तैयारी कर देता था।

इस समय जेल खाली हो गया था और लोगोंके कोलाहल और गर्जनकी जगह अब वहाँ शान्ति विराज रही थी।

रोज़ा शान्ति देखकर छिपनेकी जगहसे बाहर निकल आई और उसने अपने पिताको भी बाहर बुला लिया। जेल इस समय बिल्कुल खाली था क्यों कि, अब लोग यहाँ कैसे रह सकते थे जब कि। तेलहोक दरवाजेपर द'विट भाइयोंके टुकड़े टुकड़े किये जा रहे थे।

ग्रीफ़स डरता और काँपता हुआ रोज़ाके पीछे पीछे बाहर आया। उसने जेलके दरवाजेको यथाकथञ्चित् बंद किया। 'यथाकथञ्चित्' इस लिए कहा कि दरवाजेको लोगोंने आधा तो तोड़ ही डाला था। उसे देखनेसे मालूम होता था कि वहाँ भयानक क्रोध-धारा बही थी।

चार बजेके लगभग भीड़का कोलाहल फिर उस ओर आता हुआ सुनाई दिया, किन्तु इस कोलाहलसे, ग्रीफ़स या उसकी बेटीके, डरनेकी कोई बात नहीं थी।। द'विट-भाइयोंकी लाशोंको लोग घसीटकर जेलके पास वध-स्थानपर फाँसी देनेके लिए ला रहे थे। उसीका यह शोर था।

रोज़ा फिर एक बार कोठरीमें छिप गई, किन्तु इस बार उसके छिपनेका कारण भय नहीं था, किन्तु यह था कि वह इस पैशाचिक काण्डको नहीं देख सकती थी।

आधी रातके लगभग किसीने जेलके दरवाज़ेको, या यों कहिए कि जंगलेको, क्यों कि अब दरवाज़ा टूटकर जंगला मात्र रह गया था, खटखटाया । ये लोग वान बार्लेको लाये थे ।

जेलर ग्रीफ़स इस नये आसामीको लेकर और उसका वारंट पढ़कर अपनी चिर अभ्यस्त मुस्कराहटके साथ बोला—कॉर्नेलियसका धर्मपुत्र ! अच्छा नवयुवक, यहाँ तुम्हारे परिवारकी कोठरी तैयार ही है जिसमें कॉर्नेलियस बंद था । तुम भी उसीमें रक्खे जाओगे ।

अपने किये हुए इस ठट्ठेपर स्वयं ही मुग्ध होकर उस कठोर-हृदय ओरेंज-दल-वालेने लालटैन और चाबियोंका गुच्छा उठाया और वान बार्लेको वह उस कोठरीकी तरफ़ ले चला जिसे प्रातःकाल ही कॉर्नेलियसने खाली किया था और जहाँसे निकलकर वह उस देश-निकालेके लिए गया था जिसका अर्थ क्रान्तिके मौकोंपर बुद्धिमान् लोग यों कहकर लगाते हैं—केवल मरे हुए आदमी ही वापस नहीं आते ।

उस कोठरी तक जाते हुए रास्तेमें इस पुष्प-विद्या-विशारदको एक कुत्तेके भौंकनेकी आवाज़के सिवा कुछ सुनाई न दिया और एक नवयुवतीके मुखके सिवा कुछ दिखाई न दिया ।

कुत्ता दीवारमें बने हुए एक बड़े ताक़मेंसे निकलकर ज़ंजीर हिलाता हुआ वान बार्लेको अच्छी तरह सूँघने लगा, मानों इसलिए जिससे कि वह उसे अच्छी तरह पहचान ले और जब उसे खा जानेकी उसे आज्ञा दी जाय, तो पहचाननेमें दिक्क़त न हो ।

जब कि क़ैदी सीढ़ियोंपर चढ़कर कोठरीकी ओर जा रहा था, वह लड़की अपने कमरेके दरवाज़ेपर आई । यह दरवाज़ा उस ज़ीनेकी तरफ़ ही खुलता था। उसके दाएँ हाथमें एक लालटैन था, जिसका प्रकाश उसकी सघन सुनहरी केश-राशिपर पड़कर उसको चमका रहा था और उसका सुन्दर गुलाबी मुँह दिखा रहा था । बाएँ हाथसे वह अपनी रातकी पोशाकको सँभाले हुए थी, क्योंकि वह वान बार्लेके आकस्मिक आगमनकी आवाज़ सुनकर रातकी पहली नींदसे उठी थी ।

यह दृश्य किसी बड़े चित्रकारके अंकित करने लायक़ था। इस घुमावदार तंग अँधेरेमें ग्रीफ़सकी लालटैनका लालिमामय प्रकाश पड़ रहा था। ऊपर

ग्रीफ़सका मनहूस चेहरा और वान बार्लकी उदास मुखाकृति नजर आती थी। वह नीचे रोज़ाके प्रफुल्ल-वदनको देख रहा था। रोज़ा एक अपरिचित व्यक्तिको अचानक देखनेके कारण कुछ चकितसी जान पड़ती थी। और नीचे अँधेरेमें, जहाँ कि अच्छी तरह सब चीजें दिखाई नहीं पड़ती थीं, कुत्ता बैठा था। उसकी आँखें लाल-मणिकी तरह चमक रहीं थीं। वह अपनी ज़ंजीरको हिला रहा था। ज़ंजीरकी कड़ियाँ रोज़ा और ग्रीफ़सकी दो लालटैनोंका प्रकाश पड़नेसे चमक रही थीं।

रोज़ाने जब इस नवयुवकको, सिर नीचा किये और उदास धीरे धीरे जीनेपर चढ़ते, देखा और अपने पिताके कहे हुए "तुम अपने परिवारकी कोठरीमें रक्खे जाओगे" इन शब्दोंको सुनकर उनका पूरा मतलब समझा, तो उसके मुखपर जो पीडाका भाव दिखाई दिया उसको कोई चित्रकार, चाहे वह कितना ही चतुर क्यों न हो, कभी अंकित नहीं कर सकता।

यह दृश्य केवल एक क्षण तक रहा। हमें उसके वर्णन करनेमें जितनी देर लगी, उससे भी बहुत थोड़ी देर।

ग्रीफ़स और उसके पीछे वान बार्ल अपने रास्ते चलते गये और पाँच मिनटमें वे काल-कोठरीके दरवाज़ेपर पहुँच गये। इस कोठरीको पाठक पहचानते ही हैं, इस लिए अब उसका वर्णन करनेकी ज़रूरत नहीं है।

ग्रीफ़स कैदीको चारपाई दिखाकर लालटैन उठाकर बाहर चला गया। इसी चारपाईपर उस शहीद कॉर्नेलियसने, जिसने आज ही अपनी आत्मा परमात्माको अर्पण कर दी थी, इतने कष्ट सहे थे।

वान बार्ल चारपाईपर लेट रहा, किन्तु उसे नींद नहीं आई। उसकी आँखें तंग खिड़कीपर लगी रहीं। इस खिड़कीमें लोहेकी मजबूत छड़ें लगी थीं। उसमेंसे बाहरका मैदान दिखाई देता था और उसमेंसे ही उसने प्रातःकाल होनेपर सूर्यकी प्रथम किरणोंसे धवलित दूरके वृक्ष देखे।

रातमें बीच बीचमें घोड़ोंकी टापें और पहरेदारोंके घूमनेका शब्द सुनाई देता था।

किन्तु जब दिन निकल आया, और सब घर प्रकाशित हो गये, तो वान बार्ल यह जाननेके लिए अधीर हो उठा कि उसके पास कोई है कि नहीं और उसने खिड़कीके पास जाकर उदासीपूर्ण दृष्टिसे बाहरको नज़र डाली।

मैदानके परले सिरेपर उसे एक काली चीज़ दिखाई दी। प्रातःकालके कारण इसपर अभी तक अँधेरा छाया था और वह स्पष्ट नहीं दीखती थी, जब कि आसपासके घर बाल रविसे पीले हो गये थे। वान बार्लेने बहुत ध्यानसे देखा, तो उसे मालूम हुआ कि वह फाँसीका स्तम्भ है।

इस स्तम्भसे दो धड़ लटक रहे थे, जो रुधिराक्त कंकाल-मात्र थे।

हेगके भले आदमियोंने इनका मांस तो नोच लिया था किन्तु बचे खुचे शरीरको बाकायदा फाँसी देने और एक बड़े बोर्डपर उसकी घोषणा करनेके लिए यहाँ लाकर लटका दिया था।

इस बोर्डपर वान बार्लेने अपनी जवानीकी तेज़ दृष्टिसे निम्नलिखित लाइनें पढ़ीं जो कि किसी अनाड़ी आदमीने मोटे ब्रशसे लिखी थीं—

"देखो, बड़ा बदमाश जान दविट और उसका भाई छोटा बदमाश कॉर्नेलियस द'विट, जो कि देशके शत्रु हैं किन्तु फ्रांसके राजाके बड़े मित्र हैं, यहाँ फाँसीपर लटक रहे हैं।"

वान बार्लेके मुँहसे एक ज़ोरकी चीख़ निकली और उसने भयके मारे पागल होकर हाथों और पैरोंसे दरवाज़ेको इतनी ज़ोरसे पीट डाला कि उसका शोर सुनकर ग्रीफ़स क्रोधमें भरकर चाबियोंका गुच्छा हाथमें लेकर आ पहुँचा।

उसने कैदीको सैकड़ों गालियाँ सुनाते हुए दरवाज़ा खोला, क्योंकि उसकी आदत इतनी जल्दी उठनेकी नहीं थी और वान बार्लेने ज़ोरसे खटखटाकर उसकी नींदमें विघ्न डाला था। वह बोला, मैं कहता हूँ कि यह दूसरा द'विट पागल हो गया है। इन सभी द'विटोंमें शैतान भरा है।

वान बार्लेने जेलरका हाथ पकड़कर और उसे खिड़कीके पास ले जाकर कहा, महाशय, महाशय, मैंने वहाँ सामने जो पढ़ा है, वह क्या है?

"कहाँ?"

"वहाँ, उस बोर्डपर।"

और हाँफते तथा काँपते हुए उसने मैदानके सिरेपर वह फाँसी और उसके पासका बोर्ड दिखलाया। ग्रीफ़स देखकर हँस पड़ा।

उसने जवाब दिया, ओह, तुमने उसे पढ़ लिया! मेरे प्रिय महाशय, ऑरेंजके राजकुमारके शत्रुओंसे पत्र-व्यवहार करनेसे यही हालत होती है, तुमने देखा?

" तो द'विट महाशयोंका वध कर दिया गया ! "

यह कहकर वान बार्ले बिस्तरपर जा पड़ा। उसके दोनों हाथ दोनों तरफ़को लटक रहे थे और उसकी आँखें बंद थीं। उसके माथेपर ठंडे पसीनेकी बूँदे छाई हुई थीं।

ग्रीफ़स बोला, द'विट महाशयोंको जनताने दण्ड दिया। तुम उसे वध कहते हो। मैं तो कहूँगा, वे फाँसीपर चढ़ा दिये गये।

यह देखकर, कि कैदी केवल शान्त ही नहीं किन्तु बिलकुल संज्ञाहीन बेहोश हो गया है, ग्रीफ़स कोठरीसे बाहर आ गया। उसने ज़ोरसे दरवाज़ा बंद कर दिया और आवाज़ करते हुए कुंडी बंद कर दी।

होशमें आनेपर वान बार्लेने अपने आपको उसी कोठरीमें अकेला पाया जिसे ग्रीफ़सने 'परिवारकी कोठरी' कहकर पुकारा था और जो कि बदनामीसे पूर्ण मृत्युका द्वार थी।

क्योंकि वह फ़िलासफ़र था और उसे धर्ममें विश्वास था उसने पहले अपने धर्म-पिता और उसके बड़े भाईकी दिवंगत आत्माओंकी शान्तिके लिए परमात्मासे प्रार्थना की और फिर परमात्मा जो जो कष्ट उसको देना चाहता था उनके सामने खुशीसे सिर झुका दिया।

फिर स्वर्गसे पृथ्वीपर उतरकर अपनी काल-कोठरीमें प्रवेश करके और इस बातको निश्चयसे जानकर कि वह कोठरीमें अकेला ही है उसने अपनी छातीमेंसे काले गुले लालाकी तीनों गाँठें निकालीं और उन्हें एक अँधेरे कोनेमें रक्खे हुए एक पत्थरके पीछे छिपा दिया।

इतने वर्षोंका परिश्रम व्यर्थ गया ! वे मीठी बड़ी बड़ी आशाएँ चकनाचूर हो गईं ! उसके आविष्कारका भी उसके जीवनके समान अंत हो जायगा ! हाय, इस जेलखानेमें एक घासका पत्ता तक नहीं, मिट्टीका एक ढेला तक नहीं, सूर्यकी एक किरण भी नहीं।

यह सोचते सोचते वान बार्ले एक गहरी निराशाके राज्यमें पहुँच गया। उससे उसे एक अद्भुत घटनाने ही निकाला।

यह घटना क्या थी ?

अगला परिच्छेद पढ़िए।

१०—जेलरकी बेटी

उसी दिन सायंकालको ग्रीफ़स, कैदीके लिए भोजन ले जाते समय, कोठरीका दरवाज़ा खोलते हुए, गीली ज़मीनपर पैर फिसल जानेसे, गिर पड़ा। गिरते समय उसने हाथके बल अपने आपको सँभालना चाहा, किन्तु हाथ ठीक न रखनेके कारण कलाईके ऊपर उसकी हड्डी टूट गई।

वान बार्ल जेलरकी ओरको बढ़ा और ग्रीफ़सने चोटको मामूली समझकर कहा, "चोट वोट कुछ नहीं है। तुम अपनी जगहसे मत हिलो।"

ग्रीफ़सने हाथके बल उठना चाहा, किन्तु हड्डीने जवाब दे दिया। ग्रीफ़सको तब मालूम हुआ कि चोट कितनी संगीन है और हड्डी टूट गई है। वह दर्दके मारे चीख़ उठा। जो दूसरोंसे व्यवहारमें इतना कठोर था वही, आज बेहोश होकर देहलीपर गिर पड़ा और वहीं, मुर्देकी तरह ठंडा और निश्चल पड़ा रहा।

इस बीच कोठरीका दरवाज़ा बिल्कुल खुला था और वान बार्लको भाग निकलनेके लिए अच्छा मौका था। किन्तु उसके मनमें इस मौक़ेसे लाभ उठानेका विचार तक न आया। ग्रीफ़सने जब हाथ घुमाया, तो हड्डीकी आवाज़से वान बार्लने पहचान लिया कि हड्डी टूट गई है और ग्रीफसको बड़ी तकलीफ़ है। अब उसके मनमें केवल एक ही विचार था और वह था ज़ख्मीको मदद पहुँचानेका, चाहे उस ज़ख्मी आदमीने उससे कितना ही बुरा बरताव क्यों न किया हो।

ग्रीफ़सके गिरनेकी आवाज़ और उसकी चीख़ सुनकर किसीके दौड़कर आनेकी आवाज़ ज़ीनेसे सुनाई दी। इस आवाज़के बाद आनेवालेका मुख देखते ही वान बार्लके मुखसे एक छोटी-सी चीख निकल गई और उसके जवाबमें एक युवतीकी चीख़ सुनाई दी।

जिसके मुँहसे वान बार्लकी चीखके जवाबमें चीख निकली, वह वही फ्रीज़लैंडकी सुंदरी थी। उसने अपने पिताको इस तरह ज़मीनपर पड़ा हुआ और वान बार्लको उसपर झुका हुआ देखकर पहले यह समझा था कि ग्रीफ़स अपने

क़ैदियोंसे दुर्व्यवहार तो किया ही करता है, इसी कारणसे वान बार्ल और उसमें लड़ाई हुई होगी जिसमें कि ग्रीफ़सने पछाड़ खाई।

वह जब इस तरह सोच रही थी उसका चेहरा देखकर वान बार्ल फ़ौरन समझ गया कि उसके मनमें क्या है। किन्तु अच्छी तरह देखनेपर रोज़ाको पता लग गया कि असली बात क्या थी और एक क्षण-मात्रके लिए उसके मनमें जो विचार आये उनके लिए वह लज्जित हुई और आँखोंमें आँसू भरकर वान बार्लसे बोली—महाशय, क्षणभरके लिए मेरे मनमें जो कुविचार आये उनके लिए मुझे क्षमा कीजिए और जो कुछ आपने किया है, उसके लिए मेरा धन्यवाद स्वीकार कीजिए।

वान बार्लका चेहरा लज्जासे लाल हो गया। वह बोला, मैं तो अपने पड़ोसी-की मदद करके केवल अपना कर्तव्य पालन कर रहा हूँ।

" और इस समय इनकी मदद करते हुए आपने उन गालियोंको भुला दिया जो उन्होंने आपको सुबह दी थीं। यह कर्तव्य-पालनसे कहीं ज़्यादह है। यह मनुष्यता नहीं, देवत्व है। "

वान बार्ल इस मामूली लड़कीके मुँहसे ऐसे उच्च विचार और दयापूर्ण वचन सुनकर आश्चर्य-चाकित हुआ, किन्तु उसे अपना आश्चर्य प्रकाशित करनेका मौक़ा नहीं मिला। ग्रीफ़सने होशमें आकर आँखें खोलीं और आँखें खोलते ही उसकी स्वाभाविक क्रूरता उसमें फिर आ गई। वह बोला—देखो, यह हाल है। मुझे तो कैदीका भोजन लानेकी जल्दी थी। जल्दीमें पैर फिसलनेसे गिर पड़ा और मेरा हाथ टूट गया, मुझे किसीने उठाया तक नहीं, यहीं पड़ा रहने दिया।

रोज़ा बोली, चुप, पिता, ऐसी बात मत कहो। मैंने तो इन्हें तुम्हारी मददके लिए कोशिश करते पाया है।

ग्रीफ़सने अविश्वास प्रकट करते हुए कहा, उसको ?

वान बार्ल बोला, महाशय, यह ठीक कहती हैं। मैं अब भी आपकी मदद करनेको तैयार हूँ।

ग्रीफ़स बोला, तुम ! तो क्या तुम डॉक्टर हो ?

" मैं पहले यही काम किया करता था। "

" तो क्या तुम मेरी हड्डी बैठा सकते हो ? "

" बहुत अच्छी तरह । "

" और इसके लिए तुम्हें किन किन चीज़ोंकी ज़रूरत होगी ? "

" लकड़ीके दो टुकड़े और बाँधनेके लिए कुछ रुई । "

ग्रीफ़स बोला, रोज़ा सुनती है ? कैदी मेरी हड्डी बैठा देगा। इसमें बचत ही होगी। मुझे पकड़कर उठा तो सही। मैं तो सीसेकी तरह भारी मालूम पड़ता हूँ।

रोज़ाने ग्रीफ़सको अपने कंधेका सहारा दिया। वह अपना दूसरा हाथ, जिसमें चोट नहीं लगी थी, रोज़ाके गलेमें लपेटकर, ज़ोर लगाकर, टाँगोंके बल उठ खड़ा हुआ। इतनेमें वान बार्लेने एक कुरसी खींचकर उसके नीचे रख दी जिससे उसे चलना न पड़े।

ग्रीफ़स कुरसीपर बैठकर बेटीसे बोला—तूने सुना नहीं ? जा, जिन जिन चीज़ोंकी ज़रूरत है, ले आ।

रोज़ा नीचे गई और क्षण-भरमें दो लकड़ीकी पट्टियाँ और ढेरकी ढेर रुई ले आई।

वान बार्लेने इस बीचमें ग्रीफ़सका कोट उतारकर कुरतेकी बाँह ऊपर चढ़ा दी थी।

वान बार्लेने टूटी हुई बाँह एक मेज़पर रखकर होशियारीसे हड्डीको ठीक बैठा दिया और फिर लकड़ीकी पट्टियोंके बीचमें हाथ रखकर रुई लगा-कर बाँध दिया।

अन्तमें ग्रीफ़स फिर बेहोश हो गया। वान बार्लेने कहा,—थोड़ासा सिरका तो ले आओ, देवी। हम इनके माथेपर लगायँगे, जिससे ये फौरन होशमें आ जायँ।

किन्तु रोज़ा वान बार्लेका कहा हुआ करनेके बजाय उसके पास आई और यह अच्छी तरह देखकर कि उसका पिता बिल्कुल बेहोश है धीरेसे बोली—महाशय, अपकारके बदलेमें उपकार !

वान बार्लेने कहा, क्या कहती हो ? मैं तुम्हारी बात नहीं समझा।

बात यह है महाशय, कि जो जज कल आपके मुकदमेका फैसला करेगा वह आज यह पूछने आया था कि आप किस कोठरीमें रक्खे गये हैं और जब उसे यह मालूम हुआ कि आप उसी कोठरीमें रक्खे गये हैं जिसमें कॉर्नेलियस

द'विट थे, तो वह एक बिकट हँसी हँसा जिसे देखकर मैं समझती हूँ कि आपके लिए लक्षण अच्छे नहीं मालूम होते।

वान बार्ले बोला—किन्तु वे मुझे क्या हानि पहुँचा सकते हैं?

"देखिए, वह सामने फाँसी है।"

"किन्तु मैंने तो कोई अपराध नहीं किया।"

"किन्तु उन्होंने क्या किया था जिनको, अंग-भंग करके मांस काटकर, वहाँ सामने फाँसीपर लटका दिया है?"

वान बार्लेने गंभीरतासे कहा, हाँ, कहती तो तुम ठीक हो।

रोजा बोली, इसके अलावा लोगोंकी इच्छा यही है कि आप अपराधी सिद्ध हों। आप अपराधी हों या न हों, आपका मुक़दमा कल होगा और परसों आपको फाँसी दे दी जायगी। आजकल जैसे समयमें सब काम बड़ी जल्दीसे कर दिये जाते हैं।

"तो देवी तुम्हारी क्या राय है?"

"मैं कहती हूँ कि मैं अकेली हूँ, अबला हूँ, मेरे पिता बेहोश हैं, कुत्तेका मुँह बँधा हुआ है और आपके भाग निकलनेमें किसी प्रकारकी रुकावट नहीं है। आप जल्दीसे भाग जाइए। मेरी यही राय है।"

"तुमने क्या कहा?"

"मैं कहती हूँ कि कॉर्नेलियस द'विट और जान द'विटको तो न बचा सकी, किन्तु मैं अब आपको बचाना चाहती हूँ। अब जल्दी कीजिए। मेरे पिताको होश आ रहा है और एक मिनटमें वे आँखें खोल देंगे। तब कुछ नहीं हो सकेगा। क्या हिचकिचाते हैं?"

वान बार्ले निश्चल खड़ा रहा। ऐसा मालूम होता था कि रोज़ाकी बातें उसने सुनी ही नहीं।

रोज़ाने अधीर होकर कहा, क्या आपने मेरी बात नहीं समझी?

"हाँ, मैं समझा गया, किन्तु—"

"किन्तु क्या?"

"मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा। वे तुमपर दोष लगावेंगे।"

रोज़ा बोली, कुछ परवाह नहीं।

वान बार्लेने जवाब दिया, देवी, धन्यवाद, किन्तु मैं तो यहीं रहूँगा।

"आप यहीं रहेंगे ! हा परमात्मन् ! हा परमात्मन् ! क्या आपने समझा नहीं कि आपको मृत्यु-दण्ड होगा ? आप फाँसीपर लटका दिये जायँगे और शायद द'विट-भाइयोंकी तरह आपके शरीरके भी टुकड़े टुकड़े कर डाले जायँगे ! मेरे सिरकी सौगंध, आप मेरा कुछ ख़याल न कीजिए और इस कोठरीसे निकल भागिए। मैं अपनी फ़िक्र अपने आप कर लूँगी। इस बातका ख़याल रखिए कि यह समय द'विट-परिवारके लिए बड़ा अशुभ है।"

जेलरने होशमें आकर कहा,—हैं ! उन बदमाशों, उन सूअरके बच्चों, पाजियों, द'विटोंका नाम कौन ले रहा है ?

वान बार्लेने मुस्कराकर कहा, भले आदमी, उत्तेजित मत होओ। उत्तेजना हड्डी टूटनेके लिए बड़ी बुरी है, क्योंकि उससे खून गर्म हो जाता है।

फिर धीरेसे रोज़ासे कहा—देवी, मैं तो निरपराध हूँ और इसलिए शान्ति और धैर्यसे अपने मुक़दमेके फ़ैसलेकी प्रतीक्षा करूँगा।

रोज़ा होठोंपर उँगली धरकर बोली, चुप !

"क्यों, चुप क्यों ?"

"मेरे पिताको इस बातका ज़रा भी संदेह न होना चाहिए कि हम बातचीत करते रहे हैं।"

"उससे क्या हर्ज़ होगा ?"

"क्या हर्ज़ होगा ? वे मुझे तुम्हारे पास कभी न आने देंगे।"

उसके मुँहसे ये वचन सुनकर वान बार्लेको अपने अंधकारमय भाग्याकाशमें प्रकाशकी एक झलक दिखाई दी।

ग्रीफ़सने उठकर अपने दाएँ हाथको बाएँ हाथका सहारा देते हुए कहा, तुम दोनों क्या बतिया रहे हो ?

रोज़ा बोली—कुछ नहीं। ये महाशय मुझे यह बतला रहे थे कि आपको क्या पथ्य देना चाहिए।

"मुझे क्या पथ्य देना है ! मुझे क्या पथ्य देना है ! देवी, मैं तुम्हें भी तो पथ्यपर रक्खूँगा।"

"किस पथ्यपर पिताजी ?"

"कैदियोंके पास न जानेका। और अगर वहाँ जाओ भी, तो जल्दीसे जल्दी वहाँसे चले आनेका। चलो, आगे आगे चलो।"

रोज़ा और वान बार्लने एक दूसरेकी ओर देखा। रोज़ाकी दृष्टि कहती थी— अपने देखा न?

वान बार्लकी दृष्टि कहती थी—भगवानकी इच्छा पूर्ण हो।

११-वान बार्लकी वसीयत

रोज़ाका अनुमान ठीक निकला। अगले दिन जजोंने जेलमें आकर वान बार्लका मुक़दमा सुना। उसमें थोड़ी ही देर लगी। गवाहीसे यह सिद्ध हो गया कि वान बार्लने अपने घरमें द'विटने फ्रांसके साथ जो पत्रव्यवहार किया था, उसके काग़जात रक्खे। उसने भी इस बातसे इनकार नहीं किया।

अब संदेह केवल इस बातमें रह गया था कि क्या यह पत्र-व्यवहार उसको उसके धर्म-पिता कॉर्नेलियस द'विटने देखनेके लिए दिया था।

चूँकि वे दोनों शहीद मर गये थे, इस लिए अब वान बार्लको कुछ छिपाना नहीं था। उसने सब साफ़ साफ़ बता दिया कि कॉर्नेलियस द'विटने इस तरहसे ऐसी अवस्थामें मुझे ये कागज़ रखनेके लिए सौंपे थे।

क्योंकि कॉर्नेलियसने अपने धर्म-पुत्रको ऐसे काग़जात सौंपे, इस लिए यह समझा गया कि वह भी उसके षड्यंत्रमें शामिल था।

वान बार्लने अपनी रुचि, आदतें और दिनचर्या आदि सबका बयान किया। उसने कहा कि राजनीतिमें मेरी बिल्कुल रुचि नहीं थी, मुझे तो पढ़ने लिखनेका, शिल्प-कला और विज्ञानका तथा फूलोंका शौक था। और कॉर्नेलियसके दिये उस पार्सलको, जबसे उसने मुझे सौंपा, आजतक कभी भी छुआ या देखा तक नहीं और मुझे मालूम भी नहीं था कि उसमें क्या कागज़ात थे।

इसपर जजोंने यह आक्षेप किया कि हमारी समझमें नहीं आता कि ऐसे जरूरी काग़ज़ात कॉर्नेलियसने बिना यह बताये कि उनमें क्या है, किसीको सौंप दिये होंगे।

इसके जवाबमें वान बार्लेने कहा कि कॉर्नेलियस मुझसे बहुत प्यार करता था और इस लिए वह कागज़ोंमें क्या है, यह बतलाकर मुझे चिन्ताग्रस्त नहीं करना चाहता था।

इसपर जजोंने कहा कि यदि ऐसा था तो कॉर्नेलियस पार्सलके साथमें एक सर्टिफिकेट रख देता, जिसमें वह लिख देता कि मेरा धर्म-पुत्र वान बार्ले इस पार्सलमें क्या है, इस विषयमें कुछ नहीं जानता, या कमसे कम अपने मुक़दमेके समय उसे एक चिट्ठी लिख देता जिसे वान बार्ले अपनी निर्दोषताके प्रमाण-स्वरूप पेश कर सके।

वान बार्लेने कहा कि मेरे धर्म-पिताके मनमें स्वप्नमें भी विचार नहीं आया कि उनकी धरोहरपर कोई आपत्ति आ सकती है। क्यों कि वह जिस जगह रक्खी हुई थी उस जगह किसीका भी प्रवेश नहीं था और घरभरमें वह जगह मंदिरके सबसे अंदरके भागके समान पवित्र गिनी जाती थी और इसी लिए उसने इस प्रकारके सार्टिफिकेटकी कोई आवश्यकता नहीं समझी। चिट्ठीके विषयमें मुझे कुछ ऐसा याद आता है कि गिरफ़्तारीसे थोड़ी देर पहले जान द'विटका नौकर एक कागज़ लाया था, किन्तु मैं उस समय अपने बीजोंको निहारनेमें मग्न था, अतः मैंने उसपर कुछ ध्यान नहीं दिया। मुझे सब स्वप्नकी तरहसे याद आता है, स्पष्ट कुछ याद नहीं है। कागज़ देते ही नौकर फौरन चला गया था। शायद वह कागज उस कमरेमें अच्छी तरहसे ढूँढ़नेपर मिल जाय।

क्रेक तो हालैंड देशसे बाहर चला गया था, इस लिए उससे कुछ मालूम हो ही नहीं सकता था।

उस कागज़के मिलनेकी भी संभावना नहीं थी, इसलिए उस बातपर किसीने ध्यान नहीं दिया। वान बार्लेने भी इसपर बहुत ज़ोर नहीं दिया, क्योंकि यदि वह कागज़ मिल भी जाय, तो भी संभव है कि उसमें इस पार्सलके विषयमें कुछ भी न लिखा हो।

जज यह दिखलाना चाहते थे कि उन्होंने वान बार्लेको अपनी सफाई और अच्छी तरह देनेको प्रेरित किया। उन्होंने बड़ा धैर्य प्रदर्शित किया, जो या तो इस बातका सूचक है कि मजिस्ट्रेट क़ैदीका हित चाहता है या इस बातका कि उसने

अपने विरोधीको बुरी तरह दबा लिया है, वह पूरी तरह उसके वशमें है, और अब उसे बर्बाद करनेके लिए कोई ज़ोर लगानेकी जरूरत नहीं।

वान बार्लेको यह दिखलावा पसंद नहीं आया और उसने सच्चे आदमीकी शान्ति और शहीदकी निर्मलताके साथ निम्नलिखित अन्तिम बयान दिया——

"महाशयो, आप मुझसे जो प्रश्न पूछते हैं उनके जवाबमें मैं सच्ची घटनाओंके सिवा और कुछ नहीं कहना चाहता। सच्ची घटना यह है कि पार्सल उसी तरहसे मेरे पास आया जैसे कि मैं पहले कह चुका हूँ। मैं ईश्वरको साक्षी देकर कहता हूँ कि उसमें क्या था, इस विषयमें मुझे कुछ भी मालूम नहीं था और अबतक भी नहीं मालूम। मुझे तो गिरफ्तारीके समय ही पता लगा कि उसमें भूतपूर्व महामंत्री जानके फ्रांसके परराष्ट्र-सचिवके साथके पत्र-व्यवहारके काग़ज़-पत्र थे। मुझे इस बातका भी बड़ा आश्चर्य है कि किसीको इस बातका कैसे पता लगा कि यह पार्सल मेरे घरमें था और सबसे पहले मेरे पूज्य और अभागे धर्म-पिता जो पार्सल मेरे घरमें लाये, उसको ले लेनेके कारण मैं कैसे दोषी ठहराया जा सकता हूँ।"

वान बार्लेकी सफ़ाई केवल इतनी थी। इसके बाद जजोंने विचार करना शुरू किया।

एकने कहा कि वान बार्ले देखनेमें तो बड़ा शान्त मालूम होता है, किन्तु है बड़ा ख़तरनाक। क्यों कि इस ऊपरी एकान्तप्रियताके बहाने वह अपने मित्र द'विटोंका बदला लेनेके लिए षड्यंत्र रचता होगा।

दूसरा बोला कि गुले लालाका शौक भी बिल्कुल राजनीतिके शौक़के समान है। इतिहासमें भी देखा गया है कि कई बड़े षड्यंत्रकारी फूलोंके पौधोंके बड़े शौकीन थे। टारक्विन गावीमें पोस्तकी खेती किया करता था और कोंडे भी विंसानकी जेलमें फूलोंके पौधे लगाया करता था। किन्तु टारक्विन तो रोम लौटनेके लिए षड्यंत्र रच रहा था और कोंडे जेलसे भाग निकलनेके लिए।

जजने अन्तिम प्रतिपादन निम्न-लिखितानुसार किया——

"या तो वान बार्ले फूलोंकी खेतीका बड़ा शौकीन है या राजनीतिका। कुछ भी हो, उसने झूठ बोला। क्यों कि उसका राजनीतिमें हिस्सा लेना तो उन चिठ्ठियोंसे साबित है जो उसके घरसे निकलीं और फूलोंका शौकीन होना उन

गाँठोंसे जो उसकी प्रयोगशालामें रक्खी थीं। वान बार्लेको फूलों और राजनीति दोनोंमें रुचि है, इससे मालूम होता है कि वह दोग़ले स्वभावका है। ऐसे आदमी समाजके लिए बड़े ख़तरनाक होते हैं। इसके उदाहरणके तौरपर टारक्विन और कोंडेके नाम दिये ही जा चुके हैं।"

इस सब तर्कशैलीका निष्कर्ष यह था कि यदि ऑरेंजके प्रिंसके लिए उसके अधिकारके विरुद्ध षड्यंत्रका बीजतक समूल नष्ट करके नवाबी (Stathouder) का रास्ता साफ़ कर दिया जाय, तो वह हेगके न्याय-विभागसे बहुत खुश होगा।

यह तर्क सबसे बढ़कर था और इसी वास्ते वान बार्लेपर फूलोंके शौकीनका रूप धारण करके द'विट-भाईयोंके साथ मिलकर देशके विरुद्ध फ्रांससे षड्यंत्र करनेका आरोप लगाकर उसे मृत्यु-दण्डका हुक्म दिया गया।

इस आज्ञापत्रमें इतना वाक्य और जोड़ दिया गया कि "वान बार्ले जेलके सामनेके मैदानमें ले जाया जायगा और वहाँ सब लोगोंके सामने उसका सिर-काट दिया जायगा।"

यह विचार बड़ी गंभीरतासे किया गया और उसमें आध घंटा लग गया। इस बीच क़ैदीको उसकी कोठरीमें लौटा दिया। अदालतका पेशकार वहीं उसको हुक्म सुनाने आया।

ग्रीफ़स हाथ टूट जानेके कारण बुखार आ जानेसे शय्याग्रस्त था। इस कारण उसका कार्यभार उसके सहकारीने ले लिया था। वही पेशकारको लेकर वान बार्लेके पास आया। उसके पीछे रोज़ा भी आई। वह सिसकियोंको रोकनेके लिए मुँहको रूमालसे ढके हुए थी।

दण्डाज्ञा सुनते समय वान बार्लेके चेहरेपर उदासीकी अपेक्षा आश्चर्य अधिक झलक पड़ता था। आज्ञा सुनानेके बाद पेशकारने पूछा कि क्या तुम्हें कुछ कहना है?

वान बार्लेने जवाब दिया, नहीं, मैं केवल इतना कहता हूँ कि जितनी भी चीज़ें मृत्युका कारण हो सकती हैं, जिनसे होशियार मनुष्यको सावधान रहना चाहिए, उनमें इसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

पेशकारसे वान बार्लेने पूछा, महाशय, यह तो बतलाइए, कि वह काम आप समझते तो हैं न—किस दिन होगा?

पेशकार क़ैदीके बिल्कुल अविचलित रहनेसे आश्चर्य-चकित हुआ और बोला, आज ही।

दरवाजेके पीछेसे एक आह सुनाई दी और वान बार्लेने यह देखनेके लिए कि वह कहाँसे आई उस ओरको मुँह मोड़ा, किन्तु रोज़ा पहलेहीसे झट पछिेको हट गई।

वान बार्लेने पूछा, समय कौनसा निश्चित है ?

" दोपहरके १२ बजे महाशय। "

" लगभग २० मिनट हुए, मैंने दसका घंटा सुना है। तो अब समय बहुत तंग है। "

पेशकारने जमीन तक झुककर प्रणाम करते हुए कहा, हाँ बहुत तंग है। आपको ईश-प्रार्थनाके लिए जिस पादरीकी इच्छा हो कहिए, बुला दिया जाय।

यह कहता हुआ वह बाहर चला गया। जेलर भी उसके पीछे पीछे चला और कोठरीका दरवाज़ा बंद करनेको ही था कि एक काँपता हुआ श्वेत हाथ उसके और भारी तालेके बीच आ गया।

वान बार्लेको फ्रीजलैंडकी सुंदरीके पहिननेकी सुनहरी टोपीके सिवाय और कुछ न दिखाई दिया और उसने जेलरके कानमें किसीको कुछ कहते सुना।

जेलरने तालियोंका भारी गुच्छा उस श्वेत हाथमें दिया और जाकर नीचे जीनेमें बैठ गया। इस प्रकार जीनेपर ऊपरसे वह और नीचे कुत्ता पहरा दे रहा था।

वह सुनहरी टोपी फिर दिखाई दी और वान बार्लेने रोज़ाके रोनेके कारण पीले हुए चेहरे और आँसुओंसे भरी आँखोंको देखा।

युवतीने अपनी छातीपर हाथ रखकर कहा, महाशय ! महाशय !

इसके आगे उसके मुँहसे कुछ न निकला।

वान बार्लेने द्रवित होकर कहा, सुन्दरी, मुझसे क्या चाहती हो ? तुम जानती ही हो कि मैं थोड़ी ही देरका मेहमान और हूँ।

रोज़ा बोली, महाशय, मैं आपसे एक बातकी भिक्षा चाहती हूँ।

" रोज़ा, इस तरह रोओ मत, तुम्हारे आँसू मुझको आनेवाली मृत्युसे भी अधिक दुख देते हैं। तुम जानती ही हो कि कैदी जितना ही अधिक निरपराध हो, मृत्युके समय उसे उतना ही अधिक शान्त रहना चाहिए, क्योंकि वह

शहीदकी मौत मरता है। इस लिए सुन्दरी रोज़ा, इस समय रोओ मत और अपनी इच्छा बतलाओ।"

सुन्दरी रोज़ा घुटने टेककर बोली, मेरे पिताको माफ़ कर दीजिए।

वान बार्लेने आश्चर्यान्वित होकर कहा, तुम्हारे पिताको ?

"हाँ, क्यों कि उन्होंने आपके साथ बहुत ही कठोर व्यवहार किया है। किन्तु उनका स्वभाव ही ऐसा है। वे सबसे इसी तरह पेश आते हैं, केवल आपके साथ ही उनका व्यवहार ऐसा नहीं रहा है।"

"रोज़ा, उनको तो उस दुर्घटनासे अर्थात् हाथके टूट जानेसे जरूरतसे ज्यादह दण्ड मिल गया है और मैं भी उन्हें क्षमा करता हूँ।"

रोज़ा बोली, धन्यवाद, और अब मुझे बतलाइए कि मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ।

वान बार्लेने मृदु मुसकानके साथ कहा, तुम अपनी सुन्दर आँखोंको सुखा सकती हो।

"मैं आपके लिए पूछती हूँ, आपके लिए।"

"जिस आदमीको केवल एक घंटा जीना है उसको अपने लिए किसी चीज़की इच्छा हो, तो उसे बड़ा नीच स्वार्थी समझना चाहिए रोज़ा।"

"आप अपनी इच्छाका पादरी बुला सकते हैं।"

"रोज़ा, मैंने जन्मभर परमात्माकी उपासना की है। मैंने उसकी कृतियोंके रूपमें उसकी पूजा की है और उसकी इच्छाओंके रूपमें उसकी स्तुति। परमात्माको मेरे विरुद्ध किसी बातकी शिकायत नहीं हो सकती, इसलिए मुझे किसी पादरीकी आवश्यकता नहीं। मेरे मनमें इस समय जो अन्तिम विचार आता है, वह परमात्माकी महत्ताके विषयमें है। रोज़ा, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरे इस अन्तिम विचारकी पूर्तिमें मेरी मदद करो।"

रोज़ाकी आँखोंसे आँसुओंकी झड़ी लग गई। वह बोली, कहिए, वह क्या विचार है ?

"देवी, मुझे अपना हाथ दो और प्रतिज्ञा करो कि तुम हँसोगी नहीं।"

रोज़ाने शोकातुर होकर कहा, हँसी! इस समय हँसी! आप मेरे आँसुओंको नहीं देखते ? ऐसे समय क्या कोई हँस सकता है ?

"रोज़ा, मैंने तुम्हें चर्म-चक्षुओंसे और हृदयकी आँखोंसे, दोनोंसे देखा है।

मैंने न तुम्हारे जैसी पवित्र कोई स्त्री आजतक देखी है और न तुम्हारे जैसी सुन्दरी। और अबसे मैं तुमपर ध्यान नहीं देता हूँ, इसका कारण यह है कि मैं मरते समय किसी प्रकारका खेद अपने मनमें रखना नहीं चाहता और आशा है कि इसके लिए तुम मुझे क्षमा करोगी। "

जिस समय वान बार्ले ये शब्द कह रहा था उसी समय जेलके घंटेमें ग्यारह बजे। उसे सुनकर रोज़ा काँप गई। वान बार्ले समझ गया और बोला, हाँ, हाँ, हमें जल्दी करनी चाहिए, तुम्हारा कहना ठीक है रोज़ा।

यह कहकर उसने अपनी छातीमेंसे गाँठोंकी पुड़िया निकाली। क्योंकि अब उसे तलाशीका भय नहीं था, इसलिए उसने उसे फिर अंदरकी जेबमें रख लिया था।

वह बोला, मेरी प्रिय मित्र, मुझे फूलोंसे बड़ा प्रेम था। यह उस समय था, जब मैं नहीं जानता था कि दुनियामें प्रेम करनेकी और भी कोई चीज़ है। रोज़ा, लज्जित मत होओ, मुँह फेरो, यदि मैं तुमसे अपना प्रेम प्रकट भी करूँ, तो वह सब निरर्थक है। नीचे मैदानमें वह लोहेका खड्ग है, जो ६० मिनटमें मेरी धृष्टताका अन्त कर देगा। हाँ, तो मुझे फूलोंसे बड़ा प्रेम था और मैंने महान् काले गुले लालाको पैदा करनेका रहस्य ढूँढ़ निकाला है। इस काले फूलको लोग अब तक असंभव समझते थे और तुम्हें मालूम होगा, या शायद तुम्हें न मालूम हो, इस काले फूलके लिए हारलेमके पुष्प-प्रेमी संघने एक लाखके इनाम-की घोषणा की है। वे एक लाख रुपए इस पुड़ियामें उस काले फूलके बीजोंके रूपमें मौजूद हैं। इस पुड़ियामें जो मूल हैं उनको बोनेसे, पैदा होनेवाले पौधेपर लगनेवाले फूलोंसे, वे एक लाख रुपए मिल सकते हैं। और रोज़ा, ये एक लाख रुपए तुम ले सकती हो और मैं तुम्हें ये देता हूँ।

" महाशय वान बार्ले ! "

" रोज़ा, तुम उन्हें ले सकती हो। तुम उन्हें लेकर किसीका हक नहीं छीनती हो। मैं दुनियामें अकेला हूँ। मेरे माता और पिता मर चुके हैं। मेरे न कोई बहिन है न भाई। मैंने आजतक कभी किसीसे प्रेम नहीं किया। और यदि कभी किसीने मुझसे प्रेम किया हो, तो मुझे मालूम नहीं। रोज़ा तुम देखती ही हो कि मुझे सबने छोड़ दिया है और यदि कोई इस समय मुझे ढाढस बँधाकर मदद देनेवाला है, तो वह तुम हो। "

" किन्तु महाशय वे एक लाख रुपए । "

" देवी, हम इसपर गंभीरतासे विचार करेंगे । तुम जैसी सुन्दरीके लिए इन एक लाख रुपयोंका अच्छा दहेज़ रहेगा । तुम इन एक लाख रुपयोंको ले सकती हो, क्योंकि मुझे इस बातका पूरा निश्चय है कि इन बीजोंसे काले फूल पैदा होंगे । तुम उन्हें ले लो और मैं बदलेमें तुमसे कुछ नहीं माँगता, सिर्फ़ इतना चाहता हूँ कि तुम यह प्रतिज्ञा करो कि तुम ऐसे सज्जन युवकसे शादी कर लोगी, जिससे तुम प्रेम करती हो और जो तुमसे प्रेम करता हो, जैसे कि मैं अपने फूलोंसे करता था । रोज़ा, मेरी बात मत काटो, मेरे थोड़ेसे मिनट ही बाक़ी हैं !

बेचारी लड़कीका मारे सुबकियोंके दम-सा घुटने लगा ।

वान बार्लेने उसका हाथ पकड़ लिया । वह बोला—मेरी बात सुनो, मैं तुम्हें बोनेकी रीति बतलाता हूँ । तुम ऐसा करो । तुम डोर्ट जाकर मेरे माली बुत्रुशेमसे माँगकर नं० ६ की क्यारीकी मिट्टी ले आओ और एक बड़े संदूकमें भर दो, फिर उसमें इन तीनों गाँठोंको बो दो । उनपर मईके महीनेमें अर्थात् अबसे सात महीनेमें फूल लगेंगे । जब उनपर कली दिखलाई पड़े, तो रातको ठंडी हवासे और दिनको धूपसे उनकी रक्षा किया करना । फूल बिल्कुल काला खिलेगा, इसमें मुझे रत्तीभर भी सन्देह नहीं । जब फूल खिल जाय, तो फ़ौरन हारलेमके पुष्प-प्रेमी समाजके सभापतिको उसकी सूचना देना । वह कमेटीके सामने फूलकी रंगत सिद्ध करेगा और तुमको एक लाख रुपए दिये जायँगे ।

रोज़ाने एक लंबी आह भरी । वान बार्लेकी आँखमें भी एक आँसू आ गया । इस आँसूका कारण उसकी निकटवर्तिनी मृत्यु नहीं थी, बल्कि यह दुख था कि वह अपने प्यारे काले फूलको नहीं देख सकेगा । आँसू पोंछते हुए वान बार्ले बोला—मुझे अब और कुछ इच्छा नहीं है । मैं केवल यह चाहता हूँ कि यह फूल हम दोनोंके नाम पर ' रोज़ा-बार्लिया ' कहलाए और शायद तुम इस नामको भूल जाओ, इस लिए अगर तुम मुझे कुछ काग़ज़ और पेंसिल लाओ, तो मैं उसे लिख दूँ ।

रोज़ाने सिसकियाँ लेते हुए एक बाइबिल वान बार्लेको दी । जिसके ऊपर सी और डब्ल्यू (C. W.) ये दो अक्षर लिखे हुए थे ।

वान बार्लने पूछा, इन अक्षरोंका क्या मतलब है?

रोज़ाने जवाब दिया, यह आपके स्वर्गीय धर्म-पिता कॉर्नेलियस द'विटकी बाइबिल थी और उनके नामके आदिके अक्षर C. और W. इसपर लिखें हुए हैं। उन्होंने इसी बाइबिलसे सारी यातनाओंको सहने तथा चेहरेपर कुछ भी सिकुड़न लाये बिना अपनी दण्डाज्ञा सुननेकी शक्ति प्राप्त की थी। उस शहीदकी मृत्युके पीछे मुझे यह बाइबिल इस कोठरीमें मिली और इसे मैंने यादगारके रूपमें अपने पास रक्खा। आज मैं आपके पास यह पुस्तक लाई, क्योंकि मुझे इसमें कुछ दिव्य शक्ति प्रतीत होती है। महाशय वान बार्ले, जो कुछ आप चाहें इसमें लिख दीजिए। मैं यद्यपि पढ़ना नहीं जानती, तो भी मैं इस बातका ख़याल रक्खूँगी कि आपकी इच्छा पूर्ण हो।

वान बार्लने बाइबिल लेकर उसे आदरपूर्वक चूमा और पूछा, मैं लिखूँ किस चीज़से?

"पुस्तकमें एक पेंसिल है। वह उसीमें थी और मैंने उसे हिफ़ाज़तसे रक्खा है।"

यह वही पेंसिल थी, जो जान द'विटने अपने भाईको लिखनेके लिए दी थी। वह उसे लेना भूल गया था।

वान बार्लने पेंसिल लेकर पुस्तकके अंतकी ओरके कोरे पृष्ठपर, क्यों कि पहला तो कॉर्नेलियसने फाड़ लिया था, अपने धर्म-पिताके समान ही मरनेसे पहले दृढ़ हाथसे ये पंक्तियाँ लिखीं—

"आज २३ अगस्त सन् १६७२ ई० को, निरपराध होते हुए भी, सूलीपर अपनी आत्मा परमात्माको अर्पण करते समय, मैं ग्रीफ़सकी बेटी रोज़ाको गुले लालाकी ये तीन गाँठें वसीयत करके छोड़ जाता हूँ। ये तीन गाँठें ही मेरी कुल संपत्ति हैं, क्योंकि मेरी बाक़ी सब ज़ायदाद जप्त कर ली गई है। मुझे विश्वास है कि इन गाँठोंसे अगली मईके महीनेमें वह महान् काला गुले लालाका फूल पैदा होगा, जिसके लिए हारलेमके पुष्प-प्रेमी-समाजने एक लाख रुपयेके पारितोषिककी घोषणा की है और जिसको अबतक लोग असंभव समझते हैं। मेरी इच्छा है कि यह पारितोषिक मेरे स्थानमें रोज़ाको मिले, क्योंकि मैंने उसे ही अपनी वारिस बना दिया है, इस शर्तपर कि वह मेरी ही उम्रके या लगभग उतनी ही उम्रके २६ से २८ वर्ष तकके एक युवकसे, जो उससे प्यार करता हो और जिससे वह प्यार करती हो, शादी करे। और उस काले फूलको 'रोज़ा

बार्लिया' नाम दे, अर्थात् उसके और मेरे दोनोंके संयुक्त नामपर वह फूल पुकारा जाय। ईश्वर मुझपर दया करे और रोज़ाको स्वास्थ्य और दीर्घ-जीवन प्रदान करे।

—वान बार्ले।"

लिखकर बाइबिल रोज़ाको देकर उसने पढ़नेके लिए कहा। रोज़ाने जवाब दिया, हाय! मैं तो तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं पढ़ना नहीं जानती।

तब वान बार्लेने अपनी लिखी हुई वसीयत रोज़ाको पढ़ सुनाई। युवतीकी सिसकियाँ दूनी हो गई।

वान बार्लेने उदासीके साथ मुसकराते हुए और फ्रीजियन सुन्दरीकी उँगलियोंके सिरोंको चूमते हुए पूछा, तुम्हें मंजूर है?

उसने लड़खड़ाती हुई आवाज़से कहा, मैं नहीं जानती।

"तुम नहीं जानतीं? देवी, क्यों नहीं?"

"क्योंकि उसमें एक शर्त है जिसे, मैं नहीं जानती कि मैं किस तरहसे पूरा कर सकूँगी।"

"कौन सी? मैं तो समझता था कि सब कुछ हम दोनोंमें पहलेसे ही तय हो गया है।"

"आप मुझे वे एक लाख रुपये दहेजके वास्ते देते हैं?"

"हाँ।"

"और एक ऐसे आदमीसे शादी करनेके लिए जिससे मैं प्यार करूँगी?"

"हाँ, निस्संदेह।"

"तो महाशय, यह रुपया कभी मेरा नहीं हो सकता। क्योंकि मैं कभी किसीसे प्यार नहीं करूँगी।"

रोज़ाने बड़े कष्टके साथ ये शब्द कहे और फिर वह घुटनोंके बल बैठ गई। कष्ट और दुखसे वह मूर्छित-सी हो गई।

वान बार्ले उसको इतनी पीली और क्लान्त देखकर डर गया। वह उसको अपनी भुजाओंसे उठानेको ही था कि इतनेमें किसीके आनेका भारी शब्द सुनाई दिया। फिर उसके पीछे और भी कई लोगोंके आनेकी आवाज़ और कुत्तेके ज़ोरसे भूँकनेका शब्द सुनाई दिया।

रोज़ाने हाथ तोड़ते मरोड़ते हुए कहा, वे आपको लेने आ रहे हैं। ओ परमात्मन्! महाशय, क्या आपको मुझसे और कुछ नहीं कहना?

यह कहकर वह हाथोंमें सिर छिपाकर घुटनोंके बल गिर पड़ी। मोरे सिसकियोंके उसका दम-सा घुटा जाता था।

"हाँ, यह कहना है कि तुम इन गाँठोंकी अत्यन्त कीमती ख़ज़ानेकी तरह रक्षा करो और मेरे कहे अनुसार इनकी देख भाल करो। रोज़ा, मेरे वास्ते तुम इतना करो। और मैं अब अन्तिम बिदाई लेता हूँ।"

रोज़ाने बिना सिर उठाये ही जवाब दिया। हाँ, मैं यह सब करूँगी। जो कुछ आपने कहा है, मैं करूँगी। फिर धीरेसे बोली, सिवाय विवाह करनेके, क्योंकि मेरे लिए यह असंभव है।

यह कहकर उसने वान बार्लेकी वह निधि अपनी धड़कती हुई छातीमें छिपा ली।

वान बार्ले और रोज़ाको जो शब्द सुनाई दिया था वह पेशकारके आनेका था। पेशकार वान बार्लेको लेने आया था। उसके साथ जल्लाद, सूलीके समय पहरा देनेके लिए कुछ सिपाही और कुछ तमाशबीन भी थे, जो बहुधा जेल आया करते थे।

वान बार्लेने उनका मित्रोंकी तरह स्वागत किया, अत्याचारियोंकी तरह नहीं, और कोई निर्बलता नहीं दिखलाई। साथ ही वृथा बहादुरी और घमंड भी नहीं दिखलाया। ज़ल्लादको अपने कामकी पूर्तिके लिए जो जो तैयारी करनी थी, उसने वह आसानीसे करने दी।

फिर खिड़कीमेंसे मैदानपर नज़र डाली। वहाँपर उसे वध्यभूमिमें सूली दिखाई दी। सूलीपरसे द'विट-भाइयोंके छिन्न-भिन्न शरीर नवाबकी आज्ञासे उतार दिये गये थे।

सिपाहियोंके साथ चलनेके पहले उसने रोज़ाके दिव्य नेत्रोंको देखना चाहा, किन्तु उसे सिपाहियोंके भालों और तलवारोंके बीचमेंसे एक बेंचके पास पड़ा हुआ रोज़ाका शरीर और उसका सुनहरे केशोंसे आधा ढका हुआ पीला चेहरा मात्र दिखलाई दिया।

किन्तु बेहोश होकर गिरते हुए भी रोज़ाने अपने मित्रकी आज्ञाका पालन करनेके लिए हाथसे अपनी मख़मलकी जाकेटको दबा रक्खा था और मूर्छामें

सारे संसारको भूलकर भी वह स्वभाव-सिद्ध ज्ञानकी तरह वान बार्लेकी दी हुई उस धरोहरको हाथसे पकड़े हुए थी।

कोठरीसे बाहर जाते समय वान बार्लेने रोज़ाके हाथमें बाइबिलसे फाड़ा हुआ वह कागज़का टुकड़ा देखा, जिसपर कि कॉर्नेलियस द'विटने बड़े कष्टके साथ कुछ लाइनें लिखी थीं, जिसे कि यदि वान बार्लेने पढ़ा होता, तो उसकी जान और गुले लाला दोनों बच सकते थे।

१२-प्राण-दण्ड

वान बार्लेको वध्यभूमिमें पहुँचनेके लिए सिर्फ़ ३०० पग चलना पड़ा।

वध्यभूमि ज्यों ज्यों निकट आती जाती थी, त्यों त्यों लोगोंकी भीड़ बढ़ती जाती थी। ये वही लोग थे जिन्होंने तीन दिन पहले द'विट-भाइयोंकी हत्यासे अपने हाथ रँगे थे। इन्हें अभी तृप्ति नहीं हुई थी और आज एक नये शिकारको फँसा देखकर ये आये थे।

वान बार्लेको देखते ही इन लोगोंने खूब शोर मचाया। यह शोर आसपासकी सड़कों तक पहुँच गया, क्योंकि उनसे भी लोगोंकी भीड़ उमड़ी चली आ रही थी। वध-वेदी चार पाँच नदियोंके संगमके बीचमें एक टापूके समान दिखाई देती थी।

इस कोलाहल और गर्जनके बीच वान बार्ले अपने ही विचारमें मग्न था। इस मृत्युके क्षणमें वह क्या सोच रहा था? वह न अपने शत्रुओंके विषयमें सोच रहा था, न अपने जजोंके और न जल्लादोंके। वह सोच रहा था कि मैं मरनेके बाद निरपराधोंके साथ परमात्माकी बग़लमें बैठकर स्वर्गसे उन सुन्दर गुले लालाके फूलोंको देखूँगा, जो फ़ारस, बंगाल और सिंहलद्वीपमें खिल रहे हैं। मैं इस मर्त्यलोकको तरसके साथ देखूँगा जहाँ द'विट-भाइयोंके टुकड़े इस वास्ते कर डाले गये कि उन्हें राजनीतिसे बहुत प्रेम था और जहाँ वान बार्लेका सिर इस लिए काट डाला गया कि उसे फूलोंसे बड़ा प्रेम था।

वह मनमें कह रहा था कि खड्गके एक प्रहारकी देर है और बस मेरा मधुर स्वप्न वस्तुतः कार्यमें परिणत हो जायगा।

वान बार्ले दृढताके साथ वध-वेदीपर चढ़ रहा था। उसे इस बातका गर्व था कि वह उस जानका मित्र है और उस कॉर्नेलियसका धर्म-पुत्र है, जिन्हें उन बदमाशोंने, जो आज उसका अन्त देखने आये हैं, क़त्ल कर दिया था।

उसने घुटने टेककर ईश-प्रार्थना की। उसे यह देखकर आनन्द हुआ कि वह वधके काठपर अपना सिर रखकर यदि अपनी आँख खुली रक्खे, तो उसे बुटेनहोफ़ जेलकी वह खिड़की अन्तिम क्षण तक दिखाई देती रह सकती है।

अन्तमें घातक क्षण आ गया। वान बार्लेने अपनी गर्दन ठंडे काले काठपर रक्खी। किन्तु इस समय उसकी आँखें अपने आप बंद हो गईं जिससे वह जीवनका ख़ातमा कर देनेवाले खड्ग-पातको अपने सिरपर दृढतासे ले सके।

ज़ल्लादने तलवार उठाई और वध-वेदीपर बिजलीसी दौड़ गई।

वान बार्लेने काले गुलेलालासे अन्तिम बिदा ली।

तीन बार उसे गरदनके ऊपर तलवारकी ठंडी हवाका अनुभव हुआ, किन्तु अचरजकी बात यह थी कि न तो तलवारके लगनेका ही अनुभव होता था और न तज्जनित पीड़ाका ही। न उसे आकाशके रंगमें ही कुछ फ़र्क मालूम हुआ।

अकस्मात् उसे ऐसा मालूम हुआ कि किसीने अपने मृदु हाथोंसे पकड़कर उसे खड़ा कर दिया है और देखा तो उसने अपनेको लड़खड़ाते हुए पैरोंपर खड़ा पाया।

उसने आँखें खोलकर देखा।

उसके पास खड़ा हुआ एक आदमी आज्ञा-पत्र पढ़ रहा था। इस आज्ञा-पत्र-पर लाखकी एक बड़ी मुहर लगी थी।

वही पीला सूर्य, जो कि हालैंड देशमें चमका करता है, चमक रहा था। बुटेनहोफ़की वही जालीदार खिड़की दीख रही थी। मैदानसे लोगोंका वही शोर सुनाई दे रहा था, किन्तु अब उसमें गर्जन नहीं आश्चर्य झलक रहा था।

आँखें खोलने, देखने और सुननेपर उसकी समझमें आ गया कि वह कहाँ है।

बात यह थी कि ऑरेंजके राजकुमार विलियमको इस बातका डर लगा कि वान बार्लेका खून ईश्वरीय न्याय-तुलाको उसके विरुद्ध न उलट दे और इस

लिए उसको वान बार्लेकी सच्चरित्रता और निरपराधतापर दया आ गई और उसने उसको प्राण-दान कर दिया। यही कारण था कि तलवार उसके सिरपर तीन बार घूमकर भी रुक गई, उसे न उसका स्पर्श अनुभव हुआ और न पीड़ा ही मालूम हुई।

वान बार्ले परमात्माके पास बैठने और गुले लालाकी दुनिया देखनेका जो सुख-स्वप्न देख रहा था, उसके भंग होनेसे उसे बड़ी निराशा हुई।

वान बार्लेने समझा था कि राजकुमार उसको दया-दान करके न केवल प्राण-दान ही करेंगे किन्तु बिलकुल छोड़ देंगे और मैं डोर्टमें अपने फूलोंके पास जा सकूँगा। किन्तु उसका विचार ग़लत था। उस आज्ञा-पत्रका एक परिशिष्ट था और खास बात तो परिशिष्टमें ही थी। इस परिशिष्टमें लिखा था कि वान बार्लेको आजन्म जेलमें रहना पड़ेगा। वान बार्ले प्राण-दण्डके योग्य नहीं, किन्तु वह स्वतंत्र भी नहीं छोड़ा जा सकता।

वान बार्लेने परिशिष्टको सुनकर निराशाके प्रथमानुभवके दूर होनेपर सोचा कि अब भी कुछ उम्मेद बाकी है। इस जन्मभरके लिए जेलके दण्डमें भी कुछ भलाई है। रोज़ा तो वहाँ रहेगी और मेरी तीनों गाँठें भी वहीं हैं।

किन्तु वान बार्ले इस बातको भूल गया कि हालैंडके सात प्रान्त हैं और उन सात प्रान्तोंमें सात जेलें हैं। दूसरी जेलोंमें कैदीको रखनेमें हेगकी अपेक्षा बहुत कम खर्च है। क्योंकि राजधानी होनेके कारण भोजन आदि हरएक चीज़ हेगमें बहुत महँगी है।

विलियमकी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी, इस लिए उसने वान बार्लेको हेगमें नहीं, किन्तु लोवेनस्तेन जेलमें रक्खा। लोवेनस्तेन डोर्टके पास ही है; किन्तु फिर भी काफी दूर है। वाल और मैज़ दो नदियाँ उनके बीचमें पड़ती हैं।

वान बार्ले अपने देशका इतिहास अच्छी तरह जानता था। उसे मालूम था कि प्रसिद्ध विद्वान् ग्रोशियस इसी किलेमें कैद था और सरकारने उस प्रसिद्ध पुस्तक-प्रकाशक, कानून-वेत्ता, इतिहासज्ञ, कवि, और दार्शनिकपर दया करके उसके खर्चके लिए २४ पैसे रोज़की मंजूरी दी थी।

वान बार्लेने सोचा कि मैं तो ग्रोशियससे बहुत कम हूँ। मुझे ज़्यादहसे ज़्यादह १२ पैसे दे दिये जायँगे। मेरी गुज़र भी बड़ी कठिनतासे होगी, किन्तु मैं जीऊँगा तो।

अकस्मात् उसके मनमें एक भयानक विचार आया। उसने सोचा कि उधरकी जल-वायु तो गीली है और गुले लालाके लिए अच्छी नहीं।

और जब उसे ध्यान आया कि रोज़ा तो वहाँ होगी नहीं, तो उसका सिर नीचे गिर पड़ा। अच्छा हुआ कि वह नीचे गिरकर ज़मीनसे नहीं टकराया, छातीपर ही रुक गया।

१३-एक दर्शककी दुर्दशा

जब कि वान बार्ले इस तरह सोच रहा था, एक गाड़ी वध-वेदीके पास आई। कैदीको उसमें बैठनेकी आज्ञा दी गई और वह उसमें बैठ गया।

उसकी दृष्टि अन्त तक बुटेनहोफ़की ओर लगी थी। उसे आशा थी कि उसे खिड़कीमें रोज़ाका फिरसे खिला हुआ चेहरा दिखलाई देगा, किन्तु गाड़ीमें तेज़ घोड़े जुते हुए थे, वे जल्दी ही वान बार्लेको उस भीड़मेंसे निकालकर ले गये। लोग विलियमकी जय पुकार रहे थे और द'विट-भाइयों तथा वान बार्लेको गालियाँ दे रहे थे। वे कह रहे थे—

"अच्छा ही हुआ कि हमने उन बदमाशोंको सज़ा देनेमें जल्दी की, नहीं तो संभव था कि दयालु नवाब उन्हें भी हमारे हाथोंसे छीनकर क्षमा कर देता, जैसे कि उसने वान बार्लेको किया।"

वान बार्लेका प्राण-दण्ड देखने जो ये सब दर्शक आये थे और इस आकस्मिक क्षमा-प्रदानसे जो इस तरह अचंभेमें आ गये थे, उनमेंसे एकको सबसे अधिक निराशा हुई। यह आदमी अच्छे कपड़े पहने हुए था। वह वध-वेदीके बिल्कुल पास डटा हुआ था। उसने वहाँसे न हटनेके लिए बहुत हाथ-पैर पटके और वह वहाँसे तभी हिला जब कि पहरेके हथियारबंद सिपाहियोंने उसे ज़बरदस्ती हटा दिया।

पापी वान बार्लेके दूषित रक्तको बहता हुआ देखनेके लिए तो कितनोंहीने औत्सुक्य प्रकाशित किया था; किन्तु इस आदमीके मुखपर जितनी चिन्ता और उत्कण्ठा दिखाई दी, उतनी किसीमें भी नहीं थी।

जिनको सबसे अधिक क्रोध चढ़ा था, वे अच्छी जगह पानेके लिए दिन निकलते ही वहाँ आ डटे थे; किन्तु इस आदमीने तो उन सबको भी मात कर दिया। उसने सारी रात जेलके दरवाज़ेपर गुज़ारी और वह वहाँसे किसीके पैर पड़ता और किसीको धक्का देता हुआ सबसे आगेकी पंक्तिमें पहुँच गया। जब जल्लाद कैदीको वध-वेदीपर ले आया, तो वह एक फव्वारेपर चढ़ गया, जिससे कि वह वहाँसे अच्छी तरह देख सके और फिर उसने जल्लादकी ओर इशारा किया, जिसका अर्थ था—यह तो निश्चित ही है न?

इस इशारेका जल्लादने इशारेसे ही उत्तर दिया—तुम शान्त रहो, सब ठीक है।

यह आदमी कौन था जो जल्लादसे इतना हिला-मिला मालूम होता था और उससे इशारेसे बातचीत कर रहा था?

यह ईज़ाक बोक्सतेल था। बोक्सतेल वान बार्लेकी गिरफ़तारीके बाद हेगमें ही आ गया था और उसकी गाँठोंको पानेके यत्नमें था।

पहले तो उसने ग्रीफ़ससे अपना मतलब गाँठना चाहा, किन्तु ग्रीफ़सने समझा कि यह कोई कैदीका मित्र है और उसे जेलसे भगा ले जानेके लिए कोई जाल रचना चाहता है! इसलिए जब बोक्सतेलने उससे कहा कि "वान बार्लेने गुले लालाकी कुछ गाँठें अपने पास छिपा रक्खी हैं। वे या तो उसकी जेबमें होंगी या उसकी कोठरीमें ही कहीं छिपी होंगी। आप मुझे वे गाँठें ले लेने दीजिए।" तो उसने और कुछ जवाब न दिया, केवल ठोकर मारकर निकाल दिया और अपना कुत्ता उसपर छोड़ दिया।

कुत्तेने उसका पायजामा फाड़ डाला, परन्तु इससे भी वह अनुत्साहित नहीं हुआ। वह दुबारा आया, किन्तु इस बार ग्रीफ़स बीमार पड़ा था, इसलिए उसने प्रार्थीको अपने पास बुलाया तक नहीं। तब बोक्सतेल रोज़ाके पास गया। उसने उसे वान बार्लेसे भेंट कराने या उसकी कोठरीमें जाने देनेके लिए सोनेके सच्चे कामकी एक टोपी देनेका प्रलोभन दिया। परन्तु रोज़ा इस प्रलोभनके वशीभूत नहीं हुई।

तब बोक्सतेलके मनमें एक विचार पैदा हुआ।

इस बीचमें मुकदमेका फ़ैसला भी सुना दिया गया। यह फ़ैसला बहुत जल्दी सुना दिया गया, इसलिए अब किसीको रिश्वत देनेका मौका नहीं था।

आखिर वह जल्लादके पास गया। बोक्सतेलको इसमें रत्तीभर भी सन्देह नहीं था कि वान बार्ले गुले लालाकी गाँठोंको अपनी छातीपर लेकर ही मरेगा।

किन्तु बोक्सतेल दो बातोंको नहीं सोच सका, रोज़ाका प्रेम और विलियमका क्षमा-प्रदान।

रोज़ा और विलियम न होते, तो बोक्सतेलका हिसाब पूरा पूरा ठीक उतरता। विलियमके बिना वान बार्ले मर जाता और रोज़ाके बिना वह बीजोंको छातीपर लेकर मरता।

बोक्सतेल जल्लादके पास गया और उससे बोला कि मैं कैदीका घनिष्ठ दोस्त हूँ, इसलिए उसके कपड़े प्राण-दण्डके बाद मुझे दे देना। उनमें जो कोई सोने चाँदी आदिकी बहुमूल्य वस्तुएँ होंगी, वे तुम ले लेना और मैं तुम्हें सौ रुपये दूँगा।

बोक्सतेलको तो इन बीजोंसे एक लाखका इनाम मिलनेकी आशा थी। उसके लिए सौ रुपयेकी यह रक़म क्या चीज़ थी। यह तो एक रुपया लगाकर एक हज़ार रुपया कमाना था।

और जल्लादको ये सौ रुपये प्राप्त करनेके लिए कुछ करना ही नहीं था। उसे तो सिर्फ़ इतना करना था कि वह प्राण-दण्ड हो जानेके बाद बोक्सतेलको अपने नौकरोंके साथ वध-वेदीपर जाकर वध किये हुए व्यक्तिके कपड़े उतार लेने दे।

वहाँपर ऐसा रवाज़ भी था कि जब किसीके मालिकको बुटेनहोफ़के मैदानमें सबके सामने प्राण-दण्ड दिया जाता था, तो उसके नौकर जल्लादको खुश करके मालिकके कपड़े ले लिया करते थे।

वान बार्ले जैसा पागल था वैसा ही उसका मित्र भी होगा। ये ही सब बातें सोचकर जल्लादने बोक्सतेलकी बात मान ली, केवल इतना कहा कि रुपया मुझे पेशगी मिलना चाहिए।

बोक्सतेलने रुपया पहले ही दे दिया और बड़ी उत्सुकतासे वह उस घड़ीकी प्रतीक्षा करने लगा।

बोक्सतेलका मन बड़ा ही विक्षुब्ध था। सिपाहियोंकी, पेशकारकी, जल्लादकी और वान बार्लेकी हरएक चालको, ज़रासे भी अंग-संचलनको बोक्सतेल बड़े ध्यानसे देख रहा था। वह देख रहा था कि वान बार्ले किस तरहसे पैर उठाकर

चलता है और काठपर किस तरहसे पड़ता है। कहीं काठपर ज़ोरसे गिरनेमें मूलकी गाँठें तो कुचली न जायँगी? वान बार्लेने क्या ऐसी क़ीमती गाँठोंको एक सोनेकी डिबियामें भी नहीं रक्खा होगा? सोना बड़ा कठोर होता है, वह चोट लगनेसे नहीं दबेगा।

प्राण-दण्डमें देर लगनेसे भी उसके मनमें अनेक विचार उठ रहे थे। वह सोचता था कि जल्लाद उसके सिरपर तलवार घुमानेमें समय क्यों बरबाद कर रहा है, जल्दीसे उसका सिर धड़से अलग कर क्यों नहीं डालता? किन्तु जब उसने देखा कि पेशकार हाथमें क्षमा-पत्र लिये उसे पढ़कर सुना रहा है, तब तो उसके क्रोधका कुछ ठिकाना न रहा। उस समय वह आदमी जैसा नहीं बल्कि ऐसा मालूम होता था कि कोई भयंकर बाघ या चीता है, जिसकी आँखोंसे आग निकल रही है और वह उछलकर वान बार्लेपर जा पड़ेगा और उसे फाड़ खायगा।

तो अब वान बार्ले मरेगा नहीं, जीवेगा, और लेवेनस्तेनमें रहेगा। वहाँ जेलमें अपनी गाँठें भी ले जायगा। वहाँ शायद उसे कोई बगीचा भी मिल जाय और उसमें वह गाँठ बोकर काला फूल पैदा करे।

इससे बढ़कर आपत्ति और क्या हो सकती है? हमारी दीन लेखनी वर्णन करनेमें असमर्थ है। हम अपने पाठकोंपर ही उसे छोड़ देते हैं कि वे अपने मनमें उसकी कल्पना करके देखें।

बोक्सतेलको मूर्च्छा सी आ गई और वह फव्वारेपरसे ओरेंज-दलवालोंके ऊपर गिर पड़ा। उन लोगोंको भी बड़ी निराशा हुई थी और क्रोध भी आ रहा था। बोक्सतेलके दुःख-चीत्कारको उन्होंने हर्ष-ध्वनि समझा, इस लिए मारे घूँसों और लातोंके उसका कचूमर निकाल दिया। किन्तु बोक्सतेलको जो निराशा और दुःख हुआ, उसके सामने ये लात और घूँसे क्या थे! उसने उठकर वान बार्लेकी गाड़ीके पीछे दौड़ना चाहा, किन्तु घबराहटमें वह एक जगह ठोकर खाकर गिर पड़ा और सारी भीड़ उसको कुचलती हुई उसके ऊपरसे गुज़र गई। जब वह उठा तो उसके कपड़े चिथड़े चिथड़े हो गये थे, सारा शरीर ज़ख्मी हो गया था और हाथ छिल गये थे।

इतने ही तक बस नहीं हुआ। उसने अपने सारे बाल नोच डाले।

१४-डोर्टके कबूतर

वान बार्लके लिए यह बड़े ही सम्मानकी बात थी कि वह उसी जेलमें भेजा गया जिसमें ग्रोशियस रक्खा गया था। किन्तु यहाँ आनेपर उसे और भी बड़ा सम्मान मिलनेवाला था। जब वान बार्ल वहाँ पहुँचा तो कोठरी भी वही खाली थी जिसमें प्रसिद्ध विद्वान् ग्रोशियस कैद रहा था। ग्रोशियसकी पत्नीने अपने पतिके लिए एक सन्दूकमें कुछ किताबें भेजीं थीं। जेलके अधिकारी इस सन्दूकको खोलकर देखना भूल गये और ग्रोशियस उसमें बैठकर भाग गया। तबसे यह कोठरी बड़ी बदनाम थी।

वान बार्लको यही कोठरी रहनेको दी गई। इसे वान बार्लने बड़ा अच्छा शकुन समझा, क्यों कि उसने सोचा कि जिस पिंजरेमेंसे एक कबूतर उड़ गया हो उसमें, दूसरे कबूतरको एक अच्छा जेलर कभी नही रक्खेगा।

यह कोठरी इतिहास-प्रसिद्ध है। हम यहाँ इस कोठरीका वर्णन नहीं करेंगे, केवल इतना कहेंगे कि यह भी जेलकी अन्य कोठरियोंके समान ही थी, विशेषता केवल इतनी थी कि उसमें ग्रोशियसकी पत्नीके उपयोगके लिए एक आलमारी बनाई गई थी, दूसरी कोठरियोंसे वह कुछ अधिक ऊँची थी और उसकी जालीदार खिड़कीसे बाहरका दृश्य बड़ा मनोहर दिखाई देता था।

वह कोठरी किस तरहकी थी, इससे हमारी कथाका कुछ संबंध नहीं है। वान बार्लके लिए श्वास लेना मात्र ही जीवन नहीं था। उसको दो वस्तुएँ प्राणोंसे भी प्यारी थीं। वे दोनों अब उसके पास नहीं थीं और उन दोनोंके पास होनेका आनन्द इतना बड़ा है कि वह केवल कल्पनासे ही अनुभव किया जा सकता है।

एक फूल और एक स्त्री ये दोनों चीज़ें, वह समझता था कि उसके वास्ते हमेशाके लिए अलभ्य हो गई हैं।

सौभाग्यसे वान बार्लकी समझ ठीक नहीं थी। जबसे उसने वध-वेदीपर पैर रक्खा, तभीसे ईश्वर उसकी ओर स्नेहपूर्ण दृष्टिसे मुस्कराकर देख रहा था। उसने उसको ग्रोशियसकी कोठरीमें रक्खा और इस जेलमें भी जैसा साहसपूर्ण

और मधुर जीवन उसके भाग्यमें बदा था, वैसा बहुत थोड़े लोगोंके भाग्यमें होता है।

एक दिन वह खिड़कीमें बैठा ताज़ी हवा ले रहा था और वाल नदीके पार अपनी मातृभूमि डोर्टकी चिमनियोंको देख रहा था। उसे डोर्टकी ओरसे उड़-कर आते बहुतसे कबूतर दिखाई दिये और वे आकर लोवेनस्तेनके बुर्जोंपर बैठ गये।

वान बार्लने सोचा कि ये कबूतर डोर्टसे आते हैं और इसलिए वहीं लौटकर जायँगे। यदि इनमेंसे एककी बाजूमें मैं कागज़का पुर्जा बाँध दूँ, तो यह संभव है कि वह मेरी धायके हाथमें पहुँच जाय, जो कि वहाँ बैठी मेरे लिए रो रही होगी।

फिर उसने अपने इस विचारको कार्यरूपमें परिणत करनेका निश्चय किया।

जिसको २८ बरसकी आयुमें ही जन्म-भरकी कैद हो जाय, अर्थात् २२ या २३ हज़ार दिन तक जेलमें ही रहना जिसके भाग्यमें बदा हो, वह बड़ा संतोषी हो जाता है।

तीन गाँठोंका विचार वान बार्लके मनसे कभी बाहर नहीं होता था और जैसे छातीमें दिल हमेशा धड़कता रहता है, उसी तरह इन गाँठोंका खयाल सदा उसकी स्मृतिमें बना रहता था। यही सोचकर उसने कबूतरोंको पकड़नेके लिए जो कुछ भी चीज़ें उसके पास थीं उनकी मददसे जाल बनाया। फिर उसके भोजनमें जो कुछ खानेकी चीज़ें थीं उनकी मददसे वह कबूतर पकड़नेका यत्न करने लगा। एक महीने तक सिर खपानेके बाद वह एक कबूतरी पकड़ पाया।

और दो महीनेके प्रयत्नके बाद उसने एक कबूतर पकड़ा। फिर उन दोनोंको एक जगह बंद कर दिया। अगले वर्ष सन् १६७३ के आरंभमें कबू-तरीने कुछ अंडे दिये। तब उसने कबूतरीकी पूँछमें एक चिट्ठी बाँधकर उसे डोर्टकी ओरको उड़ा दिया। कबूतरी अंडोंका भार कबूतरपर छोड़कर खुशीसे उड़ी चली गई।

सायंकालको वह लौट आई। परचा अभी तक उसकी पूँछमें था।

पन्द्रह दिन तक इसी प्रकार वह पर्चा उसकी पूँछमें बँधा रहा और वह

उसके साथ लौट आती रही। इससे वान बार्लेको बड़ी निराशा हुई। किन्तु सोलहवें दिन वह खाली लौट आई। इससे वान बार्लेको बड़ी खुशी हुई।

वान बार्लेने यह चिट्ठी अपनी बूढ़ी धायके नाम लिखी थी और जिस किसी दयालु आदमीके हाथमें यह चिट्ठी पड़े उससे यह प्रार्थना की थी कि वह इस चिट्ठीको फौरन और सुरक्षित धायके पास पहुँचा दे।

धायके नाम लिखी हुई इस चिट्ठीके अंदर एक छोटासा पुरजा रोज़ाके लिए भी था।

परमात्मा बीच समुद्रके छोटे द्वीपमें भी वटके बीज पहुँचा देता है और जंगलमें हिंस्र पशुओंके बीच पड़े हुए बच्चेकी भी रक्षा करता है। वह चाहता था कि यह चिट्ठी धायके हाथमें पहुँचे और इस लिए उसने इसके वास्ते घटना-क्रम तैयार कर दिया।

ईज़ाक बोक्सतेलने जब डोर्ट शहर छोड़ा, तो उसके साथ ही अपना घर, नौकर, गूलरका वह पेड़ और अपने कबूतर भी छोड़ दिये।

नौकरको अब वेतन तो मिलता नहीं था। पहले तो उसने जो कुछ पैसा बचाया था उसपर कुछ दिनों तक गुजारा किया। उसके चुक जानेपर उसने कबूतरोंको खाना शुरू किया। यह देखकर कबूतर बोक्सतेलकी छतसे वान बार्लेकी छतपर चले गये।

धाय बड़ी दयालु थी। उसे कबूतरोंसे बड़ा स्नेह हो गया। बोक्सतेलके नौकरने खानेके लिए जब उन्हें वापस माँगा, तो धायने अच्छा मूल्य देकर उन्हें खरीद लिया।

ये ही कबूतर दूसरे कबूतरोंके साथ उड़कर लोवेनस्तेनकी तरफ़ गये थे और वान बार्लेने इन्हींमेंसे एकको पकड़ा था।

यदि बोक्सतेलने डोर्ट न छोड़ दिया होता, तो ये कबूतर धायके क़ब्जेमें न होकर बोक्सतेलके कब्जेमें होते और वह चिट्ठी धायको न मिलकर बोक्सतेलको मिलती। उस दशामें इस कहानीका यह रूप न होकर कुछ और ही होता और वान बार्लेका यह सब श्रम व्यर्थ ही जाता।

इस प्रकार यह चिट्ठी वान बार्लेकी धायके हाथमें पड़ी।

फ़रवरी मासका आरंभ था, सायंकालका समय। तारे दिखलाई पड़ने लगे थे। उसी समय वान बार्लेके कानोंमें एक ऐसे स्वरकी ध्वनि सुनाई दी, जिससे उसके शरीरमें बिजली दौड़ गई।

उसने अपनी छातीपर हाथ रखकर हृदयकी धड़कन सुनी। यह रोज़ाका स्वर था।

इससे वान बार्लेको उतना भारी आश्चर्य नहीं हुआ जितना कि पाठकोंने शायद समझा हो। क्योंकि कबूतरीकी खाली पूँछ देखकर उसे आशा हो गई थी कि यदि वह परचा रोज़ाको मिल गया, तो रोज़ा और तीनों गाँठे एक न एक दिन ज़रूर उसे देखनेको मिलेंगी। क्योंकि वह रोज़ाको खूब पहचानता था।

किन्तु वान बार्ले सोचने लगा कि संभव है, रोज़ा हेगसे लोवेनस्तेन आ पहुँची हो, और जेलके अंदर भी किसी तरह आ गई हो, किन्तु क्या वह कैदीके पास तक भी आ सकेगी ?

जब कि वान बार्ले इस प्रकार सोच रहा था और उसके मनमें इच्छा और चिन्ता, आशा और निराशाके अनेक प्रकारके भाव उठ रहे थे उसकी कोठरीके दरवाज़ेका जंगला खुला और उसमेंसे रोज़ाका सुंदर चेहरा दिखलाई दिया। चेहरा प्रसन्नतासे उज्ज्वल था और उसपर उसके देशकी टोपी उसकी शोभाको दुगुनी कर रही थी। इन पाँच महीनोंमें शोकके कारण उसके कपोल पीले पड़ गये थे और उनका सौन्दर्य निराला था। रोज़ाने अपने मुँहको जंगलेसे सटा लिया।

वह बोली, महाशय, महाशय, मैं यहाँ हाजिर हूँ।

वान बार्लेने हाथ फैलाकर आकाशकी ओर देखकर हर्ष-ध्वनि की। उसने पुकारा, रोज़ा, रोज़ा !

सुंदरीने कहा, चुप, धीरे धीरे बोलो, मेरे पिता पीछे पीछे आ रहे हैं।

" तुम्हारे पिता ? "

" हाँ, ज़ीनेसे नीचे दालानमें खड़े हैं और गवर्नरसे बात-चीत कर रहे हैं। वह अभी ऊपर आ रहे हैं। "

" गवर्नरसे बात-चीत ? "

"सुनो, मैं तुम्हें संक्षेपसे सब बातें बतलाती हूँ। लीड-नगरसे एक मील राजकुमार विलियमका एक ग्राम्य-गृह है। वह गृह क्या है, एक बड़ी गो-शाला है। मेरी बुआ राजकुमारकी धाय थी और अब उसीके हाथमें इस गो-शालाका सब प्रबंध है। जब मुझे आपकी चिट्ठी मिली जिसे कि मैं स्वयं पढ़ भी न सकी और आपकी धायने मुझे उसे पढ़कर सुनाया, तभी मैं दौड़कर अपनी बुआके पास

आई और वहीं विलियमके आनेकी प्रतीक्षा करती रही। राजकुमारके आनेपर मैंने उससे हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि मेरे पिताकी बदली हेगसे लोवेनस्तेनकी जेलको कर दी जाय। राजकुमारको मेरे असली उद्देश्यका कुछ भी पता न था। यदि होता, तो वह शायद अस्वीकार कर देता। उसने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली।"

"तो तुम इस तरहसे यहाँ आई?"

"हाँ, तुम देखते ही हो।"

"तो अब मैं तुम्हें रोज़ देखा करूँगा?"

"जितनी बार भी मैं तुम्हें देख सकूँगी, देखूँगी।"

"ओ, मेरी सुंदरी रोज़ा, तो तुम मुझसे कुछ कुछ प्यार करती हो?"

"कुछ कुछ? महाशय वान बार्ले, आप किसी बड़ी चीज़का दावा नहीं कर रहे हैं।"

वान बार्लेने बड़ी भावुकतासे अपने हाथ उसकी ओरको बढ़ाये, किन्तु उसकी उँगलियोंका अग्र-भाग मात्र खिड़कीके जंगलेके बाहर पहुँच सका।

लड़की बोली—मेरे पिता आ गये।

रोज़ा जल्दीसे दौड़कर बुड्ढे ग्रीफ़सके पास चली गई।

१९-खिड़कीका जंगला

ग्रीफ़सके साथ साथ उसका कुत्ता था।

उसने घूमकर सब कैदी उसे दिखा दिये, जिससे कि आवश्यकता पड़नेपर वह उन्हें पहचान सके।

रोज़ा बोली, पिताजी, यह वही प्रसिद्ध कोठरी है जिसमेंसे महाशय ग्रोशियस निकल भागे थे। आपने ग्रोशियसका नाम सुना है?

"हाँ, हाँ, वह बदमाश ग्रोशियस, उस पाजी बार्नेवेल्टका मित्र, जिसे मैंने बचपनमें फाँसी चढ़ते देखा था। ग्रोशियस! ओह, वह इस कोठरीसे भागा था। अब मैं देखूँगा, इस कोठरीसे कोई कैसे भागता है?"

और दरवाज़ा खोलकर वह अँधेरेमें ही क़ैदीसे बातचीत करने लगा।

कुत्ता जाकर क़ैदीकी टाँगोंको सूँघने लगा। मानों उससे पूछा रहा था कि तुमको अब जीनेका क्या हक है जब कि मैंने तुम्हें जल्लादके साथ जाते देखा है ?

किन्तु सुन्दरी रोज़ाने उसे अपने पास बुला लिया।

ग्रीफ़सने अपनी लालटैनको कुछ ऊँचा उठाया, जिससे उसके चेहरेपर उसका प्रकाश पड़े और वह दीखने लगे। फिर वह क़ैदीसे बोला, महाशय, आजसे मैं आपका जेलर हूँ। मैं सब कोठरियोंकी निगरानी स्वयं करता हूँ। मैं क्रूर प्रकृतिका नहीं हूँ, किन्तु मैं शासन और नियम-पालनके विषयमें बड़ा सख्त हूँ।

क़ैदीने प्रकाशमें आकर कहा, किन्तु मेरे प्यारे महाशय ग्रीफ़स, मैं आपको अच्छी तरह पहचानता हूँ।

ग्रीफ़स बोला—चुप, चुप, महाशय वान बार्ले, यह आप हैं! आप! चुप, चुप, चुप, देखिए किस तरह मिलना होता है।

"और महाशय ग्रीफ़स, मुझे यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि आपकी जिस बाँहकी टूटी हड्डीको मैंने बैठाया था वह खूब काम दे रही है। उसीसे आप लालटैन थामे हुए हैं।"

ग्रीफ़स भौंहें चढ़ाकर बोला, राजनीतिमें लोग हमेशा भूलें करते हैं। महाराजने आपको प्राण-दान कर दिया। उनकी जगह मैं होता तो कभी न करता।

वान बार्लेने पूछा, क्यों ?

"क्योंकि तुम फिर षड्यंत्र शुरू करोगे। तुम विद्वान् लोग शैतानसे मेल रखते हो।"

वान बार्लेने हँसते हुए कहा, ओह यह बात है! मैंने आपकी बाँह जिस तरहसे चढ़ा दी थी, क्या आप उससे असन्तुष्ट हैं, या जो क़ीमत मैंने माँगी उससे ?

"नहीं, आपने मेरी बाँह बहुत अच्छी तरहसे चढ़ा दी थी। यहाँतक कि छ ही सप्ताहमें मैं उससे इस तरह काम लेने लग गया मानों कुछ हुआ ही न हो। बुटेनहोफ़का डाक्टर अपने काममें बहुत चतुर है। वह भी उसे देखकर बड़ा आश्चर्यचकित हुआ था।"

"किन्तु महाशय ग्रीफ़स, आप विद्वानोंसे इतना क्यों डरते हैं ?"

ग्रीफ़स बोला—विद्वान् लोग ! मैं एक विद्वानपर निगरानी करनेकी अपेक्षा दस सिपाहियोंपर निगरानी रखना आसान समझता हूँ । सिपाही लोग तंबाकू पीते हैं, शराब पीते हैं और मस्त हो जाते हैं । उनको थोड़ीसी शराब दे दो और फिर भेड़के बच्चेकी तरह उन्हें जिधर चाहे उधर घुमा लो । किन्तु विद्वान् आदमी क्या कभी शराब पीता और मस्त हो सकता है ? वह बड़ा गंभीर बना रहता है, कुछ खर्च नहीं करता और षड्यंत्र करनेके लिए अपना दिमाग़ तरोताज़ा रखता है । किन्तु मैं तुम्हें अभीसे कहे देता हूँ कि मेरे रहते तुम कोई षड्यंत्र नहीं कर सकोगे । मैं तुम्हारे पास कोई पुस्तक, कागज़, या जादू टोनेकी पुस्तकें न रहने दूँगा । वह ग्रोशियस किताबोंकी सहायताहीसे तो निकल भागा था ।"

" महाशय ग्रीफ़स, मैं आपको निश्चय दिलाता हूँ कि मेरे मनमें भाग निकलनेका विचार पहले शायद कभी एक क्षणके लिए आया भी हो, लेकिन अबसे मेरे मनमें ऐसा विचार स्वप्नमें भी नहीं आयगा । "

" अच्छा, होशियार रहो, किन्तु मैं तो फिर भी कहता हूँ कि राजकुमारने बड़ी भारी ग़लती की है । "

" मेरा सिर न कटवाकर ? धन्यवाद, ग्रीफ़स, धन्यवाद । "

" हाँ, ठीक । देखते नहीं, दोनों द'विट-भाई कैसे शान्त हैं ? "

वान बार्लेने ग्रीफ़सके प्रति अपनी घृणा छिपानेके लिए अपना मुँह फेरकर कहा—ग्रीफ़स, आप जो कुछ कहते हैं, उसे सुनकर हृदयमें चोट लगती है । क्या आप नहीं जानते कि इन दोनों सज्जनोंमेंसे एक मेरा धर्म-पिता था और एक परम मित्र ।

" हाँ, किन्तु मुझे यह भी मालूम हैं कि दोनों षड्यंत्रकारी थे और मैं तो यह दया-दृष्टिसे कहता हूँ । "

" मैं आपकी दया-दृष्टिका मतलब नहीं समझा । जरा स्पष्ट कीजिए । "

" अच्छा, आप अगर वधके तख्तेपर थोड़ी देर और रहते तो—"

" तो क्या होता ? "

" तो आपको और कष्ट न उठाना पड़ता । क्योंकि मैं आपसे स्पष्ट कहे देता हूँ कि मैं आपको चैनसे नहीं रहने दूँगा । "

" ग्रीफ़स, इस प्रतिज्ञाके लिए धन्यवाद । "

क़ैदी तानेके साथ बूढ़े जेलरपर मुसकुराया और दरवाज़ेसे बाहर उसे रोज़ाकी मुसकराहट दिखलाई दी । इस मुस्कराहटमें क़ैदीके लिए मधुर सान्त्वना थी ।

ग्रीफ़सने खिड़कीकी ओर पग बढ़ाया। अब भी कुछ कुछ प्रकाश था और खिड़कीमेंसे विस्तृत क्षितिजकी एक झलक देखी जा सकती थी।

ग्रीफ़स बोला, यहाँसे कैसा सुंदर दृश्य दिखाई देता है। वान बार्लेने रोज़ाकी ओर देखते हुए कहा, हाँ, यहाँसे बाहरका दृश्य बड़ा सुंदर दिखाई देता है।

" हाँ, हाँ, बड़ा ही सुन्दर है। "

इसी समय लालटैनके प्रकाश तथा अपरिचितके स्वरसे चौंककर दोनों कबूतर खिड़कीके पासके अपने घोंसलेमेंसे उड़े और अँधेरेमें लीन हो गये।

जेलरने पूछा, यह क्या है ?

वान बार्लेने जवाब दिया, मेरे कबूतर।

जेलर बोला, मेरे कबूतर ! मेरे कबूतर ! क्या कैदीकी कोई अपनी चीज़ भी होती है ?

वान बार्ले बोला, ये कबूतर दयालु परमात्माने मुझे दिये हैं।

" यहाँ तो नियमोंका भंग पहले ही हो चुका है। कबूतर ! नवयुवक, नवयुवक, मैं तुमसे अभी कहे देता हूँ कि कलको ये कबूतर मेरी हाँडीमें पकेंगे। "

" ग्रीफ़स, पहले आप उन्हें पकड़िए तो ! आप कहते हैं कि वे कबूतर मेरे नहीं हैं। किन्तु मेरा जितना अधिकार उन कबूतरोंपर है, आपका तो उससे भी कम है। "

जेलर बोला, यह कहनेसे कुछ नहीं होता। मैं कल शाम होनेसे पहले ही उनकी गर्दन मरोड़ दूँगा।

यह क्रूर प्रतिज्ञा करते हुए ग्रीफ़स बाहरको झुककर घोंसलेको देखने लगा। इस बीच वान बार्ले मौका पाकर दरवाज़ेकी तरफ़ गया और रोज़ासे हाथ मिलाने लगा। रोज़ाने चुपकेसे उसके कानमें कहा,—" आज रातको नौ बजे। "

ग्रीफ़स तो कबूतरोंको देखनेमें लगा था, इस लिए उसने कुछ देखा या सुना नहीं। वह खिड़कीको बंद करके रोज़ाका हाथ पकड़कर बाहर चला गया, और फिर दूसरा ताला लगाकर चटखनियाँ बंद करके दूसरे कैदियोंके पास ऐसी ही प्रतिज्ञाएँ करने चला गया।

उसके जाते ही वान बार्ले दरवाज़ेके पास गया और जेलरके पैरोंकी आहटको ध्यानसे सुनने लगा। जब वह आहट सुनाई देनी बिल्कुल बंद हो गई, तो उसने खिड़कीके पास जाकर घोंसलेको जड़से उखाड़कर फेंक दिया।

वह इन कबूतरोंसे बड़ा प्यार करता था, क्यों कि इन्हींके द्वारा उसे रोज़ाको देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इसी लिए उसे उन्हें सदैवके लिए अपने पाससे भगा देना ज्यादा पसंद था, बनिस्बत इसके कि उनपर कोई प्राण-संकट आवे।

जेलरके आगमन, उसकी पाशविक धमकियों और उसके इस कथनका कि मैं तुम्हारे जीवनको कठिन बना दूँगा, वान बार्लेने कुछ विचार नहीं किया। क्यों कि उसके मनमें रोज़ाके पुनरागमनसे मधुर आशाओंका पुनरुदय होने लगा था।

वह बड़ी अधीरतासे नौ बजनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, कि लोवेनस्तेनके घंटेने एक एक करके नौ बजाये।

रोज़ाने कहा था कि नौ बजे मेरी प्रतीक्षा करना।

पीतलके घंटेसे नौवें घंटेकी आवाज़ अभी गूँज ही रही थी कि वान बार्लेको ज़ीनेमें रोज़ाके कपड़ोंकी सरसराहट और पाँवकी धीमी आहट सुनाई दी और फिर खिड़कीके जंगलेपर, जिसपर उसकी अधीर आँखें लगी हुई थीं, प्रकाश दिखलाई दिया।

जंगलेपरका किवाड़ खुल गया।

ज़ीनेपर दौड़कर चढ़नेसे रोज़ा हाँफ रही थी। हाँफते हुए ही उसने कहा, मैं आ गई, आ गई!

"ओह, अच्छी रोज़ा!"

"तो तुम मुझे देखकर खुश हुए?"

"क्या यह भी कोई पूछनेकी बात है? किन्तु तुम यहाँ कैसे आ सकीं? कहो तो।

"सुनो, मेरे पिता रोज़ ब्यालू करके झट सो जाते हैं। मैं भी उन्हें थोड़ी सी 'जिन' शराब पिलाकर अच्छी तरह सुला देती हूँ। इसके विषयमें कुछ बोलो मत, क्योंकि इसी नींदके कारण मैं रोज़ रातको तुमसे मिलने और घंटाभर बात करने आ सकूँगी।"

"ओह, रोज़ा, प्यारी रोज़ा, इसके लिए धन्यवाद, अनेक धन्यवाद।"

और ये शब्द कहते हुए वान बार्ले अपना मुख खिड़कीके इतना पास ले गया कि रोज़ाने अपना मुख पीछे हटा लिया।

वह बोली, मैं तुम्हारी गुले लालाकी तीनों गाँठ लाई हूँ।

वान बार्लेका हृदय उछलने लगा। उसने अबतक रोज़ासे यह पूछनेका साहस नहीं किया था कि उसने उसको जो अमूल्य धरोहर सौंपी थी, उसका उसने क्या किया।

वह बोला, तो क्या तुमने उन्हें सुरक्षित रक्खा है?

" तो क्या तुमने मुझे वे बीज बड़ी प्यारी वस्तु कहकर नहीं दिये थे?"

" हाँ, किन्तु क्योंकि मैंने वे बीज तुम्हें दे दिये थे, इसलिए मैं समझता हूँ कि वे तुम्हारे हो गये।"

" तुम्हारी मृत्युके बाद वे मेरे होते। किन्तु सौभाग्यसे तुम जीवित हो। ओह, मैंने राजकुमार विलियमके लिए कितनी मंगल-कामना की है। यदि परमात्मा राजकुमारको वे सब वस्तुएँ दे दे, जो मैंने उससे उनके लिए माँगी हैं, तो राजकुमार न केवल अपने राज्यमें अपितु सारी पृथ्वीभरमें सबसे सुखी मनुष्य होंगे। जब तुमको फाँसी नहीं हुई, तो मैंने तुम्हारे धर्म-पिताकी बाइबिलकी ओर देखकर तुम्हारी गाँठें तुम्हारे पास लानेका निश्चय किया, केवल मुझे उसका मार्ग नहीं मालूम था। मैंने राजकुमारसे अपने पिताकी बदली यहाँको करानेकी प्रार्थना करनेका इरादा कर लिया था कि तभी तुम्हारी धाय तुम्हारी चिट्ठी लेकर आई। ओह, हम दोनों कितनी देरतक रोये। तुम्हारी चिट्ठी पाकर मेरा वह निश्चय और दृढ हो गया और मैं लीडको चल दी। आगेकी सब बातें तुम्हें मालूम ही हैं।"

" तो क्या प्यारी रोज़ा, तुम मेरी चिट्ठी पानेसे पहले ही मुझे देखने आनेका विचार कर रही थीं?"

" अगर मेरे मनमें कोई विचार था, तो यही था।"

ये शब्द कहते हुए रोज़ाके प्रेमने उसकी लज्जा और शालीनतापर विजय पा ली और उसका चेहरा दूसरी बार ऐसा सुन्दर हो गया कि वान बार्लेने अपना माथा और होंठ जंगलेकी ओर बढ़ा दिये, क्योंकि वह उस देवीको धन्यवाद देना चाहता था।

रोज़ा पहलेकी तरह पीछेको हट गई।

रोज़ाने आँखें मटकाते हुए कहा—सच ही मुझे पढ़ न सकनेसे बहुत बार खेद हुआ है, किन्तु इतना खेद कभी नहीं हुआ जितना कि तब हुआ जब

कि तुम्हारी धाय तुम्हारा पत्र लाई और मैं उसे हाथमें लिये रही। मेरे लिए वह पत्र मौन था, जब कि ओरोंके लिए वह बोलता था।

"तो रोज़ा, तुम बहुधा पढ़ न सकनेके लिए खेद करती रही हो? तुम्हें खेद करनेका अवसर और कब आया?"

वह हँसते हुए बोली, लोग मुझे चिट्ठियाँ लिखते थे, उन्हें मैं नहीं पढ़ सकती थी।

"तो रोज़ा, तुम्हारे पास चिट्ठियाँ आती रहती थीं?"

"हाँ, आया करती थीं।"

"तुमको कौन चिट्ठियाँ लिखा करता था?"

"कौन? क्यों, पहले जो विद्यार्थी बुटेनहोफ़के पाससे गुज़रते थे वे सब चिट्ठियाँ लिखते थे, दूसरे जो अफ़सर परेडके लिए जाते थे, और जो क्लर्क और व्यापारी मेरी छोटी खिड़कीसे मुझे देखते थे, वे सब लिखते थे।"

"और प्यारी रोज़ा, तुम उन सब चिट्ठियोंका क्या करती थीं?"

"पहले मैं किसी सखीसे पढ़वाकर उन चिट्ठियोंको सुना करती थी, उनमें बड़ा मजा आता था। पीछेसे मैंने सोचा कि इस सब वाहियातमें क्या धरा है। मैंने कुछ दिनोंमें उन सब चिट्ठियोंको जला दिया।"

वान बार्लेने प्रेम और हर्षपूर्ण दृष्टिसे कहा, कुछ दिनोंसे?

रोजाके चेहरेपर लाली छा गई। उसने सिर नीचेको झुका लिया, इसलिए उसने वान बार्लेके निकट आते हुए होंठोंको नहीं देखा। होंठ तो जंगलेके कारण उस तक नहीं पहुँच सके, किन्तु मधुरतम चुंबनका गरम श्वास उसके होठोंतक पहुँच गया।

इस माधुर्यके अकस्मात् आविर्भाव होनेपर रोज़ा पीली पड़ गई। शायद उससे भी अधिक पीली, जैसी कि वह बुटेनहोफ़में वान बार्लेकी फाँसीके दिन हो गई थी। उसके मुँहसे एक हलकीसी चीख़ निकल गई और वह आँखें बंद करके अपने हृदयके कंपनको हाथ रखकर थामनेकी वृथा चेष्टा करती हुई वहाँसे भाग गई। वान बार्ले फिर अकेला रह गया। जंगलेमें रोज़ाके कुछ केश फँसे रह गये थे। वह उनकी मीठी सुगंधको ही सूँघता रह गया।

रोज़ा ऐसी जल्दी भाग गई कि वान बार्लेको उसकी गाँठें देना भी भूल गई।

१६-अध्यापक और शिष्या

रोज़ाके मनमें वान बार्लेके प्रति जो दयापूर्ण भाव थे, भला मानस ग्रीफ़्स उनसे कोसों दूर था।

उस जेलमें केवल सात ही कैदी थे। उसका काम बहुत थोड़ा था और बुढ़ापेमें पेंशनके साथ दिये हुए किसी हलके-से कामके समान था।

किन्तु वह योग्य जेलर अपने अत्युत्साहके कारण अपनी सारी कल्पना-शक्ति लगाकर अपनेको सौंपे हुए कामको बहुत बड़ा समझता था। उसकी दृष्टिमें वान बार्ले कोई बड़ा भयंकर अपराधी था और इसलिए उसके कैदियोंमें सबसे भयंकर था। वह उसकी चाल-ढालको बड़े ध्यानसे देखता और उसकी ओर हमेशा क्रोधभरी दृष्टिसे ही ताकता था। उसके व्यवहारको विलियम जैसे दयापूर्ण और अपराधोंको क्षमा कर देनेवाले राजकुमारके प्रति विद्रोह बतलाकर उसे दंड देता था।

इस आशासे कि वान बार्लेका कोई षड्‌यंत्र या नियम-भंग पकड़ूँगा, वह दिनमें तीन बार उसकी कोठरीमें आता था। किन्तु वान बार्लेने चिट्ठी लिखना छोड़ दिया था। क्योंकि जिसको उसे चिट्ठी लिखनी थी वह पासमें ही मौजूद थी। यह संभव था कि यदि वान बार्लेको बिल्कुल माफ़ कर दिया जाता और जहाँ चाहे वहाँ जानेकी अनुमति दे दी जाती, तो वह रोज़ा और अपनी तीनों गाँठोंको छोड़कर बाहर जानेकी अपेक्षा जेलमें ही रहना अधिक पसंद करता।

रोज़ाने रोज नौ बजे रातको आकर उससे एक घंटा बात-चीत करनेकी प्रतिज्ञा की थी और पहले ही दिनसे उसने अपनी प्रतिज्ञाको निबाहा था।

वह अगले दिन भी पहले दिनके समान ही होशियारीसे आई। परन्तु अबकी बार उसने जंगलेके बहुत पास मुँह न ले जानेका निश्चय कर लिया था। पहलेसे ही वान बार्लेको रोचक संभाषणमें लगानेके लिए उसने जाते ही उसकी तीनों गाँठें, जो अभी तक उसी कागज़में लिपटी हुई थीं, जंगलेमेंसे उसे दे दीं।

किन्तु रोज़ाको बड़ा आश्चर्य हुआ जब कि वान बार्लेने अपनी उँगलियोंसे उसके श्वेत हाथको पीछे हटा दिया।

वह विचार करके बोला, यदि हम अपनी सारी संपत्ति एक ही थलीमें रख दें, तो उसमें बड़ा खतरा है। मेरी प्यारी रोज़ा, ज़रा यह विचारो कि यह एक ऐसा काम पूरा करनेका मामला है जिसको लोग अबतक असंभव समझते हैं। यह काले गुले लालाको पैदा करनेका मामला है। हमें हरएक बातको अच्छी तरह सोचकर होशियारीसे काम करना चाहिए जिससे कि, यदि विफलता हो तो, हमें पीछेसे अपने आपको दोष न देना पड़े। मैंने यह योजना सोची है।

जो कुछ कैदी कह रहा था, रोज़ाने अपना पूरा ध्यान उसे सुननेमें लगा दिया। उसको स्वयं तो उसमें इतनी रुचि नहीं थी किन्तु अभागे कैदीकी रुचि देखकर वह भी उसमें पूरी दिलचस्पी लेती थी।

वान बार्ले बोला, मैंने सोचा है कि हम दोनों मिलकर इस कामको इस तरह करें—

रोज़ा बोली, मैं सुन रही हूँ।

"मैं समझता हूँ कि इस किलेमें कोई न कोई छोटा बगीचा जरूर होगा। बगीचा न हो तो कोई आँगन होगा, आँगन भी न हो, तो कोई चबूतरा तो जरूर होगा ही।"

"एक अच्छा बाग़ है। वह वालनदीके किनारे किनारे है और उसमें कुछ अच्छे पुराने पेड़ हैं।"

"रोज़ा, क्या तुम मुझे इस बाग़की थोड़ीसी मिट्टी लाकर दिखलाओगी, जिससे कि मैं देखकर उसकी जाँच कर सकूँ?"

"कल ले आऊँगी।"

"तुम थोड़ीसी मिट्टी छायादार स्थानमेंसे और थोड़ी सी धूपदार स्थानमेंसे लाना, जिससे कि मैं गीली और सूखी दोनों दशाओंमें उसके दोनों गुणोंकी जाँच कर सकूँ।"

"निश्चिन्त रहो।"

"जब मैं मिट्टीको चुन लूँ और ज़रूरत हो तो उसमें करनेके लिए कुछ सुधार बतलाऊँ, तो तुम मेरे निश्चित किये हुए दिनको एक गाँठ लेकर उस बगीचेमें गाड़ देना। यदि तुम मेरे कहे अनुसार उसकी देख-भाल करोगी, तो उसपर काला फूल अवश्य लगेगा।"

"मैं पलभर भी उससे अलग नहीं होऊँगी।"

"एक गाँठ तुम मुझे दे देना और मैं उसे यहाँ अपनी कोठरीमें उगानेकी चेष्टा करूँगा, जिससे कि मुझे कुछ काम मिल जायगा और दिनको जब मैं तुम्हें नहीं देख सकूँगा किसी तरह अपना समय काटूँगा। मुझे उसकी बहुत थोड़ी आशा है और मैं पहलेहीसे कहे देता हूँ कि मैं उसे अपने स्वार्थकी बलि चढ़ा हुआ समझता हूँ। मैं हरएक वस्तुको कृत्रिम रूपसे सहायक बनानेकी कोशिश करूँगा, यहाँ तक कि अपने हुक्केकी राख और गरमीसे भी काम लेनेका प्रयत्न करूँगा। बाकी जो तीसरी गाँठ है, उसे हम अपनी अन्तिम आशाके तौरपर, यदि ये दोनों प्रयत्न विफल हो जायँ तो, काम आनेके लिए रक्खेंगे। या तुम उसे अपने पास रखना। मेरी प्यारी रोज़ा, यदि हम इस तरहसे करेंगे तो यह असंभव है कि हमें सफलता न हो, तुम्हारे दहेज़के एक लाख रुपये न मिलें और अपने कामको पूरा होते देखनेका सौभाग्य हमें न मिले।"

रोज़ा बोली, मैं समझ गई। मैं कल तुम्हारे देखनेके लिए थोड़ीसी मिट्टी लाऊँगी और तुम उसमेंसे अपने लिए और मेरे लिए चुन लेना। तुम्हारे लिए मिट्टी मैं कई बारमें ला सकूँगी, क्योंकि एक बारमें थोड़ी ही ला सकती हूँ।

"ओह प्यारी रोज़ा, कोई जल्दी नहीं है। हमारी गाँठोंके बोनेका मोसम आनेमें पूरा एक महिना बाकी है। हमारे पास पर्याप्त समय है। केवल इतना है कि अपनी गाँठ बोनेमें तुम मेरे कहनेके अनुसार चलना।"

"मैं इस बातका तुम्हें वचन देती हूँ।"

"और उसके लगाने बाद वायुमंडलमें परिवर्तन, क्यारीमें किसीके पदचिह्न या और जो कोई भी बात, जिससे हमारे पौधेके हानि-लाभका संबंध है, संघटित हो, तो मुझे आकर वह बतलाना। रातको तुम इस बातका ध्यान रखना कि हमारे बागमें बिल्लियाँ न आने पावें। दो पाजी बिल्लियोंने डोर्टमें एक बार मेरी क्यारियोंकी क्यारियाँ उजाड़ डाली थीं।"

"मैं खयाल रक्खूँगी।"

"चाँदनी रातोंको, प्यारी बालिका, तुमने बागकी ओर क्या कभी देखा है?"

"मेरी सोनेकी कोठरीसे वह दिखाई देता है।"

" अच्छा। चान्दनी रातोंको तुम देखती रहना कि दीवारोंमेंके बिलोंसे चूहे न निकलें। चूहे गुले लालाके पौधोंको कुतर डालते हैं और मैंने गुले लालाके शौकीनोंको चूहोंकी शिकायत करते बहुत देखा है। "

" मैं देखती रहूँगी। और अगर चूहे या बिल्ली हों तो..."

" तो तुम आकर मुझसे कहना। साथ ही साथ एक और प्राणी है जिससे बिल्ली या चूहेसे भी अधिक डरना चाहिए। "

जेलमें रहनेके समयसे वान बार्ले बड़ा शंकाशील हो गया था। इसी लिए उसने यह बात कही।

रोज़ाने पूछा, वह प्राणी कौन है ?

" वह प्राणी मनुष्य है। प्यारी रोज़ा, तुम समझती हो कि मनुष्य एक रुपया भी चुरा लेता है और उसके लिए जेलके भयको भूल जाता है। फिर यह तो एक लाख रुपयेका मामला है। "

" सिवाय मेरे, बाग़में कोई नहीं घुसने पायगा ? "

" तो तुम मुझसे इसकी प्रतिज्ञा करती हो ? "

" हाँ, तुमसे मैं शपथके साथ कहती हूँ। "

" अच्छा रोज़ा ! धन्यवाद प्यारी रोज़ा ! आहा ! मुझको जीवनका सारा आनन्द तुमहीसे प्राप्त होगा। "

एक तो वान बार्लेके होंठ पिछले दिनके समान ही उत्साहके साथ जंगलेके निकट आ गये और दूसरे लौटनेका समय भी निकट आ गया था, इस लिए रोज़ाने अपना सिर पीछे हटा लिया और हाथ आगे बढ़ाया।

इसी गौर-वर्ण हाथमें गुले लालाके मूलकी गाँठ थी।

वान बार्लेने बड़े उत्साह और अनुरागके साथ इस हाथकी उँगलियोंके सिरोंको चूमा। क्या उसके चूमनेका कारण यह था कि इस हाथमें उसका काले फूलका मूल था या यह कि वह हाथ रोज़ाका था ? इसका निर्णय हम पाठकोंपर ही छोड़ देते हैं।

रोज़ा बाकी दो गाँठोंको लिये हुए पीछे हटी और उनको उसने अपनी छातीमें छिपा लिया।

अपनी छातीमें इस लिए छिपा लिया कि वे काले फूलके मूल थे या इस लिए कि वे वान बार्लेने दिये थे ? हम समझते हैं कि इस प्रश्नका जवाब देना पहले प्रश्नसे आसान है।

कुछ भी हो, अबसे क़ैदीको जीनेमें रुचि पैदा हो गई और उसका जीवन मधुर हो गया।

रोज़ाने उसको एक गाँठ लौटा दी थी, यह पाठक देख ही चुके हैं।

रोज़ा रोज शामको वान बार्लेकी चुनी हुई और पसंद की हुई बागकी मिट्टी मुट्ठी मुट्ठी करके लाती रही।

वान बार्लेने एक सुराही तोड़कर उसका गमला बना लिया। उसमें रोज़ाकी लाई हुई मिट्टी भर दी और थोड़ीसी नदीकी मिट्टी मिला दी। इस प्रकार पौधेके लिए बहुत बढ़िया मिट्टी तैयार हो गई।

तब अप्रैल मासके आरंभमें उसने पहली गाँठ बो दी।

वान बार्लेने अपने मेहनतके फल और आनंदको ग्रीफ़ससे छिपानेके लिए जिस होशियारी, सावधानी और चतुरतासे काम लिया उसका वर्णन असंभव है। यह आधा घंटा उस दार्शनिक क़ैदीके लिए विचार और अनुभवके एक युगके समान बीतता था।

ऐसा कोई दिन नही बीतता था जब रोज़ा वान बार्लेसे बातचीत करने न आती हो।

वान बार्लेने रोज़ाको गुले लालाके विषयमें सब बातें सिखला दीं। किन्तु यह विषय चाहे कितना ही रुचिकर क्यों न हो कोई आदमी हमेशा उसीके विषयमें बातें करके समय नहीं बिता सकता।

तब वे दूसरे विषयोंपर बात-चीत करने लगे और उनकी बात-चीतके विषयोंका क्षेत्र इतना विस्तृत हो गया कि उसे देखकर स्वयं वान बार्लेको आश्चर्य होता था।

रोज़ाने एक आदत डाल रक्खी थी। वह प्रायः अपना सुंदर मुख जंगलेसे छह इंचकी दूरीपर रखती थी, क्योंकि तबसे उस सुंदरीको शायद अपने ऊपर विश्वास नहीं रहा था जबसे कि उसने यह अनुभव किया था कि एक क़ैदीका श्वास एक युवतीके हृदयको किस तरह जला सकता है।

एक बात ऐसी थी कि जिसकी चिन्ता वान बार्लेको उतना ही सताती थी जितना कि गाँठोंकी, और उसका ख्याल बार बार उसी ओर जाता था।

यह बात थी रोज़ाका अपने पिताके ऊपर निर्भर होना।

वस्तुतः वान बार्लेका आनंद इस मनुष्यकी इच्छापर निर्भर था। न मालूम कब उसका चित्त लेवेनस्तेनसे ऊब जाय, यहाँकी आबोहवा उसे पसंद न आवे,

या शराब अच्छी न लगे और वह इस क़िलेको छोड़कर चल दे, तथा अपनी लड़कीको हाथ पकड़कर ले जाय। तो फिर वान बार्ले और रोज़ाको अलग अलग हो जाना पड़े।

वान बार्लेने रोज़ासे कहा, और मेरे कबूतर तब किस काम आयँगे? क्योंकि तुम तो न मेरी चिट्ठी पढ़ सकती हो और न मुझे चिट्ठी लिख सकती हो।

रोज़ा भी मनमें वियोगसे उतना ही डरती थी जितना कि वान बार्ले। वह बोली, हमारे पास रोज़ शामको एक घंटा होता है। हम उसका सदुपयोग क्यों न करें।

"किन्तु मैं समझता हूँ कि हम उसका दुरुपयोग नहीं करते।"

रोज़ाने मुसकुराते हुए कहा, तो हम उसका और भी अच्छा उपयोग करें। मुझे लिखना और पढ़ना सिखाओ। मैं तुम्हारे अध्यापनसे ज़रूर फ़ायदा उठाऊँगी, इसका विश्वास रक्खो और इस तरह हम कभी एक दूसरेसे अलग नहीं हो सकेंगे, जब तक कि हम खुद ऐसा करना न चाहें।

"ओह, तब तो हमारे सामने अनन्त काल पड़ा है।"

रोज़ाने मुसकुराते हुए धीरेसे अपने कंधे ऊपर उठाये।

वह बोली, क्या तुम हमेशा जेलमें ही रहोगे? जब राजकुमारने तुमको प्राणदान दिया है, तो क्या वे तुमको तुम्हारी स्वतंत्रता भी नहीं लौटायँगे? और क्या तुमको तब तुम्हारी संपत्ति नहीं मिलेगी? क्या तुम धनी नहीं हो जाओगे? उस समय जब तुम अपने घोड़ेपर या बग्घीपर सवार होकर निकलोगे, तो क्या तब तुम इस ग़रीब रोज़ापर, इस जेलरकी बेटीपर, जो एक जल्लादकी बेटीके बराबर है, एक दृष्टि डालनेकी दया करोगे?

वान बार्लेने उसका विरोध करना चाहा और वह सच्चे तथा प्रगाढ प्रेम-पूर्ण हृदयसे करनेवाला ही था कि रोज़ाने बीचमें ही उसे रोक दिया और बात बदलकर कहा—

"तुम्हारी गाँठ कैसी है?"

गाँठके विषयमें बातचीत शुरू कर देना दूसरी सब बातों—यहाँ तक कि रोज़ाको भी—भुला देनेका अच्छा तरीका था, जिसे रोज़ा काममें लाया करती थी।

वह बोला, बहुत अच्छी तरह। गाँठमेंसे अंकुर निकल रहा है, उसकी झिल्ली काली पड़ती जा रही है, नसें दिखलाई पड़ने लगी हैं। अबसे आठ

दिनमें या शायद इससे पहले ही पहली पत्तियाँ निकलती हुई दिखलाई देने लगेंगीं। और रोज़ा, तुम्हारीका क्या हाल है ?

" मैंने खूब विस्तारसे तैयारियाँ की हैं और सब तुम्हारे कहनेके अनुसार।"

" रोज़ा, मैं सुनूँ तो सही, क्या क्या किया ?"

यह कहते हुए उसकी आँखोंमें उसी तरह जोश झलक आया और श्वास उसी तरह जल्दी जल्दी चलने लगा जिस तरह कि उस दिन सायंकालको जब कि इस श्वासने रोज़ाके हृदयको जला दिया था। रोज़ा अपने दिलमें अपने प्रति तथा फूलके प्रति कैदीके इस दुहरे प्रेमपर विचार कर रही थी। वह मुस्कुराती हुई बोली—

" मैंने विस्तारसे तैयारियाँ की हैं। मैंने एक साफ जगहमें एक क्यारी बनाई है। यह क्यारी वृक्षों और दीवारोंसे दूर है। उसकी मिट्टीमें थोड़ीसी बालू मिला दी है। यह ज़मीन कुछ तर है। उसमें एक भी पत्थर या कंकर नहीं है। मैंने सब कुछ तुम्हारी आज्ञाके अनुसार किया है।"

" शाबाश, रोज़ा, शाबाश।"

" क्यारी तो तैयार हो गई। अब गाँठ बोनेके लिए तुम्हारी आज्ञाकी देर है। जब भी तुम अच्छा दिन देखो, मुझसे तुरन्त कहो। मैं झट गाँठ बो दूँगी। तुम जानते ही हो कि मैं तो केवल तुम्हारे वास्ते ठहरी हूँ और देर कर रही हूँ, क्योंकि मुझे अच्छी हवा, मनमानी धूप, और नमी सब कुछ प्राप्त हैं।"

वान बार्लेने आनंदके मारे ताली बजाते हुए कहा, तुम ठीक कहती हो, ठीक। रोज़ा, तुम बहुत अच्छी शिष्या हो, और तुमको तुम्हारा एक लाख रुपयेका इनाम जरूर मिलेगा।

रोज़ा मुस्कुराते हुए बोली, यह मत भूलो कि तुम्हारी शिष्याको फूलोंकी विद्याके सिवा और भी कुछ सीखना है।

" हाँ, हाँ, सुंदरी रोज़ा, तुम पढ़ना सीखो, इसमें मुझको भी उतनी ही रुचि है जितनी तुमको।"

" तो हम कब शुरू करें ?"

" अभी।"

" नहीं, कल।"

" क्यों, कल क्यों ? "

" क्यों कि आज हमारा घंटा ख़तम हो गया और अब मुझे जाना चाहिए । "

" इतनी जल्दी, तुम पढ़ोगी कौनसी किताब ? "

" मेरे पास एक किताब है और मैं समझती हूँ कि यह किताब हमारे लिए मंगलकारक होगी । "

" तो कलको शुरू करें न ? "

" हाँ, कलको । "

अगले दिन रोज़ा कॉर्नेलियस द'विटकी बाइबिल लेकर आई ।

१७-पहली गाँठ

हम पहले ही कह चुके हैं कि रोज़ा अगले दिन कॉर्नेलियसकी बाइबिल लेकर आई ।

उस समय गुरु और शिष्याके बीच जो मनोहर दृश्य दिखाई देता था उसका वर्णन करना उपन्यास-लेखकके लिए बड़े आनन्दका विषय है ।

दोनों प्रेमियोंके बीचमें जो खिड़की थी वह बहुत ऊँची थी । उसमें वे एक दूसरेके मुखको तो अच्छी तरह पढ़ सकते थे किन्तु पुस्तक पढ़नेके लिए उसमें बहुत असुविधा थी ।

इस लिए रोज़ाको एक हाथसे पुस्तकको तिरछी करके पकड़े रहना पड़ता था और दूसरेसे लालटैन । पीछेसे वान बार्लेने रोज़ाके हाथको कुछ आराम देनेका एक उपाय निकाला । वह लालटैनको एक रस्सीसे जंगलेकी छड़से बाँध देता था । तबसे रोज़ा उस हाथकी उँगलीसे अक्षरोंको निर्देश करके पढ़ती जाती थी । वान बार्लेने कहींसे एक लंबा तिनका ले लिया था और वह उससे जंगलेके छिद्रोंमेंसे अक्षरोंको निर्देश करता जाता था ।

लालटेनका प्रकाश रोज़ाके सुन्दर रंग, नीली आँखों और उसकी मनोहर फ्रीजलैंडकी सुंदरियोंवाली टोपीके नीचे उसके सुनहरे केश-पाशको चमका देता

था। उसकी उँगलियाँ ऊपरको रहती थीं, इसलिए उनमेंसे खून नीचे उतर आता था और उस पारदर्शी मांसमेंसे उनका पीला गुलाबी रंग प्रकाश पड़कर खूब दिखाई देता था।

रोज़ाकी बुद्धि वान् बार्लेके मनके नव-जीवन-प्रद प्रभावसे और भी विकसित हुई। जब कोई कठिन बात उसकी समझमें नहीं आती थी, तो दो प्रेमियोंके प्रेमके परस्पर संपर्कसे ऐसी बिजली-सी निकलती थी जो स्वयं मूढताके भी हृदयमें प्रकाश कर दे सकती थी और सब बात स्पष्ट हो जाती थी।

रोज़ा अपनी कोठरीमें लौटकर अकेली अपने मनमें पढ़े हुए पाठको और अपनी आत्मामें प्रेमके पाठको दुहराती थी।

एक दिन शामको वह और दिनोंकी अपेक्षा आधा घंटा देरसे आई। यह अभूतपूर्व घटना थी, इस लिए वान बार्ले उसका कारण पूछे बिना न रह सका।

रोज़ाने जवाब दिया, मुझपर क्रोध मत करो। इसमें मेरा कुछ अपराध नहीं। हेगमें एक आदमी मेरे पितासे मिलने आया करता था। अब वह यहाँ भी आया है और मेरे पिताने उससे मित्रता शुरू कर दी है। यह आदमी अच्छे स्वभावका है, शराबका बड़ा शौकीन है, मनोरंजक कहानियाँ सुनाता है, बड़ा खर्चीला है और दावत देनेको तो हमेशा तैयार रहता है।

वान बार्लेने आश्चर्यसे पूछा, तुम उसके विषयमें इससे अधिक कुछ नहीं जानतीं?

सुन्दरीने जवाब दिया, नहीं, यह आदमी नियमित रूपसे पितासे मिलने आता है और लगभग २५ दिनसे पिता इसकी मित्रतामें पागलसे हो गये हैं।

वान बार्लेको इस नई घटनामें कोई विपत्ति छिपी हुई दिखाई पड़ती थी। उसने चिन्तासे सिर हिलाते हुए कहा, ओह! कभी कभी राज्यकी ओरसे जेलमें गुप्तचर भेजे जाते हैं, जो कैदी और जेल-कर्मचारी दोनोंपर दृष्टि रखते हैं। शायद यह आदमी वैसा ही हो।

रोज़ाने मुसकराते हुए कहा, वह भला मानस अन्य किसीपर भले ही दृष्टि रखता हो, परन्तु पितापर तो कदापि नहीं रखता।

"तो फिर किसपर रखता है?"

"उदाहरणके तौरपर मुझपर।"

"तुमपर?"

रोज़ाने मृदुहास्यके साथ कहा—हाँ, मुझपर।

वान बार्लने लंबी साँस खींचकर कहा, तुम ठीक कहती हो। जो लोग तुमसे विवाह करना चाहते हैं वे सब निराश ही नहीं होते रहेंगे। संभव है कि यह आदमी तुम्हारा पति बन जाय।

" मैं यह नहीं कहती कि ऐसा नहीं हो सकता। "

" इस सौभाग्यके प्राप्त होनेकी आशा तुम्हें कैसे है ? "

" सौभाग्य नहीं, भय कहो वान बार्ले। "

" धन्यवाद रोज़ा, तुम ठीक कहती हो, वह भय... "

" ऐसा अनुमान करनेका कारण यह है कि..."

" कहो तो मैं सुनूँ। "

यह आदमी ठीक तुम्हारी गिरफ़्तारीके समय बुटेनहोफ जेलमें कई बार आया था। परन्तु मेरे वहाँसे जाते ही चला गया था और अब मेरे यहाँ आते ही फिर आ गया है। हेगमें वह तुम्हें देखनेके बहानेसे आया था। "

" मुझे देखनेके बहाने, मुझे ? "

" हाँ, ज़रूर वह बहाना ही था। क्योंकि यहाँ भी तो तुम मेरे पिताके कैदी हो, तब वह वही बहाना फिर कर सकता था, जो पहले उसने किया था, किन्तु अब तो वह तुम्हारी भी कुछ परवाह नहीं करता। यही नहीं, मैंने कल उसे पितासे यह कहते सुना कि मैं तो वान बार्लको जानता भी नहीं। "

" रोज़ा, कृपया कहे जाओ, मैं जानना चाहता हूँ कि यह आदमी कौन है और क्या चाहता है ? मैं अनुमान लगाऊँगा। "

" तुमको निश्चय है कि तुम्हारा कोई मित्र तुमको यहाँ देखने नहीं आ सकता ? "

" रोज़ा, मेरा कोई मित्र है ही नहीं, सिवाय मेरी धायके। तुम उसे जानती ही हो और वह तुम्हें जानती है। उसे आना होगा तो वह स्वयं आयगी। उसे छल-छिद्र करना या बातें बनाना नहीं आता। वह सीधी तुम्हारे या तुम्हारे पिताके पास आयगी और कहेगी, ' महाशय या देवी, मेरा बच्चा यहाँ-पर है। देखो, मैं कितनी दुखी और शोकातुर हूँ। मुझे उसे घड़ीभरके लिए देख लेने दो और मैं जीवनभर परमात्मासे तुम्हारे मंगलके लिए प्रार्थना

करती रहूँगी।' मेरा तो मेरी धायके सिवा और कोई मित्र इस दुनियामें है नहीं।"

"अच्छा, मैं अब फिर अपने प्रकृत विषयपर आती हूँ। कल शाम जब मैं बीज बोनेके लिए क्यारी तैयार कर रही थी, तो मुझे पेड़ोंके बीच एक छाया-सी चलती दिखाई दी। मैंने छिपकर उसे देखा, पर उसने मुझे नहीं देखा। यह वही आदमी था। वह छिप गया। उसने मुझे मिट्टी खोदते हुए देखा। वह जरूर मेरे ही पीछे था और मुझे देखनेके लिए ही उधर आया था। वह बड़े ध्यानसे मुझे देख रहा था। मैंने एक भी फावड़ा ऐसा न चलाया होगा, एक ढेला भी न हटाया होगा, जिसे उसने न देखा हो।"

वान बार्ले बोला, हाँ, हाँ, वह प्रेमी है। क्या वह युवा है? सुंदर है?

यह कहकर वह उत्सुकतासे रोज़ाकी ओर देखने लगा और बड़ी अधीरतासे उसके उत्तरकी प्रतीक्षा करने लगा।

रोज़ाने खिलखिलाकर कहा—युवा? सुंदर? वह तो बड़ा भद्दा और कुबड़ा-सा है। ५० बरसकी उसकी आयु है और सामना हो जानेपर मुझे देखने या ऊँचे स्वरसे कुछ कहनेका उसे साहस नहीं होता।

"उसका नाम?"

"जाकोब।"

"मैं उसे नहीं जानता।"

"तुम अच्छी तरह समझ गये न कि वह तुम्हारे वास्ते यहाँ नहीं आता?"

"कुछ भी हो रोज़ा, तुम्हें देखते ही तुमसे प्रेम करनेको जी चाहता है। बहुत संभव है, वह तुमसे प्यार करता हो। पर तुम तो उससे प्यार नहीं करतीं न?"

"मैं नहीं करती जी।"

"तो मैं निश्चिन्त रहूँ?"

"अवश्य।"

"रोज़ा, अब तो तुम पढ़ने लग गई। मैं वियोग और ईर्ष्याकी पीडाके विषयमें जो कुछ तुम्हें अपने पत्रोंमें लिखूँगा, वह तो तुम पढ़ लोगी न?"

"यदि बड़े बड़े साफ़ अक्षरोंमें लिखोगे, तो अवश्य पढ़ लूँगी।"

बात-चीतका प्रवाह जिस ओर चला गया था उससे अब रोज़ाके मनपर उदासी छाने लगी, इस लिए उसने बातोंके उस प्रवाहको बदलकर पूछा—

" अच्छा तुम्हारे पौधेका अंकुर कैसा है जी ? "

" रोज़ा, ज़रा मेरे आनंदकी कल्पना तो करो। आज सुबह मैंने ज़रा मिट्टी हटाकर धूपमें देखा, तो मुझे पहली पत्तियोंके अंकुर दिखाई दिये। उन्हें देखकर मेरा हृदय मारे आनंदके उछलने लगा। उस अदृश्य छोटेसे अंकुरको देखकर, जिसे एक मक्खीका पंख भी उड़ते ससय तोड़-फोड़ दे सकता है, मुझे जितना आनन्द हुआ, उतना तब भी नहीं हुआ था जब कि मेरा सिर बुटेन-होफ़के मैदानमें वध-वेदीपर रक्खा हुआ था और नवाबका आज्ञा-पत्र सुनकर मुझे वहाँसे उठा लिया गया था। "

रोज़ाने मुस्कुराते हुए कहा, तो तुम्हें आशा है ?

" हाँ जरूर। "

" मैं अपनी गाँठ कब बोऊँ ? "

" जो सबसे पहला अनुकूल दिन हो, उसी दिन। मैं तुम्हें बतला दूँगा। इस काममें कभी किसीकी सहायता मत लो, और अपना रहस्य संसारमें किसीको भी मत बतलाओ। पहचानवाला आदमी मूलकी गाँठको देखते ही उसकी क़ीमत जान सकता है। प्यारी रोज़ा, तीसरी गाँठको सावधानीसे रखना। "

" वह अभी तक उसी कागज़में और उसी तरह धरी है, जैसे तुमने लपेटकर मुझे दी थी। मैंने उसे अपनी छातीमें छिपाकर रक्खा है, जहाँ उसे न तो नमी लग सकती है और न वह दब ही सकती है। दुखी कैदी, अब मुझे जानेकी अनुमति दो। "

" क्यों, अभीसे ? "

" अब तो मुझे जाना ही चाहिए। "

" इतनी देरसे आना और इतनी जल्दी चले जाना ! "

" मेरे पिता मुझे लौटते न देखकर अधीर हो जायँगे और वह प्रेमी शायद दूसरे प्रतिद्वंद्वीका संदेह करने लगेगा। "

यह कहकर वह चिन्तित-सी होकर कान लगाकर सुनने लगी।

बान बार्लेने पूछा, क्या है ?

" मुझे कुछ आवाज़-सी सुनाई दी है।"

" कैसी आवाज़ ? "

" किसीके जीनेमें आनेकी पैरोंकी आहट-सी । "

" वह तुम्हारे पिता तो हो नहीं सकते । उनके आनेकी आहट तो दूरसे सुनाई पड़ती है । "

" यह मेरे पिता नहीं है, इसका तो मुझे निश्चय है । किन्तु..."

" किन्तु..."

" किन्तु वह जाकोब हो सकता है । "

रोज़ा झपटकर ज़ीनेकी ओर चली गई और वह दस सीढ़ियाँ भी उतरने न पाई थी कि उसे जल्दीसे किवाड़ बन्द होनेकी आवाज़ सुनाई दी ।

वान बार्लेको इससे बड़ी चिन्ता हुई, किन्तु यह तो उसके लिए आगे आनेवाली बड़ी चिन्ताओंकी भूमिका-मात्र थी ।

जब दुर्दैव किसीपर कोई आपत्ति ढहाना आरंभ करता है, तो वह प्रायः उसको पहलेसे ही सूचित कर देता है; किन्तु प्रायः उसकी इन सूचनाओंपर ध्यान नहीं दिया जाता । देखनेमें आता है कि तलवारके हवामें घुमानेसे सन-सन आवाज़ पैदा हुई और वह तलवार सिरपर जा गिरी, जब कि सिर उस सन-सन आवाज़को सुनकर वहाँसे हटकर बच सकता था ।

अगला दिन भी आया और चला गया । उस दिन कोई उल्लेखयोग्य घटना नहीं हुई । ग्रीफ़स अपने नियमानुसार तीन बार आया और चला गया । उसे कोई आपत्ति-जनक वस्तु नहीं मिली । वह रोज़ समय बदल-बदलकर आया करता था, जिससे कि वान बार्लेको उसके आनेका पहलेसे पता न चले और वह सावधान न हो जाय । उसे इस प्रकार उसके कमरेमें किसी षड्यंत्रके सामानको पानेकी आशा थी । किन्तु वान बार्ले उसके पैरोंकी भारी चापको दूरसे ही सुन लेता था । उसने अपने गमलेको एक रस्सी और चरखीकी सहायतासे ऊपर नीचे करके खिड़कीके आगे बने हुए छज्जेके नीचे छिपानेका प्रबंध कर रक्खा था । ज्यों ही वह ग्रीफ़सकी आहट सुनता फ़ौरन गमलेको छिपा देता । इस लिए ग्रीफ़सको गमलेका कुछ पता न चला । इस उपायने आठ दिन तक खूब काम दिया ।

किन्तु एक दिन वान बार्ले अपने अंकुरके ध्यानमें मग्न था और उसमेंसे नये निकले हुए पत्तोंके विषयमें सोच रहा था । उस दिन तूफ़ान भी बड़े ज़ोरसे चल

रहा था और उसकी आवाज़ सारे क़िलेमें गूँज रही थी। इस लिए वान बार्लेने ग्रीफ़सके आनेकी आहट न सुनी। उसकी कोठरीका दरवाज़ा झटसे खुला और ग्रीफ़सने वान बार्लेको घुटनोंके बीचमें गमला लिये हुए पाया।

ग्रीफ़स अपने कैदीके हाथमें एक नई और इसीलिए निषिद्ध वस्तु देखकर उसपर उसी तरह टूट पड़ा जैसे बाज़ अपने शिकारपर टूटता है।

दैववशात् अथवा उसकी होशियारीके कारण ग्रीफ़सका मोटा कठोर हाथ, वही हाथ जिसको एक बार टूट जानेपर वान बार्लेने अच्छी तरहसे बैठा दिया था, गमलेके बीचमें ठीक उसी जगहपर पड़ा जहाँ कि वह क़ीमती अंकुर था।

वह गर्जकर बोला, यह क्या है? ओह, आज मैंने तुम्हें पकड़ लिया।

यह कहकर वह उँगलियोंसे उसे कुरेदने लगा।

वान बार्लेने काँपते हुए कहा, कुछ नहीं, कुछ नहीं।

"ओह, आज मैंने पकड़ लिया! एक बर्तनमें मिट्टी भरी हुई है और उसके नीचे उसमें कोई षड्यंत्रकी चीज़ छिपी हुई है।"

वान बार्ले ऐसा पीला पड़ गया जैसे कोई कबूतरी हो, जिसके बच्चोंको शिकारीने छीन लिया हो। वह बड़ी नम्रतासे प्रार्थना करने लगा, प्यारे महाशय, ग्रीफ़स!

ग्रीफ़स अब वस्तुतः अपनी टेढ़ी उँगलियोंसे मिट्टी कुरेद रहा था।

वान बार्लेने बड़ी नम्रतासे कहा, महाशय! महाशय! ज़रा ख़याल रखिए!

जेलर चिल्लाया—किस बातका? डले पत्थरका!

"ख़याल रखिए! मैं आपसे कहता हूँ, आपकी उँगलीसे वह नाहक कुचला जायगा!"

और बड़ी निराशाके साथ जल्दीसे लपककर उसने जेलरके हाथसे गमला छीन लिया और उसे अपनी भुजाओंके क़िलेमें ख़ज़ानेकी तरह छिपा लिया।

किन्तु ग्रीफ़स अपनी हठपर दृढ था और अब उसको और अधिक विश्वास हो गया कि इसके अन्दर ऑरेंजके राजकुमारके विरुद्ध कोई षड्यंत्र छिपा हुआ है। वह अपनी छड़ी उठाकर कैदीपर दौड़ा। उसने देखा कि क़ैदीने अपने गमलेकी रक्षा करनेका दृढ़ निश्चय कर लिया है और वह अपने सिरकी उतनी परवाह नहीं करता जितनी कि गमलेकी। तब उसने उससे ज़बरदस्ती गमला छीन लेनेकी कोशिश की।

जेलरने क्रोधसे गरजकर कहा, तुम देखते नहीं कि तुम विद्रोह कर रहे हो ?

वान बार्लेने कहा, मेरा गुले लाला मेरे ही पास रहने दो।

बुड्ढेने जवाब दिया, हाँ, हाँ, हम क़ैदी महाशयोंकी इन सब चालोंको जानते हैं।

" किन्तु मैं क़सम खाता हूँ......"

ग्रीफ़सने ज़मीनपर पैर पटककर कहा—छोड़ दो, छोड़ दो, नहीं तो मैं अभी सिपाहियोंको पुकारता हूँ।

" आप चाहें तो पुकारिए, किन्तु यह गमला तो मेरी जानके साथ ही ले सकते हैं।"

ग्रीफ़सने क्रोधसे उन्मत्त होकर अपनी अँगुली फिर मिट्टीमें धँसा दी और इस बार उसमेंसे बिल्कुल काला मूल और उसका अंकुर निकाल लिया। वान बार्ले खुश हो रहा था और समझ रहा था कि मैंने गमलेको बचा लिया; परन्तु उसे यह पता नहीं था कि उसमेंकी कीमती चीज़ उसके विरोधीके हाथोंमें है। ग्रीफ़सने उसे फ़र्शपर पटककर दे मारा और अपने भारी जूतेके नीचे कुचलकर पीस डाला।

वान बार्लेने इस वधको देखा, अपने प्यारे अंकुरके इस मृत शरीरको देखा, ग्रीफ़सके इस क्रूर आनंदको समझा और उसके मुँहसे एक चीख निकल गई, जिसको सुनकर उस पाषाण-हृदय जेलरका भी दिल पिघल जाता जिसने कुछ वर्ष पहले पेलिस्सोंकी मकड़ीको मार दिया था।

उस पुष्प-प्रेमीके मनमें उस क्रूर मनुष्यको वहीं चटनी बना डालनेका विचार एक बार बिजलीकी तरह उठा। उसके माथेपर आग और खून दौड़ आया, जिससे कि वह अंधा हो गया, उसे कुछ ज्ञान न रहा। उसने अपने दोनों हाथोंसे मिट्टीसे भरा हुआ वह बेकार गमला जोरसे ऊपर उठाया। पलभर बाद वह उसे ग्रीफ़सकी गंजी खोपड़ीपर पटक देता, किन्तु एक चीख़ने उसे रोक दिया। यह चीख़ आँसुओं और भारी पीडाके साथ थी और खिड़कीके परेसे रोज़ाके मुँहसे निकली थी। रोज़ा पीली, भयसे काँपती हुई आकाशकी ओर हाथ उठाये हुए दौड़कर आई और अपने पिता और कैदीके बीचमें आकर खड़ी हो गई।

वान बार्लेने अपने हाथसे गमलेको नीचे गिरा दिया और वह ज़ोरकी आवाज़के साथ गिरकर चूर चूर हो गया।

तब ग्रीफ़सकी समझमें आया कि वह कितने बड़े ख़तरेसे बच गया और वान बार्लेको बड़ी बड़ी धमकियाँ देकर भय दिखाने लगा।

वान बार्ले बोला—तुम बड़े ही नीच और क्रूर प्रकृतिके मनुष्य हो, जो एक बेचारे कैदीसे उसके मन-बहलावका एक मात्र साधन एक छोटेसे पौधेके अंकुरको छीन कर नष्ट कर दिया।

रोज़ा भी बोली—धिक्कार पिताजी, आपने जो काम किया है वह जुर्म है, पाप है।

ग्रीफ़सने रोज़ाकी ओर मुँह फेरकर क्रोधसे उबलते हुए कहा—ओ हो, तुम हो बड़बोली। तुम अपने कामसे काम रक्खो और फौरन नीचे चली जाओ।

वान बार्लेने शोकभारावनत होकर कहा, मैं बड़ा कमबख़्त हूँ।

ग्रीफ़स कुछ लज्जित होकर बोला—आखिरकार यह एक गुले लालाका ही तो मामला है। मैं जितने चाहे उतने गुले लाला तुम्हें मँगवा दूँगा। कहो तो सौ मँगवा दूँ।

"तुम्हारे गुलेलाला जायँ भाड़में। वे तुम्हारे ही योग्य हैं और तुम उनके योग्य हो। मुझे यदि वैसे एक करोड़ गुले लाला भी मिलें, तो मैं उन्हें उस एक गुले लालाके वास्ते बड़ी प्रसन्नतासे दे दूँगा जो तुमने अभी कुचल डाला।"

ग्रीफ़सने विजयके स्वरमें कहा—ओह, मैं समझ गया। तुम अपने गुले लालाकी परवा नहीं करते, बल्कि इस नकली गुले लालामें कुछ जादू था जिसके द्वारा तुम राजकुमारके विरुद्ध षड्यन्त्र करनेवालोंसे बात-चीत और पत्र-व्यवहार करते थे—उसी कुमारके विरुद्ध जिसने तुमको जीवन-प्रदान किया है। मैंने तो पहले ही कहा था कि महाराजने तुम्हारा सिर न कटवाकर बड़ी भूल की।

रोज़ा बोली—मेरे पिता, मेरे पिता, तुम क्या कह रहे हो?

फिर रोज़ाने धीरेसे वान बार्लेके कानमें कहा, हम दूसरे बीजको कल बो देंगे।

वह गुले लाला-प्रेमीके असह्य शोकको समझती थी और अपने निर्मल हृदयके पवित्र प्रेमके साथ ये शब्द कहकर उसने उसके घायल हृदयपर मरहम रख दिया।

१८--रोज़ाका प्रेमी

रोज़ाने ये सान्त्वनामय शब्द कहे ही थे कि जीनेसे जाकोबके पुकारनेकी आवाज़ आई।

रोज़ाने कहा—पिताजी, जाकोब तुम्हें पुकार रहा है। वह बड़ा घबराया-सा मालूम पड़ता है।

ग्रीफ़स बोला, आवाज़ ही ऐसे जोरकी हो रही थी। यह डाक्टर तो मुझे मार डालता था। ये पंडित लोग बड़े शैतान होते हैं।

यह कहकर वह वान बार्लकी कोठरीका ताला बन्द करके चला गया। अब वान बार्ल अकेला रह गया, शोक ही इस समय उसका साथी था। वह गुन-गुनाने लगा—

"ओ क़साई, तूने मुझे ही अपने पैरके नीचे कुचला है। मुझे ही मार डाला है। मैं इस चोटको सहकर नहीं बच सकूँगा!"

और बेचारा क़ैदी ज़रूर ही बीमार पड़ जाता, यदि विधाता उसके शोकके भारको कम करनेके लिए रोज़ाको न भेजता।

रातको अपने नियत समयपर रोज़ा आई। आते ही उसके मुँहसे जो शब्द निकले, वे ये थे—अबसे मेरे पिता तुम्हारे फूलोंके पौधे लगानेमें कुछ आक्षेप नहीं करेंगे।

क़ैदीने उदासीभरी दृष्टिसे उसकी ओर देखकर कहा, तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

"मैं जानती हूँ, क्योंकि उन्होंने ऐसा कहा था।"

"शायद तुम्हें धोखा देनेके लिए।"

"नहीं, उन्हें पछतावा है।"

"किन्तु अब पछतानेसे क्या होता है?"

"यह पछतावा उनको अपने आप नहीं हुआ।"

"तो फिर कैसे हुआ?"

"उनके मित्र जाकोबने उन्हें बड़ा धिक्कारा।"

"जाकोबने? तो फिर जाकोबने तुम्हें अभी तक नहीं छोड़ा?"

"वह जहाँ तक हो सकता है यहींपर बना रहता है।"

यह कहते हुए रोज़ाके मुखपर एक ऐसी मुसकराहटकी झलक दिखाई दी कि उसे देखकर वान बार्लेके मनमें जो थोड़ी बहुत ईर्ष्या पैदा हुई भी थी, वह लीन हो गई।

क़ैदीने पूछा, सब स्पष्ट करके विस्तारसे कहो।

"भोजनके समय जाकोबने पूछा, तो मेरे पिताने सब कुछ कह सुनाया और अंकुरको अपने आप कुचल डालनेकी बात भी कह दी। यह सुनते ही जाकोब क्रोधसे उन्मत्त हो गया। मैंने सोचा कि वह सारे क़िलेमें आग लगा देगा। उसकी आँखें अंगारेकी तरह लाल थीं, उसके बाल खड़े थे। उसने अपनी मुट्ठियाँ कस लीं। मैंने सोचा कि वह मेरे पिताका गला घोंट देगा। वह गरजकर दाँत पीसता हुआ बोला, तुमने यह क्या किया! गुले लालाके अंकुरको कुचल डाला?

"मेरे पिताने जवाब दिया, हाँ।

"वह बोला, यह बड़ा नीच कर्म है। तुमने पाप किया है।

"मेरे पिता भौंचक्के रह गये और उससे बोले, क्या तुम भी पागल हो गये हो?"

यह सुनकर वान बार्ले धीरेसे बोला—यह जाकोब कितना लायक आदमी है! बड़ा ईमानदार है। उसका हृदय बड़ा दयालु है।

रोज़ा बोली, उसने मेरे पिताको जितना धिक्कारा और उनसे जैसा बुरा बर्ताव किया, उससे अधिक करना असंभव है। वह बिल्कुल निराश होकर बार बार यह कहता जाता था—

कुचल दिया, गुले लाला कुचल दिया, परमात्मा, परमात्मा, गुले लाला कुचल दिया!

फिर उसने मेरी तरफ़ मुँह फेरकर कहा, उसके पास एक ही गाँठ तो नहीं थी न?

वान बार्लेने कुछ चिन्तित होकर पूछा—क्या उसने यह बात पूछी?

मेरे पिताने जवाब दिया—तो तुम समझते हो कि उसके पास और भी गाँठें हैं? तो हम उसकी तलाशी लेंगे।

यह सुनकर जाकोबने मेरे पिताका गला पकड़कर कहा, तुम उसकी तलाशी लोगे? किन्तु फ़ौरन उसने छोड़ दिया और मुझसे कहा—उस बेचारेने क्या कहा?

मुझे नहीं सूझा कि मैं क्या जवाब दूँ, क्यों कि तुमने मुझे सावधान कर दिया था कि कोई भी ऐसी बात मुँहसे न निकालूँ जिससे किसीको संदेह हो कि तुम इस पौधेकी बड़ी फ़िक्र करते हो। सौभाग्यसे मेरे पिता दाँत पीसते हुए बीचमें बोल उठे—उसने क्या कहा ? वह तो मारे ग़ुस्सेके लाल हो गया था।

मैंने बात काटकर कहा, क्या उसको क्रोध आना स्वाभाविक नहीं था ? पिताजी, तुमने बड़ी निर्दयताका काम किया।

मेरे पिता बोले, क्या तुम पागल हो ? एक गुले लालाको कुचलकर मानों मैंने कोई ख़जाना लूट लिया। गोरकमके बाज़ारमें गुले लालाकी हज़ारों गाँठें मिल सकती हैं।

मुझसे इतनी भूल हुई कि मेरे मुँहसे निकल गया, "किन्तु उससे शायद कहीं कम क़ीमती, जिसको कि तुमने कुचल दिया।"

वान बार्लेने पूछा, ये शब्द सुनकर जाकोबने क्या किया ?

"मुझे ऐसा मालूम हुआ कि ये शब्द सुननेपर उसकी आँखें बिजलीकी तरह चमक उठीं।"

वान बार्ले बोला, इतना ही बस नहीं। उसने कुछ कहा भी ज़रूर होगा।

"वह अमृतके समान मधुर स्वरसे बोला—तो सुंदरी रोज़ा, तुम समझती हो कि यह पौधा बड़ा बहुमूल्य था ?

"मैंने अपनी भूल समझ ली थी, इस लिए लापरवाहीके साथ कहा, मैं क्या जानूँ ? मैं फूलोंके बारेमें कुछ भी नहीं जानती। मैं तो केवल इतना जानती हूँ—क्योंकि हमारे भाग्यमें कैदियोंके साथमें रहना ही बदा है—कि उनके लिए कोई भी मन-बहलावकी वस्तु बड़ी बहुमूल्य है। यह बेचारा वान बार्ले इसी पौधेसे अपना जी बहलाता था। मैं समझती हूँ कि उससे उसके मन-बहलावका एक मात्र साधन छीन लेना बड़ी क्रूरता है।

"मेरे पिता बोले, किन्तु सबसे पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि उसे गुले लालाकी मूल जेलके अंदर मिली कैसे ?

"मैंने पिताकी दृष्टि बचानेके लिए अपनी आँखें दूसरी तरफ फेर लीं, किन्तु वे जाकोबकी आँखोंसे जा मिलीं। ऐसा मालूम होता था कि वह मेरे हृदयके अन्तस्तलके भाव पढ़ना चाहता है। कभी कभी थोड़ा क्रोध प्रकट करनेसे उत्तरसे छुटकारा मिल जाता है। मैं मुँह बनाकर और फेरकर द्वारकी ओर चल दी।

" जाकोब मेरे पितासे बोला, यह मालूम करना कोई बड़ी बात नहीं। तुम उसकी तलाशी लो। यदि उसके पास दूसरी भी गाँठें हो, तो हमें मिल जायँगी, क्योंकि साधारणतः ऐसी तीन गाँठें होती हैं। "

वान बार्ले बोला, तीन गाँठें ! क्या उसने कहा कि मेरे पास तीन गाँठें हैं ?

" ये शब्द सुनकर मुझको भी वैसा ही आश्चर्य हुआ जैसा कि तुमको। मैं लौट पड़ी। वे दोनों अपनी बात-चीतमें ऐसे मग्न थे कि उन्होंने मेरा आना-जाना नहीं देखा।

" मेरे पिता बोले, किन्तु दूसरी गाँठें शायद उसने अपने पास नहीं रक्खीं।

" जाकोबने कहा, तो फिर वे उसकी कोठरीमें होंगी। उसे किसी बहानेसे नीचे ले आओ और इस बीच मैं उसकी कोठरीकी तलाशी ले लूँगा। "

वान बार्ले बोला, ओ हो ! यह तुम्हारा जाकोब तो बड़ा धूर्त आदमी मालूम होता है।

" हाँ, मैं भी ऐसा ही समझती हूँ। "

वान बार्लेने चिन्तित-सा होकर कहा, रोज़ा, एक बात तो बतलाओ।

" क्या ? "

" तुमने ही एक दिन मुझसे कहा था न कि जब तुम क्यारी तैयार करने गई, तो यह आदमी तुम्हारे पीछे पीछे गया था ?

" हाँ, गया तो था। "

" यह आदमी पेड़ोंके पीछे छायाकी तरह छिपकर चलता था और तुम्हारी हरएक चालको बड़े ध्यानसे देखता था ? "

" हाँ, निश्चयसे। "

वान बार्ले बिल्कुल पीला पड़ गया और बोला, रोज़ा,—

" बोलो। "

" वह तुम्हारे पीछे तुम्हारे वास्ते नहीं गया। "

" तो फिर किस लिए गया ? "

" वह तुमसे प्रेम नहीं करता। "

" तो फिर किससे करता है ? "

" वह मेरे गुले लालाके मूलके वास्ते गया था और मेरे गुले लालासे प्यार करता है। "

रोज़ा बोली, यह बात बहुत संभव है ।

" क्या तुम इस बातको निश्चयसे जानना चाहती हो ? "

" कैसे ? "

" यह बहुत आसान है । "

" मुझे इसका तरीका बतलाओ । "

" कल सुबह बगीचेमें जाओ । ऐसा प्रबंध करो कि जाकोब तुम्हारे वहाँ जानेकी बात जान जाय । तब वह पहलेकी तरह तुम्हारे पीछे पीछे जायगा । वहाँ जाकर तुम ऐसा दिखलाओ मानों तुम गाँठको जमीनमें गाड़ रही हो । फिर बागसे चल दो और किवाड़के छिद्रोंमेंसे देखती रहो कि जाकोब क्या करता है । "

" फिर आगे ?

" आगे ? आगे हम वैसा करेंगे जैसा वह करता है । "

रोज़ा एक दीर्घ निश्वास छोड़कर बोली, ओह, तुम्हें गुले लालासे बड़ा प्रेम है ।

कैदीने भी उसी तरह दीर्घनिश्वास छोड़कर कहा, सच बात तो यह है कि जबसे तुम्हारे पिताने उस अंकुरको कुचल दिया है तबसे मैं यह अनुभव करता हूँ कि मेरा ही कोई अंश नष्ट हो गया है ।

रोज़ा बोली, मैं एक बात कहती हूँ, वह तो सुनो ।

" क्या ? "

" क्या तुम मेरे पिताका प्रस्ताव स्वीकार करोगे ?

" क्या प्रस्ताव ?

" उन्होंने सैकड़ों गुले लाला तुम्हें देनेको कहा था ? "

" हाँ कहा था । "

" तो उनसे दो तीन ले लो । उनके साथ तुम अपनी तीसरी गाँठ बोकर उगा सकते हो । "

बान बार्लेने भौंहें चढ़ाकर कहा, अगर तुम्हारा पिता अकेला ही होता, तो यह अच्छी तरह हो सकता था, किन्तु उसके साथ जाकोब भी तो है । वह हमारी हरएक बातको ताकता रहता है ।

" तुम्हारा यह कहना तो ठीक है, किन्तु देखो, तुम अपने आपको एक बड़े भारी आनन्दसे वञ्चित कर रहे हो । "

उसने ये शब्द ऐसी मुसकानके साथ कहे जिसमें कुछ अंश तानेका भी झलकता था ।

वान बार्लने एक क्षण तक विचारा । उसके मनमें एक प्रबल इच्छाके विरुद्ध घोर संग्राम मचा हुआ था । अंतमें वह बोलाः—

" नहीं, नहीं, यह बड़ी कमज़ोरी होगी, यह बड़ी मूर्खता होगी, यह बड़ी नीचता होगी । यही तीसरी गाँठ तो हमारा अन्तिम आधार है । न मालूम उनका क्रोध और ईर्ष्या कब भड़क उठे । मैं यदि इसे उस भयपूर्ण रास्तेमें रक्खूँ, तो मेरा अपराध अक्षम्य होगा । नहीं, रोज़ा, कभी नहीं । कल हम तुम्हारे पौधेके लिए स्थानका निर्णय कर देंगे और तुम उसे मेरी बतलाई हुई विधिसे बो देना । और तीसरी गाँठ——यह कहते हुए वान बार्लके मुँहसे एक लंबी साँस निकली—उसके ऊपर उसी तरह दृष्टि रक्खो जैसे कोई कृपण अपनी सारी संपत्ति नष्ट हो जानेपर अपने पास बचे हुए अपने अन्तिम रुपयेपर रखता है, जैसे माता अपने बच्चेपर रखती है, जैसे घायल आदमी सारा खून निकल जानेपर शरीरमें बची हुई अपनी अन्तिम रक्तबिंदुपर रखता है । उसपर कड़ी दृष्टि रक्खो रोज़ा, मेरी अन्तरात्मा कहती है कि वह हमारी रक्षा करेगा, वह हमारे लिए कल्याण-कारक होगा । "

रोज़ाने उदासी और गंभीरताके साथ कहा, शान्त रहो, तुम्हारी इच्छा मात्र मेरे लिए आज्ञा है ।

वान बार्ल बोला, और यदि तुम देखो कि तुम्हारी बातोंसे तुम्हारे पिता और उस नामाकूल जाकोबके मनमें संदेह पैदा हो गया है, तो रोज़ा, मेरा कुछ ख़याल मत करो, मुझे बलिदान कर दो । मैं तुम्हें देखकर ही जीता हूँ, दुनियामें सिवाय तुम्हारे मेरा कोई नहीं है । मेरी बलि दे दो, मुझे देखने मत आओ ।

ये शब्द सुनकर रोज़ाका हृदय भर आया । उसकी आँखोंमें आँसू आ गये । उसके मुखसे ' हा ' शब्द निकला ।

वान बार्ल बोला—रोज़ा, बात क्या है ?

" मैं एक बात देखती हूँ । "

" क्या देखती हो । "

उसने हिचकियाँ भरते हुए कहा, मैं देखती हूँ कि तुम गुले लालासे इतना प्यार करते हो कि तुम्हारे हृदयमें दूसरे प्रेमोंके लिए अवकाश ही नहीं बचा है ।

यह कहती हुई वह भाग गई।

उस दिन वान बार्लेकी रात ऐसी बुरी तरहसे बीती जैसी पहले कभी नहीं बीती थी।

रोज़ा उससे नाराज़ हो गई थी और उसके नाराज़ होनेका कारण वान बार्लेका बरताव ही था। शायद वह उसको देखने कभी न आवे और उस दशामें उसे रोज़ाका या गुले लालाका कुछ भी समाचार नहीं मिले।

हमें अपने पुष्पोपासक नायकके विषयमें बड़ी लज्जाके साथ यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उसे यदि रोज़ा और पुष्प इन दोमेंसे किसी एकको छोड़नेके लिए बाध्य होना पड़ता, तो वह रोज़ाको छोड़नेकी अपेक्षा पुष्पको छोड़ना अधिक पसंद करता। सुबहके तीन बजे जब उसे थकान और पश्चात्तापके भारके मारे नींद आ गई, तो उसे स्वप्नमें सुन्दरीकी मधुर नीली आँखें ही दिखाई दीं, काला फूल नहीं।

१९-सुंदरी और पुष्प

वान बार्लेने जो शब्द बिना सोचे समझे कहे, वे रोजाके हृदयमें विषबुझे बाणोंके समान लगे। रातभर उसकी आँखें नहीं लगीं और वह रोती रही। सुबहको उठनेसे पहले उसने यह निश्चय कर लिया कि अबसे उस जंगलेदार खिड़कीपर कभी नहीं जाऊँगी।

किन्तु वह जानती थी कि वान बार्ले कितनी उत्सुकतासे गुले लालाके समाचार जाननेको उत्सुक है और यद्यपि उसने वान बार्लेको देखने न जानेका निश्चय कर लिया था, फिर भी वह उसे निराश नहीं करना चाहती थी। उसके प्रति उसकी दया प्रेमका रूप धारण करती जाती थी। उसने अपनी पढ़ाई अपने आप बिना अध्यापककी मददके जारी रखनेका निश्चय कर लिया। अब वह अध्यापककी मददके विना भी काम चला सकती थी, उसने इतना पढ़ना सीख लिया था।

इस लिए रोज़ाने खूब मेहनतसे कॉर्नेलियस द'विटकी बाइबिलको पढ़ना शुरू कर दिया। इसी बाइबिलके अन्तिम ख़ाली पृष्ठपर वान बार्लेकी वह अन्तिम वसीयत लिखी हुई थी।

उस पृष्ठको जब वह पढ़ती थी, तो उसके मुँहसे ये शब्द निकल जाते थे—हा ! उस समय एक क्षणके लिए मैंने समझा था कि वह मुझसे प्यार करता है—और उसकी आँखोंसे एक आँसू ढलक आता था, मानों वह प्रेमका मोती है।

बेचारी रोज़ाको पता नहीं था। कैदीका उसके प्रति प्रेम इतना सच्चा और गंभीर अबतक कभी नहीं हुआ था जितना कि इस समय। वान बार्लेके हृदयमें गुले लालाने जो सर्वोच्च आसन पाया था वह उसे अब रोज़ाके लिए छोड़ना पड़ा था। किन्तु रोज़ा यह बात नहीं जानती थी।

पढ़ना समाप्त करके उसने कलम पकड़ी और लिखनेका काम जो कि पढ़नेसे कहीं कठिन है, हाथमें लिया।

जब वान बार्लेने वे शब्द कहे थे उस समय रोज़ा कुछ कुछ लिखना सीख गई थी। उसने अब मेहनत करके आठ दिनमें इतना अभ्यास कर लेनेका निश्चय कर लिया कि वह गुले लालाका वृत्तान्त कैदीको लिखकर भेज सके।

वान बार्लेने उसको जो हिदायतें दी थीं उनका एक शब्द भी वह नहीं भूली थी। उसने उनको अपने हृदयमें ख़जानेकी तरह सुरक्षित रख छोड़ा था।

वान बार्लेका रोज़ाके प्रति प्रेम गंभीरतर होता जाता था। उसके हृदयमें पुष्प अब भी ज्योतिकी तरह चमक रहा था और उसका स्थान बड़ा ऊँचा था, किन्तु वह अब उसकी ओर ऐसी दृष्टिसे नहीं देखता था कि उसके लिए सब कुछ, यहाँ तक कि रोज़ाकी भी बलि, देनेके लिए तैयार हो। वह उसे प्रकृति और कलाका अद्भुत संयोग समझता था जिससे कि वह अपनी प्रेयसीके मस्तकको अलंकृत कर सकता था।

फिर भी उस दिन सारे दिन उसके मनमें एक बेचैनी-सी बनी रही, क्योंकि वह अपने हृदयके अन्तस्तलमें इस बातसे डर रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि रोज़ा उस दिन शामको उसे देखने न आवे। यह चिन्ता उसके हृदयमें घर करती गई। यहाँ तक कि शामको उसका मन एक मात्र उसीमें डूबा हुआ था।

अँधेरा होनेपर उसका हृदय ज़ोरसे धड़क रहा था। वे शब्द उस समय उसको बार बार याद आ रहे थे, जो उसने पिछले दिन संध्याको रोज़ासे कहे थे और जिनसे रोज़ाके मनको इतनी चोट पहुँची थी। तब वह अपने आपसे पूछने लगा कि मैंने ये शब्द रोज़ासे किस प्रकार कहे कि तुम मुझे देखने न आना, जब कि रोज़ाका दर्शन मेरे जीवनका एक अंग बन गया है।

वान बार्लेकी कोठरीसे जेलका घंटा सुनाई देता था। सात बजे, आठ बजे और फिर नौ भी बज गये। पीतलकी झनकार किसीके हृदयमें कभी इतने जोरसे न काँपी होगी जैसे कि नौवें घंटेका अन्तिम टकोरा वान बार्लेके हृदयमें।

फिर नीरवता छा गई। वान बार्लेने अपनी छातीपर हाथ रखकर मानों उसकी धड़कन बंद करनी चाही और वह कान खड़े करके सुनने लगा।

रोज़ाके आनेकी आहट, उसके कपड़ोंकी जीनेपर सरसराहट, इस सबसे उसके कान ऐसे परिचित थे कि ज्यों ही रोज़ा एक सीढ़ी चढ़ती वह कह देता था—" वह आ रही है। "

आज सायंकालको ऐसा कोई भी शब्द सुनाई नहीं दिया। घंटेने सदा नौ बजाये, फिर साढ़े नौ बजाये, फिर पौने दस और अन्तमें उसने ज़ोरसे दस भी बजा दिये।

इसी समय रोज़ा वान बार्लेसे बिदा लेकर जाया करती थी। किन्तु आज, वह अभी आई तक न थी।

तो उसका भय निराधार नहीं था। रोजा दिक होकर अपनी कोठरीमें बैठ रही और उसने वान बार्लेको अकेला छोड़ दिया।

वह सोचने लगा, ओह मैं इसी लायक था। वह अब नहीं आयेगी। उसने ठीक ही तो किया। उसके स्थानमें मैं होता तो मैं भी यही करता।

फिर भी वान बार्ले आधी रात तक कान लगाकर सुनता रहा, बाट जोहता रहा और प्रतीक्षा करता रहा। फिर कपड़े पहिने ही पहिने बिस्तरपर लेट गया।

वह रात कैदीके लिए बड़ी लंबी और उदासीभरी थी। दिन निकल आया किन्तु वह भी कुछ आशा साथमें नहीं लाया।

आठ बजे प्रातःकाल कोठरीका दरवाज़ा खुला, किन्तु वान बार्लेने मुँह भी नहीं फेरा। उसे ग्रीफ़सके पैरोंकी भारी चाप जीनेसे आती हुई सुनाई दी। उसने अच्छी तरह पहचान लिया कि जेलर अकेला ही आ रहा है।

इस लिए वान बार्लेने ग्रीफ़सकी ओर मुँह फेरकर देखा तक नहीं, फिर भी उसे ग्रीफ़ससे रोज़ाके विषयमें पूछनेकी प्रबल इच्छा थी। उसने पहले सोचा कि यह पूछना ग्रीफ़सको कितनी विचित्र मालूम होगा! किन्तु अन्तमें पूछ ही डाला। सच बात यह है कि उसके मनमें यह स्वार्थमय इच्छा थी कि वह ग्रीफ़ससे उसकी बेटीके बीमार होनेका समाचार सुने।

सिवाय किसी विशेष कारणके रोज़ा दिनमें कभी नहीं आती थी। इस लिए जब तक दिन रहा तब तक वान बार्लेको उसके आनेकी वस्तुतः कोई आशा नहीं थी। फिर वह कभी कभी अकस्मात् उठ खड़ा होता, दरवाज़ेपर जा कर सुनने लगता और खिड़कीकी तरफ़ पत्ता भी खड़कता तो उसे सुनकर उसकी तरफ़ देखने लगता। इन सब बातोंको देखकर मालूम होता था कि कैदीके दिलमें कोई प्रसुप्त छिपी आशा है कि रोज़ा शायद आज अपना रोज़का नियम तोड़कर आ जाय।

ग्रीफ़स जब दूसरी बार आया, तो वान बार्लेने अपनी आदतके विरुद्ध बूढ़े जेलरसे बड़े मधुर स्वरमें रोज़ाके स्वास्थ्यके विषयमें पूछा, किन्तु ग्रीफ़सने दो शब्दोंमें जवाब दे दिया, " सब कुछ ठीक है। "

जब ग्रीफ़स तीसरी बार आया, तो वान बार्लेने अपना प्रश्न बदलकर पूछा, जेलमें कोई बीमार तो नहीं? जेलरने दो शब्दोंमें जवाब दिया, कोई नहीं, और कैदीकी नाकके सामने दरवाजा बंद कर दिया।

ग्रीफ़स वान बार्लेकी ओरसे इस प्रकारके शिष्टाचारका आदी नहीं था, इस लिए उसे संदेह हुआ कि कैदी उसे प्रसन्न करके उसे रिश्वत देना चाहता है।

वान बार्ले अब फिर अकेला रह गया। सायंकालके सात बजे थे। अब उसे कलवाली चिन्ता दुगने जोरसे धर दबाने लगी। आज भी धीरे धीरे घंटे बीतते गये किन्तु वह मधुर मूर्ति दिखाई न दी, जो कि बेचारे वान बार्लेकी अँधेरी कोठरीमें खिड़कीमेंसे प्रकाश कर दिया करती थी और जाते समय उसके हृदयमें इतना प्रकाश कर जाती थी कि वह उसके दुबारा लौटने तक पर्याप्त होता था।

वान बार्लेने यह रात्रि भी घोर निराशा और दुःखके साथ बिताई। अगले

दिन ग्रीफ़स उसको और भी अधिक भयंकर, क्रूर और घृणापूर्ण प्रतीत हुआ। उसके मन अथवा हृदयमें अब भी कुछ आशा थी कि बुड्ढेने ही अपनी बेटीको आनेसे रोक दिया है।

क्रोधमें वह ग्रीफ़सका गला घोंट डालता, किन्तु उसे भय था कि इसका परिणाम कहीं ऐसा न हो कि वह हमेशाके लिए रोज़ासे बिछुड़ जाय।

जब दिन ढल गया, तो उसकी निराशाने उदासीका रूप धारण कर लिया। वह और भी अधिक भयावनी थी, क्योंकि वान बार्लेने उसके साथ अपने प्यारे गुले लालाका विचार भी मिला दिया था। अप्रैल महीनेके इन्हीं दिनोंमें गुले लाला बोनेके लिए मौसम अनुकूल होता है। उसने रोज़ासे कहा था कि मैं तुम्हें बोनेके लिए देखकर ठीक दिन बतलाऊँगा। उसने सोच रक्खा था कि रोज़ा आयगी, तो उससे कहूँगा कि वह अगले दिन गाँठ बो देवे। उन दिनों मौसम बिल्कुल अनुकूल था। हवामें यद्यपि अब भी नमी थी किन्तु उसे अप्रैल मासकी सूर्यकी पीली किरणें गरमी पहुँचाती थीं। बोनेका ठीक समय रोज़ा बीत जाने दे, तो क्या होगा! रोज़ाको न देखनेके साथ ही साथ गाँठके बहुत देरसे बोए जाने या न बोए जानेके कारण खराब हो जानेका दुख भी उसे सहन करना पड़ेगा!

ये दो चिन्ताएँ मिलकर उसे खाना-पीना छोड़ देनेके लिए काफ़ी थीं।

चौथे दिन हुआ भी यही।

वान बार्ले शोकसे गूँगा हो गया था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। उसने अपनी खिड़कीकी छड़ोंमेंसे अपना सिर निकाला, इस आशासे कि शायद उसे वह बगीचा कुछ दीख जाय जिसके विषयमें रोज़ाने कहा था कि वह नदीके बिल्कुल किनारे है। उसने इस बातका भी खयाल नहीं किया कि वह शायद उस खिड़कीमेंसे अपना सिर फिर निकाल भी न सके। वह सोचता था कि शायद उसे बगीचेमें अप्रैल मासकी धूपमें रोज़ा और गुले लाला दिखलाई दे जायँ। ये दो वस्तुएँ ही उसके प्रेमका विषय थीं और दोनों ही उसके पाससे खो गई थीं।

शामको ग्रीफ़स जब आया तो वह वान बार्लेके सुबहके नाश्ते और भोजनकी थालियाँ वैसीकी वैसी ही उठाकर ले गया। वान बार्लेने उन्हें छुआ भी न था। वह सारे दिन बिस्तरपर पड़ा रहा था।

ग्रीफ़स जब अन्तिम बार वान बार्लकी कोठरीसे लौटा, तो बोला, मैं समझता हूँ कि हमें अपने विद्वान् कैदीसे शीघ्र ही छुटकारा मिल जायगा।

रोज़ा यह सुनकर चौंक गई।

जाकोब बोला, क्या बक रहे हो? तुम कहते क्या हो?

जेलरने उत्तर दिया, वह न खाता है, न पीता है, बिस्तरसे उठता भी नहीं। वह ग्रोशियसकी तरह उस कोठरीसे एक संदूकमें बंद होकर निकलेगा। फ़र्क केवल इतना होगा कि यह संदूक उसकी अर्थीका होगा।

रोज़ा यह सुनकर मुर्देकी तरह पीली हो गई। वह सोचने लगी कि वान बार्लको गुले लालाका शोक सता रहा है।

वह भारी हृदयके साथ उठी और अपनी कोठरीमें चली गई। वहाँ उसने कलम पकड़ी और वह सारी रात लिखती रही।

अगले दिन सुबह जब वान बार्ल उठा और किसी तरह बड़ी मुश्किलसे खिड़कीके पास पहुँचा, तो उसे एक कागज़ दिखाई पड़ा जो किवाड़के नीचेको अंदरकी तरफ़ सरका दिया गया था।

उसने फौरन उसे ऊपर उठा लिया और खोलकर पढ़ा। उसमें सिर्फ ये शब्द लिखे हुए थे—

"निश्चिन्त रहो, तुम्हारा गुले लाला अच्छी तरह बढ़ रहा है।"

इन सात दिनोंमें रोज़ाने इतनी उन्नत्ति कर ली थी कि उसका लेख पहचाना भी नहीं जाता था।

यद्यपि रोज़ाके इन शब्दोंसे वान बार्लको कुछ सान्त्वना मिली, फिर भी उनमें जो उपालँभ छिपा हुआ था वह उसके हृदयमें तीरकी तरह जाकर लगा। तो रोज़ा बीमार नहीं है? उसके हृदयमें चोट लगी है। उसको यहाँ आनेसे किसीने रोका नहीं, किन्तु वह अपनी इच्छासे ही नहीं आई। तब रोज़ाके स्वतंत्र मनमें इतनी शक्ति है कि वह उस आदमीको देखने नहीं आई, जो उसको न देखनेके कारण शोकसे मर रहा है।

वान बार्लके पास रोज़ाके लाये हुए कागज़-पेंसिल थे। वह जानता था कि उसे उत्तरकी प्रतीक्षा है, किन्तु वह सायंकालसे पहले उसे लेने न आयगी। उसने एक छोटेसे कागज़के पुर्जेपर ये लाइनें लिखीं—

" मैं गुले लालाकी चिन्तासे नहीं किन्तु तुमको न देखनेके कारण बीमार पड़ा हूँ। "

उस दिन ग्रीफ़सके चले जाने और अँधेरा पड़ जानेपर वान बार्लेने वह काग़ज़ किवाड़के नीचेको सरका दिया और वह बड़े ध्यानसे कान लगाकर सुनने लगा। किन्तु उसे न तो रोज़ाके पैरोंकी आहट सुनाई दी और न उसके कपड़ोंकी सरसराहट। उसने जंगलेदार खिड़कीसे आते हुए ये शब्द सुने–" कल आऊँगी। " आवाज ऐसी धीमी थी जैसा कि श्वास।

कल आठवाँ दिन होगा। रोज़ा और वान बार्लेकी भेंट आठ दिन तक नहीं हुई थी।

१०–आठ दिनकी घटनाएँ

अगले दिन सायंकालको नियत समयपर वान बार्लेने किसीको जंगलेदार खिड़कीपर खुरचते हुए सुना जैसे कि रोज़ा पहले किया करती थी।

वान बार्ले पास ही खड़ा था। उसने झट रोज़ाको देखा जो कि आज फिर लालटैन हाथमें लिये खड़ी थी।

उसको इतना उदास और पीला देखकर वह चौंक गई और बोली—

महाशय वान बार्ले, क्या तुम बीमार हो ?

वह बोला, हाँ।

वस्तुतः उसका शरीर और मन दोनों बीमार थे।

रोज़ा बोली, मैंने सुना है कि तुम खाते-पीते नहीं। मेरे पिता कहते थे कि तुम सारे दिन बिस्तरपर पड़े रहते हो। तब मैंने, तुम जिस वस्तुके विषयमें इतनी चिन्ता करते हो, उसके विषयमें तुम्हारी बैचेनीको दूर करनेके लिए वह पुर्ज़ा लिखा।

" और मैंने भी उसका जवाब दे दिया। मेरी प्यारी रोज़ा, तुमको आती देखकर मैंने समझा कि तुमको मेरी चिट्ठी मिल गई। "

" हाँ ठीक है। वह मुझे मिल गई है। "

" अब तुम इस बातका बहाना नहीं कर सकतीं कि तुम पढ़ा नहीं सकतीं । तुमने पढ़ना तो अच्छी तरह सीख ही लिया है, तुम लिखती भी खूब हो । "

" हाँ, मुझे तुम्हारी चिट्ठी मिली और मैंने उसे पढ़ा भी । इसी लिए मैं तुम्हें देखने आई हूँ कि तुम्हारी तबीयत ठीक करनेके लिए कोई उपाय निकालूँ । "

वान बार्ल बोला, मेरी तबीयत ठकि करनेके लिए ? क्या तुम्हारे पास मुझे सुनानेके वास्ते कोई खुशखबर है ?

यह कहकर दीन कैदीने रोज़ाकी ओर देखा । आशासे उसकी आँखें उज्ज्वल हो गईं ।

रोज़ा उसकी इस दृष्टिको समझी हो या न समझी हो, उसने गंभीरतासे उत्तर दिया—मुझे तुमसे सिर्फ़ तुम्हारे गुले लालाके विषयमें कहना है । क्योंकि मैं जानती हूँ कि तुम्हारे मनमें वही वस्तु सर्वोच्च है ।

रोज़ाने ये शब्द ऐसे स्वरमें कहे कि वे वान बार्लके हृदयमें चुभ गये । उस दीन सुन्दरीने अपने प्रतिद्वंद्वी काले फूलके विषयमें जिस लापरवाहीके साथ यह कहा, उसके अंदर क्या निहित था इस विषयमें वान बार्लने कुछ संदेह नहीं किया ।

वह धीरेसे बोला, फिर वही बात, रोज़ा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा कि मैं केवल तुम्हारा ध्यान कर रहा था । मुझको केवल तुम्हारे न आनेका दुःख था । मैंने तुमको ही खो दिया था और तुम्हारे अभावको मैंने स्वतंत्रता और जीवनकी हानिसे भी अधिक अनुभव किया ।

रोज़ा उदासीके साथ मुसकुराई ।

वह बोली, ओह तुम्हारा गुले लाला बड़े खतरेमें था ।

वान बार्ल बिना जाने काँप उठा, और इस जालमें फँस गया ।

वह बोला, खतरा ! क्या खतरा ?

रोज़ाने उसकी ओर दयापूर्ण दृष्टिसे देखा । उसको मालूम हुआ कि जो वह चाहती थी वह इस मनुष्यकी शक्तिसे बाहर है और उसमें जो कमज़ोरी है वह रहेगी ही ।

वह बोली, हाँ, तुम्हारा अनुमान ठीक था। वह झूठा प्रेमी जाकोब मेरे वास्ते नहीं आता था।

वान बार्लेने चिन्तित होकर पूछा, तो और किस वास्ते आता था?

" वह गुले लालाके वास्ते आता था। "

पंद्रह दिन पहले रोज़ाने जब कहा था कि जाकोब उसके वास्ते आता था, तो वान बार्लेका चेहरा जैसा पीला पड़ गया था, इस समय ये शब्द सुनकर उससे कहीं अधिक पीला पड़ गया।

रोज़ाने उसकी इस बेचैनीको देखा और रोज़ाके चेहरेको देखकर वान बार्ले समझ गया कि वह मनमें क्या क्या विचार रही है।

वह बोला—रोज़ा, मुझे क्षमा करो। मैं तुम्हें जानता हूँ, और मैं तुम्हारी सहृदयता और सचाईसे परिचित हूँ। ईश्वरने तुमको अपनी रक्षा करनेकी शक्ति और बुद्धि दी है, किन्तु बेचारे गुले लालाको ईश्वरने ऐसी कोई शक्ति नहीं दी जिससे वह संकट पड़नेपर अपनी रक्षा कर सके।

रोज़ा कैदीकी इस बातका कुछ भी उत्तर न देकर बोलती गई—

" जबसे मुझे मालूम हुआ कि तुम उस आदमीके कारण बेचैन हो, जो मेरे पीछे पीछे गया था और जिसको मैंने पीछेसे पहिचाना, मैं तुमसे भी अधिक बेचैन रहने लगी। इस लिए उस दिन जिससे पहले दिन मेरी तुमसे अन्तिम भेंट हुई और तुमने कहा कि..."

वान बार्लेने बीचमें ही बात काटकर कहा, रोज़ा, मुझे एक बार और क्षमा करो। मैंने वे शब्द कहनेमें बड़ी भूल की। मैं उन बिना समझे-बूझे कहे हुए शब्दोंके लिए क्षमा माँग चुका हूँ और अब फिर माँगता हूँ। क्या मेरी प्रार्थना स्वीकृत नहीं होगी?

रोज़ा बोली, हाँ तो वह बदमाश मेरे पीछे है या गुले लालाके पीछे, यह जाननेके लिए तुम्हारे बतलाये हुए उपायको ध्यानमें रखकर मैं उस दिन—

" हाँ, हाँ, वह बदमाश, तो क्या तुम उस मनुष्यसे घृणा करती हो? "

रोज़ा बोली, मैं वस्तुतः उससे घृणा करती हूँ, क्योंकि इन आठ दिनोंमें मैं बहुत दुखी हुई हूँ, और उसका मूल कारण वही है।

" तो तुम भी बड़ी दुखी हुई हो रोज़ा? मैं इस स्वीकृतिके लिए तुम्हें हज़ार बार धन्यवाद देता हूँ। "

" अच्छा तो मैं बागमें उस क्यारीकी ओर गई जो मैंने गुले लाला बोनेके लिए तैयार की थी। मैं अपने चारों ओर देखती जाती थी कि मेरा पीछा तो कोई पहलेके समान नहीं कर रहा है। "

" फिर क्या हुआ ? "

" मैंने देखा कि जाकोब पहलेकी तरह पेड़ोंके पीछे छिपकर मुझे देख रहा है। तब मैं फावड़ेसे खोदकर गाँठको धरतीमें गाड़नेका नाट्य करने लगी। "

" और वह इस बीच क्या कर रहा था ? "

" मैंने पेड़ोंकी शाखाओंके बीचमेंसे उसकी आँखें बाघकी आँखोंकी तरह चमकती हुई देखीं। "

वान बार्ले बोला, तुम देखती हो न ? यह बात है।

" तब मैं अपना फूल बोनेका दिखावा करके वहाँसे हटकर आ गई। "

" किन्तु बाग़के दरवाज़ेके पीछे ही न, जिससे कि किवाड़ोंकी दराज़ोंमेंसे तुम देख सको कि वह तुम्हारे चले आनेपर क्या करता है ? "

" वह जरा देर ठहरा जिससे कि उसे मेरे फिर लौट आनेका डर न रहे। फिर अपने छिपनेकी जगहसे धीरेसे निकलकर एक चक्करदार रास्तेसे क्यारीके पास पहुँचा। अन्तमें अपने लक्ष्यपर पहुँचकर वह चारों तरफ़ देखने लगा। बागके हरएक कोनेकी खिड़कियों, यहाँ तक कि आकाशपर भी, उसने दृष्टि डाली कि कोई मुझे देख तो नहीं रहा है। जब उसे पूरा निश्चय हो गया कि मैं अकेला हूँ और मुझे कोई नहीं देख रहा है, तो वह क्यारीमें उँगली डालकर मिट्टी कुरेदने लगा। जब उसे अच्छी तरह ढूँढ़नेपर भी मूलकी गाँठ नहीं मिली, तो वह समझ गया कि उसे धोखा दिया गया। तब अपने हृदयके क्षोभको छिपाकर, मिट्टीको बराबर करके जैसी कि वह पहले थी, बिल्कुल लज्जित और उदास होकर द्वारकी ओर लौट आया। उसने अपनी मुखाकृति ऐसी बना ली मानों वह यों ही बागमें घूमने गया था, किसी प्रयोजनसे नहीं। "

वान बार्लेने अपने माथे परसे ठंडा पसीना पोंछते हुए कहा, वह कमबख्त बड़ा बदमाश है। मैंने उसके इरादेका पहले-ही-से अनुमान किया था। किन्तु रोज़ा, गाँठका क्या हुआ ? अब तो उसके बोनेमें बहुत देर हो चुकी है।

" गाँठका ? उसको बोए तो छह दिन हो गये। "

वान बार्ले अधीरतासे बोला, कहाँ ? कैसे ? हे परमात्मन् ! यह कैसी असावधानी ! वह कहाँ बो दी है ? किस प्रकारकी ज़मीनमें ? अच्छीमें या बुरीमें ? इस बातका तो डर नहीं कि वह पाजी जाकोब उसको निकाल लेवे ?"

रोज़ा बोली, उसके चोरी चले जानेका भय बिल्कुल नहीं, जब तक कि जाकोब मेरी कोठरीका दरवाज़ा तोड़कर अन्दर न घुस आवे।

वान बार्ले कुछ शान्त होकर बोला, ओह, तो तुमने उसे अपनी सोनेकी कोठरीके भीतर रख छोड़ा है ? किन्तु कैसी मिट्टीमें ? किस बर्तनमें ? मैं समझता हूँ कि तुमने उसे पानीमें नहीं बोया है, जैसा कि हारलेम और डोर्टकी कुछ स्त्रियाँ किया करती हैं, जो समझती हैं कि पानी मिट्टीका काम दे सकता है।

रोज़ा मुसकराते हुए बोली, इन सब बातोंके विषयमें तुम निश्चिन्त रहो। तुम्हारा गुले लाला पानीमें नहीं बोया गया है।

"मेरी जानमें जान आ गई।"

"मैंने उसे एक अच्छे पत्थरके मर्तबानमें बोया है। वह उतना ही बड़ा है जितना कि तुम्हारा गमला था। बाग़की अच्छीसे अच्छी चुनी हुई मिट्टी तीन हिस्से, खाद पड़ी हुई जगहमेंसे ली है और एक हिस्सा सड़ककी बुहारन। मैंने तुमको और उस पाजी जाकोबको गुले लालाके लिए उपयुक्त मिट्टीके विषयमें बातचीत करते बहुत बार सुना है। इस लिए मैं गुले लालाके लिए मिट्टी उतनी ही अच्छी तरह चुन सकती हूँ जितनी कि हारलेमका अच्छेसे अच्छा माली।"

"और रोज़ा, अब उसकी क्या हालत है ?"

"आजकल उसे सारे दिन धूप मिलती है, जब जब कि धूप निकलती है। किन्तु जब अंकुर मिट्टीसे बाहर दिखाई देने लगेगा, तो मैं भी वैसा ही करूँगी जैसा कि, प्यारे वान बार्ले, तुमने किया था। मैं उसे सुबह ८ बजेसे ११ बजेतक पूर्वकी ओरकी खिड़कीमें और मध्याह्नोत्तर ३ से ५ बजेतक पश्चिमकी ओरकी खिड़कीमें रक्खूँगी जिससे कि प्रातःसायंकी मृदु धूप उसे मिले और दोपहरकी कड़ी धूपसे वह बचा रहे।

वान बार्ले बोला, शाबाश रोज़ा, शाबाश। तुम तो पक्की मालिन बन गई। किन्तु मुझे भय है कि इस पौधेकी देख-भाल करनेमें तुम्हारा सारा समय ख़र्च हो जायगा।

"हाँ, समय तो ख़र्च होगा ही, किन्तु कुछ परवा नहीं। तुम्हारा गुले लाला

मेरे पुत्रके समान है । मैं उसकी रक्षामें उसी तरह समय लगाऊँगी, मानो वह मेरी संतान हो—अगर मैं माता होती।"—

रोज़ाने मुसकराकर कहा—मैं उसकी माता बनकर ही प्रतिद्वंद्वी होनेसे बच सकती हूँ।

वान बार्लने धीरेसे कहा, 'मेरी प्यारी सुंदरी रोज़ा,' और यह कहकर उसने रोज़ाकी ओर ऐसी दृष्टिसे देखा जो कि प्रेमीकी थी, पुष्पोपासककी नहीं, और उससे रोज़ाको कुछ ढारस मिला।

तब कुछ देरतक दोनों ओरसे मौन रहा। इसके बाद वह बोला, तुमने कहा कि गाँठको बोए ६ दिन हो गये ?

"हाँ, ६ दिन।"

"और अब भी उसमें अँकुवेकी पत्तियाँ नहीं निकलीं ?"

"नहीं, किन्तु मैं समझती हूँ कि कल दिखलाई देने लगेंगीं।"

"तो रोज़ा, तुम कलको उसकी ख़बर सुनाना, और अपनी भी। मुझे पुत्रका बड़ा ध्यान है। तुमने उसे अभी पुत्र कहकर पुकारा था। किन्तु उससे भी अधिक माताका ख़याल है।"

रोज़ाने वान बार्लकी ओर तिरछी दृष्टिसे देखते हुए कहा, कलको ? मैं नहीं जानती कि कलको मैं आ सकूँगी या नहीं।"

"क्या कहती हो ? तुम कलको आ क्यों नहीं सकतीं ?"

"महाशय वान बार्ल, मुझे बहुत काम करना है।"

वान बार्ल बोला, और मुझे केवल एक काम है।

रोज़ा बोली, हाँ, गुले लालासे प्यार करनेका।

"तुमसे प्यार करनेका रोज़ा।"

रोज़ाने सिर हिलाया और कुछ देरतक मौनका राज्य रहा।

अन्तमें वान बार्लने मौनका भंग किया। वह बोला, रोज़ा, इस संसारमें हरएक चीज़ बदलती रहती है। वसन्त और ग्रीष्म ऋतुके पुष्पोंके बाद दूसरे फूल आते हैं और जो भ्रमर अभी तक चमेली, बेला और गुलाबके फूलोंपर मँड़राते थे वे उसी प्रेमके साथ कदंबके फूलोंपर चले जाते हैं।

रोज़ा बोली, तुम यह सब क्या कह रहे हो ?

"देवी रोज़ा, तुमने मुझे छोड़ दिया, और अब तुम अपने मनोविनोदका

सामान दूसरी जगह ढूँढ़ रही हो। तुमने ठीक ही किया और मुझे कुछ शिकायत नहीं है। मुझे इस बातका क्या अधिकार है कि मैं यह आशा रक्खूँ कि तुम हमेशा मुझसे ही प्रेम करती रहोगी ?"

यह सुनकर रोज़ाकी आँखोंमें आँसू आ गये। उसने अपने कपोलोंपर उन मोतियोंके गिरनेको वान बार्लसे छिपानेके लिए कुछ चेष्टा न की।

वह बोली, क्या मैंने अपने प्रेमको बदल दिया ? क्या मैंने तुमसे प्रेम करना छोड़ दिया ? क्या मैं किसी दूसरेसे प्रेम करने लगी ?

"तुम मुझे यहाँ मरनेके लिए छोड़े देती हो, क्या इसीको प्रेम कहते हैं ?"

"महाशय वान बार्ले, क्या मैं तुम्हें आनन्दित करनेके लिए ही सब कुछ नहीं कर रही हूँ ? क्या मैं तुम्हारे गुले लालाकी देख-भालमें नहीं लगी हूँ ?"

"रोज़ा, तुम बड़ी क्रूर हो। मुझे इस संसारमें केवल एक ही सच्चा सुख था और तुम मुझपर उसीका दोष लगाती हो।"

"मैं तुमपर किसी बातका दोष नहीं लगाती, सिवाय उस बड़े भारी शोकके जो कि मुझे तुम्हें फाँसीका दण्ड मिलनेका समाचार सुननेसे हुआ था।"

"रोज़ा, मेरी सुन्दरी, मैं फूलोंसे प्यार करता हूँ, क्या तुम इससे नाराज़ हो।"

"मैं उससे बिल्कुल अप्रसन्न नहीं हूँ। सिर्फ़ इतना है कि इस बातको विचारनेसे मुझे दुख होता है कि तुम उन्हें मुझसे भी अधिक प्यार करते हो।"

"ओ मेरी प्यारी रोज़ा, देखो तो सही मेरे हाथ कैसे काँप रहे हैं; मेरे पीले गालोंकी ओर देखो; देखो मेरा हृदय कैसे ज़ोरसे धड़क रहा है ! मेरी प्यारी, यह सब तुम्हारे ही लिए है, काले गुले लालाके लिए नहीं। उस फूलके बीजको नष्ट कर दो, मैंने अपने आपको उस सुन्दर मधुर स्वप्नके जिस प्रकाशका अपने आपको अभ्यासी बना लिया है उसे बुझा दो, किन्तु मुझसे प्यार करो। क्यों कि मैं अपने हृदयमें इस बातको बहुत अनुभव करता हूँ कि मैं तुमसे ही प्यार करता हूँ।"

रोज़ाने एक ठण्डी आहके साथ कहा, हाँ, पर काले फूलके बाद ही न ?

इस बार उसने अपने हाथोंको खिड़कीके पाससे नहीं हटाया और वान बार्लने बड़े प्यारके साथ उन्हें चूम लिया।

वान बार्ल बोला, रोज़ा, संसारमें हरएक वस्तुसे पहले और अधिक।

"क्या मैं तुम्हारा विश्वास कर सकती हूँ ?"

" उसी तरह जैसे कि तुमको अपने जीनेमें विश्वास है । "

" अच्छा तो ऐसा ही सही । किन्तु मुझसे प्यार करनेका तुमपर कोई बन्धन नहीं है । "

" मैं इस जेलके बंधनसे जितना बँधा हुआ हूँ, दुर्भाग्यसे उससे अधिक वह मुझे नहीं बाँधता । किन्तु उससे तुम बँध गई हो, रोज़ा । "

" किस बातके लिए ? "

" सबसे पहले, विवाह न करनेके लिए । "

वह मुसकुराई और फिर बोली—तुम लोग सब ही बड़े अत्याचारी होते हो । तुम एक सुन्दरीकी उपासना करते हो और उसके सिवाय और किसीका ध्यान नहीं करते । तुमको फाँसीकी आज्ञा होती है और फाँसीके तख़्तेपर जाते हुए तुम अपनी अन्तिम आह उसीके लिए छोड़ जाते हो, और तब उस बेचारीसे यह आशा रखते हो कि वह अपने जीवनके सारे स्वप्न और आनन्द तुम्हारे लिए बलिदान कर दे । "

वान बार्ले बोला, रोज़ा, तुम किस सुन्दरीके विषयमें कह रही हो ।

रोज़ा जिस सुन्दरीके विषयमें बोल रही थी उसे याद करनेका वान बार्लेने बहुत यत्न किया, किन्तु उसे कुछ याद न आया ।

रोज़ा बोली, वह काली सुन्दरी, जिसकी पतली कटि, छोटे पैर और ऊँचा मस्तक है । मेरा मतलब तुम्हारे फूलसे है ।

वान बार्ले मुसकराने लगा । वह बोला—वह तो एक कल्पित प्रेमिका है । जब कि तुम तो, तुमने स्वयं ही तो कहा था, न जाने कितने प्रेमियोंसे घिरी रहती हो । रोज़ा, तुम्हें याद है न कि तुमने मुझसे कहा था कि जब तुम हेगमें थीं तो वहाँ विद्यार्थी, अफ़सर, क्लर्क और व्यापारी न जाने कितने लोग तुम्हें प्रेम-पत्रिकाएँ भेजा करते थे ? क्या यहाँ क्लर्क, अफ़सर और विद्यार्थी नहीं हैं ? "

" हाँ हैं, और बहुतेरे हैं । "

" और वे तुम्हें चिट्ठियाँ लिखते हैं ? "

" हाँ, लिखते हैं । "

" और अब तुम उन्हें पढ़ना भी जानती हो । "

यह कहते हुए वान बार्लेने एक ठंडी आह भरी । उसके मनमें ख़याल

आया कि मैं यद्यपि दीन कैदी हूँ, किन्तु उन प्रेम-पत्रोंको पढ़नेकी योग्यता रोज़ामें मेरे ही कारण पैदा हुई है।

रोज़ा बोली, मैं समझती हूँ कि उन प्रेम-पत्रोंको पढ़ने और भिन्न भिन्न प्रेमियोंपर विचार करनेमें मैं तुम्हारी ही आज्ञाका पालन कर रही हूँ।

" वह कैसे ? मेरी आज्ञाका पालन कैसे ? "

अब रोज़ाने भी एक ठंडी सांस खींचकर कहा, सच मुच ही तुम्हारी आज्ञाका। क्या तुम वह वसीयत भूल गये जो तुमने कॉर्नेलियस द'विटकी बाइबिलपर लिखी थी? मैं उसे नहीं भूली, क्योंकि मैं उसे पढ़ सकती हूँ और उसे रोज़ बार बार पढ़ती हूँ। उस वसीयतमें तुमने मुझे २६ से २८ बरस तकके एक सुन्दर युवकसे विवाह करनेकी आज्ञा दी है। मैं ऐसे युवककी खोजमें हूँ और क्योंकि मेरा सारा दिन तुम्हारे गुले लालाकी देख-भाल करनेमें चला जाता है, इस-लिए तुम्हें मुझे सायंकालको ऐसे युवकको खोजनेके लिए छोड़ देना चाहिए।

" किन्तु रोज़ा, वह वसीयत लिखते समय मैं समझता था कि मैं मर जाऊँगा, किन्तु मैं तो अभी तक जीता हूँ। "

" अच्छा, तो अब मैं सुन्दर युवककी खोजमें नहीं रहूँगी और मैं तुम्हें देखने आऊँगी। "

" अच्छी बात है रोज़ा, आओ, ज़रूर आओ। "

" एक शर्त है—"

" पहलेसे ही मंजूर है। "

" कि आजसे तीन दिन तक फूलका जिक्र हमारी बात-चीतमें नहीं होगा। "

" रोज़ा, यदि तुम चाहो तो मैं उसका जिक्र कभी नहीं करूँगा। "

सुंदरी बोली, नहीं, नहीं, किसी असंभव बातके लिए मैं तुमसे प्रार्थना नहीं करूँगी। और यह कहते हुए वह अपना कपोल, मानों बेजाने खिड़कीके जंग-लेके इतना निकट ले आई कि वान बार्लेने उसे अपने होठोंसे छू दिया।

रोज़ाके मुखसे छोटीसी चीख-सी निकली, उससे भी प्रेम झलकता था, और फिर वह चली गई।

२१—दूसरी गाँठ

वह रात बड़ी अच्छी तरहसे बीती और उसके बादका दिन तो और भी अधिक खुशीसे बीता।

पिछले कुछ दिनों तक वान बार्लेको कारागार बड़ा ही भारी और उदासीपूर्ण मालूम दिया था। वह बड़ा अँधेरा था और मालूम होता था कि उसका सारा बोझ अभागे कैदीपर टूटा पड़ता है। उसकी दीवारें काली थीं, हवा बिल्कुल ठंडी सुन्न थी और लोहेकी छड़ें प्रकाशकी प्रत्येक किरणकी रोकती थीं।

किन्तु अगले दिन जब वान बार्ले सोकर उठा, तो प्रातःकालीन सूर्यकी सुनहरी किरणें उन लोहेकी छड़ोंपर नाच रही थीं; कुछ कबूतर पंख फैलाकर उड़ रहे थे और कुछ छतपर और बंद खिड़कीके पास 'गुटर गूँ' कर रहे थे।

वान बार्लेने दौड़कर खिड़की खोली। उसे ऐसा मालूम पड़ा मानों सूर्यकी किरणोंके साथ उसकी खिड़कीमें नया जीवन, हर्ष और स्वयं स्वातंत्र्य प्रवेश कर रहे हैं। वह कोठरी, जो कि अब तक उजड़ी हुई थी, प्रेमके प्रकाशसे उज्ज्वल हो रही है।

इस लिए जब ग्रीफ़स प्रातःकाल अपने कैदीको देखने आया तो उसने उसे पहलेकी तरह उदास और बिस्तरेपर पड़ा हुआ नहीं, किन्तु हँसमुख, खिड़की-पर खड़े हुए और एक गीत गाते पाया।

जेलरने उसे पुकारा।

वान बार्ले बोला, आप अच्छी तरह तो हैं?

ग्रीफ़सने उसकी ओर भौंहें टेढ़ी करके देखा।

वान बार्लेने फिर पूछा, और कुत्ता, जाकोब तथा हमारी सुंदरी रोज़ा तो अच्छी तरह हैं?

ग्रीफ़सने दाँत पीसते हुए कहा—यह तुम्हारा नाश्ता है।

कैदी बोला—मित्र, धन्यवाद, तुम ठीक समयपर आये। मुझे बड़ी भूख लगी है।

"तुम्हें बड़ी भूख लगी है? सच?"

" बिलकुल सच । "

ग्रीफ़स बोला, मालूम होता है तुम्हारा षड्यंत्र फल-फूल गया है ।

" कौनसा षड्यंत्र ? "

" बहुत अच्छा, विद्वान् महाशय, मैं उसे जानता हूँ । ज़रा शान्त रहो, हम होशियार रहेंगे । "

" दोस्त ग्रीफ़स, होशियार रहोगे ? जब तक चाहो होशियार रहो । मेरा षड्-यंत्र और मैं स्वयं तुम्हारी सेवामें हाज़िर हैं । "

" अच्छा हम दोपहरको देखेंगे । "

यह कहता हुआ ग्रीफ़स चला गया ।

वान बार्ले सोचने लगा, दोपहरको इसका क्या मतलब है ? अच्छा, १२ बजने दो, मैं तब तक प्रतीक्षा करूँगा और तब देखा जायगा ।

वान बार्लेको तो रातके ८ बजे तक प्रतीक्षा करनी थी, १२ बजे तक प्रतीक्षा करना उसके लिए कौन बड़ी बात थी ।

१२ बज गये और ग्रीफ़स आज अकेला नहीं अपि तु चार पाँच सिपाहियोंके साथ आया । वह दरवाज़ा खोलकर अपने आदमियोंको अंदर ले आया, फिर उसने अंदरसे दरवाज़ा बंद कर लिया और सिपाहियोंसे कहा—

" अच्छा तो अब तलाशी लो । "

उन्होंने वान बार्लेकी केवल जेबोंकी ही नहीं किन्तु शरीरकी भी तलाशी ली, किन्तु उन्हें कुछ नहीं मिला ।

तब उन्होंने चादरें, बिस्तर और उसके नीचेकी चटाईकी तलाशी ली, फिर भी कुछ न मिला ।

अब वान बार्लेको यह सोचकर बड़ी खुशी हुई कि उसने तीसरी गाँठको अपने पास नहीं रक्खा, नहीं तो ग्रीफ़स इस तलाशीमें उसे निकाल लेता और उसका वही हाल करता जो पहलीका किया था ।

अपनी कोठरीमें तलाशी होते समय कभी किसी कैदीको उतनी शान्ति और खुशी न हुई होगी जितनी कि वान बार्लेको ।

ग्रीफ़सको रोज़ाकी लाई हुई पेंसिल और काग़ज़के टुकड़ोंके सिवा कुछ न मिला और इन चीजोंको ही विजयमें लूटे हुए मालकी तरह लेकर वह चला गया ।

६ बजे ग्रीफ़स फिर आया; किन्तु इस बार वह अकेला था। वान बार्लेने उसे संतुष्ट करना चाहा, किन्तु वह गुर्राने लगा। उसके मुखके एक कोनेमें एक लंबा-सा दाँत हाथीके दाँतकी तरह आगेको निकला हुआ था; वह उसे ही दिखाने लगा। फिर इस तरहसे लौट गया, मानों उसे इस बातका डर हो कि पीछेसे कोई उसपर हमला करेगा। वान बार्ले देखकर हँस पड़ा। उसकी हँसी देखकर ग्रीफ़सने खिड़कीमेंसे कहा, उसे हँसना चाहिए जिसकी विजय हुई हो।

विजय आज वान बार्लेकी हुई, क्योंकि ९ बजे रोज़ा आ गई।

आज उसके हाथमें लालटैन नहीं थी। अब उसे लालटैनकी जरूरत नहीं थी, क्योंकि वह अब स्वयं पढ़ सकती थी। इसके अलावा इस बातका भी भय था कि लालटैन होनेसे कोई उसे देख लेगा, क्योंकि जाकोब सदैव उसके पीछे रहता था और अन्तिम कारण यह था कि लालटैनके प्रकाशमें वान बार्ले उसके चेहरेपरके परिवर्तनों तथा रोमांच आदिको देख सकता था।

उस दिन दोनोंने किन विषयोंपर बातचीत की? उनपर जिनपर कि प्रेमी लोग फ्रांसके घरोंके दरवाज़ोंपर, स्पेनके छज्जोंपर, और पूर्वीय देशोंमें कोठों और उद्यानोंमें किया करते हैं। उन्होंने उन विषयोंपर बातचीत की जिनपर बातचीत करनेसे समयके पंख लग जाते हैं। उन्होंने सिवा काले गुले लालाके सभी विषयों-पर बातचीत की। अन्तमें जब दस बज गये, तो हमेशाकी तरह रोज़ाने बिदा ली।

वान बार्ले प्रसन्न तो था किन्तु वह उतना ही प्रसन्न था जितना कि कोई पुष्प-प्रेमी हो सकता है जब कि उससे उसके प्यारे पुष्पके विषयमें कुछ न कहा गया हो। उसको रोज़ा सुंदरी अच्छी और मनोहारिणी प्रतीत हुई।

"किन्तु रोज़ाने गुले लालाके विषयमें बातचीत करनेके लिए क्यों आक्षेप किया? रोज़ामें यही तो त्रुटि है।"

वान बार्लेने एक ठंडी साँस लेते हुए कहा कि स्त्री सर्वांगपूर्ण नहीं हो सकती। रात्रिका कुछ भाग उसने इस अपूर्णताके सोचनेमें बिताया, अर्थात् वह जब तक जागता रहा रोज़ाके विषयमें ही सोचता रहा।

फिर नींद आ जानेपर स्वप्नमें भी उसे वही दिखाई दी। किन्तु स्वप्नकी रोज़ा वास्तविक रोज़ासे कहीं अधिक पूर्ण थी। स्वप्नकी रोज़ाने उससे गुले लालाके विषयमें केवल बातचीत ही नहीं की, किन्तु वह एक काला गुले-लाला भी एक चीनीकी फूलदानीमें उसके पास लाई।

वान बार्ले तब काँपता हुआ और यों गुनगुनाता हुआ उठ बैठा—

" रोज़ा, रोज़ा, मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ। "

और क्योंकि दिन निकल आया था उसने सोना ठीक नहीं समझा। जागते समय उसके मनमें जो बातें थी, वह उन्हींका ध्यान करता रहा।

ओह ! यदि रोज़ाने उससे सिर्फ़ गुले लालाके विषयमें बातचीत की होती, तो वह उसे नूरजहाँ बेगम, रानी पद्मिनी और आष्ट्रियाकी रानी आनसे भी बढ़कर समझता। दुनियाकी सुन्दरीसे सुन्दरी रानियोंका तो कहना ही क्या, स्वयं रतिदेवी भी उसके सामने कुछ नहीं थी। उसे केवल एक सान्त्वना थी। जिन ७२ घंटोंमें रोज़ाने फूलके जिक्रका निषेध कर दिया था, उनमेंसे ३६ तो पहले ही बीत गये थे, बाक़ी ३६ भी आसानीसे बीत जायँगे। अठारह तो शामकी भेंटकी प्रतीक्षा करनेमें और अठारह उसकी याद करके आनन्दित होनेमें।

रोज़ा नियत समयपर आई और वान बार्लेने बड़ी वीरतासे उस कष्टका सामना किया, जो कि गुले लालाके विषयमें बाध्य मौनसे उसे होता था।

किन्तु सुन्दरी यह अच्छी तरह जानती थी कि दूसरेसे कुछ काम कराना हो, तो अपने आप भी कुछ झुकना चाहिए। इसलिए अब उसने अपने हाथोंको जालीसे नहीं हटाया और वान बार्लेको अपने सुनहरे केशोंको भी चूमने दिया।

वह बेचारी पहले यह नहीं जानती थी कि मेरी ये छोटी छोटी सुन्दर चालें गुले लालाके विषयमें बातचीत करनेसे कहीं अधिक खतरनाक हैं; किन्तु लौटकर आनेपर उसका हृदय धड़क रहा था, होंठ सूखे थे, आँखें भीगी हुई थीं, और कपोल चमक रहे थे, और तब उसे यह बात मालूम हुई।

अगले दिन सायंकालको जब वह आई, तो प्रणाम करके ज़रा पीछे हट गई। उस समय उसने जिस दृष्टिसे वान बार्लेको देखा, उसको यदि वह पढ़ सकता तो उसका हृदय उछल पड़ता।

वह बोली ' वह निकल आया। '

वान बार्लेने पूछा, वह निकल आया ! कौन ? क्या ?

उसे इस बातका विश्वास ही नहीं होता था कि रोज़ा स्वयं ही अपनी दी हुई अवधिसे पहले गुले लालाके विषयमें बोल उठेगी। इसी लिए उसने यह प्रश्न किया।

रोज़ा बोली—वह मेरा पुत्र, गुले लाला।

वान बार्ल बोला, क्या! तो क्या तुम मुझे उसके विषयमें बोलनेकी अनुमति देती हो?

अपनी सन्तानको कोई बड़ी आनन्ददायक वस्तु देती हुई प्यारी माताके समान रोज़ाने कहा, हाँ, देती हूँ।

वान बार्लने कहा, ओह, रोज़ा।

और यह कहते हुए उसने ओठोंको जंगलेमें लगा दिया। इस आशासे कि उसे कपोल, हाथ या मस्तक कोई न कोई चीज़ छूनेको मिले।

उसे इनसे कहीं अधिक अच्छी वस्तु छूनेको मिली। वह वस्तु थी दो अधखुले गरम ओंठ।

रोज़ाने एक छोटीसी चीत्कार की।

वान बार्ल समझ गया कि उसे जल्दीसे बात-चीत शुरू करनी चाहिए, क्योंकि इस आकस्मिक चुंबनसे रोज़ा डर गई है।

वह बोला, क्या वह सीधा बढ़ रहा है?

"बिल्कुल सीधा, तीरकी तरह।"

"कितना ऊँचा है?"

"कमसे कम दो इंच।"

"रोज़ा, तुम उसकी अच्छी तरह देख-भाल करो। वह जल्दी ही बड़ा होता हुआ देखनेको मिलेगा।"

"क्या मैं इससे अधिक देख-भाल कर सकती हूँ? मुझे तो सिवाय उसके और किसी चीज़का ध्यान ही नहीं आता।"

"रोज़ा, और किसी चीज़का नहीं? तो अब मेरी ईर्ष्या करनेकी बारी है।"

"तुम जानते ही हो कि फूलका ध्यान करना तुम्हारा ध्यान करना है। मैं कभी उसे अपनी आँखोंसे ओझल नहीं होने देती। वह मेरे बिस्तरके पास ही रक्खा है। सोकर उठते ही मेरी दृष्टि उसपर पड़ती है और सोनेसे पहले मैं उसे ही देखकर सोती हूँ। दिनको मैं उसीके पास बैठकर काम करती हूँ। जबसे उसे वहाँ रक्खा है, मैंने अपनी कोठरी नहीं छोड़ी।"

"तुम ठीक कहती हो रोज़ा, तुम जानती ही हो कि वह तुम्हारे दहेज़के लिए है।"

" हाँ, और मैं उसके द्वारा २६ से २८ बरस तककी उम्रके एक युवकसे, जिससे मैं प्यार करूँ, विवाह कर सकती हूँ। "

" इस तरहसे मत कहो, तुम बड़ी नटखट हो। "

उस दिन वान बार्ले सबसे अधिक सुखी था। रोज़ाने उसे अपना हाथ, जितनी देरतक उसने चाहा, पकड़े रहने दिया। इसके अलावा वह जब तक चाहे तब तक गुले लालाके विषयमें बातचीत कर सकता था।

उस समयसे गुले लाला दिन दिन बढ़ने लगा और उसके साथ ही उन दोनोंका प्रेम भी।

एक दिन पत्तियाँ खुल गई और एक दिन स्वयं कली ही लग गई।

यह समाचार सुननेपर वान बार्लेकी खुशीका ठिकाना न रहा और उसने प्रश्नोंकी झड़ी लगा दी।

वह बोला, लग गई! क्या सच मुच ही लग गई?

रोज़ाने जवाब दिया, जी हाँ।

प्रसन्नताके मारे वान बार्ले उछल पड़ा। वह बोला—

" ओ दयालु परमात्मन्! "

तब रोज़ाकी ओर मुँह फेरकर उसने फिर प्रश्न करना शुरू किया—

" क्या उसकी कटोरी सुडौल है? क्या ऊपरका हिस्सा भरा हुआ है? और क्या सिरे बहुत हरे हैं? "

" कटोरी लगभग एक इंच लम्बी है और सिरोंपर पतली होती गई है। ऊपरका हिस्सा खूब भरा हुआ है, यहाँ तक कि सब तरफसे फूला पड़ता है और सिरे खुलने-ही-वाले हैं। "

दो दिन बाद आकर रोज़ाने समाचार दिया कि वे खुल गये हैं।

वान बार्ले बोला, खुल गये! रोज़ा, तब तो काला गुले लाला अभीसे पहचाना जा सकता होगा?

यह कहकर वह रुक गया और चिन्तासे दीर्घ श्वास लेने लगा।

रोज़ाने जवाब दिया, हाँ, बालकी तरह पतली भिन्न रंगकी रेखा अभीसे मालूम होती है।

वान बार्लेने काँपते हुए पूछा, और उसका रंग?

रोजा बोली, वह बहुत गहरा है।

" धुँधला ? "

" उससे भी गहरा । "

" उससे भी गहरा ! मेरी अच्छी रोज़ा, और अधिक गहरा ? धन्यवाद । गहरा—"

" उस स्याहीकी तरह जिससे मैंने तुमको चिट्ठी लिखी थी । "

वान बार्लके आनंदका ठिकाना न था ।

उसने अकस्मात् ठहर कर कहा—रोज़ा, स्वर्गमें ऐसा कोई भी फ़रिश्ता नहीं है जिससे तुम्हारी उपमा दी जा सके ।

उसके उत्साहपर मुस्कराती हुई रोज़ा बोली, सचमुच ?

वान बार्ल बोला, रोज़ा, तुमने ऐसे उत्साहसे काम किया । तुमने मेरे वास्ते इतने उत्साहसे काम किया । रोज़ा, मेरा गुले लाला खिलनेवाला है और वह काला खिलेगा । रोज़ा, रोज़ा, तुम संसारमें सबसे अधिक पूर्ण और त्रुटिहीन हो ।

" किन्तु गुले लालाके बाद । "

" चुप रहो, तुम्हें बड़ा द्वेष है । चुप रहो, तुम मेरे आनन्दको बिगाड़ देती हो । तुम्हें शर्म आनी चाहिए । किन्तु रोज़ा, मुझे बतलाओ तो सही, जब कली इतनी बड़ी हो गई है, तो वह दो या अधिकसे अधिक तीन दिनमें खिल जायगी न ? "

" कलको या परसोंको । "

वान बार्लेने पीछे हटकर कहा, हाय ! और मुझे मेरा फूल देखनेको भी नहीं मिलेगा । मैं उसको—सर्व शक्तिमान् परमात्माकी उस आश्चर्यजनक सृष्टिको—चूम भी नहीं सकूँगा, जैसे कि मैं कभी कभी तुम्हारे हाथ या कपोलको उनके अचानक खिड़कीके पास आ जानेपर चूम लेता हूँ ।

रोज़ा पास आ गई । अचानक नहीं किन्तु जान बूझकर; और वान बार्लेने बड़ी भावुकताके साथ उसे चूम लिया ।

" अगर तुम चाहो, तो मैं उसे तोड़ लाऊँगी । "

" नहीं, हर्गिज़ नहीं । रोज़ा जब वह खिल जाय तो उसे सावधानीसे छायामें रख देना और फ़ौरन हारलेमके पुष्प-प्रेमी समाजके सभापतिके पास एक आदमीको यह संदेश देकर भेजना कि काला गुले लाला खिल गया है । मैं जानता हूँ कि हारलेम यहाँसे दूर है, किन्तु पैसा देनेसे तुम्हें जानेवाला आदमी मिल जायगा । रोज़ा, तुम्हारे पास कुछ रुपये हैं ? "

रोज़ा मुसकुराई और बोली, हाँ ।

" काफ़ी हैं ? "

" मेरे पास तीन सौ रुपये हैं ।"

" अगर तुम्हारे पास तीन सौ रुपये हैं, तो रोज़ा, तुम्हें चिट्ठी देकर आदमी नहीं भेजना चाहिए, किन्तु स्वयं जाना चाहिए । "

" किन्तु इस बीचमें फूलोंका क्या होगा ? "

" फूल ? वह तुमको अपने साथ ले जाना चाहिए । तुम समझती हो, तुम्हें पल-भरके लिए भी उसे अपनेसे दूर नहीं होने देना चाहिए । "

" प्यारे वान बार्ले, मैं उसे तो अपनेसे दूर नहीं होने दूँगी; किन्तु तुम मुझसे दूर हो जाओगे । "

" हाँ, कहती तो तुम ठीक हो प्यारी रोज़ा । ओह मनुष्य कितने क्रूर हैं ! मैंने उन्हें क्या कष्ट दिया है कि उन्होंने मेरी स्वतंत्रता हर ली ! तुम ठीक कहती हो, रोज़ा । मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता । अच्छा तो तुम किसीको हारलेम भेज देना । यह निश्चित रहा । यह मामला बड़ा महत्त्वपूर्ण और आश्चर्यजनक है, इस लिए सभापति काले गुले लालाको देखनेके लिए स्वयं यहाँ आ जावेगा । "

तब अकस्मात् रुककर उसने लड़खड़ाती हुई आवाज़से कहा—" रोज़ा, रोज़ा, अगर फूल काला न हुआ तो ? "

" ज़रूर होगा, तुमको कल या परसों मालूम हो जायगा । "

" और वह जब खिलेगा उस दिन शाम तक मुझे प्रतीक्षा करनी पड़ेगी । मैं तो अधीरताके मारे मर जाऊँगा । हम कोई संकेत क्यों न नियत कर लें ? "

" मैं संकेतसे भी अच्छी बात करूँगी । "

" क्या करोगी ? "

" अगर वह रातको खिला, तो मैं स्वयं आकर कह जाऊँगी और अगर दिनको खिला, तो पिताके प्रथम और द्वितीय बार तुम्हारी कोठरीके निरीक्षणके लिए आनेके समयके बीचमें आकर खिड़कीके नीचे एक पुर्ज़ा सरकाकर रख जाऊँगी । "

" अच्छा रोज़ा, ऐसा ही करना । इस समाचारकी सूचनाका तुम्हारा एक शब्द मेरी खुशीको दूना कर देगा । "

" देखो, दस बज रहे हैं, अब मुझे तुम्हारे पाससे चले जाना चाहिए । "

" हाँ, हाँ, रोज़ा, अब तुम चली जाओ। "

रोज़ा बड़ी उदासीके साथ पीछे हट आई, क्योंकि वान बार्लने उससे चले जानेको कहा।

सच तो यह है कि उसने चले जानेको इस वास्ते कहा, जिससे कि वह जाकर गुले लालाकी देख-भाल करे।

२२-खुशी

वान बार्लकी रात बड़े मज़ेसे कटी, यद्यपि उसका मन बहुत उत्तेजित रहा। प्रत्येक क्षण उसे ऐसा मालूम होता था कि रोज़ा मधुर स्वरसे उसे पुकार रही है। तब वह उठकर खिड़कीपर जाकर देखता, किन्तु उसे वहाँ कोई दिखाई नहीं देता।

रोज़ां भी हर घड़ी प्रतीक्षा करती थी, किन्तु वह उससे अधिक सौभाग्य-शालिनी थी, क्यों कि वह गुले लालाके पास बैठकर प्रतीक्षा करती थी। वह सुन्दर फूल, वह आश्चर्योंका आश्चर्य, जिसको दुनिया तब तक न केवल जानती ही न थी बल्कि असंभव समझती थी, उसकी आँखोंके सामने था।

जब दुनियाको मालूम होगा कि काले गुले लालाका आविष्कार हो गया है, वह मौजूद है और उसका आविष्कारक वान बार्ल नामक कैदी है, तो दुनिया क्या कहेगी?

वान बार्ल अपने गुले लालाके बदलेमें अपनी स्वतन्त्रता कितनी खुशीसे तृणवत् छोड़ देता।

दिन आया और बीत गया। फूल अभीतक नहीं खिला।

रात आई और उसके साथ ही रोज़ा आई। वह चिड़ियाकी तरह प्रसन्न थी और उसका चेहरा खिल रहा था।

वान बार्लने पूछा, कहो क्या हाल है?

" सब कुछ ठीक है। आज रातको हमारा फूल जरूर खिलेगा। "

" क्या वह काला खिलेगा? "

" कोलतारकी तरह काला । "

" बिना किसी दूसरे रंगके धब्बेके ? "

" एक भी धब्बा न होगा । "

" परमात्मा, तू बड़ा दयालु है । मुझे सारी रात स्वप्न दिखाई देते रहे । पहले तो तुम्हारे (यह सुनकर रोज़ाके मुँहसे अविश्वास झलकने लगा) और तब हम लोगोंको जो करना चाहिए उसके ।"

" अच्छा ? "

" अच्छा, तो मैं अब तुमको बतलाऊँगा कि हमें क्या करना चाहिए । फूलके खिलते ही और यह निश्चयसे जानकर कि वह बिल्कुल काला है तुम्हें एक संदेशहर ढूँढ़ लेना चाहिए । "

" बस इतना ही । संदेशहर तो पहलेसे तैयार है । "

" वह विश्वासपात्र तो है ? "

" उसके लिए मैं जिम्मेदार हूँ । वह मेरे प्रेमियोंमेंसे है । "

" मैं समझता हूँ, जाकोब तो नहीं ? "

" नहीं, चुप रहो । वह लोवेनस्तेनका मल्लाह है । २५ बरसका फुर्तीला जवान है । "

" अच्छा ! "

रोज़ा मुसकराकर बोली, निश्चिन्त रहो । उसकी उम्र अभी कम है, क्योंकि तुमने उम्रकी अवधि २६ और २८ के बीचमें नियत कर दी है ।

" ठीक, तो क्या तुम इस आदमीपर विश्वास कर सकती हो ? वह ठीक तरहसे काम बजा लायेगा ? "

" उसी तरह जिस तरहसे अपनेपर । अगर मैं उसे आज्ञा दूँ, तो वह वाल नदीमें कूद पड़े । "

" अच्छा रोज़ा, यह छोकरा दस घंटेमें हारलेम पहुँच सकता है । तुम मुझे काग़ज़ और पेंसिल तो दो, या अच्छा यह होगा कि कलम दावात दो जिससे मैं चिट्ठी लिख दूँ । किन्तु मैं समझता हूँ कि तुम्हारा लिखना ही ठीक होगा । क्योंकि यदि मैं लिखूँ, तो तुम्हारे पिताको, शायद उसमें षड्यंत्रकी बू आ जाय । तुम पुष्प-प्रेमी समाजके सभापतिको लिखो और मैं समझता हूँ कि वह अवश्य आवेगा । "

" किन्तु यदि वह देर लगा दे, तो ?"

" यह असंभव है कि उसके समान गुले लालाका शौकीन एक मिनट या एक सेकंडकी भी देर लगा सके। वह फौरन ही संसारके इस आठवें आश्चर्यको देखनेके लिए चल देगा। किन्तु यदि वह एक या दो दिनकी देर लगा भी दे, तो कुछ हानि नहीं। तब तक फूल और भी अच्छी तरह खिलकर पूरे सौन्दर्यके साथ विराजेगा। फूलको एक बार सभापति देख ले और अपनी रिपोर्ट लिख दे, तो बस सब ठीक है। तुम उस रिपोर्टकी एक नकल अपने पास रख लेना और फूल सभापतिको सौंप देना। ओह, रोज़ा, यदि उसे हम स्वयं ले जा सकते, तो कितना अच्छा होता! वह मेरे हाथसे तुम्हारे हाथमें जाता और तुम्हारेसे मेरेमें। किन्तु यह सब तो स्वप्न है। इसे हमें अपने मनमें भी नहीं लाना चाहिए।"

यह कह कर वह लंबा साँस खींचते हुए बोला, अरिचित लोगोंकी आँखें उसे अंत तक खिलता हुआ देखेंगी! रोज़ा, सबसे अधिक तुम इस बातका ध्यान रक्खो कि सभापतिके देखनेसे पहले और कोई उसे न देख सके। अगर किसीने पहले उसे देख लिया, तो वह चोरी चला जायगा।

" ओह!"

" तुमने स्वयं ही तो मुझसे कहा था कि तुम्हारे प्रेमी जाकोबसे तुम्हें बहुत डर है। लोग तो एक रुपया भी चुरा लेते हैं, तो एक लाख रुपयेका माल क्यों नहीं चुराएँगे ?"

" मैं फूलपर पहरा देती रहूँगी। तुम निश्चिन्त रहो।"

" किन्तु यदि तुम्हारे यहाँ रहते समय खिला ?"

" यह तो संभव है कि यह छोटा शैतान ऐसा खेल खेले।"

" और तुम लौटनेपर उसे खिला हुआ पाओ ?"

" अच्छा तो फिर ?"

" रोज़ा, चाहे वह कभी खिले तुम सभापतिको खबर भेजनेमें एक मिनटकी भी देर न लगाना।"

" और तुमको भी खबर देनेमें। हाँ, मैं समझती हूँ वान बार्ल। मैं तुम्हारे

फूलके पास जाती हूँ और खिलते ही तुरन्त उसकी खबर तुम्हें दूँगी। उसके बाद तुरन्त ही संदेशहर यहाँसे चिट्ठी लेकर चल देगा।"

"रोज़ा, मुझे नहीं सूझता कि मैं तुम्हें स्वर्गकी किस देवीसे उपमा दूँ।"

"अपने काले गुले लालासे उपमा दो और मैं उसे अपना अहो भाग्य समझूँगी। अच्छा जब तक हम फिर मिलें तब तकके लिए प्रणाम।"

"'मेरे मित्र प्रणाम', ऐसा कहो।"

रोज़ाने खुश होकर कहा 'मेरे मित्र प्रणाम।'

"'मेरे प्रियतम मित्र' ऐसा कहो।"

"ओह मेरे मित्र!"

"मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि 'मेरे प्रियतम मित्र' ऐसा कहो रोज़ा।"

रोज़ाने धड़कते हुए दिलसे और मारे आनन्दके उन्मत्त-सी होकर कहा, 'हाँ प्रियतम, मेरे प्रियतम।'

रोज़ा चली गई।

उसके बाद वान वार्ले आनन्दपूर्ण हृदयसे खिड़कीपर खड़ा तारोंकी ओर देखता रहा और बड़े ध्यानसे कान लगाये सुनता रहा कि रोज़ा आती तो नहीं है।

वह सोच रहा था कि रोज़ा नीचे अपने कमरेमें बैठी हुई मेरी ही तरह पल-पल-भर बाद प्रतीक्षा कर रही है। वहाँ रोज़ाकी आँखोंके नीचे अद्भुत फूल है। देखो वह फूल खिल रहा है। शायद इस समय रोज़ा अपनी कोमल उँगलियोंसे गुले लालाके तनेको पकड़े हुए है। रोज़ा, इसे धीरेसे छुओ। शायद इस समय वह उसकी खिलती हुई पँखड़ियोंको अपने होठोंसे चूम रही है। रोज़ा, उसे ज़रा होशियारीसे छुओ, तुम्हारे होठ जल रहे हैं। हाँ शायद, इस समय मेरे प्रगाढतम प्रेमके दो विषय परमात्माके सामने एक दूसरेको चूम रहे हैं।

इसी समय आकाशमें दक्षिणकी ओर एक तारा टूटा। वह आकाशके एक सिरेसे दूसरे तक प्रकाशकी एक रेखा खींचकर मानों लोवेनस्तेनमें ही जा गिरा।

वान बार्लेके शरीरमें बिजली सी निकल गई। वह बोला—ओह, परमात्मा मेरे फूलमें प्रवेश करनेके लिए आत्मा भेज रहा है।"

जैसा कि वान बार्लेने अनुमान किया था ठीक उसी समय उसे ज़ीनेमें किसीके पैरोंकी हलकी आहट और कपड़ोंकी सरसराहट सुनाई दी। इसके

बाद एक परिचित स्वरने उससे कहा—वान बार्ले, मेरे मित्र, मेरे प्रियतम मित्र, मेरे भाग्यशाली मित्र, आओ, जल्दी आओ।

वान बार्ले एक छलांगमें किवाड़के पास आ पहुँचा। उसके ओठ रोज़ाके ओठोंसे मिल गये। रोज़ाने उसको चूमते हुए कहा—वह खिल गया। वह बिलकुल काला खिला है। देखो, वह यहाँ है।

" कैसे, यहाँ है! "

" हाँ, हाँ, बड़ा आनन्द प्राप्त करनेके लिए हमें कुछ ख़तरेका सामना करना ही पड़ता है। यह यहाँ है, इसे लो। "

यह कहकर उसने एक हाथसे चोर-लालटेन ऊपर खिड़की तक उठा दी और दूसरे हाथसे वह उस अद्भुत फूलको उतनी ही ऊँचाईपर थामे रही।

आनन्दके मारे वान बार्लेके मुँहसे एक चीख-सी निकल गई और वह मूर्छित-सा होने लगा।

वह बोला, ओ दयालु परमात्मन्, ओ परम पिता, तूने मेरी निरपराधता और मेरे कारावासका यह पारितोषिक दिया है। तूने मेरे कारागृहकी खिड़की-पर ये दो सुन्दर फूल लाकर उपस्थित कर दिये हैं।

गुले लाला सुन्दर, शानदार और भव्य था। उसका तना हाथ-भरसे ज़्यादह ऊँचा था। उसमें चार हरी पत्तियाँ थीं, जो कि ऐसी चिकनी और सीधी थीं जैसे कि भालेके सिरे। साराका सारा फूल ऐसा काला और चमकीला था जैसे आबनूस।

वान बार्लेने प्रायः हाँफते हुए कहा, रोज़ा अब चिट्ठी लिखनेमें पल-भरकी भी देर मत लगाओ।

" मेरे प्रियतम वान बार्ले, चिट्ठी तो लिखी तैयार है। "

" सचमुच ? "

" जब कि फूल खिल रहा था, मैंने उसे स्वयं लिख रक्खा था, क्योंकि मैं पल-भर भी खोना नहीं चाहती थी। चिट्ठी यह है, इसे पढ़कर देखो और बतलाओ कि ठीक है या नहीं।

वान बार्लेने चिट्ठी ले ली और पढ़ी। वान बार्लेको जब रोज़ाका अन्तिम पुर्ज़ा मिला था, तबसे अब उसका लेख और भी बहुत सुधर गया था। चिट्ठी इस प्रकार थी—

" मान्य सभापति,

काला गुले लाला लगभग १० मिनटमें खिलनेवाला है। वह ज्यों ही खिलेगा, मैं आपके पास एक दूत भेजूँगी कि आप स्वयं यहाँ लोवेनस्तेनके किलेमें आकर उसे ले जायँ। मै जेलर ग्रीफ़सकी बेटी हूँ और पिताके अन्य क़ैदियोंकी तरह मैं भी क़ैदी-सी ही हूँ। इस लिए मैं यह अद्भुत फूल आपके पास स्वयं लानेमें असमर्थ हूँ। यही कारण है कि मैं आपसे स्वयं यहाँ आकर उसे ले जानेकी प्रार्थना करती हूँ।

" मेरी इच्छा यह है कि यह फूल 'रोज़ा बार्लिया' कहलाये।

" फूल खिल गया है। वह बिलकुल काला है।

" आइए, मान्य सभापति, फ़ौरन आइए।

विनीत—

रोजा ग्रीफ़स "

" वाह, रोजा वाह! तुमने तो चिट्ठी बहुत बढ़िया लिखी है। मैं स्वयं भी इतनी सरलतासे इतनी सुन्दर चिट्ठी न लिख सकता। जिन जिन बातोंके जाननेकी सभाको जरूरत थी, तुमने वे सब लिख दी हैं। उन्हें मालूम हो जायगा कि फूलके लगानेमें कितने कितने कष्ट सहे गये हैं। कितनी चिन्ताके साथ कितनी रातोंकी नींद हराम की गई है। किन्तु इस समय एक पल भी मत खोओ। फ़ौरन आदमीको चिट्ठी देकर रवाना कर दो। "

" सभापतिका नाम क्या है? "

मुझे चिट्ठी दो, मैं पता लिख दूँगा। वह प्रसिद्ध आदमी है। उसका नाम है—वान सीस्तेन। वह हारलेमका मेयर है। चिट्ठी मेरे पास लाओ रोज़ा। "

और काँपते हुए हाथसे वान बार्लेने यह पता लिखा—" महाशय वान सीस्तेन, हारलेमके मेयर और पुष्प-प्रेमी समाजके सभापति। "

" और अब जाओ रोजा, जाओ। परमेश्वरने अब तक हमारी रक्षा की है और आगे भी हमें उसीपर भरोसा रखना चाहिए। "

२३-प्रतिस्पर्धी

इन बेचारे प्रेमियोंको इस समय रक्षाकी बड़ी ज़रूरत थी। उनको अब आशाके पूरा होनेका पूर्ण विश्वास था, किन्तु वह आशा इस समय बड़े भारी संकटमें थी।

पाठकोंने अनुमान कर ही लिया होगा कि हमारे पुराने मित्र या शत्रु ईज़ाक बोक्सतेलने ही जाकोबका रूप धारण कर लिया था और वह अपने प्रेम और अपनी घृणाके विषय काले गुलेलाला और वान बार्लेका पीछा करता हुआ बुटेनहोफ़से लोवेनस्तेन आ गया था।

ईर्ष्याने उसको वह बात निकाल लेनेमें समर्थ बना दिया था जिसको कि होशियारसे होशियार और स्पर्धाशाली गुले लाला-प्रेमी भी नहीं निकाल सकता था, अर्थात् उसने गाँठोंके अस्तित्व और क़ैदीकी चेष्टाओंको मालूम नहीं किया तो कमसे कम उनका अनुमान तो ज़रूर ही कर लिया था।

हमने यह भी देख लिया कि ईज़ाकके नामकी अपेक्षा जाकोबके नामसे उसे अधिक सफलता मिली। जाकोबके रूपमें उसने ग्रीफ़ससे मित्रता की, कई महीने तक बढ़ियासे बढ़िया शराबसे उस मित्रताके पौधेको सींचा और रोज़ासे विवाह करनेका अपना विचार प्रकट करके जेलरके मनमें संदेह नहीं पैदा होने दिया।

इस प्रकार पिता ग्रीफ़सको प्रलोभन देनेके अलावा उसने जेलर ग्रीफ़सके सामने विद्वान् कैदी वान बार्लेका कालेसे काला चित्र खींचकर तथा रात दिन उसे यह सुझाते रहकर कि वान बार्ले तो महाराजके विरुद्ध शैतानके साथ षड्यंत्र करता रहता है उसका वान बार्लेके विरुद्ध क्रोध और उत्साह भड़काया।

पहले उसे रोज़ाके साथमें भी कुछ सफलता मिली। वह उसके प्रेमको तो अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर सका, किन्तु उससे प्रेम और विवाहकी बातचीत करके उसने उसके मनमें किसी प्रकारका सन्देह पैदा नहीं होने दिया।

हमने यह भी देख लिया कि बागमें रोज़ाका पीछा करनेकी उसकी असावधा-

नताके कारण उसका असली रूप रोज़ाने पहचान लिया और वान बार्लेके स्वभाव-जात भयके कारण दोनों प्रेमी उससे सावधान हो गये।

पाठकोंको याद होगा कि जब ग्रीफसने पहली गाँठको कुचल दिया, तो जाकोबने उसपर जो क्रोध किया उसको देखकर कैदीके मनमें पहले पहल संदेह पैदा हुआ। उस समयसे बोक्सतेलकी उत्तेजना बहुत बढ़ गई। क्योंकि उसे यद्यपि यह संदेह था कि वान बार्लेके पास दूसरी गाँठ है, फिर भी उसे इस बातका निश्चय किसी तरह नहीं हो सका।

तबसे वह रोज़ाके पीछे पीछे रहने लगा, न केवल बाग़में किन्तु ज़ीनेमें भी वह उसके पीछे जाया करता।

केवल इतनी बात थी कि अब वह रातमें उसका पीछा किया करता था और नंगे पाँव पंजोंके बल जाया करता था, इस लिए रोज़ाने उसे न तो कभी देखा और न कभी उसकी आहट सुनी, सिवाय एक बारके जब कि उसे ज़ीनेमें कुछ छाया-सी दिखाई दी थी।

किन्तु रोज़ाको यह बात बहुत देरसे मालूम हुई। क्योंकि बोक्सतेल तो स्वयं कैदीके मुखसे पहले ही सुन चुका था कि दूसरी गाँठ विद्यमान है।

एक बार वह रोज़ाकी चालसे पकड़ा गया, जब कि रोज़ाने जमीनमें झूठ-मूठ बीज बोकर उसका असली उद्देश मालूम कर लिया। परन्तु तबसे उसने अपनी होशियारी दुगनी कर दी। उसकी आविष्कारिणी बुद्धि जिन जिन उपायोंको सुझाती थी वह उन सबको काममें लाता था, जिससे कि उसको तो कोई न देख सके किन्तु वह दूसरोंकी सब बातें देखता रहे।

उसने देखा कि रोज़ा अपने पिताकी रसोईसे गमलेकी आकृतिका एक सफ़ेद मर्तबान अपने सोनेकी कोठरीमें ले गई। उसके बाद उसने रोज़ाको चिकनी मिट्टीसे सने हुए अपने सुन्दर छोटे हाथोंको बालटीभर पानीसे धोते हुए देखा। यह मिट्टी रोज़ाने अपने गुले लालाको अच्छीसे अच्छी मिट्टीमें बोनेके लिए अपने हाथसे साफ़ करके तैयार की थी।

अन्तमें उसने ठीक रोज़ाकी खिड़कीके सामने एक मकान किरायेपर लिया। यह मकान खिड़कीसे इतनी दूर था कि वहाँ बैठे हुए उसको यहाँसे नंगी आँखसे कोई नहीं पहचान सकता था; किन्तु वह वहाँसे अपनी दूरबीनकी

सहायतासे लेवेनस्तैनके रोज़ाके कमरेको वैसे ही अच्छी तरह देख सकता था जैसे कि वह डोर्टमें वान बार्लेकी प्रयोगशाला देखा करता था।

उसे अपने नये मकानमें रहते तीन ही दिन हुए थे कि उसके सब संदेहोंका निराकरण हो गया। गमला प्रातःकालसे सायंकाल तक खिड़कीमें रक्खा रहता था और चारों ओरसे लताओंसे वेष्टित अपनी खिड़कीमें खड़ी हुई रोज़ा ऐसी मालूम होती थी जैसे कोई देवी हो।

रोज़ा इतनी मेहनतसे गमलेकी देख-भाल करती थी कि उसे देखकर बोक्सतेलने अनुमान कर लिया कि उसमेंकी चीज़ कितनी कीमती है और वह कीमती वस्तु दूसरी गाँठके सिवाय और कुछ नहीं हो सकती जो कैदीकी सारी आशाओंका आधार है। जिस दिन रातको बहुत ठंड होती है रोज़ा गमलेको उठाकर अंदर रख लेती है, जिससे कोहरा पौधेको न सताए। तो अब यह स्पष्ट ही है कि रोज़ा वान बार्लेकी हिदायतोंका पालन कर रही है। दोपहरको भी ११ बजेसे २ बजे तक, जब कि धूप बहुत तेज़ हो जाती है रोज़ा गमलेको अंदर रख देती है।

किन्तु जब मिट्टीमेंसे अंकुर निकल आया और पहली पत्तियाँ दिखाई देने लगीं, तब तो बोक्सतेलकी दूरबीनने उसका रहा-सहा संदेह भी दूर कर दिया। वान बार्लेके पास दो गाँठें थीं और उनमेंसे दूसरीको उसने रोज़ाके प्रेमपर छोड़ दिया था। पाठक समझ ही गये हैं कि इस प्रकार दो प्रेमियोंका रहस्य बोक्सतेलकी छिपकर देखनेवाली आँखोंसे नहीं छिप सका।

अब प्रश्न केवल इतना था कि रोज़ाके हाथोंसे दूसरी गाँठोंको कैसे निकाला जाय। यह कोई आसान काम न था। रोज़ा अपने गुले लालाकी उसी तरह बैठी रक्षा करती थी जैसे माता अपने बच्चेकी और कबूतरी अपने अंडोंकी। वह दिनमें कभी अपने कमरेसे बाहर न जाती थी और बड़े आश्चर्यकी बात यह थी कि अब वह सायंकालको भी अपना कमरा न छोड़ती थी।

सात दिन तक बोक्सतेल इसी तरह रोज़ाको देखता रहा; किन्तु उसे कोई उपाय नहीं सूझा। क्योंकि रोज़ा सदा अपने पहरेपर मौजूद रहती थी। यह उन सात दिनोंकी बात है जिनमें वान बार्ले बहुत ही उदास रहा था और उसे रोज़ा और गुले लालाका कोई समाचार नहीं मिला था।

बोक्सतेल सोचने लगा कि क्या रोज़ा और बान बार्लकी यह प्रेमकी शान्तता हमेशा ऐसी ही बनी रहेगी ? इसके कारण चोरी करना अब उतना सुगम नहीं रहा था जितना कि बोक्सतेलने पहले समझा था।

बोक्सतेलने अब चोरी करनेका निश्चय कर लिया। उसने सोचा कि यहाँ फूल बिल्कुल गुप्त रूपसे उग रहा है, उसके विषयमें कोई कुछ नहीं जानता। मैं तो एक अनुभवी पुष्प-विद्या-विशारद हूँ, मेरी बातके सामने पुष्प-विद्याके ज्ञानसे सर्वथा शून्य उस छोकरीकी बातका या भयंकर राजद्रोहके लिए दण्डित उस कैदीकी बातका कौन विश्वास करेगा ? एक बार मेरे हाथमें पौधा आ जाय, तो बस बेड़ा पार है। फिर एक लाखका इनाम मुझे मिलनेमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं रहेगा, और फूल 'काला बार्लिया गुले लाला' न कहलाकर काला 'बोक्सतेलिया गुले लाला' कहलायेगा। भविष्यकी संतान इसी नामसे उसे जानेगी।

बस, अब पौधेको चुरानेका प्रश्न था, किन्तु उसके लिए यह आवश्यक था कि रोज़ा अपने कमरेको छोड़कर जाय। इस लिए जब उसने देखा कि प्रेमियोंने अपनी सायंकाली मुलाकातें फिर शुरू कर दी हैं, तो वह बहुत प्रसन्न हुआ।

रोज़ाके चले जानेपर सबसे पहले उसने उसकी कोठरीके दरवाज़ेको अच्छी तरह देखा-भाला। उसने देखा कि उसका ताला बड़ा मज़बूत और दुहरा है और रोज़ा उसकी चाबी हमेशा अपने साथ ले जाती है।

पहले तो बोक्सतेलने चाबी चुरानेका विचार किया, किन्तु उसने फिर सोचा कि चाबी चुराना अर्थात् उसे रोज़ाकी जेबसे निकालना न केवल अत्यन्त कठिन है किन्तु उसमें यह हर्ज भी है कि ज्यों ही रोज़ाको चाबी खो जानेकी बात मालूम होगी, वह अपने कमरेसे तब तक नहीं हिलेगी जब तक कि वह ताला बदल न दिया जाय। इस लिए उसने एक दूसरा उपाय सोचा। जितनी चाबियाँ मिल सकीं उसने इकट्ठी कर लीं और जिस समय रोज़ा बान बार्लसे बातचीत करने चली जाया करती, उन आनन्दपूर्ण घंटोंमें उन चाबियोंको उस तालेमें लगाकर वह देखता। उनमेंसे दो तालियाँ तालेमें आ गईं, किन्तु उनमेंसे एक ही फिरी और वह भी केवल एक बार, दूसरी बार नहीं घूमी। इस लिए अब इस चाबीमें थोड़ा-सा ही काम करना बाकी रह गया।

उसने इस चाबीपर एक पतली मोमकी तह चढ़ाई और वह जब फिर

तालेमें डालकर घुमाई गई, तो जिस जगह घूमनेमें वह रुकी, उस जगह मोमपर निशान हो गया। एक छोटी रेतीसे रगड़कर उसने यह कमी भी धीरे धीरे पूरी कर दी। इस काममें उसे दो दिन लग गये। अब उसके पास रोज़ाके कमरेकी बिलकुल ठीक चाबी हो गई। इसकी मदतसे उसने विना आवाज़ और कठिनताके धीरेसे रोज़ाकी कोठरी खोलकर वहाँ अपने आपको गुले लालाके पौधेके पास खड़ा पाया।

बोक्सतेलने पहला चोरीका काम तब किया था जब वह दीवार फाँदकर गुले लाला खोदनेके लिए वान बार्लेके बगीचेमें गया था, दूसरा तब जब कि वह सीढ़ी लगाकर खिड़कीके जरिये वान बार्लेकी प्रयोगशालामें घुसा था, और अब यह झूठी चाबीसे रोजाके कमरेमें घुसना तीसरा था। इस प्रकार ईर्ष्या और लोभसे प्रेरित होकर वह पापके मार्गमें बड़ी तेज़ीसे आगे बढ़ता गया।

हम कह चुके हैं कि बोक्सतेल गुले लालाके पास अकेला खड़ा था। कोई मामूली चोर होता, तो गमलेको उठाकर भाग जाता; किन्तु बोक्सतेल मामूली नहीं था। उसने सोचा कि फूलके काला खिलनेकी यद्यपि प्रबल संभावना है, किन्तु यह निश्चित नहीं है। इस लिए यदि वह इसे अभी चुरा ले तो न केवल एक निरुपयोगी पापके किये जानेका भय है, परन्तु यह भय भी है कि चुरानेके समयसे लेकर फूलके खिलने तक चोरी पकड़ी जायगी।

उसके पास चाबी तो थी ही, वह जब चाहे तब कमरेमें घुस सकता था। इस लिए उसने प्रतीक्षा करना अच्छा समझा और फूलके खिलनेसे एक घंटा पहले या पीछे उसे चुराकर फौरन हारलेमको चल देनेका निश्चय कर लिया, जिससे कि किसीके उस फूलपर दावा करनेसे पहले ही वह सभाके निर्णायकोंके पास पहुँच जाय और यदि कोई उस समय उसे अपना बतलावे, तो वह उलटा उसीपर चोरीका आरोप लगा सके।

उसने अपने उर्वर मस्तिष्कसे अच्छी तरह सोचकर यह योजना तैयार की।

इस प्रकार प्रतिदिन सायंकालको जब दोनों प्रेमी प्रेमालाप कर रहे होते थे बोक्सतेल रोज़ाके कमरेमें घुसकर देखा करता था कि गुले लालाकी क्या हालत है और वह कितनी देरमें खिलेगा।

आज सायंकालको भी वह रोजकी तरह कोठरीमें घुसने वाला था, किन्तु आज दोनों प्रेमियोंने दो चार शब्द ही एक दूसरेसे कहे और वान बार्लेने गुले

लालाकी रखवाली करनेके लिए रोज़ाको वापस भेज दिया। रोज़ाको अपने कमरेसे जानेके दस मिनट बाद ही लौट आते देखकर बोक्सतेलने अनुमान कर लिया कि गुले लाला या तो खिल गया है या खिलनेवाला है।

अतः आजकी रातको महा प्रहार होनेवाला था। बोक्सतेल आज रोज़से दुगनी शराब लेकर ग्रीफ़सके पास गया। उसकी दोनों जेबोंमें एक एक बोतल थी। ग्रीफ़सके मतवाला होते ही बोक्सतेल सारे मकानका मालिक-सा हो गया।

११ बजे ग्रीफ़स बिल्कुल मस्त था। सुबहके दो बजे बोक्सतेलने रोज़ाको अपने कमरेसे निकलते देखा। वह अपने हाथोंमें किसी चीज़को बड़े यत्नसे सँभाले हुए थी। उसे निश्चय हो गया कि यह खिला हुआ काला गुले लाला ही है।

किन्तु इसका वह अभी क्या करेगी? क्या इसे लेकर अभी हारलेमको चल देगी? जवान लड़कीका रातको इस तरहसे अकेले यात्रा करना तो संभव नहीं है।

तो क्या वह केवल वान बार्लेको दिखलानेके लिए गुले लाला ले जा रही है? इसी बातकी अधिक संभावना है।

वह जूते निकालकर नंगे पैरों पंजोंके बल रोज़ाके पीछे पीछे गया।

उसने रोज़ाको जंगलेदार खिड़कीके पास जाते और वान बार्लेको पुकारते सुना। चोर-लालटैनके प्रकाशमें उसने खिला हुआ गुले लाला देखा। वह ऐसा काला था जैसी कि अँधेरी रात, जिसमें कि बोक्सतेल छिपा हुआ था।

वान बार्ले और रोज़ाने हारलेमको आदमी भेजनेकी जो योजना तैयार की थी वह उसने सुनी। उसने दोनों प्रेमियोंके होठोंको मिलते देखा और वान बार्लेकी रोज़ाको लौटा देनेकी आवाज़ भी सुनी।

उसने रोज़ाको लालटैन बुझाते और अपनी कोठरीमें लौटते देखा। दस मिनट बाद उसने रोज़ाको फिर अपनी कोठरीसे निकलते और दुहरा ताला लगाते देखा।

बोक्सतेल यह सब देखनेके लिए अब तक ऊपर ज़ीनेके एक कोनेमें छिप रहा था। वह अब धीरे धीरे नीचे उतरा और रोज़ा ज्यों ज्यों नीचे चलती गई वह भी उसकी कोठरीके पास पहुँचता गया। इसके बाद ज्यों ही रोज़ाने अपने हलके पैरसे सबसे नीचेकी सीढ़ी छुई, बोक्सतेलने उससे भी हलके हाथसे उसकी कोठरीका ताला छुआ।

और उसके इस हाथमें, पाठक जानते ही हैं, वह नकली चाबी थी जिससे कि वह रोज़ाके तालेको उतनी ही आसानीसे खोल सकता था जैसे कि असली चाबीसे।

और यही कारण है कि हमने इस परिच्छेदके आरंभमें कहा था कि इन बेचारे प्रेमियोंको ईश्वरकी रक्षाकी बड़ी आवश्यकता थी।

२४-चोर मालिक बना

रोज़ाके चले जानेके बाद वान बार्ले वहींका वहीं खड़ा रह गया। वह अपने दुहरे आनन्दके बोझसे दबा जा रहा था।

इसी प्रकार आधा घंटा बीत गया। ऊषाका प्रकाश जेलकी कोठरीकी लोहेकी छड़ोंमेंसे आने लग गया था। उसी समय ज़ीनेसे किसीके आने और रोनेका शब्द सुनाई दिया। उसे सुनकर वान बार्ले चौंक गया। शब्द तेज़ीसे निकट आ रहा था।

जरा-सी देर बाद रोज़ाका पीला और घबराया हुआ मुख उसने अपने सामने देखा।

वह काँप गया और डरसे पीला पड़ गया।

रोज़ाने काँपते हुए पुकारा, वान बार्ले, वान बार्ले!

कैदीने पूछा, बात क्या है?

"वान बार्ले, गुले लाला—"

"अच्छा तो?"

"मैं तुमसे कैसे कहूँ?"

"कहो, रोज़ा, कहो।"

"किसीने उसे ले लिया, चुरा लिया।"

"चुरा लिया! ले लिया?"

रोज़ाने गिरनेसे बचनेके लिए दरवाज़ेका सहारा लेकर खड़े होते हुए कहा—ले लिया, चुरा लिया।

यह कहते हुए उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उसके हाथ-पैर काम नहीं करते हैं और वह घुटनोंके बल बैठ गई।

"किन्तु कैसे? मुझे सब साफ़ बतलाओ।"

"उसमें मेरा कुछ अपराध नहीं है मेरे मित्र।"

बेचारी रोज़ाको अब 'मेरे प्रियतम' कहनेका साहस नहीं हुआ।

वान बार्लेने उदासीके साथ कहा, तो तुमने उसे अकेला छोड़ दिया?

"सिर्फ़ एक मिनटके लिए। मैं अपने संदेशहरको चिट्ठी देने गई थी। उसका घर मुश्किलसे ५० गज़की दूरीपर होगा।"

"और उस समय तुम मेरे इतना समझा देनेपर भी चाबी छोड़कर चली गई? तुम बड़ी अभागी हो!"

"नहीं, नहीं, नहीं। यही तो मेरी समझमें नहीं आता। चाबी बराबर मेरे हाथमें रही, उसे मैंने हाथसे अलग नहीं होने दिया और खूब दबाये रही, मानों मुझे डर था कि उसके पंख लग जायँगे और वह उड़ जायगी।"

"तो वह गया कैसे?"

"यही तो मैं मालूम नहीं कर सकती। मैंने चिट्ठी उस लड़केको दी और वह मेरी आँखोंके सामने चल दिया। मैं अपने कमरेमें लौट आई। उसका ताला वैसेका वैसा बंद था। कमरेमें हरएक चीज़ वैसेकी वैसी थी जैसे कि मैंने छोड़ी थी, सिवाय उस पौधेके। किसीके पास मेरे कमरेकी दूसरी चाबी होगी या किसीने इसी कामके लिए नक़ली चाबी बना ली होगी।"

आँसुओंसे उसका गला रुँध गया और वह आगे बोल नहीं सकी।

वान बार्ले निश्चल खड़ा था, उसे बड़ा अचरज हुआ और वह प्रायः बिना समझे सुनता रहा। उसके मुँहसे केवल इतना निकला—चोरी गया, चोरी गया! हाय, मैं तो मारा गया!

"वान बार्ले, मुझे क्षमा करो, क्षमा करो, मैं तो इससे मर जाऊँगी।"

रोज़ाके दुखको देखकर वान बार्लेने लोहेकी छड़ोंको पकड़कर खूब ज़ोरसे हिलाते हुए कहा—

"रोज़ा, रोज़ा, हम लुट गये, यह तो सच है। किन्तु क्या हम इससे चुप बैठ रहें? नहीं, नहीं, हमारी आपत्ति बड़ी है। किन्तु शायद उसका प्रतीकार हो सकता है। रोज़ा, चोरको तो हम जानते ही हैं?"

" मैं इस विषयमें क्या कह सकती हूँ ? "

" किन्तु मैं कहता हूँ कि वह सिवाय उस बदमाश जाकोबके और कोई नहीं है। गुले लाला हमारे परिश्रमका फल है, इसके लिए हम रात-रातभर जागते रहे हैं। यह हमारे प्रेमकी संतान है। क्या हम जाकोबको उसे यों ही हारलेम ले जाने देंगे ? रोज़ा, हम उसका पीछा करेंगे, उसे पकड़ लेंगे। "

" किन्तु मेरे पिताको यह मालूम हुए बिना कि हम एक दूसरेसे मिलते जुलते थे यह कैसे हो सकता है ? मैं तो एक गरीब लड़की हूँ। मुझे संसारका कुछ भी ज्ञान नहीं है। मैं अकेली यह काम कैसे कर सकती हूँ, जिसको तुम स्वयं भी शायद नहीं कर सकते। "

" रोज़ा, रोज़ा, मेरे वास्ते यह दरवाजा खोल दो और तुम देखोगी कि मैं चोरको पकड़ लाता हूँ या नहीं और मैं उससे अपराध स्वीकार कराके माफ़ी मँगवाता हूँ या नहीं। "

रोज़ाने हिचकियाँ लेते हुए कहा, मैं दरवाज़ा कैसे खोल सकती हूँ ? क्या मेरे पास जेलकी चाबियोंका गुच्छा है ? अगर वह मेरे पास होता, तो क्या अब तक तुम स्वतंत्र न हो जाते ?

" हाँ, गुच्छा तो तुम्हारे क्रूर पिताके पास है, जिसने कि मेरी पहली गाँठको कुचल दिया था। ओह कमबख़्त, कमबख़्त, इस पाप-कर्ममें वह भी जाकोबका साथी है। "

" परमात्माके नामपर इतने ज़ोरसे मत चिल्लाओ। "

वान बार्ले क्रोधोन्मत्त होकर चिल्लाने लगा—रोज़ा, यदि तुम मेरे लिए दरवाजा न खोलोगी तो मैं इन छड़ोंको तोड़ डालूँगा और जेलमें जिसे भी पाऊँगा मार डालूँगा।

" मेरे मित्र, दया करो, दया करो। "

" रोज़ा, मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं इस जेलकी ईंट ईंट उखाड़ डालूँगा। "

उस अभागेकी शक्ति क्रोधसे दस गुनी बढ़ गई। उसने दरवाज़ेको पकड़कर बड़े ज़ोरसे हिलाया। उसे इस बातका भी ध्यान नहीं रहा कि उसकी गर्ज चक्करदार ज़ीनेमें गूँजकर और भी ज़ोरसे सुनाई दे रही है।

रोज़ाने डरकर उसके इस उन्मादको रोकनेकी चेष्टा की, किन्तु कुछ फल न हुआ।

वान बार्ले गर्जने लगा—मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं उसी तरहसे उसका खून कर दूँगा जैसे उसने मेरे गुले लालाका कर दिया था।

अभागा बंदी पागल-सा हो गया।

रोज़ाने काँपते हुए कहा, अच्छा तो, तुम शान्त रहो। मैं पिताकी चाबियाँ उठा लाऊँगी और, मेरे प्रियतम वान बार्ले, मैं तुम्हारे इस कारागारका दरवाज़ा खोल दूँगी। जरा शान्त रहो।

वह अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि एक गुर्रानेकी-सी आवाज़ने उसे बीचमें ही रोक दिया।

रोज़ा बोल उठी—मेरे पिता हैं!

वान बार्ले गर्जकर बोला—ग्रीफ़स, अच्छा पाजी! तुम हो!

बुड्ढा ग्रीफ़स ज़ीनेपर चढ़ आया था और इस भारी कोलाहलके कारण किसीने उसके आनेका शब्द नहीं सुना था।

उसने अपनी बेटीका हाथ ज़ोरसे पकड़कर क्रोधोन्मादपूर्ण स्वरसे कहा—अच्छा तो तुम मेरी चाबियाँ लोगी? और यह बदमाश पाजी, यह शैतान, यह फाँसीका पक्षी, षड्यंत्रकारी तुम्हारा प्रियतम है? है न? ओह, तो देवीजी राजकीय कैदियोंसे संबंध रखती हैं! अच्छा, मैं तुम्हें सिखलाऊँगा।

रोज़ाने निराशासे मुट्ठियाँ बंद कर लीं। ग्रीफ़स अब क्रोधोन्मादके स्थानमें वैसे ही उपहासके साथ बोला जैसे कि कोई अपने शत्रुको पछाड़कर उसे बिल्कुल अपने वशमें समझकर बोलता है—

"ओह तुम निर्दोष गुले-लाला-प्रेमी, तुम भोलेभाले विद्वान्, मुझे मारकर मेरा रुधिर पीओगे? बहुत अच्छा! बहुत अच्छा! और मेरी बेटी इस षड्-यंत्रमें तुम्हारी साथिन है! तो क्या मैं चोरोंकी गुफामें—लुटेरोंके गढ़में हूँ? हाँ, किन्तु कल तक सब खबर गवर्नर तक पहुँच जायगी और परसोंतक नवाबके पास। हम क़ानून जानते हैं विद्वान् महाशय, हम लोग यहाँपर बुटेनहोफ़ मैदानका दूसरा संस्करण—और एक अच्छा संस्करण—करेंगे। हाँ, हाँ, पिंजड़ेमें बंद भालूकी तरह तुम अपने पंजोंको चबाते रहो। और मेरी सुन्दर छोटी देवी, तुम अपने प्रियतम वान बार्लेको अपनी आँखोंसे निहारती रहो। मैं तुम दोनोंसे कहे देता हूँ कि अबसे तुमको परस्पर षड्यंत्र करते रहनेका आनन्द नहीं मिलेगा।

यहाँसे चली जाओ। तुम मेरी बेटी नहीं हो। और विद्वानजी महाराज, हम शीघ्र ही एक दूसरेसे मिलेंगे, जरा शान्त रहो।

रोज़ा भय और निराशाके कारण बिल्कुल घबराई हुई थी; किन्तु अकस्मात् उसे एक बातका ध्यान आया और एक प्रकाशकी झलक दिखाई दी। वह, 'वान बार्ले, अभीतक कुछ नहीं गया है। प्यारे वान बार्ले, तुम मेरे ऊपर निर्भर रहो।' यह कहती हुई ज़ीनेकी ओर दौड़ गई।

पिता भी गुर्राता हुआ उसके पीछे पीछे चला गया।

इधर वान बार्लेने लोहेकी छड़ोंको, जिन्हें उँगलियोंसे पकड़े हुए था, धीरे धीरे छोड़ दिया। उसका सिर भारी था, आँखें निकली-सी पड़ती थीं। वह यों कहता हुआ धरतीपर गिर पड़ा—

"चोरी चला गया, मेरे पाससे चोरी चला गया!"

उधर बोक्सतेल रोज़ाके ही खोले हुए दरवाज़ेसे क़िलेसे बाहर निकलकर चला गया। उसने गुले लालाको एक कपड़ेमें लपेट लिया। उसके लिए गाड़ी पहलेसे तैयार खड़ी थी, वह उसमें बैठकर चल दिया। अपने अकस्मात् चल देनेकी सूचना भी उसने ग्रीफ़सको नहीं दी।

वह धीरे धीरे जा रहा था, क्यों कि सरपट दौड़नेसे लगनेवाले झटकोंको गुले लाला सहन नहीं कर सकता था। किन्तु देरसे पहुँचनेके भयसे उसने रास्तेमें एक सन्दूक लेकर उसके अंदर चारों ओर नरम नरम घास बिछाकर उसमें गुले लालाको रख दिया। इस नरम फ़र्शपर अब चारों ओरसे गुले लालाको धक्के खाकर चोट नहीं लग सकती थी और ऊपरसे हवा भी पर्याप्त मिलती थी, इसलिए उसने गाड़ी तेज़ कर दी।

अगले दिन सुबह वह हारलेम पहुँच गया। वह थका हुआ था, किन्तु विजय-हर्षके सामने उसे थकान कुछ भी मालूम नहीं देती थी। चोरीका प्रत्येक चिह्न छिपा देनेके लिए उसने गमलेको तोड़कर नहरमें फेंक दिया था और उस सन्दूकमें ही पौधेको जमा दिया था। हारलेम पहुँचकर वह एक बढ़ियासे बढ़िया होटलमें ठहर गया और पहुँचते ही उसने पुष्प-प्रेमी समाजके सभापतिको एक चिट्ठी लिखी कि मैं एक बिल्कुल काले गुले लालाको लेकर अभी आया हूँ और वह होटलमें सभापतिके जवाबकी प्रतीक्षा करने लगा।

* * * *

२९-सभापति वान सीस्तेन

रोज़ाने वान बार्लेके पाससे आकर अपना मार्ग निश्चित कर लिया कि चुराया हुआ गुले लाला या तो वान बार्लेको फिर लौटाकर दूँगी, नहीं तो फिर उसे मुँह नहीं दिखाऊँगी।

उसने कैदीकी निराशाको देखा था। वह जानती थी कि उसके दो कारण हैं और उनको दूर नहीं किया जा सकता।

एक ओर तो वियोग अनिवार्य हो गया, क्योंकि ग्रीफ़सने उन दोनोंके प्रेम और गुप्त मिलन दोनों रहस्योंको एक साथ ही जान लिया। दूसरी ओर वान बार्ले सात सालसे अपने मनमें जो महत्त्वाकांक्षा रखता आ रहा था, वह कुचल दी गई।

रोज़ा उस प्रकारके आदमियोंमेंसे थी जो छोटी छोटी कठिनाइयोंको देखकर तो घबरा जाते हैं, किन्तु जब कोई बड़ी आपत्ति सामने आकर डराने लगती है, तो वह आपत्ति ही उनको अपनेसे लड़नेकी शक्ति दे देती है या वे उसका प्रतीकार करनेका साधन ढूँढ़ लेते हैं। वह अपने कमरेमें गई और वहाँ जाकर उसने कमरेको अच्छी तरह देखा-भाला कि कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि मैं ही फूलको किसी कोनेमें रखकर भूल गई होऊँ। किन्तु अच्छी तरह ढूँढ़नेपर भी फूल कहीं नहीं मिला। वह वस्तुतः चोरी चला गया था।

रोज़ाने यात्राके लिए बिलकुल जरूरी चीजोंकी एक छोटीसी पुटलिया बाँधी, अपने तीन सौ रुपये—अर्थात् अपनी सब संपत्ति ली, तीसरी गाँठको सावधानीसे अपनी छातीमें छिपाया, फिर अपनी कोठरीमें दुहरा ताला लगा दिया, जिससे कि उसके भागनेकी बात जितनी देर तक हो सके छिपी रहे और जेलसे बाहर निकलकर वह एक गाड़ी किराये करनेके लिए गई।

किरायेकी गाड़ीवालेके पास एक ही दोपहियेकी गाड़ी थी जिसे बोक्सतेलने सायंकालको ही किराये कर लिया था और इस समय वह उसपर बैठकर हारलेमको दौड़ा जा रहा था।

जब रोज़ाको गाड़ी नहीं मिली, तो उसके पास घोड़ा किराये करनेके सिवा

और कोई उपाय न रहा। उस आदमीने तुरन्त एक घोड़ा सौंप दिया, क्योंकि वह जानता था कि वह जेलरकी बेटी है।

रोज़ाको अपने भेजे हुए दूतको जल्दी ही रास्तेमें पकड़ लेनेकी आशा थी। वह एक दयालु और ईमानदार लड़का था। उसने सोचा कि मैं उसे अपने साथ ले जाऊँगी और वह मेरे मार्ग-दर्शकका तथा रक्षकका काम देगा।

हुआ भी ऐसा ही। वह चार पाँच ही मील गई थी कि वह उसे नदीके साथ साथ जानेवाली एक सुंदर सड़कके किनारेपर जाता दिखलाई दिया। अपने घोड़ेको जरा और तेज करके वह जल्दी ही उसके बराबर पहुँच गई।

उस ईमानदार लड़केको यह नहीं मालूम था कि वह जिस कामपर जा रहा है वह कितना महत्त्वपूर्ण है। फिर भी वह ऐसा दौड़ा चला जा रहा था जैसे उसके महत्त्वको जानता हो। घंटे-भरसे कममें उसने चार मील तै कर लिये थे।

रोज़ाने उससे वह चिठ्ठी ले ली, क्यों कि वह अब बेकार थी और उससे अपने साथ चलनेको कहा। उसने कहा, "मैं हर तरहसे तुम्हारी सेवामें हाज़िर हूँ। मैं तुम्हारे घोड़ेके साथ साथ चल सकूँगा, यदि तुम उसकी लगाम मेरे हाथमें दे दो।" दोनों यात्री ५ घंटे चलकर २५ मील पार कर गये और अभी तक ग्रीफ़सको ज़रा भी संदेह नहीं हुआ कि उसकी बेटी लोवेनस्तेनसे चली गई है।

जेलर बड़ा द्वेषी और क्रूर प्रकृतिका था। वह यह सोचकर खूब खुश हो रहा था कि मैंने अपनी बेटीके मनमें बड़ा डर बैठा दिया है।

वह बड़ा प्रसन्न हो रहा था कि मैं ऐसी अच्छी कहानी अपने मित्र जाकोबको जाकर सुनाऊँगा, किन्तु वे महाशय तो हारलेमकी सड़कपर अपने घोड़ेकी तेजीके कारण रोज़ासे १२ मील आगे निकल चुके थे और जब कि प्यारा पिता यह सोचकर आनंदित हो रहा था कि मेरी बेटी अपनी कोठरीमें बैठी रो रही है, रोज़ा हारलेमकी सड़कपर बढ़ी चली जा रही थी।

इस प्रकार अकेला कैदी ही वहाँ था जहाँ कि ग्रीफ़स उसे समझता था।

जबसे रोज़ाने गुले लालाकी देख-भाल अपने ज़िम्मे ली थी तबसे वह पिताके पास बहुत कम जाती थी, इस लिए जब बारह बज गये, और भोजनका समय हो गया, तो ग्रीफसको भूख लगी और तभी उसे पहले पहल रोज़ाकी याद आई। वह सोचने लगा, रोज़ा आज बड़ी देर लगा रही है।

उसने एक नौकरको बुलाने भेजा, तो उसने लौटकर कहा कि मैंने बहुतेरी आवाज़ें दीं, वह कहीं नहीं मिलतीं। तब ग्रीफस स्वयं उसे बुलाने गया। पहले पहल कोठरीमें गया किन्तु वहाँ उसे कोई न मिला। उसने किलेके लोहारको बुलवाकर ताला तुड़वाया, किन्तु कोठरीमें रोज़ा उसी तरह नहीं मिली जैसे कि रोज़ाको वहाँ गुले लाला नहीं मिला था। उस समय रोज़ा राटरडम पहुँच चुकी थी, इस लिए ग्रीफ़सको वह रसोईघर और बाग़में भी उसी तरह नहीं मिली जैसे कि अपनी कोठरीमें नहीं मिली थी।

पाठक समझ ही सकते हैं कि जेलरको कितना क्रोध आया होगा जब कि उसने आसपास पूछ-ताछ की और सुना कि उसकी बेटी एक घोड़ा किराये करके न जाने कहाँ चली गई है।

ग्रीफ़स क्रोधमें भरकर फिर वान बार्लेके पास गया और उसे गालियाँ देने लगा। उसने उसकी कोठरीका सामान तोड़-फोड़ दिया और उसे खूब धमकियाँ दीं। कहा कि मैं तुम्हें खानेको नहीं दूँगा और कोड़े लगवाऊँगा।

वान बार्लेने कुछ परवा नहीं की कि जेलरने उससे क्या कहा, उसे गाली और धमकी देने दिया। वह बिलकुल निश्चल रहा।

रोज़ाको सब जगह ढूँढ़कर ग्रीफ़स जाकोबकी खोजमें गया; किन्तु वह भी नहीं मिला। अतः वह संदेह करने लगा कि जाकोब भी रोज़ाके साथ भाग गया।

इस बीच सुन्दरी दो घंटे राटरडममें विश्राम करके फिर चल दी। रातको वह डेल्फमें सोई और अगले दिन सबेरे हारलेम पहुँच गई। बोक्सतेल उससे चार घंटे पहले पहुँच चुका था।

सबसे पहले रोज़ा हारलेमके पुष्प-प्रेमी समाजके सभापति वान सीस्तेनके पास गई।

उससे कहा गया कि वे इस समय एक बड़े जरूरी काममें लगे हुए हैं। समाजकी समितिके लिए काले फूलके विषयमें रिपोर्ट तयार कर रहे हैं।

रिपोर्ट एक बड़े काग़ज़पर थी और सभापति उसे बड़े सुन्दर अक्षरोंमें लिख रहे थे।

रोज़ाने सिर्फ़ अपना नाम बतलाकर ख़बर भिजवाई, किन्तु सभापति उस नामसे परिचित नहीं थे। इसलिए उन्होंने उस समय मिलनेसे इनकार कर दिया।

रोज़ा इससे कुछ भा हतोत्साह नहीं हुई। उसने तो अपने कामको पूरा करनेका निश्चय कर लिया था, चाहे उसे निषेध, अपमान, गाली और यहाँ-तक कि दुर्व्यवहारका भी सामना क्यों न करना पड़े।

उसने नौकरसे कहा, सभापतिसे कहो कि मैं काले गुले लालाके विषयमें बात-चीत करने आई हूँ।

ये शब्द सुनते ही सभापतिने उसे फ़ौरन अपने दफ़्तरमें बुला लिया और वह अपनी कुरसीसे उठकर उससे मिला।

वह दुबला पतला आदमी एक फूलके डंठलके समान मालूम पड़ता था। उसका सिर फूलकी कटोरीके समान था और भुजाएँ दो पत्तियोंके समान। उसकी चाल इस सादृश्यको और भी पूरा कर देती थी। जब वह झूमता हुआ चलता था तो ऐसा मालूम होता था कि फूल हवासे काँप रहा है।

वह बोला—कुमारी, मैंने सुना है कि तुम काले गुले लालाके विषयमें कुछ कहने आई हो।

पुष्प-प्रेमी समाजके सभापतिके लिए काला गुले लाला एक बड़ी भारी शक्ति-शाली वस्तु था जो कि, सब फूलोंका राजा होनेके कारण, दूत भेज सकता था।

रोज़ा बोली, हाँ महाशय, मैं उसके विषयमें ही बात-चीत करने आई हूँ।

वान सीस्तेनने बड़ी आदरसूचक मुस्कराहटके साथ कहा—तो वह है तो अच्छी तरह?

रोज़ा बोली—महाशय खेद है कि मैं नहीं जानती।

" क्यों, तो क्या उसपर कोई आपत्ति आ पड़ी है?"

" हाँ, बहुत बड़ी आपत्ति महाशय। उसपर तो नहीं किन्तु यह कहिए कि मुझपर।"

" क्या?"

" वह मेरे पाससे चोरी चला गया।"

" चोरी चला गया! काला गुलेलाला?"

" हाँ महाशय।"

" क्या तुम चोरको जानती हो?"

" मुझे संदेह है; किन्तु मुझे अभी किसीपर दोष नहीं लगाना चाहिए।"

" किन्तु यह बात तो बड़ी आसानीसे मालूम की जा सकती है। "

" कैसे ? "

" क्योंकि चोर अभी दूर नहीं गया होगा। "

" क्यों ? "

" क्योंकि मैंने गुले लाला दो ही घंटे हुए देखा है। "

" आपने काला गुले लाला देखा है ? "

और यह कहकर रोजा वान सीस्तेनकी ओर बढ़ी।

उसने उत्तर दिया—उसी तरह जैसे कि कुमारी, मैं तुम्हें देखता हूँ।

" किन्तु कहाँ ? "

" तुम्हारे मालिकके पास। "

" मेरे मालिकके पास ? "

" हाँ, तो क्या तुम मास्टर ईज़ाक बोक्सतेलकी नौकरानी नहीं हो ? "

" मैं ? "

" हाँ तुम। "

" महाशय, आप मुझे क्या समझते हैं ? "

" और तुम मुझे क्या समझती हो ? "

" मैं तो आपको वही समझती हूँ जो आप हैं, अर्थात् हारलेमके मेयर और पुष्प-प्रेमी समाजके सभापति महाशय वान सीस्तेन। "

" और तुमने अभी क्या कहा था ? "

" यही महाशय, कि मेरे पाससे मेरा गुले लाला चोरी गया है। "

" तो तुम्हारा गुले लाला महाशय बोक्सतेलका है। मेरी बेटी, तुम बात स्पष्ट नहीं कहतीं। गुले लाला तुम्हारे पाससे नहीं, महाशय बोक्सतेलके पाससे, चोरी गया है। "

" महाशय, मैं आपसे फिर कहती हूँ कि मैं नहीं जानती कि यह महाशय बोक्सतेल कौन हैं। और मैंने तो यह नाम आज पहले पहल सुना है। "

" तुम नहीं जानतीं कि बोक्सतेल कौन है ? और तुम्हारे पास भी एक काला गुले लाला था ? "

रोज़ाने काँपते हुए पूछा—क्या मेरे गुले लालाके सिवाय कोई दूसरा भी है ?

"हाँ, महाशय बोक्सतेलका।"

"वह कैसा है?"

"बिलकुल काला।"

"बिना किसी धब्बेके?"

"उसमें कोई भी धब्बा या ज़रा-सा डोरा भी नहीं है।"

"और वह गुलेलाला आपके पास है? आपको सौंप दिया गया है?"

"अभी नहीं, किन्तु जल्दी ही सौंप दिया जायगा, क्यों कि पारितोषिक देनेसे पहले वह समितिके सदस्योंको दिखलाया जायगा।"

रोज़ा बोली, महाशय, वह बोक्सतेलका—ईज़ाक बोक्सतेलका—जो कि काले गुले लालाको अपना बतलाता है—

"नहीं है? तो किसका है?—"

"वह दुबला पतला आदमी है न?"

"हाँ।"

"गंजा?"

"हाँ।"

"उसकी आँखें धँसी हुई हैं?"

"मैं समझता हूँ कि हैं।"

"कभी निश्चल न रहनेवाला, नीचेको झुककर चलनेवाला, चलनेमें उसकी टाँगें सीधी नहीं पड़तीं।"

"वस्तुतः तुम एक एक करके मास्टर बोक्सतेलका चित्र खींच रही हो।"

"और महाशय, वह फूल एक सफ़ेद और नीले मर्तबानमें है न? और उस मर्तबानके तीन ओर एक टोकरीमें पीले फूल बने हुए हैं?"

"इन बातोंकी मुझे ठीक याद नहीं। मैंने फूलकी ओर ध्यानसे देखा था, गमलेकी ओर नहीं।"

"तो महाशय, वह मेरा ही गुले लाला है। मेरे पाससे चुरा लिया गया है। मैं आपके सामने और आपसे अपना फूल वापस लेने आई हूँ।"

वान सीस्तेनने रोज़ाकी ओर आँखें फाड़कर कहा—क्या? तुम मास्टर बोक्सतेलके गुले लालापर अपना दावा करती हो? तुम्हारा दिमाग़ तो ठीक है न?

उसकी इस बातसे ज़रा भी न घबराकर रोज़ाने कहा, मान्य महाशय, मैं यह

नहीं कहती कि मैं मास्टर बोक्सतेलके गुले लालापर दावा करने आई हूँ, मैं तो अपने गुले लालापर ही—

" अपने पर ? "

" हाँ, उसपर जिसको मैंने हाथोंसे बोया और उगाया है। "

"अच्छा तो तुम जाओ और मास्टर बोक्सतेलको बुला लाओ। वह श्वेत हंस नामके होटलमें ठहरा हुआ है। तुम उसके साथ अपने मामलेको तै करो। यह मामला बड़ा टेढ़ा मालूम होता है। इसको तो बादशाह सुलेमान जैसे ही फैसला कर सकते थे। मुझमें तो उतनी बुद्धि नहीं है। मेरा काम तो इतना है कि मैं अपनी रिपोर्ट तैयार कर दूँ और काले गुले लालाका अस्तित्व सिद्ध करके उसके पैदा करनेवालेको एक लाख रुपयेका पारितोषिक दिये जानेकी आज्ञा दे दूँ। अच्छा तो मुझे काम है, मुझसे बिदा लो बेटी। "

रोज़ाने बड़ी दीनतासे प्रार्थना करते हुए कहा—महाशय, महाशय।

वान सीस्तेनने उत्तर दिया—बेटी, क्योंकि तुम अभी कम उम्र और सुन्दरी हो, संभव है कि तुममें कुछ गुण हों, इसलिए मैं तुम्हें कुछ सलाह देता हूँ। इस विषयमें जरा सोच-समझकर काम करो, क्यों कि यहाँ एक न्यायालय भी है और हारलेममें एक जेल भी है। और यहाँ तो हमारे गुले लालाके सम्मानका प्रश्न है। हम इस विषयमें बड़ा खयाल रखते हैं। जाओ, बेटी, ज़ाओ। याद रक्खो, मास्टर ईज़ाक बोक्सतेल श्वेत हंसके होटलमें ठहरा हुआ है।

और वान सीस्तेनने अपनी कलम उठाई और रिपोर्ट लिखना शुरू कर दी।

२६-पुष्पप्रेमी समाजका सदस्य

रोज़ा अपने आपेमें नहीं थी। वह काले गुले लालाको फिरसे पा लिये जानेके कारण हर्ष और भयसे पागल-सी हो रही थी।

वह उस लड़केके साथ श्वेत हंसके होटलकी ओर चल दी। यह लड़का बड़ा मज़बूत था और अकेला ही दस बोक्सतेलोंको पटक सकता था।

रास्तेमें उसे रोज़ाने सब बातें बतला दी थीं। यदि कोई लड़नेका मौका आ पड़े तो वह हरएक बातके लिए तैयार था। रोजाने उससे सिर्फ़ इतना कह

दिया था कि ऐसे मौक़ेपर तुम केवल गुले लालाको बचाये रखनेका ख़याल रखना।

किन्तु बड़े बाज़ारमें पहुँचकर वह रुक गई। वह मनमें सोचने लगी, मैंने एक बड़ी भूल की। यह संभव है कि इससे मैंने वान बार्ले, गुले लाला और अपने आप सबको नष्ट कर लिया हो। मैंने उन्हें चौंका दिया है और शायद उन लोगोंके मनमें सन्देह पैदा कर दिया है।

मैं एक अबला ही तो हूँ। संभव है कि ये सब लोग मेरे विरुद्ध मिल जायँ। यदि ऐसा हुआ तो मैं तो कहींकी न रहूँगी। मुझे अपनी तो कोई चिन्ता नहीं, किन्तु गुले लाला और वान बार्लेकी क्या हालत होगी!

वह थोड़ी देर तक सोचती रही।

मैं अगर उस बोक्सतेलके पास जाऊँ और उसे न पहचानूँ, वह जाकोब न निकले, कोई दूसरा गुले लालाप्रेमी हो और उसने भी काला गुले लालाका आविष्कार किया हो; या यदि मेरे गुले लालाको किसी दूसरेने चुराया हो और वह एक तीसरे आदमीके हाथमें पहुँच गया हो, और यदि मैं उस आदमीको न पहचानूँ, केवल गुले लालाको ही पहचानूँ, तो मैं कैसे सिद्ध करूँगी कि वह मेरा है? और यदि बोक्सतेल जाकोब ही निकला, तो उससे भी कौन जानता है क्या परिणाम निकलेगा? हम तो इधर आपसमें लड़ते रहेंगे, उधर गुले लाला मर जायगा।

जब वह इन सब विचारोंमें मग्न थी, सड़ककी दूसरी ओरसे दूरवर्ती समुद्रके गर्जनके समान बड़ा कोलाहल आता सुनाई दिया। कोई इधर दौड़ रहा था, कोई उधर। कोई दरवाज़े बंद कर रहा था, कोई खोल रहा था। भीड़में अकेली रोज़ाको ही इस कोलाहलका कुछ ध्यान न था।

वह लड़केसे बोली—चलो हम सभापतिके पास लौट चलें।

वह बोला—अच्छा चलो, लौट चलें।

वे एक छोटी गलीके रास्तेसे सीधे वान सीस्तेनके महलमें पहुँचे। वह अभी तक अपनी सबसे अच्छी लेखनीसे सुन्दरसे सुन्दर अक्षरोंमें रिपोर्ट लिख रहा था।

रास्तेमें रोज़ाको सब जगह लोग, काले गुले लाला तथा एक लाख रुपयेके

पारितोषिकके विषयमें, बातचीत करते दिखाई दिये। यह समाचार आँधीकी तरह पलभरमें सारे नगरमें फैल गया था।

रोज़ाको इस बार भी वान सीस्तेनके पास पहुँचनेमें कुछ कठिनाई नहीं हुई, क्योंकि काले गुले लालाका नाम सुनते ही उसपर जादूका-सा असर होता था।

किन्तु जब उसने रोज़ाको देखा, तो उसे क्रोध आ गया। उसने उसे पागल समझ रक्खा था, इसलिए वहाँसे भगा देना चाहा।

किन्तु रोज़ा हाथ जोड़कर बोली। उसके स्वरसे ईमानदारी और सचाई झलक रही थी और वह हृदयमें लगता था।

उसने कहा—परमात्माके नामपर मैं आपसे कहती हूँ कि मुझे लौटा न दीजिए। जो कुछ मैं कहती हूँ, वह केवल सुन लीजिए। यदि आप मेरे साथ न्याय न कर सकेंगे, तो भी कमसे कम आपको ईश्वरके सामने यह पश्चात्ताप तो न करना पड़ेगा कि आपने एक बुरे काममें साथ दिया, अर्थात् एक चोरका पक्ष लिया।

वान सीस्तेनने अधीर होकर ज़ोरसे जमीनपर पैर पटका। यह दूसरी बार रोज़ाने उसके काममें विघ्न डाला था, भला यह बात मेयर तथा सभापतिको कैसे सह्य हो सकती थी?

वह ज़ोरसे बोला—मुझे अपनी रिपोर्ट लिखने दो। यह काम बड़ा जरूरी है।

रोज़ाने सत्य और निर्दोषताकी सूचक दृढताके साथ कहा, महाशय वान सीस्तेन, यदि आप मेरी बात नहीं सुनेंगे, तो आपकी रिपोर्ट अपराध या असत्य-पर अवलंबित होगी। महाशय, मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि यह मास्टर बोक्सतेल, जिसको मैं जाकोब बतलाती हूँ, यहाँ आपके और मेरे सामने बुलवाया जाय और मैं शपथसे कहती हूँ कि यदि मैं फूलको, और जिसके पास वह है उसको, न पहचानूँ तो मैं कुछ भी न बोलूँगी और फूलको शान्तिसे उसके पास रहने दूँगी।

वान सीस्तेन बोला—अच्छा, मैं एक बात कहता हूँ।

"क्या?"

"तुम्हारे पहचान लेनेसे क्या प्रमाणित होगा?"

रोज़ाने निराशाके साथ कहा—आप ईमानदार हैं और न्यायका बहुत ख़याल करते हैं। यदि आपको किसी दिन मालूम हुआ कि आपका पारितोषिक किसी

ऐसे आदमीको दिया गया है जिसने केवल इतना ही नहीं कि गुले लाला पैदा नहीं किया बल्कि उसे चुराया था, तो आपको कैसा लगेगा ?

मालूम होता था कि रोज़ाकी बातने वान सीस्तेनके मनपर असर किया है। वह नरम स्वरसे उत्तर देनेवाला ही था कि सड़कपर बड़े ज़ोरका कोलाहल सुनाई दिया और जय-जयकारसे सारा मकान गूँज उठा।

उसे सुनकर मेयर ज़ोरसे बोला, यह क्या है, यह क्या है ? क्या यह संभव है ? क्या मैंने ठीक सुना है ?

और वह रोज़ाका कुछ खयाल न करके उसे अपने कमरेमें ही छोड़कर दरवाज़ेके पासके कमरेकी ओर दौड़ गया। उसने देखा कि बाहर लोगोंकी बड़ी भीड़ लगी हुई है और ठीक ज़ीनेके नीचे तक पहुँच गई है। ये लोग एक युवकके पीछे पीछे आ रहे थे। यह युवक ऊदे रंगकी मखमलका एक कोट पहने था जिसपर चाँदीका काम किया हुआ था। वह बड़ी शान और नज़ाकतके साथ घरकी सफ़ेद पत्थरकी सीढ़ियोंपर चढ़ रहा था। उसके पीछे पीछे दो अफ़सर थे, एक नौ-सेनाका और एक घुड़सवार-सेनाका।

वान सीस्तेनके सब नौकर डर-से गये थे। वह उनके बीचमेंसे होता हुआ नवागत व्यक्तिके पास पहुँचा। उसने उसे खूब झुककर बड़े आदरसे प्रणाम किया और कहा—श्रीमान्‌ने आज मेरे घरमें अपने चरण-कमल लाकर मुझे सदाके लिए कृतार्थ कर दिया !

ओरेंजका राजकुमार विलियम बोला—। उसके स्वरमें एक प्रकारकी गंभीरता थी जो कि उसके मुँहपर मुसकराहट-सी मालूम होती थी।

"प्यारे महाशय वान सीस्तेन, मैं सच्चा हालैंड-निवासी हूँ। मुझे जल, शराब और फूलोंसे बड़ा प्रेम है और फूलोंमें भी मैं स्वभावतः गुले लालाको ज़्यादा पसंद करता हूँ। मैंने लीडेन नगरमें सुना कि हारलेममें काला गुले लाला मौजूद है। परन्तु इस समाचारपर विश्वास नहीं हुआ। उसकी सत्यताके विषयमें अपना सन्देह निवृत्त करनेके लिए मैं अब स्वयं पुष्प-प्रेमी समाजके सभापतिसे बात-चीत करने आया हूँ।

वान सीस्तेन अत्यन्त प्रसन्नताके साथ बोला—श्रीमन्, समाजके लिए यह बड़े सौभाग्यकी बात है कि उसके कार्यको श्रीमान् पसन्द करते हैं।

राजकुमारको खेद हो रहा था कि मैंने इतनी लंबी चौड़ी वक्तृता क्यों दे डाली। उसने पूछा, क्या वह फूल यहाँ आपके पास है?

"मुझे खेद है कि वह यहाँ नहीं है।"

"तो कहाँ है?"

"अपने मालिकके पास"

"उसका मालिक कौन है?"

"डोर्टका एक ईमानदार गुले लाला लगानेवाला।"

"उसका नाम?"

"बोक्संतेल।"

"वह कहाँ ठहरा है?"

"श्वेत हंसकी सरायमें। मैं उसे बुला भेजता हूँ। आप मेरी बैठकमें पधारकर मुझे अनुगृहीत कीजिए। जब उसे मालूम होगा कि श्रीमान् यहाँ हैं, तो वह फौरन अपना गुले लाला लेकर हाजिर हो जायगा।"

"अच्छा तो बुला भेजिए।"

"हाँ श्रीमन्, किन्तु—"

"क्या?"

"कुछ ऐसी जरूरी बात नहीं है, श्रीमन्—"

"वान सीस्तेन, हरएक बात जरूरी है।"

"तो श्रीमन्, मुझे इतना कहना है कि एक कठिन समस्या उपस्थित हो गई है।"

"क्या समस्या?"

"इस गुले लालापर दूसरे अनधिकारियोंने अपना दावा किया है। इसकी कीमत, आप जानते ही हैं, एक लाख रुपया है।"

"बेशक।"

"श्रीमन्, अनधिकारियोंने, झूठे जालसाजोंने, दावा किया है।"

"यह तो बड़ा भारी जुर्म है।"

"हाँ श्रीमन्, जुर्म तो है ही।"

"और क्या आपके पास उनके अपराधोंका कोई सुबूत है?"

"नहीं श्रीमन्, वह अपराधी स्त्री—"

" तो क्या वह स्त्री है ? "

" मुझे यों कहना चाहिए कि जो स्त्री गुले लालपर दावा करती है, वह पासहीके कमरेमें है । "

" और तुम उसके विषयमें क्या समझते हो ? "

" श्रीमन्, मैं समझता हूँ कि वह एक लाख रुपयेके पारितोषिकसे ललचा गई है । "

" और वह गुले लालपर अपना दावा करती है ? "

" हाँ श्रीमन् । "

" वह उसके लिए प्रमाण क्या देती है ? "

" मैं उससे पूछनेको ही था कि महाराज आ गये । "

" उससे पूछो महाशय वान सीस्तेन, उससे पूछो । देशका सबसे बड़ा न्यायाधीश मैं ही हूँ । इस मामलेको मैं स्वयं सुनकर निर्णय करूँगा ।

वान सीस्तेनने राजकुमारके सामने झुकते हुए और उसे रास्ता दिखलाते हुए कहा, मुझे तो अपना बादशाह सुलेमान मिल गया ।

जाते हुए राजकुमार विलियमने वान सीस्तेनसे कहा—

" मुझे उस स्त्रीके सामने केवल 'श्रीमान्' कहकर पुकारना, 'राजकुमार नहीं । "

उन दोनोंने वान सीस्तेनके ख़ास कमरेमें प्रवेश किया । रोज़ा अभी तक वहीं खिड़कीका सहारा लिये खड़ी थी और बाहर बागकी ओर देख रही थी ।

राजकुमारने रोज़ाकी सुनहरी गोटकी टोपी और लाल पेटीकोट देखते ही कहा, ओह फ्रीज़लैंडकी लड़की है ।

उनके पैरोंकी आहट सुनकर रोज़ाने मुँह फेरा, किन्तु वह राजकुमारको बहुत थोड़ा देख पाई । क्योंकि वह कमरेके सबसे अँधेरे कोनेमें जाकर बैठ गया था ।

रोज़ाका सारा ध्यान तो वान सीस्तेनपर लगा हुआ था । नवागंतुकको देखनेके लिए उसके पास समय नहीं था । उसने समझा कि वह कोई मामूली आदमी होगा ।

इस मामूली नवागन्तुकने शेल्फसे एक किताब उठा ली और वान सीस्तेनसे प्रश्न शुरू करनेके लिए इशारा किया ।

इस ऊदे कोटवाले युवकके कहनेसे वान सीस्तेन भी बैठ गया और, इस प्रकार, जो गौरव उसे दिया गया उससे, गर्वयुक्त होकर उसने यों कहना शुरू किया—

“ मेरी बेटी, तुम मुझसे इस गुले लालाके विषयमें सत्य ही और बिल्कुल सत्य ही कहनेकी प्रतिज्ञा करती हो न ? ”

“ हाँ, मैं प्रतिज्ञा करती हूँ । ”

“ अच्छा तो इन सज्जनके सामने बतलाओ । ये सज्जन पुष्प-प्रेमी समाजके एक सदस्य हैं । ”

“ मैं जो कुछ आपके सामने कह चुकी हूँ उसके सिवाय मुझे आपसे और क्या कहना है ? ”

“ क्या कह चुकी हो ? ”

“ तो मैंने आपसे जो प्रार्थना की थी, उसे ही मैं फिर दुहराती हूँ । ”

“ क्या प्रार्थना ? ”

“ यही कि आप बोक्सतेलको गुले लालाके साथ यहाँ बुलवावें । यदि उस फूलको मैं न पहचान सकूँगी तो स्पष्ट कह दूँगी । किन्तु यदि मैं उसे पहचान लूँगी तो मैं अपने प्रमाण देकर उसपर अपना दावा करूँगी, चाहे मुझे खुद श्रीमान् नवाब साहबके पास ही क्यों न जाना पड़े । ”

“ तो बेटी, तुम्हारे पास प्रमाण मौजूद हैं ? ”

“ परमात्मा मेरी सचाईको जानता है और वह मुझे कुछ न कुछ प्रमाण दे ही देगा । ”

वान सीस्तेनने राजकुमारकी ओर देखा । राजकुमारने जबसे रोज़ाकी आवाज़ सुनी थी वह उसे याद करनेका प्रयत्न कर रहा था । उसे याद आ रहा था जैसे उसने उसे कहीं पहले देखा हो ।

एक आदमी बोक्सतेलको बुलाने चला गया और वान सीस्तेन रोज़ासे प्रश्न करता रहा—

“ और यह तुम कैसे कहती हो कि तुम ही काले गुले लालाकी सच्ची मालकिन हो ? ”

“ क्योंकि मैंने उसे अपनी कोठरीमें बोया था । ”

“ अपनी कोठरीमें ? तुम्हारी कोठरी कहाँ है ? ”

" लोवेनस्तेनमें । "

" तो तुम लोवेनस्तेन जेलसे आती हो ? "

" मैं उस किलेके जेलरकी बेटी हूँ । "

यह सुनकर राजकुमारने अपने मनमें सोचा, ओहो, मुझे अब याद आया—यह वह है !

वान सीस्तेनने पूछा, तो तुम्हें फूलोंका शौक है ?

" हाँ महाशय । "

" तो मैं समझता हूँ कि तुम फूलोंकी विद्यामें प्रवीण हो । "

रोज़ा जरा हिचकिचायी फिर अपने अन्तरतमसे आनेवाली आवाज़से बोली—

" सज्जनो, मैं सम्भ्रान्त महाशयोंके सामने बोल रही हूँ ? "

उसके स्वरसे ऐसी सच्चाई झलकती थी कि वान सीस्तेन और राजकुमार दोनोंने एक साथ सिर हिलाकर कह दिया—

" हाँ । "

" अच्छा तो मैं कहती हूँ कि मैं अनुभवी पुष्प-विद्या-विशारद नहीं हूँ । मैं तो एक दीन लड़की हूँ । तीन महीने पहले तक तो मैं पढ़ना लिखना भी नहीं जानती थी । नहीं, काले गुले लालाका आविष्कार मैंने नहीं किया । "

" तो फिर किसने किया ? "

" लोवेनस्तेनके एक बेचारे कैदीने । "

राजकुमारने कहा—लोवेनस्तेनके एक कैदीने ?

इस स्वरसे रोज़ा चौंक गई । उसे निश्चय हो गया कि मैंने कहीं पहले इसे सुना है ।

राजकुमारने फिर कहा—तो फिर राजद्रोहके कैदीने—शाही कैदीने—यों कहो । क्योंकि लोवेनस्तेनमें सब राजकीय कैदी ही हैं ।

यह कहकर वह फिर पुस्तककी ओर देखने लगा, मानों पढ़ रहा है ।

रोज़ाने हिचकिचाते हुए कहा—हाँ राजकीय कैदीने ।

वान सीस्तेन ऐसे गवाहके सामने कही हुई ऐसे अपराधकी बात सुनकर काँप गया ।

विलियमने सभापतिसे कहा—आप पूछते जाइए ।

रोज़ा जिस आदमीको अपना असली न्यायाधीश समझती थी उससे बोली—महाशय, मैं अपने आपको बुरी तरह फँसा रही हूँ।

वान सीस्तेन बोला—निश्चय ही। राजकीय कैदियोंको लेवेनस्तेनमें बिलकुल बंद करके रखना चाहिए।

"हाँ महाशय, यह मैं जानती हूँ किन्तु खेद—

"और तुम्हारे कहनेसे मालूम होता है कि तुम जेलरकी बेटीके रूपमें अपनी स्थितिसे लाभ उठाकर एक राजकीय कैदीसे फूलोंके बोनेके विषयमें मिलतीं रहीं।"

रोज़ाने आश्चर्यसे कहा—हाँ महाशय, मैंने तो आपसे कह ही दिया है कि मैं सब कुछ सच सच कहूँगी। मैं उससे रोज़ मिला करती थी।

वान सीस्तेनके मुँहसे निकल गया—अभागी लड़की!

राजकुमारने, यह देखकर कि रोज़ा भयातुर है और सभापति पीला पड़ गया है, अपना सिर उठाया और साफ़ निश्चयपूर्ण स्वरसे कहा—इससे पुष्प-प्रेमी समाजके सदस्योंपर कोई दोष नहीं आ सकता। उनको तो काले गुले लालाके आविष्कारकका निर्णय करना है, और उसके राजनीतिक अपराधोंसे उनका कोई सरोकार नहीं। तुम कहती जाओ सुन्दरी।

वान सीस्तेनने सभाके नये सदस्यकी ओर काले गुले लालाकी ओरसे धन्य-वाद सूचित करनेवाली दृष्टिसे देखा।

रोज़ाने, इस नवागंतुकके दिये हुए प्रोत्साहनसे, निर्भय होकर, पिछले तीन महीनोंमें जो कुछ बीता था, उसने जो कुछ किया था और जो जो कष्ट सहे थे, वह सब विस्तारके साथ कह दिया। उसने यह सब भी कहा कि ग्रीफ़स कितना क्रूर है, उसने पहली गाँठको किस तरह कुचल दिया और उससे कैदी कितना शोकातुर हुआ, दूसरी गाँठकी रक्षाके लिए क्या क्या होशियारी की गई, कैदीका धैर्य और उन दोनोंके वियोगके समय उसकी चिन्ता, जब उसने गुले लालाका कुछ समाचार नहीं सुना तो किस तरहसे अनशन किया, वह जब उसे देखने गई तो वह कितना आनन्दित हुआ और अन्तमें जब वह गुले लाला खिलनेके एक घंटेके अन्दर ही चोरी चला गया, तो वह कितना निराश हुआ।

उसने यह सब विस्तारके साथ कहा। उसके स्वरसे ऐसी सचाई झलकती थी कि उसका राजकुमारके चेहरेपर तो कुछ प्रभाव नहीं हुआ, उसपर तो किसी बातका असर ही नहीं होता था, किन्तु वान सीस्तेनपर बड़ा असर दृष्टि-गोचर हुआ।

राजकुमार बोला, किन्तु तुम क़ैदीको थोड़े ही दिनोंसे जानती होगी?

रोज़ा आँखें फाड़कर नवागंतुककी ओर देखने लगी। वह एक अँधेरे कोनेकी ओर खिसक गया, मानों वह उसके दृष्टि-पथसे बचना चाहता है।

रोज़ाने पूछा, क्यों महाशय?

"क्योंकि ग्रीफ़सका लोवेनस्तेनको तबादला हुए तो, अभी चार मास भी नहीं हुए।"

"हाँ, यह बात ठीक है।"

"नहीं तो तुमने जान-बूझकर अपने पिताका तबादला लोवेनस्तेनको किये जानेकी प्रार्थना की होगी, जिससे तुम किसी विशेष क़ैदीके साथ साथ जा सको, जिसका तबादला हेगसे लोवेनस्तेनको हुआ था।

रोज़ाका चेहरा लाल हो गया, वह बोली—महाशय,—

विलियम बोला—कहो, क्या कहना चाहती हो?

"हाँ, मैं स्वीकार करती हूँ कि मैं क़ैदीको हेगसे जानती हूँ।"

विलियमने मुसकुराते हुए कहा—क़ैदी बड़ा सौभाग्यशाली है!

इसी समय वह आदमी लौट आया, जो बोक्सतेलको बुलाने गया था। उसने कहा कि वह मेरे पीछे ही पीछे गुले लालाको लेकर आ रहा है।

२७-तीसरी गाँठ

बोक्सतेलके आनेका समाचार लानेवाले इस आदमीके जाते ही स्वयं बोक्सतेलने वान सीस्तेनकी बैठकमें प्रवेश किया। उसके साथ दो आदमी थे जो कि काले गुले लालाका सन्दूक लिये हुए थे। उन्होंने उसे एक मेज़पर रख दिया।

राजकुमार उसके आनेका समाचार सुनकर बैठकमें गया, वहाँ फूलको देखा, और फिर एक कुरसी अपने हाथसे उठाकर उसे एक अन्धेरे कोनेमें डालकर बैठ गया।

रोज़ा काँप रही थी और डरके मारे पीली पड़ गई थी। उसे आशा थी कि वह भी गुले लाला देखनेके लिए बुलाई जायगी।

उसने अब बोक्सतेलका स्वर सुना।

वह बोल उठी—यह वही तो है !

राजकुमारने उससे खुले हुए दरवाज़ेमेंसे बैठककी ओर देखनेके लिए इशारा किया।

रोज़ा बोल उठी—यह तो मेरा गुले लाला है, मैं इसे पहचानती हूँ। ओह वान बार्ले !

और यह कहते कहते वह रो पड़ी।

राजकुमार अपनी जगहसे उठा और थोड़ी देर दरवाज़ेपर खड़ा रहा। वहाँ उसके मुखपर प्रकाश अच्छी तरह पड़ता था।

अब रोज़ा उसकी ओर ध्यानसे देखने लगी और उसको पूरा विश्वास हो गया कि मैंने इस मनुष्यको पहले कहीं ज़रूर देखा है।

विलियमने कहा—मास्टर बोक्सतेल, कृपया यहाँ आइए।

बोक्सतेल पास गया और अपनेको स्वयं ओरेंजके विलियमके सामने देखकर पीछे हट गया।

वह बोल उठा—महाराज हैं !

रोज़ाने भी आश्चर्यसे कहा—महाराज हैं !

अपने बाईं ओरसे इस स्वरको सुनकर बोक्सतेलने मुँह फेरा तो उसे रोज़ा दिखाई दी।

अकस्मात् उसे देखते ही चोर थरथर काँपने लगा जैसे उसके शरीरमें बिजली दौड़ गई हो।

यह देखकर राजकुमारने अपने मनमें कहा, यह तो घबरा गया मालूम होता है।

किन्तु बोक्सतेलने शीघ्र ही अपने आपको सँभाल लिया।

विलियमने कहा—बोक्सतेल, मैंने सुना है कि तुमने काले गुले लालाका आविष्कार करके वह काम कर दिखाया है जो अभी तक असंभव समझा जाता था।

बोक्सतेलने जवाब दिया—'हाँ श्रीमन् !' उसके स्वरसे अभीतक घबराहट प्रकट होती थी। किन्तु संभव है कि यह अचानक राजकुमारको पहचान लेनेसे पैदा हुई हो।

विलियमने कहा, किन्तु उसके आविष्कारका दावा तो यह सुन्दरी करती है।

बोक्सतेल घृणाके साथ केवल मुसकुराया। विलियम उसकी हरएक चाल और हरएक भाव-भंगीको बड़े ध्यानसे देख रहा था। उसने पूछा—तो क्या तुम इस लड़कीको नहीं जानते ?

" नहीं महाराज। "

" और बेटी, क्या तुम मास्टर बोक्सतेलको जानती हो ? "

" नहीं। मैं मास्टर बोक्सतेलको तो नहीं, किन्तु मास्टर जाकोबको जानती हूँ। "

" मैं तुम्हारी बात नहीं समझा। "

" मैं यह कहती हूँ कि यह आदमी लोवेनस्तेनमें मास्टर जाकोबके नामसे रहता था और यहाँ अपना नाम ईज़ाक बोक्सतेल बतलाता है। "

" मास्टर बोक्सतेल, तुम इसका क्या जवाब देते हो ? "

" श्रीमन्, यह लड़की झूठ बोलती है। "

" तो क्या तुम कभी लोवेनस्तेन नहीं गये ? "

इसपर बोक्सतेल कुछ हिचकिचाया। विलियम गिद्धकीसी दृष्टिसे उसकी ओर देख रहा था। उस दृष्टिको देखकर उसे झूठ बोलनेका साहस नहीं हुआ।

" मैं लोवेनस्तेनमें जानेसे तो इनकार नहीं कर सकता महाराज, किन्तु मैंने गुले लाला नहीं चुराया। "

रोज़ाने क्रोधपूर्ण स्वरमें कहा—तुमने उसे अवश्य चुराया है।

" मैं उससे इनकार करता हूँ। "

" अच्छा, मेरी बात सुनो। क्या तुम इससे भी इनकार करते हो कि जिस दिन मैंने गुले लाला बोनेके लिए क्यारी तैयार की, उस दिन तुम छिपकर मेरे पीछे बागमें गये ? क्या तुम इससे भी इनकार करते हो कि जब मैंने झूठ-मूठ गुले लालाकी जड़ ज़मीनमें दबाई, तो तुम मेरे पीछे छिपकर गये ? क्या तुम इससे भी इनकार करते हो कि तुम उसके बाद दौड़कर उस जगहपर गये और वहाँसे मूल लेनेके लिए भूमि कुरेदने लगे, किन्तु तुम्हें वहाँ कुछ न मिला, क्यों कि वह तो मैंने तुम्हारा उद्देश्य जाननेके लिए एक चाल चली थी ? कहो, क्या तुम इन सब बातोंसे इनकार करते हो ?

बोक्सतेलने इन सब आरोपोंका उत्तर देना उचित नहीं समझा और राजकुमारसे कहा—

"मैं बीस बरससे डोर्टमें गुले लाला बोता रहा हूँ। मैंने इस कलामें कुछ नाम भी पाया है। मेरा पैदा किया हुआ एक गुले लाला एक बड़े आदमीके नामसे गुले लालाओंकी अन्तर्राष्ट्रीय-सूचीमें भी सम्मिलित कर लिया गया है। मैंने वह फूल पुर्तगालके राजाको समर्पण कर दिया था। मैं श्रीमान्‌के सामने सब बात सच सच बतलाता हूँ। यह लड़की जानती थी कि मैंने काला गुले लाला पैदा किया है, इस लिए इसने लोवेनस्तेनके किलेके अपने एक प्रेमीसे मिलकर यह षड्यंत्र रचा है। उसे चुराकर यह एक लाख रुपयेका पारितोषिक आप प्राप्त कर लेना चाहती है। मुझे आशा है कि अब श्रीमान्‌के न्यायकी सहायतासे मैं वह पारितोषिक प्राप्त करूँगा।"

रोज़ाने क्रोधके मारे आपेसे बाहर होकर कहा——इतना झूठ!

राजकुमारने कहा, चुप रहो!

फिर उसने बोक्सतेलसे कहा, वह कौनसा कैदी है जिसको तुम इसका प्रेमी बतलाते हो?

रोज़ाको मूर्छा-सी आने लगी, क्योंकि वान बार्ल एक भयानक कैदी बतलाया जाता था और राजकुमारने जेलरसे उसपर विशेष दृष्टि रखनेको कहा था।

बाक्सतेल यह प्रश्न सुनकर जितना प्रसन्न हुआ, उतना किसी बातसे नहीं हो सकता था। वह बोला—

"इस आदमीका नाम सुनकर ही श्रीमान्‌को मालूम हो जायगा कि उसकी ईमानदारीमें कितना विश्वास किया जा सकता है। वह राजकीय कैदी है और उसको मृत्यु-दण्डकी आज्ञा हुई थी।"

"उसका नाम क्या है?"

बोक्सतेल बोला, उसका नाम वान बार्ल है और वह उस बदमाश कॉर्नेलियस द'विटका धर्मपुत्र है।

राजकुमार चौंक गया। उसकी साधारणतः शान्त रहनेवाली आँखोंमें चमक दिखाई दी और उसके उस चेहरेपर, जिसपर किसी बातका प्रभाव नहीं पड़ता था, मृत्युका-सा पीलापन छा गया।

उसने रोज़ाके पास जाकर उससे अपने मुखपरसे हाथ हटा लेनेको कहा।

रोज़ाने यंत्रवत् उसकी आज्ञाका पालन किया।

" तो तुमने इस आदमीके पास आनेके लिए ही अपने पिताको लोवेनस्तेन बदल दिये जानेकी प्रार्थना की थी ?"

रोज़ाने अपना मुँह नीचेको लटका लिया और गद्गद स्वरसे कहा—

" हाँ श्रीमन् ! "

राजकुमारने बोक्सतेलसे कहा—हाँ, अब तुम अपनी कहो।

बोक्सतेल बोला, मुझे और कुछ नहीं कहना है। श्रीमान्को सब मालूम है। केवल एक बात कहनी है कि मुझे लोवेनस्तेनमें कुछ काम था, इस लिए मैं वहाँ गया था। उसी अवसरपर मेरा परिचय वहाँके जेलर ग्रीफ़ससे हो गया और मैं उसकी पुत्रीपर मोहित हो गया। मैंने उससे विवाहका प्रस्ताव किया और क्यों कि मैं धनी नहीं हूँ, इस लिए उन लोगोंसे यह कह देनेकी मूर्खता की कि मुझे एक लाख रुपयेका पारितोषिक मिलनेवाला है और उसके प्रमाणस्वरूप काले गुले लालाका पौधा भी मैंने उन लोगोंको दिखला दिया। इसका प्रेमी जब डोर्टमें था, तो अपने राजनैतिक षड्यंत्रोंको छिपानेके लिए वह भी गुले लालाको बोने और उसमें अपना समय खर्च करनेका दिखावा किया करता था। इन दोनोंने मिलकर अब मेरे सर्वनाशके लिए षड्यंत्र रचा। जिस दिन फूल खिलनेवाला था, उस दिन शामको यह लड़की पौधा उठाकर अपने कमरेमें ले गई; किन्तु सौभाग्यसे मैंने उसे वहाँसे पुनः प्राप्त कर लिया। उसी समय इसने एक चिट्ठी देकर एक दूत पुष्प-प्रेमी समाजके सभापतिके पास भेज दिया और उस चिट्ठीमें लिखा कि मैंने काले गुले लालाका अविष्कार किया है। किन्तु इसने इतनेपर ही बस नहीं की। कुछ घंटे तक यह पौधा इसके कमरेमें रक्खा रहा। उतनी ही देरमें इसने वह कई आदमियोंको दिखला दिया, संभव है कि उनको यह अब गवाहीके लिए बुलावे। किन्तु सौभाग्यसे मैंने श्रीमान्को इस अनधिकारिणीसे तथा इसके गवाहोंसे पहलेहीसे सावधान कर दिया है।

रोज़ा बोली, हा परमात्मन् ! हा परमात्मन् ! कितनी झूठ ! कितनी बनावट !

और यह कहती हुई वह फूट-फूटकर रोने लगी और विलियमके चरणोंमें गिर पड़ी। विलियम यद्यपि उसे अपराधी समझता था, तो भी उसकी भारी व्यथा देकर उसे उसपर दया आ गई। वह बोला—

" बेटी, तुमने बहुत बुरा किया। तुम्हारे प्रेमीको तुम्हें ऐसी बुरी सलाह

देनेके लिए दण्ड दिया जायगा। तुम्हारी इतनी कम उम्र और ऐसा ईमानदार चेहरा देखकर मुझे विश्वास होता है कि यह सब शरारत उसीकी है, तुम्हारी नहीं।

यह सुनकर रोज़ा ज़ोरसे बोल उठी—श्रीमन्, श्रीमन्, वान बार्ले दोषी नहीं है।

विलियम चौंक गया।

"तुमको बुरी सलाह देनेका दोषी नहीं है, तुम यही कहना चाहती हो न?"

"श्रीमान्, मैं यह कहना चाहती हूँ कि वान बार्लेपर जो यह दूसरा आरोप लगाया गया है उसमें भी वह उसी तरह निर्दोष है जिस तरह पहलेमें था।

"पहले आरोपमें? क्या तुमको मालूम है कि उसपर पहले क्या आरोप लगाया गया था? महामंत्री और मार्किस द'लूबुवाके पत्र-व्यवहारको अपने पास छिपाकर षड्यंत्रमें कॉर्नेलियस द'विटका साथ देनेके अपराधमें उसको दण्ड दिया गया था।"

"महाशय, उसको यह कुछ मालूम नहीं था कि जो कागज़ात उसको रखनेके लिए दिये गये थे, उनमें क्या था। इस विषयमें मुझे उतना ही निश्चय है जितना अपने जीनेके विषयमें, क्योंकि यदि ऐसा न होता तो वह मुझसे ज़रूर कहता, कुछ भी नहीं छिपाता। मुझे विश्वास नहीं कि ऐसा पवित्रात्मा इस रहस्यको मुझसे छिपाकर रखता। नहीं, नहीं, श्रीमान्, मैं फिर भी कहती हूँ और आपके नाराज़ हो जानेके डरके रहते हुए भी मैं यही कहती हूँ कि वान बार्ले पहले आरोपमें भी वैसे ही निर्दोष है जैसे दूसरेमें, और दूसरेमें भी वैसे ही निर्दोष है जैसे पहलेमें। ओह, परमात्मा करें कि श्रीमान् मेरे वान बार्लेको पहिचाने।

बोक्सतेल बोला, वह भी तो द'विट घरानेका है। श्रीमान् तो उसके विषयमें अच्छी तरह जानते हैं। श्रीमान्ने एक बार उसे जीव-दान दिया है।

राजकुमारने कहा, चुप! मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि इन सब राजनीतिके मामलोंसे पुष्प-प्रेमी समाजको कुछ सरोकार नहीं।

फिर अपनी भौंहें टेढ़ी करके उसने कहा—मास्टर बोक्सतेल, गुले लालाके विषयमें आप निश्चिन्त रहिए। आपके साथ न्याय किया जायगा।

बोक्सतेलने आनन्दसे अपना मस्तक झुकाया और सभापतिने उसे बधाई दी।

विलियमने कहा—बेटी, तुम एक बड़ा भारी अपराध करनेवाली थीं। मैं तुमको तो दण्ड नहीं दूँगा; किन्तु असली पापीको अपने दोनों पापोंका दण्ड

मिलेगा। उस जैसा आदमी षड्यंत्रकारी और विद्रोही हो सकता है, किन्तु उससे ऐसी आशा कभी नहीं थी कि वह चोर भी होगा।

रोज़ा बोली—चोर! और वान बार्ले! श्रीमान्, कृपा करके ऐसा शब्द अपने मुँहसे न निकालिए। अगर वान बार्लेको मालूम हो गया, तो वह तो इतनेहीसे मर जायगा। अगर किसीने चोरी की है, तो मैं श्रीमान्से शपथके साथ कहती हूँ कि इस आदमीने की है।

बोक्सतेल बोला, इसे प्रमाणित करो।

" हाँ, मैं प्रमाणित करूँगी ओर मुझे आशा है कि परमात्मा मेरी सहायता करेगा। गुले लाला तुम्हारा है न ?"

" हाँ मेरा है।"

" उसके मूलकी कितनी गाँठें थीं ?"

यह प्रश्न सुनकर पहले तो वह हिचकिचाया फिर उसने सोचा कि जिन दो गाँठोंके विषयमें मुझे मालूम है उनके सिवाय कोई और नहीं होती, तो वह यह प्रश्न नहीं पूछती, इसलिए उसने उत्तर दिया—

" तीन।"

" उन गाँठोंका क्या हुआ ?"

" उनका क्या हुआ ? एक तो उगी नहीं, ख़राब हो गई और दूसरीसे यह काला गुले लाला पैदा हुआ है।"

" और तीसरी ?"

" तीसरी !"

" हाँ, तीसरी कहाँ है ?"

यह प्रश्न सुनकर बोक्सतेल चकरा गया। उसे नहीं सूझा कि क्या जवाब दूँ। अन्तमें उसने डरते डरते उत्तर दिया—मैं उसे अपने घरपर छोड़ आया हूँ।

" घरपर ? कहाँ ? लोवेनस्तेनमें या डोर्टमें ?"

" डोर्टमें।"

" तुम झूठ बोलते हो। श्रीमान्, मैं आपको इन तीन गाँठोंकी सच्ची कहानी सुनाती हूँ। पहलीको मेरे पिताने कैदीकी कोठरीमें कुचल दिया और बोक्स-तेलको यह बात मालूम है। यह उसको स्वयं लेना चाहता था और जब इसकी आशापर पिताजीने पानी फेर दिया, तो यह उनसे लड़ तक पड़ा। दूसरी

गाँठको मैंने बोया, जिससे यह काला फूल पैदा हुआ। और तीसरी गाँठ— रोज़ाने उसे अपनी जेबसे निकालकर दिखलाया—तीसरी अन्तिम गाँठ यह है। यह अभीतक उसी कागज़में लिपटी हुई है, जिसमें कि वह बाक़ी दोके साथ प्रारंभसे लिपटी थी। वान बार्लेने वध-वेदीपर जानेसे ठीक पहले ये तीनों मुझे दे दी थीं। लीजिए श्रीमन्, यह लीजिए।"

रोज़ाने पुड़िया खोलकर वह गाँठ राजकुमारको दे दी और उसने उसके हाथसे लेकर उसे ध्यानसे देखा।

बोक्सतेलने टूटे हुए स्वरसे कहा, किन्तु श्रीमन्, इस लड़कीने यह तीसरी गाँठ भी चुरा ली होगी जैसे कि फूल चुराया था।

वह राजकुमारको बड़े ध्यानसे गाँठ देखते देखकर घबराया। रोज़ा अपने हाथमेंके कागज़पर लिखी लाइनोंको पढ़ रही थी। उसके मुखकी भाव-भंगी देखकर वह और भी घबराया।

रोज़ाकी आँखोंमें एक आभा-सी दिखलाई देने लगी। उसने बड़ी उत्कण्ठाके साथ उस रहस्यमय कागज़को बार बार पढ़ा और अन्तमें हर्ष-ध्वनिके साथ उसे राजकुमारके हाथमें देकर कहा—

"पढिए, श्रीमान्, परमात्माके नामपर इसे तो ज़रा पढ़िए।"

विलियमने तीसरी गाँठ वान सीस्तेनको दे दी और वह कागज़ लेकर पढ़ने लगा।

उसे पढ़ते ही वह लड़खड़ा-सा गया। उसके हाथ काँपने लगे और वह कागज़ उसके हाथसे गिर पड़नेको हुआ। उसके मुखपर दुःख और दयाका भाव देखकर डर-सा लगता था।

यह वही बाइबिलसे फाड़ा हुआ पहला पृष्ठ था जिसपर चिट्ठी लिखकर कॉर्नेलियस द'विटने अपने भाई जानके विश्वास-पात्र नौकर क्रेकके हाथ वान बार्लेके पास डोर्ट भेजा था कि जिससे वह मार्किस द'लूबुवा (फ्रांसके युद्ध-सचिव) के साथ महामंत्रीके पत्र-व्यवहारके कागज-पत्रोंके उस बंडलको जला देवे।

यह चिट्ठी इस प्रकार थी—

"प्यारे धर्मपुत्र,—जो कागज़ोंका बंडल मैंने तुझे सोंपा था, उसे जला दे। उसे बिना देखे और बिना खोले ही फ़ौरन जला दे, जिससे कि तुझे मालूम

न होने पावे कि उसमें क्या है। इस प्रकारके गुप्त पत्र जिसके पास पाये जायँगे, उसके लिए प्राणघातक हैं। उसे जला दे और तू कॉर्नेलियस तथा जान द'विटको बचा ले। अब विदा लेता हूँ। मुझे प्यार कर। २० अगस्त सन् १६७२ ई०।

—कॉर्नेलियस द'विट।"

इस काग़ज़के पुर्ज़ेसे वान बार्लेकी निरपराधता और गुले लालाके उसके होनेका प्रमाण मिल गया।

रोज़ा और राजकुमार दोनोंने एक दूसरेकी ओर देखा।

रोज़ाकी दृष्टि कहती थी, देखिए, इस काग़ज़से क्या बात निकलती है?

राजकुमारकी दृष्टि कहती थी, निश्चिन्त रहो और ज़रा ठहरो।

राजकुमारने अपने माथेपरसे ठण्डा पसीना पोंछा, फिर कागज़को धीरे धीरे मोड़ा और अपनी जेबमें रख लिया। उसके विचार उस भूलभुलैयामें घूम रहे थे जिसे पछतावा कहते हैं और जहाँ आगेको रास्ता दिखानेवाला कोई नहीं है, जो बिल्कुल अँधेरी है।

शीघ्र ही उसने किसी तरह अपना सिर उठाकर मामूली स्वरसे कहा—

"महाशय बोक्सतेल, अब आप जाइए। मैं वायदा करता हूँ, आपके साथ न्याय होगा।"

फिर सभापतिकी ओर मुँह फेरकर कहा—

"मेरे प्यारे वान सीस्तेन, आप इस फूल और इस लड़कीको अपने पास रखिए। आप इनका खयाल रक्खें। अच्छा तो मैं जाता हूँ, प्रणाम।

सबने झुककर प्रणाम किया और राजकुमार चला गया। बाहर खड़ी हुई भीड़ने जयजयकारसे आकाश गुँजा दिया।

बोक्सतेल अपने होटलमें लौट आया। वह बड़ा घबराया हुआ और बेचैन था। वह बड़ा डर रहा था कि उस कागज़में ऐसी कौन-सी बात थी जिसे राजकुमारने रोज़ाके हाथसे लेकर और पढ़कर इतनी सावधानीसे अपनी जेबमें रख लिया। इस सबका क्या मतलब है?

रोज़ाने फूलके पास जाकर बड़े प्रेमसे उसकी पँखड़ियोंको चूमा। उसका हृदय प्रसन्नता तथा ईश्वर-विश्वाससे पूर्ण था। उसके मुँहसे ये शब्द निकले—

"ईश्वर तू ही जानता है कि तूने कितने अच्छे अन्तके लिए वान बार्लेको मुझे पढ़ना सिखानेकी प्रेरणा की थी।"

१८-फूलोंका संगीत

जब कि इधर हारलेममें ये घटनाएँ हो रही थीं उधर वान बार्ल लोवेनस्तेनमें अपनी कोठरीमें ग्रीफ़सके हाथों वे सब यातनाएँ भोग रहा था जो कि किसी जेलरके स्वयं जल्लाद बन जानेपर कोई कैदी भोग सकता है।

ग्रीफ़सको रोज़ा या जाकोबकी कुछ खबर नहीं मिली, इस लिए उसने समझ लिया कि यह सब शैतानका काम है और डाक्टर बार्लको पृथ्वीपर शैतानने भेजा है।

इसका फल यह हुआ कि वह जाकोब और रोज़ाके गायब होनेके तीसरे दिन प्रातःकाल अत्यन्त क्रोधमें भरा हुआ वान बार्लके पास गया।

वान बार्ल खिड़कीपर अपनी कोहनी और दोनों हाथोंपर अपना सिर रक्खे खड़ा था। उसकी आँखें दूर क्षितिजपर लगी थीं जहाँ कि डोर्टकी पवनचक्कियोंके पंखे चल रहे थे। वह प्रातःकालीन ताजी वायुका सेवन कर रहा था जिससे कि अपने आँसुओंको थाम सके और अपनी कल्पना तथा विचार-धारामें अपने मनको मजबूत बना सके।

कबूतर अब भी वहीं थे, किन्तु आशा नहीं थी। भविष्यमें कुछ दिखलाई नहीं देता था।

उसके मनमें नाना विचार उठ रहे थे—हाय, अब रोज़ाके ऊपर कड़ी दृष्टि रक्खी जाती है और वह आ नहीं सकती। क्या वह चिट्ठी नहीं लिख सकती? यदि लिख सकती है, तो क्या उसे मेरे पास पहुँचा नहीं सकती?

नहीं, नहीं। कल और परसों बुड्ढे ग्रीफ़सकी आँखोंसे बेहद क्रोध और द्वेष टपक रहा था। यह आशा नहीं कि वह रोज़ाके ऊपर अपनी कड़ी देख-भाल एक क्षणके लिए भी ढीली करे। और मैंने अभी वियोगकी तथा एक कोठरीमें बंद कर दिये जानेकी यातनाके सिवा और कोई बड़ी यातना भी तो नहीं सही। इस शराबी पशुने यूनानी नाटकोंमें वर्णित उन निर्दय पिताओंकी तरह अपना बदला तो नहीं लिया है? जब शराबने उसके दिमाग़को गरम कर दिया होगा, तब उसके हाथमें, जिसको कि मैंने इतनी अच्छी तरह बैठा दिया था,

क्या दूनी शक्ति नहीं आ गई होगी ? और ग्रीफ़सने रोज़ासे शायद दुर्व्यवहार किया हो, यह विचार मनमें आते ही वान बार्ले पागल-सा हो गया।

तब उसको अपनी शक्तिहीनताका अनुभव हुआ। उसने अपने मनसे पूछा कि ईश्वर दो निरपराध प्राणियोंको इतने कष्ट दे रहा है, क्या यह न्याय है ? इस समय उसको ईश्वरकी न्यायकारितामें अविश्वास-सा होने लगा। दुर्भाग्य बहुधा अविश्वास और सन्देह पैदा कर देता है।

फिर वान बार्लेने रोज़ाको चिट्ठी लिखनेका विचार किया, किन्तु उसे मालूम नहीं था कि वह कहाँ है।

यदि वह लिख सकता, तो हेगको भी चिट्ठी लिखना चाहता था, जिससे कि वह अधिकारियोंको पहले ही ग्रीफ़ससे सावधान कर दे, क्योंकि उसे निश्चय था कि ग्रीफ़स मेरे विरुद्ध शिकायत करके मेरे ऊपर और नई आपत्तियाँ ढहाने-का पूरा उद्योग करेगा।

किन्तु वह लिखता कैसे ? ग्रीफ़सने उसकी पेंसिल और कागज़ तो पहले ही ले लिये थे और यदि ये चीज़ें उसके पास होतीं भी, तो ग्रीफ़ससे उसकी चिट्ठीको भेज देनेकी कैसे आशा की जा सकती थी ?

तब वान बार्लेके मनमें वे सब उपाय आने लगे जिनका कि अभागे क़ैदी आश्रय लिया करते हैं।

उसने भाग निकलनेके प्रयत्नके विषयमें सोचा। जब तक वह रोज़ाको प्रतिदिन देख सकता था, तब तक यह विचार कभी स्वप्नमें भी उसके मनमें नहीं आया था। किन्तु वह इसपर जितना ही अधिक विचार करता था, उसे भागनेका प्रयत्न उतना ही अधिक असंभव दिखाई देता था। वह उन ऊँची आत्माओंमेंसे था जो कि सदा विशिष्ट मार्गपर चलना पसन्द करते हैं, सर्व साधारणके मार्गपर नहीं। इस साधारण जनानुगत मार्गपर चलकर ही हम अपने अधिकांश उद्देश्योंको प्राप्त करते हैं, किन्तु ये ऊँची आत्माएँ उसपर न चलनेके कारण बहुधा अच्छे मौक़े खो देती हैं।

वान बार्ले विचारने लगा, यह संभव नहीं कि मैं लोवेनस्तेनेस उस तरह भाग जाऊँ, जिस तरह कि ग्रोशियस भाग गया था। तबसे हरएक बातका ध्यान रक्खा जाता है। खिड़कियोंमें जंगले लगा दिये गये हैं, किवाड़ दुगने तिगुने मजबूत लग गये हैं, संतरी दसगुनी होशियारीसे पहरा देते हैं। और यह ग्रीफ़स भी

तो बड़ा भयानक है। वह द्वेषके कारण गिद्धकीसी आँखोंसे मुझे देखता रहता है।

रोज़ाका अभाव ही मुझे शक्तिहीन बनाये हुए है। अब यदि मैं खिड़कीके गज़ोंको काटनेके लिए छैनी तैयार करूँ और नीचे उतरनेके लिए रस्सी बटूँ, तो मुझे इसमें दस बरस लग जायँगे, क्योंकि मेरे पास इसका कोई सामान नहीं है। और यदि मैंने छैनी बना भी ली और रस्सी बट भी ली, तो संभव है कि छैनी भौंथली हो जाय या रस्सी नीचे उतरते हुए टूट जाय, तब मैं तो मर जाऊँगा। मुझको कोई आदमी टूटे हाथ या बिना टाँगोंका पाकर उठा ले जायगा और मैं हेगके अजायबघरमें रक्खा जाऊँगा।

जबसे मुझे रोज़ाको देखनेका आनन्द प्राप्त नहीं हुआ और विशेषतः जबसे मेरा गुले लाला खोया गया, तबसे मेरा धीरज भी चला गया। एक न एक दिन ग्रीफ़स मुझपर ज़रूर ऐसा आक्रमण करेगा जो कि मेरे आत्म-सम्मान या प्रेमके लिए असह्य होगा, या मेरे शरीरको ही उससे हानि पहुँचेगी और मैं सुरक्षित नहीं रहूँगा। जबसे मैं कैद हुआ हूँ, तबसे मुझमें एक प्रकारका विचित्र लड़ाकूपन आ गया है। न मालूम इसका क्या कारण है। अच्छा तो मैं उस बदमाशकी गर्दन पकड़कर घोंट दूँगा।

इतना कहकर वान बार्ले ज़रा ठहर गया। वह होंठ चबा रहा था और सामनेकी ओर घूर रहा था। इसी समय उसके मनमें एक विचित्र विचार आया। उससे उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। वह सोचने लगा—

अच्छा, उसका गला घोंटकर मैं क्यों न उसकी चाबियोंका गुच्छा ले लूँ; मैं क्यों न जीनेसे उतरकर नीचे चला जाऊँ, मानों मैंने कोई बड़ा अच्छा कार्य किया हो; मैं क्यों न रोज़ाके कमरेमें जाकर उसे बुला लाऊँ; मैं क्यों न सब घटना उससे कह दूँ और फिर उसकी खिड़कीसे वाल नदीमें कूद पड़ूँ? मैं तो बड़ा चतुर तैराक हूँ, मैं दोनोंको बचा सकता हूँ। रोज़ा! ओह परमात्मन्, ग्रीफ़स उसका पिता है! वह मुझसे चाहे कितना ही प्यार करती हो और ग्रीफ़स मुझसे चाहे कितना ही द्वेष और दुर्व्यवहार करता हो, वह अपने पिताके वधको कभी सहन नहीं कर सकेगी। मेरे मित्र वान बार्ले, यह नहीं हो सकता, यह उपाय तो बहुत बुरा है। किन्तु मेरा क्या होगा? और मुझे रोज़ा कैसे मिलेगी?

रोज़ाका वियोग होनेसे तीन दिन बाद, जब कि वान बार्ले अपनी खिड़कीके पास खड़ा था, उसके मनमें उपरिलिखित विचार-तरंगें उठ रही थीं।

इसी समय ग्रीफ़सने कोठरीमें प्रवेश किया

उसके हाथमें एक मोटी लकड़ी थी। उसकी आँखें द्वेषसे चमक रही थीं और उसके होठोंपर भी द्वेषसूचक मुसकराहट थी। उसके सारे शरीर और उसकी चाल-ढालसे उसका बुरा और द्वेषपूर्ण इरादा प्रकट होता था।

वान बार्लेने उसके आनेकी आवाज़ सुनी। वह समझ गया कि ग्रीफ़स है, किन्तु उसने मुँह फेरकर नहीं देखा, क्योंकि उसे मालूम था कि उसके पीछे रोज़ा नहीं आ रही है। क्रोधी मनुष्य जिसपर अपना क्रोध निकालना चाहता है, वह यदि उसकी ओर ध्यान भी न दे, तो उसे और कोई बात इतनी बुरी नहीं लगती जितनी कि यह। जब कोई कुछ ख़र्च कर चुकता है या कुछ पूँजी लगा चुकता है, तो वह उसे व्यर्थ नहीं खोना चाहता। जब किसीको क्रोध आ जाय और उसका खून उबलने लगे, तो वह चाहता है कि कमसे कम एक बार अच्छी तरह झगड़ तो लूँ।

वान बार्ले अपने होठोंमें फूलोंका गीत गुनगुना रहा था। यह गीत बड़ा मनोहर और उदासी-भरा है—

छिपी हुई जो अग्नि विश्वमें, उसके पुत्र हमें मानो,
ओस-कणोंके या ऊषादेवीके पुत्र हमें जानो।
कौन जनक है सलिल या पवन, यह विवाद तुम मत ठानो,
हैं हम स्वर्गलोककी सन्तति, देखो, हमको पहचानो॥

इस गीतका उदासीपूर्ण राग शान्त और माधुर्यपूर्ण स्वरसे और भी ऊँचा हो गया था। उसको सुनकर ग्रीफ़सके क्रोधका पारा और ऊँचा चढ़ गया।

वह पत्थरके फ़र्शपर ज़ोरसे अपनी लाठीको पटककर चिल्लाया—

"गवैये महाराज, मुझे देखा कि नहीं?"

वान बार्लेने मुँह फेरकर नमस्कार किया और फिर गाना शुरू कर दिया—

प्यार किया करते हैं जो जन, वही प्राण भी हर लेते,
क्षणभंगुर यह प्राण-सूत्र है, क्षणमें इसे काट देते।
मूल जीवनाधार क्षीण है, पर अक्षीण स्वर्ग-जीवन,
भुजा उठाकर स्वर्ग ओर हम, बतलाते हैं यह क्षण क्षण॥

ग्रीफ़स गर्जकर बोला, ओ शैतान जादूगर, तुम मेरी हँसी उड़ा रहे हो ?

वान बार्ले फिर गाने लगा—

स्वर्गलोकके वासी हम हैं, उसके ही हम कहलाते ।
सच्चा घर है वही हमारा, और वहींसे हम आते ॥
सौरभरूप हमारा आत्मा, उसे स्वर्गसे हम पाते ।
क्षणभर रहकर इस भूतलपर, फिर बस वहीं लौट जाते ॥

ग्रीफ़सने कैदीके पास जाकर कहा,—

" तुम देखते नहीं कि मैंने तुम्हें वशीभूत करने और तुमसे अपराध स्विकार करानेकी तैयारी की है ? "

वान बार्लेने पूछा, मेरे प्यारे मास्टर ग्रीफ़स, क्या तुम पागल हो गये हो ?

उसने पहले ही पहल बूढ़े जेलरके क्रुद्ध चेहरे, चमकती हुई लाल आँखों और झागसहित मुँहको देखा था, इस लिए वह बोला—मालूम होता है तुम क्रोधसे पागल हो गये हो ।

ग्रीफ़सने जोरसे लाठी घुमाई । किन्तु फिर भी वान बार्ले नहीं हिला । वह उसी तरहसे अपनी कुहनियाँ टेके बैठा रहा और बोला—मास्टर ग्रीफ़स, क्या तुम मुझे डराना और पीटना चाहते हो ?

" हाँ, मैं पीटूँगा । "

" किस चीजसे ? "

" तुम देखते नहीं, मेरे हाथमें क्या है ? "

वान बार्ले शान्तिसे बोला, मैं समझता हूँ कि वह लाठी है, एक मोटी लाठी। किन्तु मैं नही समझता कि तुम मुझे उससे पीट सकेत हो ।

" ओह तू नहीं समझता ? क्यों नहीं ? "

" क्योंकि यदि कोई जेलर कैदीको पीटता है, तो उसे दो दण्ड मिलते हैं । पहला वह, जो लोवेनस्तेनकी नियमावलीकी ९ वीं धारामें इस तरह लिखा है—

" जो कोई जेलर, या उसका कोई सहायक किसी राजकीय कैदीपर हाथ उठायेगा, वह बरखास्त कर दिया जायगा । "

ग्रीफ़स क्रोधान्ध होकर बोला—हाँ, जो हाथ उठायेगा। किन्तु धारामें लाठीके विषयमें कुछ नहीं लिखा ।

वान बार्ले बोला, और दूसरा दण्ड वह जो कि धारामें नहीं लिखा; किन्तु इंजील (बाइबिल) में लिखा है—

" जो तलवारसे मारेगा वह तलवारसे मारा जायगा। "

" जो लाठी उठायेगा, वह लाठी खायगा। "

वान बार्लेका शान्त और गंभीर स्वर देखकर ग्रीफ़सका क्रोध और भड़कता जाता था। उसने अपनी लाठी मारनेके लिए ऊपरको उठाई, किन्तु तत्काल ही वान बार्लेने उसके हाथसे उसे छीनकर अपने अधिकारमें कर लिया।

क्रोधके मारे ग्रीफ़स भेड़ियेकी तरह गुर्राने लगा।

वान बार्ले बोला, भले आदमी, कोई ऐसा काम मत करो, जिससे तुम्हें अपना पद खोना पड़े।

ग्रीफ़स गरजकर बोला, अरे जादूगर, मैं तुझे चुटकीसे कुचल दूँगा।

" अच्छा; तो कुचल दो।"

" तू देखता है, मैं खाली हाथ हूँ। "

" हाँ, मैं यह देखता हूँ और इससे प्रसन्न हूँ। "

" तू जानता है कि मैं सुबहको कोई विशेष कारण होनेपर ही आता हूँ। "

" हाँ ठीक है। तुम साधारणतः मेरे लिए रद्दीसे रद्दी दाल और रद्दीसे रद्दी भोजन लाते हो। किन्तु मेरे लिए यह कोई दण्ड नहीं है। मैं तो केवल रोटी खाता हूँ और जो रोटी जितनी ही बुरी होती है वह मुझे उतनी ही अच्छी लगती है। "

" कैसे ? "

" यह तो बिलकुल मामूली बात है। "

" मुझे बता तो सही। "

" बहुत अच्छा, बतलाता हूँ। मैं जानता हूँ कि मुझे बुरी रोटी केवल मुझे कष्ट पहुँचानेके लिए दी जाती है। "

" जरूर, तो क्या मैं बुरी रोटी तुझे खुश करनेके लिए देता हूँ ? अरे डाकू !

" अच्छा, तुम तो जानते ही हो कि मैं जादूगर हूँ। इसलिए मैं बुरी रोटीको अच्छी रोटी बना लेता हूँ और वह मुझे हलुवे-पूरीसे भी अच्छी लगती है। तब

मुझे दूना आनन्द होता है, एक तो बढ़िया चीज़ खानेको मिलती है, दूसरे तुम्हारा क्रोध भड़कता है। ”

ग्रीफ़सने क्रोधसे गरजकर जवाब दिया—

“ तो तू स्वीकार करता है कि तू जादूगर है ? ”

“ मैं जादूगर अवश्य हूँ; परन्तु मैं यह बात सब आदमियोंके सामने नहीं कहता, क्योंकि लोग जान जायँगे, तो वे मुझे जीता जला देंगे जैसे कि उन्होंने ग्रोफेदी और उर्बै म्रान्द्रियेको जला दिया था। किन्तु यहाँ तो कोई सुननेवाला नहीं है, इस लिए मैं तुमसे कहता हूँ। ”

“ अच्छा, जब जादूगर बाजेरकी रोटीको गेहूँकी रोटी बना सकता है, तो उसे बिल्कुल रोटी ही न दी जायगी और इससे वह मर थोड़े ही जायगा। ”

“ क्यों नहीं मरेगा ? ”

“ अच्छा तो मैं कलसे बिल्कुल रोटी नहीं लाऊँगा। आठ दिनके बाद हम देखेंगे कि क्या होता है। ”

यह सुनकर वान बार्ल पीला पड़ गया।

ग्रीफ़स बोला, मैं आजहीसे क्यों न यह काम शुरू करूँ ! तू जब ऐसा होशियार जादूगर है, तो अपने कमरेके सामानको रोटी बना ले। मुझे तेरे भोजनके लिए जो १५ पैसे रोज़ मिलते हैं, उन्हें मैं अपनी जेबमें रक्खूँगा।

इस भयानक मृत्युके विचारसे वान बार्लके मनमें जो स्वाभाविक भय पैदा हुआ, उसके वशीभूत होकर वह बोला, वह तो वध होगा !

ग्रीफ़स पहलेकी तरह ताना देते हुए बोला, तू तो जादूगर है, इसलिए रोटीके बिना भी जी सकता है।

वान बार्ल अपने मुखपर फिर मुसकराहट ले आया और बोला—क्या तुमने मुझे डोर्टसे कबूतरोंको यहाँ बुलाते नहीं देखा ?

“ देखा है। पर इससे क्या ? ”

“ कबूतर तो बहुत बढ़िया भोजन है और जो आदमी रोज़ एक कबूतर खाता है वह, मैं समझता हूँ, मर नहीं सकता। ”

“ किन्तु पकानेके लिए आग कहाँसे आयगी ? ”

“ आग ! तुम तो जानते ही हो कि मैं शैतानसे मेल रखता हूँ। तब क्या शैतान आग भी नहीं देगा ? आग तो उसका एक अंग-सा ही है। ”

" आदमीकी पाचन-शक्ति चाहे कितनी ही अच्छी क्यों न हो, वह एक कबूतर रोज़ नहीं खा सकता। बहुत आदमियोंने इसके लिए शर्त बदी, किन्तु उन्हें हार खानी पड़ी। "

" अच्छा, जब कबूतरोंसे मेरा मन भर जायगा, तो मैं यहाँ वाल और मेज नदीकी मछलियोंको खिंचवा मँगाऊँगा। "

ग्रीफ़सने खिसियाकर अपनी आँखें फाड़कर देखा।

वान बार्ले बोला—मुझे मछलीका बड़ा शौक है। तुम तो मुझे देते ही नहीं। तुम मुझे भूखों मारोगे, तो उससे भी मैं फायदा उठाऊँगा और खूब मछलियाँ खाऊँगा।

ग्रीफ़स क्रोध और भयके मारे मूर्छित-सा होने लगा; किन्तु शीघ्र ही अपने आपको सँभालकर जेबमें हाथ डालते हुए और यह कहते हुए कि तू मुझे इसके लिए बाधित करता है उसने अपनी जेबसे एक चाकू निकाल लिया।

वान बार्लेने लाठीसे आत्म-रक्षाकी तैयारी करते हुए कहा—अच्छा, चाकू है!

२९-वान बार्ले और ग्रीफ़स

कुछ देरतक दोनों चुपचाप खड़े रहे। ग्रीफ़स चाकू चलानेका मौक़ा देख रहा था और वान बार्ले आत्म-रक्षा कर रहा था।

वान बार्लेने सोचा कि इस स्थितिका तो कहीं अन्त ही न आयगा। वह जानना चाहता था कि जेलरको इतना अधिक क्रोध क्यों आ गया है, इसलिए उसने पूछा—अच्छा, तो तुम मुझसे चाहते क्या हो?

" मैं क्या चाहता हूँ! मैं चाहता हूँ कि तू मुझे मेरी बेटी लौटा दे। "

" तुम्हारी बेटी! "

" हाँ मेरी बेटी रोज़ा, जिसे तूने जादूके बलपर मुझसे छीन लिया है। मुझे बता दे कि वह कहाँ है? "

" तो क्या रोज़ा लोवेनस्तेनमें नहीं है? "

" यह तो तू भी अच्छी तरह जानता है कि नहीं है। अब यह बतला कि तू उसे लौटायगा या नहीं? "

" अच्छा, तुम मेरे लिए यह जाल फैला रहे हो ? "

" मैं तुझसे अन्तिम बार पूछता हूँ। मुझे बतायगा या नहीं कि मेरी बेटी कहाँ है ? "

" यदि तू नहीं जानता, तो अरे बेवकूफ़, अनुमान तो कर। "

ग्रीफ़स क्रोधके मारे लाल हो गया। उसके होंठ थरथर काँप रहे थे। उसका मस्तिष्क चकरा रहा था। वह गर्जता हुआ बोला—तो तू कुछ नहीं बतलायगा? अच्छा तो मैं तेरे दाँत निकाल लूँगा !

वह वान बार्लेकी ओर बढ़ा और चाकू दिखलाते हुए बोला—यह चाकू देखता है न ? मैंने पचासों काले मुर्गोंको इससे मार डाला है और मैं शपथ करता हूँ कि इससे उनके दादा शैतानको भी मार डालूँगा।

" अरे बदमाश, क्या तू सचमुच ही मुझे मारना चाहता है ? "

" मैं तेरा कलेजा निकाल लूँगा और उसमें देखूँगा कि तूने मेरी बेटीको कहाँ छिपा रक्खा है। "

यह कहकर ग्रीफ़स क्रोधान्ध होकर वान बार्लेकी ओर लपका। वान बार्लेने पीछे हटकर और मेजके पीछे जाकर बड़ी कठिनतासे इस पहले वारको बचाया; किन्तु ग्रीफ़स चाकू घुमा-घुमाकर उसे डराता ही रहा। वान बार्ले यद्यपि चाकूकी पहुँचसे बाहर था, फिर भी उसे डर था कि जब तक उस क्रोधान्ध पागलके हाथमें चाकू रहेगा, तब तक वह न मालूम कब फेंककर मार दे। इस लिए उसने समय न खोकर लाठी उठाई और जेलर जिस हाथमें चाकू पकड़े हुए था उसकी कलाईपर ज़ोरसे मार दी।

चाकू जमीनपर गिर पड़ा और वान बार्लेने उसे अपने पैरके नीचे दबा लिया।

तब ग्रीफ़स अपनी कलाईके दर्द और दो बार निहत्था कर दिये जानेकी लज्जाके कारण लड़ाई करनेपर तुला हुआ दिखाई दिया, यद्यपि उसके हाथमें कुछ नहीं था। अब वान बार्लेने इस झगड़ेका अन्त ही कर देनेके लिए वीरोंकी तरह अपने आपको वशमें रखकर उसीकी लाठीसे उसकी खूब खबर ली !

ग्रीफ़सको क्षमा प्रार्थना करनेमें देर न लगी। किन्तु क्षमा-प्रार्थना करनेसे पहले वह सहायताके लिए खूब चिल्लाया था और उसकी चिल्लाहट सुनकर जेलके

सारे कर्मचारी उस ओर दौड़ पड़े थे। आख़िर दो सहायक जेलर, चार सिपाही और एक इन्स्पेक्टर फौरन आ गये। जिस समय वे आये, उस समय वान बार्ले चाकूको पैरके नीचे दबाये हुए लाठी चला रहा था।

इन गवाहोंने न पूरी घटना देखी थी और न उन्हें वान बार्लेको क्रोध आनेका असली कारण मालूम था, इस लिए वान बार्लेने समझा कि अब मैं मारा गया।

सच मुच ही सब बातें उसके विरुद्ध दिखाई देती थीं।

क्षणभरमें उन लोगोंने वान बार्लेके हाथसे लाठी छीन ली, चाकू भी छुड़ा लिया। ग्रीफ़सको उठाकर बैठाया। वह क्रोध और दर्दसे चिल्लाकर अपनी पीठ-पर पर्वतश्रेणीकी तरह उभरी हुई खरोंठोंको गिनने लगा।

कैदीके जेलपर किये हुए आक्रमणकी रिपोर्ट फौरन तैयार की गई। वह स्वयं ग्रीफसके किये हुए बयानके आधारपर थी, इस लिए उसके नरम होनेकी तो आशा की ही नहीं जा सकती। उसमें कैदीपर यह आरोप लगाया गया कि उसने बहुत पहलेसे तैयारी करके जेलरको मार डालनेका यत्न और खुला राज-विद्रोह किया।

जब ग्रीफ़स अपना बयान दे चुका, तो उसकी वहाँ कोई आवश्यकता न रह गई। इस लिए सहायक उसे उसके घर ले गये। वह ज़ोर ज़ोरसे कराह रहा था और उसके तमाम शरीरपर मारके चिह्न थे।

अब सिपाही लोग दया करके वान बार्लेको लोवेनस्तेनके कानून-कायदे सुनाने लगे; यद्यपि वह उन्हें पहलेसे ही जानता था। वह जब लोवेनस्तेनमें नया नया आया था, तभी वे उसे पढ़कर सुनाये गये थे और इस लिए उनकी कुछ धाराएँ उसे पूरी पूरी याद थीं।

और और बातोंके साथ उन्होंने पाँच वर्ष पहले सन् १६६८ में मैथियस नामक क़ैदीपर इस धाराके पूरे तौरसे काममें लाये जानेकी घटना भी विस्तारसे सुनाई। उन्होंने कहा कि इस क़ैदीने तुमसे कहीं कम भयंकर विद्रोह किया था। जो दाल उसको दी गई थी वह बहुत गरम थी, इससे चिढ़कर उसने उसे जेलरके मुँहपर दे मारा! इस दाल-स्नानसे जेलरकी त्वचा उभर आई और ज्यों ही उसने अपना मुँह पोंछा, वह खाल उतर पड़ी।

मैथियस १२ घंटेके अंदर जेलरके दफ्तरमें ले जाया गया। वहाँ उसके

लोवेनस्तेन छोड़नेकी बात रजिस्टरमें दर्ज की गई और फिर उसको मैदानमें ले गये। मैदानके आसपासका दृश्य बड़ा सुहावना दिखाई देता था। वहाँ उसके हाथोंमें हथकड़ी डालकर आँखोंपर पट्टी बाँध दी गई और उससे परमात्माकी प्रार्थना करनेको कहा गया। इसके बाद वह घुटनोंके बल बिठाया गया और तब लोवेनस्तेनके बारह सिपाहियोंने सारजंटका इशारा पाकर उसके ऊपर एक एक गोली दाग़ दी। इस प्रकार मैथियसका काम तमाम हो गया।

वान बार्लेने इस सुमधुर वर्णनको बड़े ध्यानसे सुना और कहा—तुमने कहा न कि १२ घंटेके अन्दर ही?

"हाँ, मैं समझता हूँ कि १२ घंटे भी पूरे नहीं हुए थे।"

वान बार्ले बोला, धन्यवाद।

सिपाही जिस मुसकराहटके साथ यह कहानी सुना रहा था, वह अभीतक उसके मुखपर विद्यमान ही थी कि इसी समय ज़ीनेसे किसीके आनेकी आवाज़ सुनाई दी।

आते हुए एक अफ़सरको रास्ता देनेके लिए सिपाही हटकर खड़े हो गये। लोवेनस्तेनका लेखक अभी अपनी रिपोर्ट लिख ही रहा था कि इस अफ़सरने क़ैदीकी कोठरीमें प्रवेश किया।

उसने पूछा, क्या यही ७ नम्बरका क़ैदी है?

सिपाहियोंके मुखियाने उत्तर दिया—हाँ, कप्तान महाशय।

"तो यह वान बार्ले नामक क़ैदीकी कोठरी है?"

"हाँ, कप्तान साहब।"

"क़ैदी कहाँ है?"

वान बार्ले बोला, मैं यहाँ हूँ महाशय।

अपने पूरे साहसके रहते हुए भी वह पीला-सा पड़ गया।

अब अफ़सरने स्वयं क़ैदीको संबोधन करके पूछा, क्या आपका ही नाम डाक्टर कॉर्नेलियस वान बार्ले है?

"हाँ महाशय।"

"तो मेरे साथ आइए।"

मृत्युके प्रथम भयसे वान बार्लेका हृदय दबा जा रहा था। वह अपने मनमें

कह रहा था—ओह! ओह! लोवेनस्तेनमें ये लोग कितनी जल्दी कार्रवाई कर देते हैं! किन्तु वह बदमाश तो मुझसे १२ घंटेकी बात कहता था!

उस खबरें देनेवाले सिपाहीने अपराधीके कानमें कहा—देखो, मैंने तुमसे सच कहा था न?

"झूठ, बिलकुल झूठ।"

"कैसे?"

"तुमने बारह घंटेकी बात कही थी।"

"हाँ, किन्तु यहाँ तुम्हारे लिए स्वयं नवाब साहबका निजी सहायक और उनका अत्यन्त विश्वास-पात्र साथी वान डेकेन आया है। बेचारे मैथियसको इतना आदर कहाँ प्राप्त हुआ था?"

वान बार्लेने लंबा साँस खींचकर कहा, आओ, आओ, मैं इन लोगोंको दिखला दूँगा कि एक ईमानदार हालैंडवासी, कॉर्नेलियस द'विटका धर्मपुत्र, बिना पीछे हटे, मजेसे उतनी गोलियाँ खा सकता है जितनी मैथियसने खाई थीं।

यह शब्द कहते कहते और गर्वसे मस्तक ऊँचा किये वह लेखकके सामने गया। लेखकने अपने कामके बीचमें विघ्न पड़ा देखकर यह कहनेका साहस किया—किन्तु कप्तान साहब, रिपोर्ट तो पूरी हुई ही नहीं।

अफसरने उत्तर दिया, उसका पूरा करना अनावश्यक है।

लेखकने कहा—अच्छा! और अपने कागज-कलमको उसने अलग उठाकर रख दिया।

वान बार्ले सोचने लगा, मेरे भाग्यमें यही लिखा था कि मैं इस संसारमें न तो किसी संतानको, न किसी फूलको, और न किसी पुस्तकको अपना नाम दे जाऊँ। इन ही तीन वस्तुओंसे मनुष्यकी यादगार रहती है।

किन्तु अपने दुःखपूर्ण विचारोंको दबाकर दृढ़ हृदयसे ऊँचा सिर किये हुए वह अफ़सरके साथ चला। वे दोनों सीढ़ियाँ उतरकर मैदानकी ओर चले। बेचारे क़ैदीको सबसे अधिक भय इस बातका था कि जीवन-यात्राके अन्तकी ओर जाते समय अब वह ग्रीफ़सको तो देखेगा, किन्तु रोज़ाको नहीं। पिताकी आँखोंमें तो उन्मादपूर्ण संतोष होगा और पुत्रीकी आँखोंमें निराशामय शोक!

रोज़ा और उसके पोषित पुत्र काले फूलका ध्यान आते ही उस पुष्प-प्रेमीको अपने आँसू रोकनेके लिए अपना सारा मनोबल खर्च कर देना पड़ा।

वह अपनी दाईं-बाईं ओर देखता जाता था, किन्तु उसे न तो रोज़ा दिखाई दी और न ग्रीफ़्स ही।

मैदानमें पहुँचनेपर वह इधर उधर देखने लगा कि मुझे गोली मारनेके लिए सिपाही कहाँ हैं। एक जगह उसे दस बारह सिपाही दिखाई भी दिये; किन्तु वे न तो एक पंक्तिमें खड़े थे और न उनके हाथमें बंदूकें थीं। वे ऐसे आनन्दसे बात-चीत कर रहे थे कि उन्हें देखकर वान बार्लेके हृदयको बड़ी चोट पहुँची।

अकस्मात् ग्रीफ़्स लड़खड़ाता हुआ एक टेढ़ी लकड़ीका सहारा लिये अपने घरसे निकल आया। उस बुड्ढेकी बिल्लीकी-सी भूरी आँखें चमक रही थीं और उनसे घृणा टपकी पड़ती थी। उसने वान बार्लेके प्रति ऐसी बुरी बुरी घृणित गालियोंकी बौछार शुरू कर दी कि वान बार्ले सहन न कर सका और बोला—महाशय, यह बहुत अनुचित है कि यह आदमी मेरा इस तरहसे अपमान करे, विशेषतः ऐसे समय।

अफसर हँसता हुआ बोला, मेरी बात सुनो, यह भला मानस तुमसे नाराज़ है, इसलिए गाली देना इसके लिए बिलकुल स्वाभाविक है। मालूम होता है, तुमने इसकी खूब खबर ली है।

"किन्तु महाशय, वह सब तो मैंने आत्म-रक्षार्थ किया था।"

अफसरने बड़े भारी विचारक दार्शनिककी तरह अपने कंधे ऊपर उठाते हुए कहा, कुछ परवा नहीं, उसे बकने दो। तुम्हारा उससे क्या बनता-बिगड़ता है?

ये शब्द सुनकर वान बार्लेके माथेपर ठंडा पसीना आ गया। उसने इसको अपने लिए बड़ा भारी उपहास और अपमान समझा, विशेषतः इसलिए, कि ये शब्द स्वयं नवाबकी सेवामें नियुक्त अफ़सरके मुँहसे निकले।

अभागे पुष्प-प्रेमीने तब समझ लिया कि न मेरा कोई सहारा है और न कोई मित्र। उसने तब अपने आपको भाग्यके सहारे छोड़ दिया। उसने अपना मस्तक झुकाते हुए धीरेसे कहा—हे प्रभो, तेरी इच्छा पूर्ण हो।

मालूम होता था कि अफ़सर बड़ी शान्तिसे उसकी ईश-प्रार्थना पूरी करनेकी प्रतीक्षा कर रहा है। फिर उसने अफ़सरसे पूछा—महाशय, बतलाइए, मुझे कहाँ जाना है।

अफ़सरने एक चार घोड़ोंकी गाड़ीकी ओर निर्देश किया। उसे देखकर उसे उस गाड़ीकी याद आ गई, जिसने ऐसी दशामें पहले बुटेनहोफ़में उसका ध्यान आकृष्ट किया था।

अफ़सरने कहा, बैठिए।

वान बार्ले अपने आप धीरेसे कहने लगा, मालूम होता है कि ये मुझे मैदानका सम्मान नहीं देना चाहते।

उसके इन शब्दोंको उस बहुत बोलनेवाले सिपाहीने सुन लिया। वह अभी तक उसके पीछे पीछे आ रहा था।

उस दयालु आदमीने यह अपना कर्तव्य समझा कि वह वान बार्लेको नई खबर दे। अफ़सर कोचवानसे कुछ कहनेमें लगा था कि उसने धीरेसे आकर वान बार्लेके कानमें कहा—कभी कभी फाँसी देनेके लिए कैदियोंको उनके अपने शहरमें ले जाते हैं जिससे कि सब लोग देखकर आगेके लिए भयभीत हो जायँ। फिर उनको उनके अपने घरके सामने फाँसी देते हैं। ये सब काम परिस्थितिके अनुसार किये जाते हैं।

वान बार्लेने, इशारेसे उसे धन्यवाद देकर, अपने मनमें कहा यह आदमी, जब कभी मौका आता है, सान्त्वना देनेसे नहीं चूकता। मेरे मित्र, मैं सचमुच ही तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ। अब विदा लेता हूँ। नमस्कार।

गाड़ी चल दी।

ग्रीफ़स कैदीको अपने पंजेसे निकलता देखकर उसकी ओर मुक्का तानकर बोला—अरे सूअर, पाजी! यह कैसे शर्मकी बात है कि तू मेरी बेटीको बिना लौटाये यहाँसे चला जाता है!

वान बार्ले सोचने लगा, यदि ये लोग मुझे कोर्ट ले जायँगे, तो मुझे रास्तेमें अपना घर देखनेको मिलेगा। मैं वहाँ देखूँगा कि मेरी फूलोंकी क्यारियाँ बहुत खराब तो नहीं हो गई।

३०-वान बार्लेके दण्डका अनुमान

गाड़ी सारे दिन चलती रही। वह डोर्टकी दाई ओरको गुज़री, फिर राटरडम होती हुई डेल्फ पहुँच गई। सायंकाल पाँच बजे तक वे लोग कमसे कम साठ मील चल चुके थे।

वान बार्लेने अपने साथी पहरेदार और अफ़सरसे कुछ प्रश्न किये, किन्तु उसे कुछ भी उत्तर न मिला।

वान बार्लेको बड़ा दुःख था कि वह बहुत बोलनेवाला सिपाही अब साथमें नहीं था जो कि बिना पूछे ही अनेक बातें बतलाता था। यदि वह होता, तो इस यात्राके अन्तिम भागका वर्णन दया करके ज़रूर ही विस्तारके साथ करता जैसे कि पहले भागोंका किया था।

इन यात्रियोंने रात्रि गाड़ीमें ही बिताई। अगले दिन सुबह वान बार्लेने देखा कि वह लीडनसे परे पहुँच चुका है और उत्तरी सागर उसके बाईं ओर और हारलेमकी खाड़ी दाईं ओर है।

तीन घंटे पश्चात् वे हारलेम पहुँच गये।

वान बार्लेको कुछ मालूम नहीं था कि हारलेममें क्या हो रहा था और जब तक कि घटनाक्रम स्वयं न बतला दे, हम भी कुछ न बतलायँगे।

किन्तु पाठकोंको हमारे नायकसे भी पहले जाननेका अधिकार है और उन्हें प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी।

हम देख चुके हैं कि राजकुमार विलियमने रोज़ा तथा गुले लालाको अनाथ बहन और भाईके समान सभापति वान सीस्तेनके घर छोड़ दिया था।

रोज़ाने जिस दिन राजकुमारसे स्वयं सम्मुख बातचीत की थी, उस दिन सायं-काल तक उसे कोई समाचार नहीं मिला।

सायंकालके समय एक अफ़सर वान सीस्तेनके घर आया। उसने कहा कि राजकुमार रोज़ाको टाउनहालमें बुलाते हैं।

वहाँ पहुँचकर रोज़ाने राजकुमारको, बड़े कौंसिल हालमें लिखते हुए, पाया। वह अकेला था। उसके पैरोंपर फ्रीज़लैंडका एक बड़ा शिकारी कुत्ता था। वह अपने मालिककी ओर बड़े ध्यानसे देख रहा था, मानो यह विश्वस्त जन्तु वह काम कर रहा था जो कि मनुष्य भी नहीं कर सकता, अर्थात् वह मालिकके मुखपर उसके मनकी बातें पढ़ना चाहता था।

विलियम थोड़ी देरतक लिखता रहा। फिर सिर उठाकर रोज़ाको द्वारके पास खड़े देखकर उसने, कलमको हाथमें लिये ही लिये, कहा—बेटी, यहाँ आओ।

रोज़ा मेज़की ओर बढ़ी। राजकुमारने उससे बैठनेको कहा।

रोज़ाने उसकी आज्ञाका पालन किया, क्योंकि राजकुमार उसकी ओर देख रहा था, किन्तु राजकुमारने ज्यों ही अपनी दृष्टि कागज़की ओर मोड़ी कि रोज़ा लज्जाके साथ द्वारकी ओर लौट गई।

राजकुमारने अपना पत्र पूरा कर दिया। इस बीच कुत्ता रोज़ाके पास जाकर और अच्छी तरह देखकर उससे प्यार करने लगा।

विलियमने कुत्तेसे कहा, ओह, वह तेरे देशकी स्त्री है, तूने उसे पहचान लिया?

फिर रोज़ाकी ओर मुँह फेरकर आलोचनात्मक तथा अज्ञेय दृष्टिसे देखते हुए कहा—अच्छा बेटी—

राजकुमारकी उम्र मुश्किलसे तेईस होगी और रोज़ाकी अठारह या बीस। इस लिए यदि राजकुमार उसे 'बहन' कहकर पुकारता, तो अधिक अच्छा लगता; किन्तु वह उसे बेटी कहकर ही पुकारता था। उसके स्वरसे अधिकार या आज्ञा प्रकट होती थी और जो कोई उसके पास आता था वह उस स्वरको सुनकर सहम जाता था। वह बोला—बेटी, यहाँ हम एकान्तमें हैं। कोई सुननेवाला नहीं है। मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं।

यद्यपि राजकुमारके मुखसे दयाके सिवाय और कोई भाव प्रकट नहीं होता था, फिर भी रोज़ा काँपने लगी। उसने लड़खड़ाते हुए स्वरसे कहा—श्रीमन्!

"तुम्हारा पिता लोवेनस्तेनमें है?"

"हाँ, श्रीमन्।"

"तुम उससे प्यार नहीं करतीं?"

"श्रीमन्, नहीं करती। कमसे कम यह कहना चाहिए कि उतना नहीं करती जितना कि बेटीको करना चाहिए।"

"पितासे प्रेम न करना अच्छा नहीं है, किन्तु झूठ न बोलना अच्छा है।"

रोज़ाने आँखें नीची कर लीं।

"तुम अपने पितासे प्रेम क्यों नहीं करतीं?"

"क्योंकि उनका स्वभाव बहुत बुरा है।"

"कैसे?"

"वे क़ैदियोंसे बड़ा दुर्व्यवहार करते हैं।"

"क्या सबसे?"

"हाँ, सबसे।"

"किन्तु क्या तुम इसीलिए नाराज नहीं हो कि वह एक खास क़ैदीसे बहुत दुर्व्यवहार करता है?"

मेरे पिता महाशय वान बार्लेसे विशेष तौरपर दुर्व्यवहार करते हैं। वान बार्ले वही है जो कि—"

"जो कि तुम्हारा प्रेमी है?"

रोज़ा एक पग पीछे हट गई और फिर गर्वके साथ बोली—हाँ महाशय, जिससे मैं प्रेम करती हूँ।

"कबसे?"

"जिस दिन मैंने उसे पहले पहल देखा, तबसे।"

"तुमने पहली बार उसे कब देखा?"

"जिस दिन महामंत्री जान और उनके भाई कॉर्नेलियस द'विटकी वह भयानक मृत्यु हुई, उसके अगले दिन।"

राजकुमारने अपनी भौंहें चढ़ा लीं और होठ दबा लिये। फिर उसने पलकोंको गिरा दिया, जिससे उसकी आँखें थोड़ी देरतक कुछ कुछ छिप गईं। क्षणभर चुप रहनेके बाद वह बोला—किन्तु जिस आदमीको जन्मभरके लिए जेलका दण्ड मिला है और जेलमें ही जिसकी मृत्यु होगी, उससे प्रेम करनेका परिणाम क्या होगा?

"परिणाम यह होगा कि वह यदि जेलमें ही जियेगा और मरेगा, तो जीवनमें और मृत्युमें भी मैं उसकी सहायता करूँगी।"

"और क़ैदीकी पत्नी बनना तुम्हें स्वीकार है?"

"महाशय वान बार्लेकी पत्नी बनकर, चाहे वह किसी भी दशामें क्यों न हो, मैं अपने आपको संसारमें सबसे अधिक गर्वशालिनी, सौभाग्यशालिनी और सुखी स्त्री समझूँगी। किन्तु—"

"किन्तु क्या?"

"श्रीमन्, मुझे कहनेका साहस नहीं होता।"

"तुम्हारे स्वरसे आशा प्रकट होती है। तुम्हें क्या आशा है?"

रोज़ाने अपनी अश्रुपूर्ण सुन्दर आँखोंको ऊपर उठाकर विलियमपर साभिप्राय दृष्टिपात किया। उसकी दृष्टि विलियमके अन्तरतममें प्रसुप्त अपराध-क्षमाकी भावनाको जगाना चाहती थी।

विलियम बोला—मैं तुम्हारी बात समझता हूँ।

रोज़ाने मुसकराकर मुट्ठियाँ बंद कर लीं।

राजकुमारने कहा—तुम मुझसे आशा करती हो?

"हाँ श्रीमन्।"

"ओ हो!"

राजकुमारने अभी लिखी हुई चिट्ठी बंद करके उसपर मोहर लगाई और अपने एक अफ़सरको बुलाकर कहा—महाशय वान डेकेन, तुम यह चिट्ठी लोवेनस्तेन ले जाओ। वहाँ जाकर मेरी आज्ञा गवर्नरको सुनाओ, और उसका जितना भाग तुमसे सम्बन्ध रखता है उसका पालन करो।

अफ़सरने झुककर आज्ञा-पत्र लिया और कुछ ही मिनट बाद एक घोड़ेके सरपट दौड़नेका शब्द उस महराबदार कमरेमें गूँज गया।

राजकुमारने कहा—बेटी, गुलेलालाका उत्सव रविवारको अर्थात् परसों होगा। ये पाँच सौ रुपये हैं, इनसे तुम अपने लिए एक अच्छीसे अच्छी पोशाक ख़रीदो। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वह दिन तुम्हारे लिए एक बड़े उत्सवका दिन हो।

रोज़ाने हिचकिचाते हुए पूछा—मुझे किस प्रकारके वेशमें देखनेकी आपकी इच्छा है?

विलियमने कहा—फ्रीज़लैंडकी दुलहिनकी पोशाक ले लो, वह तुमपर बड़ी भली लगेगी।

३१—हारलेम

हमने तीन दिन हुए रोज़ाके साथ हारलेममें प्रवेश किया था और आज हम वान बार्लेके साथ प्रवेश करेंगे। हारलेम हालैंडकी सबसे अधिक छायादार सुन्दर नगरी है।

जब कि दूसरे नगर अपने तोपखानों, शस्त्रागारों, गोदामों, बाज़ारों और कारखानोंसे अपनी चमक दमक बढ़ाते हैं, यह नगरी अपनी सुंदर छायादार सड़कोंसे, जिनके किनारे किनारे ऊँचे ऊँचे सघन वृक्ष लगे थे, अपनी शोभा बढ़ाती हुई हालैंडकी दूसरी नगरियोंको लज्जित करती थी।

जब कि हारलेमकी पड़ोसिन लीडन विद्या और विज्ञानकी नगरी थी, उसकी रानी अम्सटरडम व्यापारकी नगरी थी और हेग राजनीतिज्ञों तथा संसारी लोगोंकी नगरी थी, तब हारलेमने कृषि और उद्यानोंकी नगरी होना पसंद किया।

उसकी सुंदर हवा और धूप कृषि और उद्यानोंके लिए बहुत अच्छी थी।

हारलेमने सुन्दर वस्तुओंसे प्रेम किया। उसको संगीतसे, चित्रोंसे, बगीचोंसे, छायादार सड़कोंसे, फूलों और क्यारियोंसे, बहुत प्रेम था।

हारलेम फूलोंकी नगरी बन गई थी। फूलोंमें भी गुले लालासे उसे विशेष रुचि थी।

हारलेमके लिए १५ मई सन् १६७३ ई० का दिन बड़े उत्सवका दिन था। यह उत्सव तीन बातोंके उपलक्षमें था। पहले तो काला गुले लाला पैदा हो गया था, दूसरे ऑरेंजके राजकुमार विलियमने एक सच्चे हालैंडवासीकी तरह इस पुष्पोत्सवमें स्वयं उपस्थित रहनेकी प्रतिज्ञा की थी, और तीसरे सन् १६७२ के उस भयानक युद्धकी समाप्तिके बाद हालैंड सगर्व फ्रांसको दिखा सका था कि उसके प्रजातंत्रका फर्श इतना मज़बूत है कि हालैंडवाले उसपर अपने जहाज़ी बेड़ेकी तोपोंके साथ नाच सकते हैं।

हारलेमके पुष्प-प्रेमी समाजने काले गुले लालाके लिए एक लाख रुपयेका पारितोषिक देकर अपने आपको अपनी प्रतिष्ठा और प्रसिद्धिके योग्य सिद्ध किया था। नगरीने भी पीछे रहना पसंद नहीं किया और इस अवसरपर उतना ही रुपया उसने भी खर्च करनेका निश्चय किया।

इस उत्सवके लिए नियत रविवारको लोगोंमें इतनी चहल-पहल थी और नागरिकोंमें इतना उत्साह था कि फ़रासीसी भी, जो कि सदा हरएक बातकी हँसी उड़ाते हैं, ईमानदार हालैंडवासियोंके चरित्रकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सके। क्योंकि हालैंडवासी अपने देशके आत्म-सम्मानकी रक्षाके लिए जिस प्रकार लड़ाऊ जहाज़ बनानेमें रुपया खर्च करनेको तैयार हुए थे, उसी प्रकार पहली ही बार खिलनेवाले तथा देवियों, विद्वानों और अद्भुत वस्तुदर्शनेच्छुकोंको आकृष्ट करनेवाले एक नये फूलके आविष्कारकको पारितोषिकसे पुरस्कृत करनेके लिये।

नगरके संभ्रान्त पुरुषों तथा पुष्प-प्रेमी समाजके सदस्योंके आगे वान सीस्तेन

जा रहा था। वह बढ़ियासे बढ़िया कपड़े पहने था। उसने वेषमें अपने प्रिय फूलके सदृश बननेका प्रयत्न किया था और इसमें उसे सफलता भी प्राप्त हुई थी। उसकी पोशाक गहरे लाल, निलाई लिये हुए लाल, चमकीले काले तथा दूधके समान सफेद रंगोंके कपड़ोंसे बनी हुई थी। उसके हाथमें एक सुन्दर गुलदस्ता था। वह पुष्प-प्रेमी समाजके सदस्योंके आगे आगे जा रहा था। उन्हें देखनेसे ऐसा मालूम होता था जैसे कि कोई वसन्तकालीन सुन्दर, सौरभयुक्त और पुष्पसमन्वित उपवन हो। उनके पीछे नगरका शिक्षित समाज, मॅजिस्ट्रेट, फ़ौज, रईस तथा ग्रामीण लोग थे।

बड़े बड़े प्रतिष्ठित लोगोंके लिए भी कोई स्थान नियत नहीं किया गया था। सब लोग यों ही सड़कोंमें छाये हुए थे।

ऐसा मालूम होता था कि कोई बड़ी भारी सेना विजय-यात्रासे लौट रही है।

हारलेमके विजयी वीर उसके बाग़वान थे। फूलोंकी पूजा करते करते हारलेमने पुष्प-प्रेमी बाग़वानको देवताकी पदवी दे दी थी।

इस शान्त सुरभित भीड़के मध्यमें काला गुले लाला दिखाई देता था। वह सफ़ेद मखमलसे मढ़ी हुई और सुनहरी किनारोंकी एक सुन्दर चौकीपर था।

एक लाख रुपयेका पारितोषिक स्वयं राजकुमार विलियमके हाथोंसे दिलानेका प्रबंध किया गया था, इससे लोगोंका उत्साह और भी बढ़ गया था। यह भी आशा थी कि इस अवसरपर राजकुमार कुछ भाषण भी करेंगे, जिसमें कि उनके मित्रों और शत्रुओंको बड़ी दिलचस्पी होगी।

हारलेमके तथा आसपासके लोगोंने आकर, हारलेमकी दोनों किनारोंपर वृक्ष-पंक्तिसे युक्त, छायादार सड़कोंको ढक दिया था। वे लोग युद्ध या विज्ञानके विजयी वीरोंका नहीं किन्तु एक प्रकृतिके विजयीका, जिसने कि प्रकृतिको काला गुले लाला पैदा करनेके लिए वाध्य किया था, सम्मान करने आये थे।

सब लोगोंकी आँखें आजके वीरको अर्थात् फूलके आविष्कारकको खोज रही थीं।

वान सीस्तेनने इतने यत्नसे जो रिपोर्ट लिखी थी उसके पढ़े जा चुकनेपर वह वीर आया। उसके आनेपर लोगोंमें जितनी खलबली मची, उतनी स्वयं राजकुमार विलियमके आनेपर भी न मची थी।

वह कमर तक फूलोंसे लदा हुआ था। उसके बाल अच्छी तरह कंघी किये हुए थे। उसकी पोषाक लाल रंगकी थी जो कि उसके काले बालों और पीले रंगपर खूब फबती थी।

यह वीर बड़ा प्रसन्न था। उसको इतना सम्मान प्राप्त हुआ कि उसको देखकर लोग, वान सीस्तेनके भाषण और स्वयं राजकुमारके वहाँ उपस्थित होनेकी बातको भी, भूल गये। यह वीर ईज़ाक बोक्सेतल था। उसके आगे दाईं ओर काला गुले लाला था जिसे कि वह अपना पुत्र बतलाता था, और बाईं ओर एक बड़ी थैलीमें, एक लाख रुपयेके चमकीले सोनेके सिक्के थे। वह इस थैलीकी ओर लगातार तिरछी दृष्टिसे देख रहा था और क्षण भरके लिए भी उसे ओझल नहीं होने देता था। वह सोच रहा था—

केवल पाव घंटेकी देर है और राजकुमार आ जायँगे। तब जुलूस ठहर जायगा। आज राजकुमार फूलको आदर देनेके लिए अपना सिंहासन फूलके लिए छोड़ देंगे। जब कि फूल सिंहासनपर रक्खा जा चुकेगा, तो वे एक सुंदर सम्मान-पत्र हाथमें लेंगे, जिसपर फूलके आविष्कारकका नाम लिखा होगा। राजकुमार ज़ोरसे इस नामको पढ़कर उसे इस आश्चर्य-वस्तुका आविष्कारक घोषित करेंगे कि हालैंडने, इस मनुष्य (बोक्सतेल) के द्वारा, प्रकृतिको काला फूल उत्पन्न करनेके लिए वाधित किया है, जो कि अबसे 'काला बोक्सतेलिया गुले लाला' कहलायेगा।

किन्तु बोक्सतेल कभी कभी बीचमें अपनी दृष्टि गुले लाला तथा थैलीपरसे हटाकर भीड़पर डाल लेता था, क्योंकि सबसे अधिक भय उसे इस बातका था कि कहीं उस सुन्दरीका पीला मुख वहाँपर न दिख जाय।

उसके देखनेसे उत्सवका सारा मज़ा किरकिरा हो जाता; उसी तरह जिस तरह कि हम जिससे बहुत डरते हों उसके भूतको देखनेसे हो जाता है।

सत्य बात तो यह है कि यद्यपि उसने वह वस्तु चुराई थी जो कि एक पुरुषके गौरव और गर्वका विषय थी और एक स्त्रीका दहेज़ थी, फिर भी वह अपने आपको चोर नहीं समझता था। वह इस गुले लालाको आरम्भसे ही बड़े ध्यानसे देखता रहा था। वह वान बार्लेकी प्रयोग-शालासे बुटेनहोफ़की वध्यभूमितक और वध्यभूमिसे लोवेनस्तेन तक उसके पीछे पीछे गया था, उसने उसे रोज़ाके कमरेमें उगते और बढ़ते हुए देखा था और अनेक बार

अपने श्वाससे उसके चारों ओरकी वायुको गर्म किया था । इस लिए वह समझता था कि किसी औरको उसका आविष्कारक और पैदा करनेवाला कहलानेका अधिकार नहीं है और यदि कोई काले गुले लालाका आविष्कारक उसको न बतलाता, तो वह उसको चोर समझता ।

उसे भीड़में कहीं रोज़ा दिखलाई न दी, इस लिए उसका आनंद अविक्षुब्ध रहा ।

एक वृत्ताकार स्थान आया जिसके चारों ओर सुन्दर सुन्दर वृक्ष थे । ये वृक्ष पुष्पमालाओं और लेखोंसे खूब सजाये गये थे । इस स्थानके मध्य भागमें पहुँचकर जलूस ठहर गया । मनोहर बाजे बज रहे थे । तब हारलेमकी युवती सुन्दरियाँ मंचपर बने हुए ऊँचे सिंहासनपर गुले लालाको पहुँचानेके लिए उसके साथ आई । इस गुले लालाकी वेदीके पास ही राजकुमारके लिए एक सुनहरी कुरसी रक्खी हुई थी ।

गुले लालाके ऊँची वेदीपर रक्खे जाते ही वह सारी भीड़को दिखाई देने लगा । उसे देखकर लोगोंने ज़ोरसे हर्ष-ध्वनि की, जिससे कि सारी हारलेम नगरी गूँज उठी ।

३१-अन्तिम प्रार्थना

इस शुभ घड़ीमें, जब कि हर्ष-ध्वनि अभी गूँज ही रही थी, मैदानके पासकी सड़कपर एक गाड़ी जा रही थी । वहाँ बच्चोंके झुण्डोंके कारण वह बहुत धीरे धीरे चल रही थी ।

यह गाड़ी बड़ी लंबी यात्रासे आनेके कारण धूलसे ढकी हुई थी, और उसके पहिये धुरीपर चर्र-चूँ चर्र-चूँ कर रहे थे । इसी गाड़ीमें अभागा वान बार्ले बंद था । वह इस उत्सव और धूमधामको देखकर बड़े अचंभेमें आ गया ।

यद्यपि उसके साथीने पहले उसके प्रश्नोंका कुछ भी जवाब नहीं दिया था, फिर भी वान बार्लेने उससे एक बार और पूछनेका साहस किया और कहा—यह क्या माजरा है ?

अफ़सरने कहा, महाशय, आप देखते ही हैं कि यह उत्सव है।

" उत्सव ! "

जिस आदमीके लिए दुनियामें कोई आनन्द नहीं रह गया है उसके स्वरमें जो लापरवाही होती है वही वान बार्लके स्वरमें थी ।

थोड़ी देर मौन रहनेके बाद उसने फिर पूछा—हारलेमकी अधिष्ठात्री देवीका उत्सव ? क्यों कि यहाँ फूल ही फूल दिखलाई पड़ते हैं।

" यह उत्सव ही ऐसा है कि इसमें फूलोंका प्राधान्य होता है। "

वान बार्लने एक लम्बी सांस खींचकर कहा, ओह मधुर गंध! ओ सुंदर फूल!

अफ़सरने सैनिकजनोचित दयाके साथ कोचवानसे कहा, गाड़ी जरा खड़ी कर दो, जिससे कि यह सज्जन देख लें।

वान बार्लने उदासीभरे स्वरमें उत्तर दिया—महाशय, धन्यवाद। दूसरोंका यह आनंद देखकर मेरे मनमें बड़ी पीड़ा होती है। मुझे इससे बचाओ।

" जैसी आपकी इच्छा। अच्छा, आगे चलें ? मैंने तो इस लिए खड़ा करनेको कहा था कि आप इससे प्रसन्न होंगे। क्योंकि सुना है कि आप फूलोंसे बहुत प्रेम करते हैं, विशेषतः उससे जिसका आज उत्सव है।

" आज किस फूलका उत्सव है ? "

" गुले लालाका। "

" गुले लालाका ! क्या आज गुले लालाका उत्सव है ? "

" हाँ महाशय। किन्तु इस दृश्यको देखकर आपके मनको चोट पहुँचती है, इस लिए हम आगे बढ़ेंगे। "

अफ़सर आगे चलनेके लिए आज्ञा देनेवाला ही था कि वान बार्लके मनमें एक बड़ा पीड़ादायक विचार आया और उसने अफ़सरको रोक दिया। उसने लड़खड़ाते हुए स्वरमें पूछा—तो क्या महाशय, आज पारितोषिक दे दिया गया ?

" हाँ, काले गुले लालाका पारितोषिक। "

वान बार्लका कपोल रोमाञ्चित हो आया, उसका सारा शरीर काँपने लगा, और उसके माथेपर ठंडा पसीना आ गया। वह बोला—महाशय, खेद है कि ये सब लोग वैसे ही अभागे हैं जैसा कि मैं। क्योंकि या तो वे इस महान् पवित्र उत्सवको देखेंगे ही नहीं या उसे अधूरा देखने पायँगे।

" आप कहते क्या हैं ? "

वान बार्लेने गाड़ीमें पीछेकी ओरको बैठते हुए कहा, मैं कहता हूँ कि काले गुले लालाको सिवाय एक आदमीके जिसको मैं जानता हूँ और कोई नहीं पा सकेगा।

अफ़सर बोला, तो जिसको आप जानते हैं वह उसे पा चुका है, उसका आविष्कार कर चुका है। क्योंकि सारा हारलेम इस समय जिस वस्तुको देख रहा है वह काला गुले लाला ही है और कोई वस्तु नहीं।

यह सुनकर वान बार्लेने अपना आधा शरीर गाड़ीकी खिड़कीसे बाहरको निकालकर कहा, काला गुले लाला! वह कहाँ है ? कहाँ है ?

" वहाँ नीचे सिंहासनपर। क्या आपको दिखलाई नहीं दिया ? "

" हाँ, दिखलाई देता है। "

अफ़सरने कहा, अच्छा आइए, हम आगे चलें।

वान बार्ले बोला, मुझपर दया कीजिए। मुझपर थोड़ीसी दया दिखलाइए। मुझे आगे न ले चलिए। मैं एक बार और देख लूँ। क्या वहाँपर काला गुले लाला ही है, बिलकुल काला ? क्या यह संभव है ? महाशय, क्या आपने उसे देखा है ? उसमें धब्बे होंगे, उसमें अपूर्णता होगी, वह रंगकर काला कर दिया गया होगा। ओह, मैं यदि वहाँ होता ! मैं उसे एक बार देखना चाहता हूँ। मुझे गाड़ीसे ज़रा उतर जाने दीजिए। मैं एक बार उसे जाकर देख आऊँ, मैं आपसे इतनी-सी दयाकी भिक्षा माँगता हूँ।

" क्या आप पागल हैं ? मैं ऐसी बातकी आज्ञा कैसे दे सकता हूँ ? "

" मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। "

" क्या आप भूल गये कि आप क़ैदी हैं ? "

" यह तो सच है कि मैं क़ैदी हूँ किन्तु मैं वचनका सच्चा सम्मानित व्यक्ति हूँ। मैं आपको वचन देता हूँ कि मैं भाग नहीं जाऊँगा। मैं भाग निकलनेका बिलकुल यत्न नहीं करूँगा। मुझे केवल फूल देख लेने दीजिए। "

" किन्तु मुझको ऐसी आज्ञा नहीं है महाशय। "

अफ़सरने कोचवानसे फिर चलनेका इशारा किया।

" ज़रा उदारता कीजिए। ज़रा मेरे दुखकी ओर ध्यान दीजिए। मेरा सारा जीवन आपकी दयापर अवलंबित है और शायद वह थोड़ा ही बाक़ी है।

महाशय, आप नहीं जानते कि मेरे मन और हृदयमें कैसी उथल-पुथल हो रही है। क्योंकि यदि यह मेरा गुले लाला हो, वही गुले लाला हो जो रोज़ाके पाससे चोरी चला गया है! महाशय, मुझे उतरना ही चाहिए! मुझे फूल देखना ही चाहिए! आप चाहे तो मुझे पीछे फाँसी दे सकते हैं, किन्तु मैं उसे देखूँगा, उसे देखना ही चाहिए।"

"शान्त रहिए और जल्दीसे अपनी गाड़ीमें बैठ जाइए। देखते नहीं, श्रीमान् राजकुमार साहबके साथ चलनेवाले सिपाही आ रहे हैं, उनकी सवारी आ रही है। यदि राजकुमारने कोई गड़बड़ देखी या कुछ शोर गुल सुना, तो वह आपके और मेरे दोनोंके लिए बहुत बुरा होगा।"

वान बार्ले अपनी अपेक्षा अपने साथीके लिए अधिक डरा और गाड़ीमें पीछेको बैठ गया। किन्तु वह आधे मिनटतक ही शान्त रहा, और पहले बीस घुड़सवार मुश्किलसे गुज़रे होंगे कि वह फिर खिड़कीसे बाहरको झुककर देखने लगा और जब राजकुमार वहाँसे गुज़रा तब इशारा करके प्रार्थना करने लगा।

विलियम सदाके समान शान्त और भावशून्य था। वह सभापतिका कार्य करनेके लिए जा रहा था। उसके हाथमें लिपटा हुआ सम्मान-पत्र था, जो कि आज उत्सवके दिन उसका राजदण्ड था।

उस आदमीको कुछ प्रार्थना करनेके लिए इशारा करते देखकर और शायद उसके साथके अफ़सरको भी पहचानकर राजकुमारने अपनी गाड़ी ठहरानेकी आज्ञा दी।

क्षणभरमें उसके हाँफते हुए घोड़े, जिस गाड़ीमें वान बार्ले बंद था उससे, लगभग छह गज़की दूरीपर ठहर गये।

राजकुमारकी पहली आज्ञा सुनते ही वान बार्लेके साथका अफ़सर गाड़ीसे कूद पड़ा और बड़े अदबके साथ राजकुमारके पास जाने लगा। राजकुमारने पूछा—क्या है?

अफ़सरने उत्तर दिया—श्रीमन्, यह वह राजकीय क़ैदी है जिसे मैं लोवेन-स्तेनसे आपकी आज्ञाके अनुसार यहाँ लाया हूँ।

"वह क्या चाहता है?"

"वह यहाँ एक क्षण ठहरनेकी अनुमति चाहता है।"

वान बार्लेने हाथ जोड़कर कहा—श्रीमन्, मैं काला गुले लाला देखना

चाहता हूँ और जब मैं उसे देख चुकूँगा, तो फिर मैं, मुझे मरना ही हो तो, मरनेके लिए तैयार हो जाऊँगा। किन्तु मुझे अपनी कृतिकी प्रतिष्ठाको देखनेके लिए, आप जो अनुमति देंगे उस दयाके लिए, मैं मरते समय श्रीमान्‌की दीर्घायुके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करूँगा।

इन दो मनुष्योंको अपनी अपनी गाड़ीकी खिड़कियोंपरसे देखनेका दृश्य बड़ा अद्भुत था। इनमेंसे एक तो सर्वशक्तिमान् था और अपने सिपाहियोंसे घिरा हुआ था, दूसरा एक ग़रीब कैदी था। एक सिंहासनपर बैठने जा रहा था और दूसरा समझता था कि मैं वध्य-भूमिको जा रहा हूँ।

विलियमने अपनी निर्मम दृष्टिसे वान बार्लेकी ओर देखा और उसकी चिन्तापूर्ण प्रार्थना सुनी। फिर वह अफ़सरसे बोला—यह वही बाग़ी कैदी है न, जिसने लोवेनस्तेनमें अपने जेलरको मार डालनेका प्रयत्न किया था?

वान बार्लेने एक दीर्घनिश्वास लेकर अपना सिर नीचा कर लिया। उसका सुमधुर ईमानदारीको सूचित करनेवाला मुख एक ही साथ पीला और लाल पड़ गया। उस सर्वशक्तिमान् राजकुमारको किसी गुप्त दूतके द्वारा, उसके अपराधका समाचार जो कि अन्य मर्त्योंको प्राप्त नहीं हो सकता, पहले ही मालूम हो गया था। इस लिए वान बार्लेने समझा कि न केवल मृत्यु निश्चित है, बल्कि मेरी प्रार्थना भी स्वीकृत न होगी।

उसने अब अपनी सफ़ाई पेश करना अनावश्यक समझा। उसको देखनेसे ऐसे मालूम होता था कि जैसे मूर्तिमती निराशा और निर्दोषता हो। इसको राजकुमारके महान् हृदय और महान् आत्माने समझ लिया और अनुभव किया। राजकुमारने आज्ञा दी—क़ैदीको उतरकर काला गुले लाला देख लेने दो। वह एक बार ज़रूर देख लेने लायक़ है।

वान बार्ले बोला—धन्यवाद श्रीमन्, धन्यवाद।

वह आनन्दके मारे मूर्छित-सा हो गया। गाड़ीके पायदानपर उसके पैर लड़खड़ा रहे थे। अगर अफ़सर उस बेचारेको अपने हाथोंपर न सँभाल लेता, तो वह साष्टांग होकर और धूलिमें अपना मस्तक रखकर राजकुमारको धन्यवाद देता।

यह अनुमति देकर राजकुमार अपने रास्ते चला गया। उसके स्वागतार्थ जय-नादसे लोगोंने आकाशको गुँजा दिया।

वह शीघ्र ही मंचपर पहुँच गया और तोपकी गर्जने आकाशको हिला दिया।

उपसंहार

वान बार्ल चार सिपाहियोंके साथ लड़खड़ाता हुआ काले फूलकी ओर चला। सिपाही भीड़को हटाकर रास्ता करते जाते थे। वान बार्ल फूलके जितना ही निकट पहुँचता जाता था, उसकी दृष्टि उसकी ओर उतनी ही रुचिसे आकृष्ट होती जाती थी।

उसने उस अद्भुत फूलको देखा। इसके बाद उसे उस फूलके दर्शन प्राप्त नहीं हो सकेंगे। उसने उसे छः पगकी दूरीसे देखा और उसकी पूर्णता तथा सौन्दर्य देखकर उसे बड़ा आनन्द हुआ। उसने देखा कि उसे सुन्दर लड़कियाँ घेरे हुए हैं, मानों वे उस सौन्दर्य और पवित्रताकी प्रतिमाके सम्मानार्थ रक्षिकायें बनी हैं। वह अपनी आँखोंसे फूलकी पूर्णताको जितना ही अधिक देखता था, अपने आपको उतना ही अधिक अभागा अनुभव करता था। उसने एक प्रश्न पूछनेके लिए चारों ओर आँख दौड़ाई; किन्तु उसे सब अपरिचित चेहरे ही दिखलाई दिये और सबका ध्यान राज-सिंहासनकी ओर आकृष्ट हो रहा था जिसपर कि राजकुमार बैठा था।

विलियम इस उत्साहपूर्ण जनताकी ओर शान्तिसे देखता हुआ उठा। वह बारी बारीसे अपने सामने खड़े हुए तीन व्यक्तियोंको बड़े ध्यानसे देख रहा था। इन तीनों आदमियोंकी आकांक्षाएँ और मनोभाव भिन्न भिन्न थे।

एक ओर तो बोक्सतेल था। वह अधीरताके मारे काँप रहा था। उसकी दृष्टि राजकुमार, थैली, काले फूल और भीड़पर जमी थी।

दूसरी ओर वान बार्ल था। वह हाँफ रहा था और मौन था। उसका ध्यान, उसकी आँखें, उसका जीवन, उसका हृदय, उसका प्रेम सब काले फूलपर केन्द्रित था।

तीसरी ओर हारलेमकी कुमारियोंमें एक ऊँचे स्थानपर एक फ्रीजलैंड-निवासिनी सुन्दरी खड़ी थी। उसके वस्त्र हलके लाल महीन ऊनी कपड़ेके बने हुए थे और उनपर चाँदीका काम किया हुआ था। उसका मुख एक जालीके घूँघटसे ढका था। उसके सिरपर सुनहरी टोपी थी। एक शब्दमें यों कहना

चाहिए कि अश्रुपूर्ण आँखोंसहित रोज़ा विलियमके एक अफ़सरके हाथका सहारा लिए खड़ी थी ।

तब राजकुमारने धीरे धीरे सम्मान-पत्र खोला और स्पष्ट शान्त स्वरसे कहा । यद्यपि उसका स्वर धीमा था, फिर भी वह सबको साफ़ सुनाई दिया, क्योंकि उसके सम्मानार्थ सब लोगोंने पूर्ण मौन धारण कर रक्खा था । ऐसा मालूम होता था कि भीड़के उन पचास हज़ार लोगोंने अपना श्वास तक रोक लिया है। वह बोला—

“ आप लोग जानते हैं, हम यहाँ किस लिए आये हैं ?

“ जो कोई आदमी काला गुले लाला पैदा करेगा, उसके लिए एक लाख रुपयेके इनामकी घोषणा की गई है ।

“ काला गुले लाला पैदा हो गया है । वह आपकी आँखोंके सामने है और उसमें हारलेमके पुष्प-प्रेमी समाजकी घोषणाके अनुसार सब गुण मौजूद हैं ।

“ उसकी उत्पत्तिका इतिहास और उसके पैदा करनेवालेका नाम नगरीकी सम्मान-पुस्तकमें लिखा जायगा ।

“ जिसका यह काला फूल है वह अब यहाँ आवे । ”

इन शब्दोंका उच्चारण करते हुए राजकुमार अपनी सुतीक्ष्ण दृष्टिसे देखता रहा कि उन तीनों व्यक्तियोंपर उनका क्या क्या प्रभाव होता है ।

उसने देखा कि बोक्सतेल झपटकर आ रहा है । उसने देखा कि वान बार्ले बिना जाने उसकी ओर आनेके लिए हिला और ठिठककर रह गया और अन्तमें उसने देखा कि जो अफसर रोज़ाको थामे हुए खड़ा था वह उसको लेकर या यों कहिए कि उसे खींचता हुआ उसकी ओर आया ।

रोज़ाको देखते ही दो ओरसे चीत्कार सुनाई दी ।

बोक्सतेलको काठ-सा मार गया और वान बार्लेको आनन्दपूर्ण आश्चर्य हुआ। दोनोंने पुकारा—रोज़ा ! रोज़ा !

राजकुमारने कहा, बेटी, यह फूल तुम्हारा है न ?

रोज़ाने टूटे हुए स्वरसे कहा—हाँ, महाराज !

रोज़ाके उस अनुपम सौन्दर्यको देखकर सब लोगोंके मुँहसे प्रशंसा-सूचक शब्द सुनाई देने लगे ।

वान बार्ले सोचने लगा, ओह रोज़ाने मुझसे झूठ बोला। उसने तो कहा था कि फूल चोरी चला गया। इसी लिए वह लेविनस्तेनसे भाग आई। मैं दुनियामें जिसको सबसे विश्वस्त मित्र समझता था, उसने भी मुझे भुला दिया, धोखा दे दिया!

बोक्सतेलने ठंडी साँस भरकर कहा, हाय! मैं तो मारा गया।

राजकुमारने कहा, यह गुले लाला अपने पैदा करनेवालीके नामपर पुकारा जायगा। फूलोंकी सूचीमें इसका नाम काला 'रोज़ा-बार्लिया गुले लाला' लिखा जायगा। क्योंकि अबसे इस देवीका नाम 'रोज़ा बार्ले' होगा।

और ये शब्द कहनेके साथ ही विलियमने रोज़ाका हाथ पकड़कर एक युवकके हाथमें रख दिया। यह युवक पीला था और आनन्द-विह्वल हो गया था। ये शब्द सुनते ही वह सिंहासनके पास दौड़ा आया। उसने बारी बारीसे राजकुमार और अपनी वधूको प्रणाम किया। वधूने कृतज्ञतापूर्ण आँखोंसे आकाशकी ओर देखते हुए उसका प्रणाम इस सब आनन्दके देनेवाले उस महामहिमामय भगवान्को लौटा दिया।

इसी समय सभापति वान सीस्तेनके चरणोंमें एक और मनुष्य बिलकुल दूसरे प्रकारके मनोभावोंसे प्रभावित होकर आ गिरा।

बोक्सतेल अपनी चिर-पोषित आशाओंके विफल हो जानेके शोकसे दबकर मूर्च्छित होकर गिर पड़ा।

जब लोगोंने उसे उठाया और उसकी नाड़ी और हृदय देखा, तो उसे मरा हुआ पाया।

इस दुर्घटनासे उत्सवमें कुछ गड़बड़ नहीं हुई, क्योंकि लोगोंने देखा कि न तो राजकुमारने उसपर कुछ ध्यान दिया और न सभापतिने ही।

वान बार्लेको बड़ा भारी आश्चर्य हुआ, जब उसने देखा कि अपने आपको जाकोब बतलानेवाला चोर उसका पड़ौसी ईज़ाक बोक्सतेल था। उसने तो अपने भोले स्वभावके कारण एक क्षणके लिए भी यह सन्देह नहीं किया था कि यह ऐसा दुष्टतापूर्ण काम करेगा।

तब तुरहियोंके शब्दके साथ जुलूस लौट आया। उसका क्रम बिलकुल पहलेके समान ही था, केवल इतना अन्तर था कि बोक्सतेल तो मर चुका था

और उसके स्थानमें अब वान बार्ल और रोज़ा एक दूसरेका हाथ पकड़े हुए चल रहे थे।

टाउनहालमें पहुँचकर राजकुमारने अपनी उँगलीसे एक लाख रुपयेकी थैलीकी ओर निर्देश करते हुए कहा—

"यह कहना कठिन है कि इस पारितोषिकका अधिकारी कौन है, आप या रोज़ा। क्योंकि आपने फूलका आविष्कार किया है, तो रोज़ाने उसे बोकर और पाल-पोसकर बड़ा किया है। इस लिए पारितोषिकको वधूका वैवाहिक उपहार समझना असंगत है। यह हारलेम नगरी गुले लालाके फूलको यह उपहार देती है।"

वान बार्लको आश्चर्य हो रहा था कि राजकुमार क्या कहना चाहता है। तदनंतर राजकुमारने कहा—मैं रोज़ाको एक लाख रुपयेकी रक़म देता हूँ, क्योंकि वह उसकी अधिकारिणी है और अब वह यह रक़म आपको दे सकती है। यह उसके प्रेम, उसके साहस और उसकी ईमानदारीका पारितोषिक है। और महाशय, आपको तथा हमें फिर रोज़ाको धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि उसने ही आपकी निरपराधताका प्रमाण दिया है।

और ये शब्द कहते हुए राजकुमारने वान बार्लको बाइबिलका वह प्रथम पृष्ठ पकड़ाया जिसपर कॉर्नेलियस द'विटका वह पत्र लिखा हुआ था और जिसमें तीसरा मूल लपेटा गया था। वह बोला—

"आपके विषयमें यह मालूम हुआ है कि आप निरपराध ही दण्डित हुए थे। अर्थात् अब आप न केवल कारागारसे ही मुक्त स्वतंत्र हैं, अपि तु आपकी सब संपत्ति भी आपको लौटा दी जायगी। क्योंकि किसी निरपराधकी संपत्ति ज़ब्त नहीं हो सकती। आप कॉर्नेलियस द'विटके धर्म-पुत्र हैं और उनके भाई जानके मित्र हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप कॉर्नेलियसके पुत्र और जानके मित्र होनेके योग्य बनें। इन दोनों भाइयोंका जनताकी भूलसे अनुचित न्याय हुआ था और उन्हें अनुचित रूपसे दण्ड दिया गया था। परन्तु इन दोनोंका हालैंडको गर्व है।"

राजकुमारने ये शब्द अपने स्वभावके विरुद्ध बड़ी भावुकताके साथ कहे और अपने हाथ दोनों प्रेमियोंको चूमने दिये। वे दोनों उसके सामने घुटने टेके खड़े थे। तब उसने एक दीर्घ निःश्वास खींचकर कहा—

"गुले लालाका फूल हमारी मातृभूमि हालैंडके लिए शायद सच्चे गौरवकी

वस्तु है और विशेषतः उसके आनन्दकी वस्तु है। आप उसके लिए सुन्दर सुन्दर रंगोंकी खोजमें लगे रहते हैं। किन्तु खेद है कि आप केवल उसीमें लगे रहते हैं और मातृभूमिके गौरवके लिए कुछ और प्रयत्न नहीं करते।"

और जिस दिशामें फ्रांस है उस ओर दृष्टिपात करते हुए, मानों उसे वहाँ नये बादल उठते हुए दिखाई दिये। वह अपनी गाड़ीमें जा बैठा और चला गया।

इधर वान बार्ले उसी दिन रोज़ाके साथ डोर्टको चल दिया। रोज़ाने अपने प्रेमीकी बूढ़ी धायको सब समाचार सुनानेके लिए अपने पिताके पास भेज दिया।

बूढ़ा ग्रीफ़स पिछली बातें भूलकर अपने जामातासे मेल करनेके लिए किसी तरह भी तैयार नहीं था। उस दिन उसके जो चोटें लगीं थीं वह उन्हें भूला नहीं था। वह उनके निशानोंको गिन-गिनकर बतलाता था कि ये ४१ हैं। किन्तु अन्तमें उसने कहा कि मैं भी युवराजसे कम उदार होना नहीं चाहता और यह बहाना करके उसने वान बार्लेसे मेल कर लिया।

उसको गुले लालाकी रखवाली करनेका काम सौंपा गया और उस बूढ़ेने यह काम इतनी कठोरतासे करके दिखलाया जैसे कि हालैंड-भरमें किसीने न किया होगा।

उसको फूलोंपरसे हानिकारक पतंगों और तितलियोंको भगाते, घोंघों और चूहोंको मारते तथा भूखी मधुमक्खियोंको उड़ाते हुए देखते ही बनता था।

जब उसने सुना कि बोक्सतेलने जाकोबका नाम धारण करके उसे धोखा दिया था, तो उसे बड़ा क्रोध आया और उसने उस गूलरके पेड़को काट डाला जिस-पर चढ़कर बोक्सतेल वान बार्लेके बगीचेको देखा करता था। इस समय बोक्स-तेलके घरकी ज़मीनको बान बार्लेने खरीदकर अपने बग़ीचेमें मिला लिया था।

दो वर्षके वैवाहिक जीवनके बाद रोज़ाके सौन्दर्यके साथ ही उसकी बुद्धि भी खूब विकसित हो गई और वह अच्छी तरह लिखना पढ़ना सीख गई। उसने सन् १६७४ में और सन् १६७६ में दो बच्चोंको जन्म दिया। ये दोनों बच्चे मईके महीनेमें, जब फूलोंका मौसम होता है, पैदा हुए थे और फूलोंसे भी सुन्दर थे। रोजाने इनका शिक्षा-कार्य भी स्वयं ही ग्रहण किया।

इन बच्चोंमें एक लड़का था और एक लड़की।

वान बार्ले रोज़ा और गुले लालाके प्रेममें लीन रहा। उसका सारा जीवन अपनी पत्नीके आनन्दकी ओर ध्यान देने तथा गुले लालाकी नाना किस्में पैदा करनेमें ही व्यतीत हुआ। फूलोंके पैदा करनेमें उसे इतनी सफलता प्राप्त हुई कि उसके पैदा किये हुए कई फूल हालैंडकी पुष्प-सूचीमें सम्मिलित कर लिये गये।

उसने अपनी बैठकको दो चीज़ोंसे मुख्य तौरपर सजा रक्खा था। ये दोनों चीजें कॉर्नेलियस द'विटकी बाइबिलके आदि और अन्तके वे पृष्ठ थीं जिनमेंसे एकपर उसके धर्म-पिताकी उस पत्रोंके बंडलको जला डालनेके लिए आदेशात्मक चिट्ठी थी और दूसरेपर उसकी अपनी वसीयत थी जिसमें उसने अपने गुले लालाके मूलोंका उत्तराधिकारी रोज़ाको बनाया था, इस शर्तपर कि वह २६ से २८ वर्ष तककी आयुके एक ऐसे युवकसे विवाह कर ले, जो उससे प्रेम करता हो और जिससे वह प्रेम करती हो। यह शर्त हर तरहसे पूर्ण हो गई, किन्तु इसी लिए कि वान बार्लेको क्षमा कर दिया गया और उसे मृत्यु-दंड नहीं हुआ।

भविष्यमें किसी दूसरे ईज़ाक बोक्सतेलके ईर्ष्यापूर्ण प्रयत्नसे बचनेके लिए उसने अपने घरके दरवाज़ेपर निम्नलिखित पंक्तियाँ खुदवा दी थीं। जब ग्रोशियस जेलसे भागा था, तो वह ये पंक्तियाँ अपनी जेलकी कोठरीकी दीवारपर लिख गया था—

"मैंने इतने कष्ट सहे हैं कि भविष्यमें भी कभी मुझे यह कहनेका अधिकार नहीं है कि मैं बहुत सुखी हूँ।"

समाप्त

विश्वविख्यात लेखकोंका

श्रेष्ठ साहित्य

रवीन्द्रनाथ

आँखकी किरकिरी (उपन्यास)	१॥)
चिरकुमार-सभा (नाटक)	१।)
मुक्त-धारा ,,	॥=)
प्राचीन साहित्य (समालोचना)	॥-)
साहित्य ,,	॥।)
रवीन्द्र-कथा-कुंज (कहानियाँ)	१)

मेटर लिंक

प्रायश्चित्त और उन्मुक्तिका बन्धन	॥)

गी दी मोपाँसाँ

मानव-हृदयकी कथायें (दो भाग)	१॥।=)

शीलर (जर्मनीका शेक्सपीयर)

प्रेम-प्रपंच (नाटक)	॥≡)

बड़ा सूचीपत्र मँगाइए—

संचालक, हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय

हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई

उच्च-कोटिके उपन्यास कहानियाँ

अन्नपूर्णाका मन्दिर	(निरुपमादेवी)	।।।=)
विधाताका विधान	(,,)	२।।)
परख	(जैनेन्द्रकुमार)	१)
शान्तिकुटीर	(गार्हस्थ्य चित्र)	१=)
चन्द्रनाथ	(शरत्चन्द्र)	।।।)
घृणामयी	(इलाचन्द्र जोशी)	१।)
छत्रसाल	(ऐतिहासिक)	१।।।)
आँखकी किरकिरी	(रवीन्द्र)	१।।)
सुखदास	(प्रेमचन्द)	।।=)
फूलोंका गुच्छा	(दो भाग)	२)
वातायन	(जैनेन्द्रकुमार)	१।।)
एक रात	(,,)	१।)
नव-निधि	(प्रेमचन्द)	।।।)
पुष्प-लता	(सुदर्शन)	१)
चन्द्र-कला	(चन्द्रगुप्त)	।।।=)
झलमला	(पदुमलाल बख्शी)	।।।=)

संचालक—**हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर**

हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई